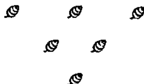
प्रकाशकः—
नाथूराम प्रेमी, मन्त्री—
माणिकचन्द्र जैन ग्रन्थमाला,
हीराबाग, पो॰ गिरगाँव, बम्बई।



र्फ भूमिका और अनुक्रमणिका आदिके मुद्रक—
मंगेश नारायण कुळकर्णी,
कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस,
३१८ ए, ठाकुद्वार, बम्बई।
और शेष संपूर्ण पुस्तकके मुद्रक—
ए॰ बोस, इंडियन प्रेस
लिमिटेड, बनारस केण्ट।

निवेदन

—:॰:—

दिगम्बर जैन सम्प्रदायके शिलालेखों, ताम्रपत्रों, मूर्तिलेखों और ग्रन्थप्रशस्तियोंमें जैनधर्म और जैन समाजके इतिहासकी विपुल सामग्री बिखरी हुई पड़ी है जिसको एकत्रित करनेकी बहुत ही बड़ी आवश्यकता है। जब तक 'जैनहितैषी' निकलता रहा, तब तक मैं बराबर जैनसमाजके शुभचिन्तकोंका ध्यान इस ओर आकर्षित करता रहा हूँ। परन्तु अभी तक इस ओर कुछ भी प्रयत्न नहीं हुआ है और जो कुछ थोड़ासा इधर उधरसे हुआ भी है वह नहीं होनेके बराबर है।

बड़ी प्रसन्नताकी बात है कि बाबू हीरालालजीकी कृपा और निःस्वार्थ सेवासे आज मेरी एक बहुत पुरानी इच्छा सफल हो रही है और जैन शिलालेखसंग्रहका यह प्रथम भाग प्रकाशित हो रहा है। बाबू हीरालालजी इतिहासके प्रेमी और परिश्रमशील विद्वान् हैं। उनके द्वारा मुझे बड़ी बड़ी आशायें हैं। वे संस्कृतके एम॰ ए॰ हैं। इलाहाबाद यूनीवर्सिटीकी ओरसे उन्हें दो वर्ष तक रिसर्च स्कालर्शिप मिल चुकी है और इस समय अमरावतीके किंग एडवर्ड कालेजमें वे संस्कृतके प्रोफेसर हैं। कारंजाके जैनशास्त्रभण्डारोंका एक अन्वेषणात्मक विस्तृत सूचीपत्र सी॰ पी॰ गवर्नमेण्टकी ओरसे आपने ही तैयार किया था, जो मुद्रित हो चुका है। आपकी इच्छा है कि शिलालेखसंग्रहके और भी कई भाग प्रकाशित किये जायें और उनके सम्पादनका भार भी आप ही लेना चाहते हैं। मुझे आशा है कि माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाकी प्रबन्धकारिणी कमेटी इस भागके समान आगेके भागोंको भी प्रकाशित करनेका श्रेय सम्पादन करेगी। अस्तव्यस्त और जीर्णशीर्ण अवस्थामें पड़े हुए जैन इतिहासके साधनोंको अच्छे रूपमें प्रकाशित करना बड़े ही पुण्यका कार्य है।

निवेदक—
नाथूराम प्रेमी



श्री मोदी बालचन्द्रजी

(संग्राहक के पिता)

समर्पण

पिताजी,

आपने अत्यन्त परिश्रम करके मुझे जो कुछ
विद्यादान व धार्मिक ज्ञान दिलाया है,
उसीके फलस्वरूप यह प्रथम
भेंट आपके करकमलोंमें
सादर समर्पित है ।

आपका पुत्र,
हीरालाल

विषय-सूची



PREFACE

The inscriptions at Sravana Belgola were first collected and published by Mr. B. Lewis Rice, C.I.E., M.R.A.S., Director of Archaeological Researches in Mysore, as far back as 1889. A thoroughly revised and enlarged edition of the same was brought out by the late Director of Mysore Archaeological Researches, Prâktana Vimarsha Vichakshana Rao Bahadur R. Narsinhachar, M A., M.R A.S. While the first edition contained only 144 inscriptions, Rao Bahadur Narsinhachar has brought to light hundreds of other inscriptions from the same locality and his edition contains no less than 500 of them. The site may now be said to be more or less thoroughly explored.

These inscriptions have a peculiar interest for the historian in so far as all of them are associated in one way or another with the Jain Religion. Interest in historical researches has of late been awakened in almost all the important communities of India and it is a happy augury of the times that the Directors of the Manikachandra Digambara Jain Granthamala have decided to include in their distinguished series a set of volumes bringing together in a handy form, *all the known inscriptions of the Digambara Jains,* thus facilitating the work of the future Jain Historian. It was thought suitable and convenient to start this series with a volume of Sravana Belgola inscriptions and the work was entrusted to me

The present edition is based upon the above mentioned two editions. It has, thus, nothing new to offer to the scholar; but to the general reader, who is interested in Jain History but who for one reason or another can not go to the previous costly editions in Roman and Kanarese characters, this edition has a few advantages. The text of the inscriptions is here presented for the first time in Devanagari characters, the numbers of the inscriptions in the previous

two editions have been given and the verses have been numbered to facilitate reference; the substance of the inscriptions having portions of Kanarese in them has been given in Hindi; all the important information about Sravana Belgola and its surroundings, as contained in the previous two editions is given in the Introduction and the historical importance of the inscriptions from the Jain point of view is more thoroughly discussed and the index of the names of Jain monks, poets and works has been separated from the general index.

My sincere thanks are due to the Mysore Government and its distinguished Directors of Archaeology, mentioned above, without whose previous labours this edition would have been impossible and to Pandit Nathuram Premi, the able Secretary of the Manikachandra Digambara Jaina Granthamala without whose initiative and encouragement the work would have never been undertaken.

AMRAOTI,
King Edward College,
March 21st 1928.

HIRALAL.

प्राथमिक वक्तव्य

श्रवण बेल्गोल के शिलालेख सबसे प्रथम मैसूर सरकार की कृपासे सन् १८८९ में प्रकाशित हुए थे। मैसूर पुरातत्त्वविभाग के तत्कालीन अधिकारी लूइस राइस साहबने उस समय श्रवण बेल्गुल के १४४ लेखों का संग्रह प्रकाशित किया। इस संग्रह की भूमिका में राइस साहबने पहले पहल इन लेखों के साहित्य-सौन्दर्य व ऐतिहासिक महत्व की ओर विद्वत्समाज का ध्यान आकर्षित किया व चन्द्रगुप्त और भद्रबाहु वाले प्रश्न का विस्तृत विवेचन कर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि चन्द्रगुप्त ने यथार्थतः भद्रबाहु मुनिसे दीक्षा ली थी व लेख नं० १ उन्हीं का स्मारक है। तबसे इस प्रश्न पर विद्वानों में बराबर वादविवाद होता आया है। उक्त संग्रह का दूसरा संस्करण अभी सन् १९२२ इस्वी में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह के रचयिता प्राक्तनविमर्शविचक्षण राव बहादुर आर० नरसिंहाचारजी हैं, जिन्होंने श्रवणबेल्गोल के सब लेखों की पुनः सूक्ष्मतः जाँच की व परिश्रमपूर्वक खोज करके अन्य सैकड़ों लेखों का पता लगाया। इस संस्करण में उन्होंने पाँच सौ लेखों का संग्रह किया है व एक विस्तृत व विशद भूमिका में यहाँ के समस्त स्मारकों का वर्णन व लेखों के ऐतिहासिक महत्त्व का विवेचन किया है।

किन्तु ये संग्रह कनाड़ी व रोमन लिपिमें प्रकाशित किये जाने व बहुमूल्य होनेके कारण बहुतसे इतिहासप्रेमियों को उनसे कुछ लाभ न हो सका और अधिकांश जैन लेखक इनका उपयोग न कर सके। वास्तवमें इन लेखोंका परिशीलन किये बिना आजकल जैन साहित्यिक, धार्मिक व राजनैतिक इतिहास के विषयमें कुछ लिखना एक प्रकारसे अनधिकार चेष्टा है, क्योंकि ये लेख प्रायः समस्त प्राचीन दिगम्बर जैनाचार्यों के कृत्यों के प्राचीनतम ऐतिहासिक प्रमाण हैं। इस प्रकार के समस्त उपलब्ध जैन लेख जब तक संग्रह रूपमें प्रकाशित न हो जाँयगे तबतक प्रामाणिक जैन इतिहास संतोषजनक रीति से नहीं लिखा जा सकता।

इसी आवश्यकता की भावना से प्रेरित होकर श्रीयुक्त पं० नाथूरामजी प्रेमी ने सन् १९२४ में उक्त लेखोंका देवनागरी संस्करण तैयार करने का मुझसे अनुरोध किया। प्रथमतः कार्य के भार का ध्यान करके मुझे इसे

स्वीकार करने का साहस न हुआ किन्तु अन्तमें लाचार होकर वह कार्य हाथ में लेना ही पड़ा। सन १९२५ में कार्य प्रारम्भ हुआ। आशा की गई थी कि कुछ मासमें ही कार्य समाप्त हो जावेगा। किन्तु कार्य बड़ा होने व मेरे अलाहाबाद से अमरावती आ जानेके कारण वह आशा पूर्ण न हो सकी। अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित हुईं और समय बहुत लग गया। किन्तु हर्षका विषय है कि अन्ततः कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो गया।

राइस साहब के संग्रह के १४४ लेखों की, श्रीयुक्त बाबू सूरजभानुजी वकील द्वारा कापी की हुई और पं॰ जुगलकिशोर जी मुख्तार द्वारा शुद्ध की हुई एक प्रेस कापी मुझे पं॰ नाथूरामजी द्वारा प्राप्त हुई। प्रथम यह विचार हुआ कि इन्हीं लेखों में नये संस्करण के कुछ चुने हुए लेख सम्मिलित कर प्रथम संग्रह प्रकाशित कर दिया जाय। किन्तु सूक्ष्म विचार करने पर यह उचित न जँचा। किसी न किसी दृष्टिसे सभी लेख आवश्यक जँचने लगे व लेखों का पाठ नये संस्करण के अनुसार रखना आवश्यक प्रतीत हुआ। प्रस्तुत संग्रह में बड़े परिश्रम से पाठ शुद्ध कर उसे सर्वप्रकार मूलके अनुसार ही रखा है। पद्यभाग भी मूलके अनुसार हैं यद्यपि इससे कहीं कहीं शब्दों के रूप अपरिचित से हो गये हैं। किन्तु छापे की कठिनाई के कारण कनाड़ी भाषा के कुछ वर्णों का भिन्न स्वरूप यहाँ नहीं दर्शाया जा सका। उदाहरणार्थ, *e*, *ē* को यहां 'ए', *o*, *ō* को 'ओ' *r*, *ṟ* को 'र' व *l*, *ḷ*, *ḻ* को 'ल' से ही सूचित किया है। प्रूफ-शोधन में यथाशक्ति कसर नहीं रक्खी गई किन्तु फिर भी कुछ छोटी मोटी अशुद्धियाँ आ ही गई हैं। उल्लेख के सुभीते के लिये लेखों की श्लोक संख्या दे दी गई है। यह बात पूर्व संस्करणों में नहीं है। जहाँ पर प्रथम और द्वितीय संस्करण के पाठोंमें कुछ विचारणीय भिन्नता ज्ञात हुई वहाँ दूसरा पाठ फुटनोटमें दे दिया गया है। बहुत अच्छा होता यदि लेखों का पूरा अनुवाद दिया जा सकता किन्तु इससे ग्रंथका आकार बहुत बढ़ जाता। अतएव जिन लेखों में थोड़ी भी कनाड़ी आई है उनका हिन्दी भावार्थ देकर ही संतोष करना पड़ा है। प्रथम १४४ लेख राइस साहब के क्रमानुसार रखकर पश्चात् का क्रम स्वतंत्रतासे चालू रक्खा गया है। कोष्टक में नये संस्करण के नम्बर दे दिये गये हैं जिससे आवश्यकता होने पर पहले व दूसरे संस्करण से प्रसंगोपयोगी

लेख का सुगमता से मिलान किया जा सकता है। नये संस्करण के पाँच लेख यहाँ दो ही लेखों (७५, ७६)में आ गये हैं व लेख नं० ३९४ और ४०१-४०६ विशेषोपयोगी न होने के कारण छोड़ दिये गये हैं। इस प्रकार दस लेखों की जो बचत हुई उनके स्थान में एपीग्राफिआ कर्नाटिका भाग ५ में से चुनकर दस लेख सम्मिलित कर दिये गये हैं।

भूमिका का वर्णनात्मक भाग सर्वथा रा० ब० नरसिंहाचार के वर्णन के आधार पर ही लिखा गया है किन्तु ऐतिहासिक व आचार्यों के सम्बन्ध का विवेचन बहुत कुछ स्वतंत्रता से किया गया है। गोम्मटेश्वर मूर्ति की स्थापना का समय निर्णय व शिलालेख नं० १ का विवेचन नरसिंहाचारजी के मतसे कुछ भिन्न हुआ है।

अन्त में हम मैसूर सरकार व उनके पुरातत्त्व विभाग के सुयोग्य अधिकारी भूतपूर्व राइस साहब व रा० ब० नरसिंहाचार के बहुत कृतज्ञ हैं। बिना उनकी अपूर्व खोजों और अनुपम प्रयास के जैन इतिहास पर यह भारी प्रकाश पड़ना व इस पुस्तक का प्रकाशित होना दु:साध्य था। हम माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थमाला के मन्त्री पं० नाथूरामजी प्रेमी के विशेष रूपसे उपकृत हैं। आपके सस्नेह प्रेरण व अपार उत्साह के बिना हमसे यह कार्य होना अशक्य था। आपने असाधारण विलम्ब होने पर भी धैर्य रक्खा जिससे ग्रंथ सुचारुरूपसे सम्पादित हो सका। पुस्तक के—विशेषत. कनाड़ी अंशों के—कम्पोजिंग व प्रूफ शोधन में प्रेसवालों को भारी कठिनाई और विलम्ब का सामना करना पड़ा है किन्तु उन्होंने योग्यतापूर्वक इस कार्य को निबाहा। इस हेतु इंडियन प्रेस, इलाहाबाद के मैनेजर हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका की अपूर्णताओं और त्रुटियों का ध्यान जितना स्वयं मुझे है उतना कदाचित् हमारे उदार हृदय पाठकों को न होगा; किन्तु विषयकी ओर विद्वानों का लक्ष्य दिलाने के हेतु इन त्रुटियों में पड़ना भी आवश्यक था। यदि इस पुस्तक से जैन ऐतिहासिक प्रश्नों के हल करने में कुछ भी सहायता पहुँची तो मैं अपने को कृतार्थ समझूँगा। यदि पाठकों ने चाहा और भविष्य अनुकूल रहा तो दक्षिण भारत के जैन लेखोंका दूसरा संग्रह भी शीघ्र ही पाठकों की भेंट किया जायगा।

किंग एडवर्ड कालेज, अमरावती,
फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १९८४.

हीरालाल

शुद्धिपत्र

(भूमिका)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	५	बेल्पोल	बेल्गोल
७९	७	सल्लखना	सल्लेखना
९८	१	११२४	१२४
१००	१–२	माघनन्दि आचार्यों	माघनन्दि आदि आचार्यों
१०६	८	जगदेव के	जगदेव नामक
११२	११	भटत	भरत
१२८	९	बीरह	बीर
१२८	१०	पद्मावली	पट्टावली
१३९	१५	दयाल्पाल	दयापाल
१५२	४	पुष्पनान्द	पुष्पनन्दि

(लेख)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३१	१०	चौड़	चालुक्य
४८	१८	विष्णुवर्द्धनद्वारा	विष्णुवर्द्धनके मंत्री गंगराज
४९	२	विष्णुवर्द्धन नरेश	गंगराज मंत्री [द्वारा
५५	१३	पर्यो	पंक्तियों
१४७	१४	एरड़ु बड़े बस्ति	एरडुकट्टे बस्तिमें
१५७	११	धा चामुण्डराज	श्रीचामुण्डराज
१७५	१८	रामचन्द्र नृप	रायमल्ल नृप
१९४	१३	कुलो.. ग्र	कुलोत्तुंग
२०७	२	पण्डिताप्य	पण्डितार्य्यः
२९२	अन्तिम	नं. (३५४)	नं. ४१४ (३५४)
३१६	१२	१८९	१९८
३१६	१३	१९७	१९९
३१९	१४	२११ (११५)	२११ (११४)
३२७	६	२५५ (४१३)	२५५ (४१४)
३४३	२	विजयराज्यस्य	विजयराज्य
३७७	१	४७७ (३८६)	४७६ (३८६)
३८५	१० वी पंक्तिके पश्चात् लेखांक ४११ छूट गया है।		

भूमिकामें प्रयुक्त संकेताक्षर

इ. ए.—इंडियन एन्टीक्वेरी।

ए. इ.—एपिग्राफिया इंडिका।

ए. क.—एपिग्राफिया कर्णाटिका।

मै. आ. रि.—मैसूर आर्किऑलॉजिकल रिपोर्ट।

सा. इ. इ.—साउथ इंडियन इन्स्क्रिप्शन्स।

— —

वर्ष पुराने कुछ लेखों में भी इस स्थान का नाम धवल सरोवर, धवलसर: व धवलसरोवर पाये जाते हैं०।

'बेल्गोल' नाम लगभग सातवीं शताब्दि के एक लेख में पाया है,* और लगभग आठवीं शताब्दि के एक दूसरे लेख में इसका नाम 'बेळगोल' पाया जाता है‡। इससे पीछे के अनेक लेखों में बेळगुळ, बेळ्गुळ और बेळुगुळ नाम पाये जाते हैं। एक लेख में 'देवर बेळगोल' नाम भी पाया जाता है§ जिसका अर्थ होता है देव का (जिनदेव का) बेळगोल। श्रवणबेलगोल के आसपास दो और बेळगोल नाम के स्थान हैं जो हळे-बेळगोल और कोडि-बेळगोल कहलाते हैं। गोम्मटेश्वर की विशाल मूर्ति के कारण इसका नाम गोम्मटपुर भी है+। कुछ शिलालेखों में दक्षिण काशी नाम से भी इस तीर्थ-क्षेत्र का उल्लेख हुआ है×।

श्रवणबेलगोल ग्राम मैसूर राज्य के हासन जिले के चेन्नराय-पट्टण ताल्लुके में दो सुन्दर पहाड़ियों के बीच बसा हुआ है। इनमें से बड़ी पहाड़ी (दोड्डबेट्ट) जो ग्राम के दक्षिण की ओर है 'विन्ध्यगिरि' कहलाती है। इसी पहाड़ी पर गोम्मटेश्वर की वह विशाल मूर्ति स्थापित है जो बहुत दूर से यात्रियों की दृष्टि इस पवित्र स्थान की ओर आकर्षित करती है। इसकी

० देखो लेख नं० [illegible] और [illegible] | * देखो लेख नं० [illegible]
‡ देखो लेख नं० [illegible] | § देखो लेख नं० [illegible]
+ देखो लेख नं० [illegible] | × देखो लेख नं० [illegible]

अतिरिक्त कुछ बस्तियाँ (जिन-मन्दिर) भी इस पहाड़ी पर हैं। दूसरी छोटी पहाड़ी (चिक्क बेट्ट), जो ग्राम से उत्तर की ओर है, चन्द्रगिरि के नाम से प्रख्यात है। अधिकांश और प्राचीनतम लेख और बस्तियाँ इसी पहाड़ी पर हैं। कुछ मन्दिर, लेख आदि ग्राम की सीमा के भीतर हैं और शेष श्रवणबेल्गोल के आस-पास के ग्रामों में हैं। अतः यहाँ के समस्त प्राचीन स्मारकों का वर्णन इन चार शीर्षकों में करना ठीक होगा—(१) चन्द्रगिरि, (२) विन्ध्यगिरि, (३) श्रवणबेल्गोल (ग्राम) और (४) आस-पास के ग्राम। लेख नं० १५४ के अनुसार श्रवणबेल्गोल के समस्त मन्दिरों की संख्या ३२ है अर्थात् आठ विन्ध्यगिरि पर, सोलह चन्द्रगिरि पर और आठ ग्राम में। पर लेख में इन बस्तियों के नाम नहीं दिये गये।

चन्द्रगिरि

चन्द्रगिरि पर्वत समुद्र-तल से ३,०५२ फुट की ऊँचाई पर है। प्राचीनतम लेखों में इस पर्वत का नाम कटवप्र* (संस्कृत) व कल्बप्पु या कल्बप्पु† (कनाड़ी) पाया जाता है। तीर्थ-गिरि और ऋषि-गिरि नाम से भी यह पहाड़ी प्रसिद्ध रही है‡। इरुवेब्रह्मदेव मन्दिर को छोड़ इस पर्वत पर के शेष सब

* देखो लेख नं० १, ३०, २८, ३१, ३३, १२२, १२३, १८१

† देखो लेख नं० ३४, ३६, १६०, १६१

‡ देखो लेख नं० १४, ३१.

जिनालय एक दीवाल के घेरे के भीतर प्रतिष्ठित हैं। इस घेरे की उत्कृष्ट लम्बाई ५०० फुट और चौड़ाई २२५ फुट है। सब मन्दिर द्राविड़ी ढङ्ग के बने हुए हैं। इनमें से सबसे प्राचीन मन्दिर ईसा की आठवीं शताब्दि का प्रतीत होता है। घेरे के भीतर के मन्दिरों की संख्या १३ है। सभी मन्दिरों का ढङ्ग प्रायः एक सा ही है। सभी में साधारणतः एक गर्भगृह, एक सुखनासि खुला या घिरा हुआ, और एक नवरङ्ग रहता है। नीचे इस पहाड़ी के सब मन्दिरों व अन्य प्राचीन स्मारकों का सूक्ष्म वर्णन दिया जाता है:—

१ पार्श्वनाथ बस्ति—इस सुन्दर और *विशाल मन्दिर* की लम्बाई-चौड़ाई ५९×२९ फुट है। दरवाजे भारी हैं। नवरङ्ग और सामने के दरवाज़े के दोनों ओर बरामदे बने हुए हैं। बाहरी दीवालें खम्भों और छोटी-छोटी गुम्मटों से सजी हुई हैं। सप्तफणी नाग की छाया के नीचे भगवान् पार्श्वनाथ की १५ फुट ऊँची मनोज्ञ मूर्ति है। इस पर्वत पर यही मूर्ति सबसे विशाल है। सामने वृहत् और सुन्दर मानस्तम्भ खड़ा हुआ है जिसके चारों मुखों पर यक्ष-यक्षिणियों की मूर्त्तियां खुदी हैं। कहा नहीं जा सकता कि इस मन्दिर के निर्माण का ठीक समय क्या है। नवरङ्ग में एक बड़ा भारी *लेख* खुदा हुआ है (लेख नं० ५४) जिसमें शक सं० १०५० में मल्लिषेण-मलधारि देव के समाधि-मरण का संवाद है। पर मन्दिर के निर्माण के विषय की कोई वार्त्ता

लेख में नहीं पाई जाती। यहाँ के मानस्तम्भ के विषय में अनन्त कवि-कृत कनाड़ी भाषा के 'बेलगोलद गोम्मटेश्वर-चरित' नामक काव्य में कहा गया है कि उक्त मानस्तम्भ मैसूर के चिक्क देव-राज ओडेयर नामक राजा (१६७२-१७०४ ईस्वी) के समय में पुट्टैय नामक एक सेठ-द्वारा निर्माण कराया गया था। इसी काव्य के अनुसार मन्दिर की बाहरी दीवाल भी इसी सेठ ने बनवाई थी। यह काव्य लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुराना है।

२ कत्तले बस्ति—चन्द्रगिरि पर्वत पर यह मन्दिर सबसे भारी है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई १२४×४० फुट है। गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणा है। नवरङ्ग से सटा हुआ एक मुखमण्डप (सभा-भवन) भी है और एक बाहरी बरामदा भी। सामने के दरवाज़े के अतिरिक्त इस सारे विशाल भवन में और कोई खिड़कियाँ व दरवाज़े नहीं हैं। बाहरी ऊँची दीवाल के कारण उस एक सामने के दरवाज़े से भी पूरा-पूरा प्रकाश नहीं जाने पाता। इसी से इस मन्दिर का नाम कत्तले बस्ति (अन्धकार का मन्दिर) पड़ा है। बरामदे में पद्मावती देवी की मूर्ति है। जान पड़ता है, इसी से इस मन्दिर का नाम पद्मावतीबस्ति भी पड़ गया है। मन्दिर पर कोई शिखर नहीं है, पर मठ में इस मन्दिर का जो मान-चित्र है उसमें शिखर दिखाया गया है। इससे जान पड़ता है कि किसी समय यह मन्दिर शिखर-बद्ध रहा है।



बायें छोर पर सर्वाह्णयक्ष की मूर्तियाँ हैं। सभी मूर्तियाँ पद्मासन हैं। बरामदे के सम्मुख जो बहुत ही सुन्दर प्रवोली (दरवाजा) है वह पीछे निर्मापित हुआ है। इसकी कारीगरी देखने योग्य है। घेरे के पत्थरों पर जाली का काम, जिस पर श्रुतकेवलि भद्रबाहु और मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त के कुछ जीवन-दृश्य खुदे हुए हैं, अपूर्व कौशल का नमूना है। इसी जाली पर एक जगह 'दासोजः' ऐसा लेख है जो इस प्रवोली के बनानेवाले कारीगर का नाम प्रतीत होता है। इसी नाम के एक व्यक्ति ने लेख नं० ५० उत्कीर्ण किया है। यह लेख शक सं० १०६८ का है। यदि ये दोनों व्यक्ति एक ही हों तो यह प्रवोली शक सं० १०६८ के लगभग की बनी सिद्ध होती है। उपर्युक्त लेख की लिपि भी इसी समय की ज्ञात होती है। मन्दिर के दोनों बाजुओं के कोठों पर छोटे खुदावदार शिखर भी हैं। मध्य के कोठे के सम्मुख सभा-भवन में चेत्र-पाल की स्थापना है जिनके सिंहासन पर कुछ लेख भी है। इस मन्दिर का नाम चन्द्रगुप्त-बस्ति पड़ने का कारण यह बतलाया जाता है कि इसे स्वयं महाराज चन्द्रगुप्त मौर्य ने निर्माण कराया था। इसमें सन्देह नहीं कि इस मन्दिर की इमारत इस पर्वत के प्राचीनतम स्मारकों में से है।

४ **शान्तिनाथ बस्ति**—यह छोटा सा जिनालय २४×१६ फुट लम्बा-चौड़ा है। इसकी दीवालों और छत पर अभी तक चित्रकारी के निशान हैं। शान्तिनाथ

स्वामी की मूर्ति खड्गासन ११ फुट ऊँची है। मन्दिर के बनने का समय ज्ञात नहीं।

५ सुपार्श्वनाथ बस्ति—इस मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई २५ × १४ फुट है। सुपार्श्वनाथ स्वामी की पद्मासन मूर्ति तीन फुट ऊँची है, जिसके ऊपर सप्तफणी नाग की छाया हो रही है। मन्दिर के बनने के विषय की कोई वार्ता विदित नहीं है।

६ चन्द्रप्रभ बस्ति—इस मन्दिर का क्षेत्रफल ४२ × २५ फुट है। चन्द्रप्रभस्वामी की पद्मासन मूर्ति तीन फुट ऊँची है। सुखनासि में उक्त तीर्थंकर के यक्ष और यक्षिणी श्याम और ज्वालामालिनि विराजमान हैं। मन्दिर के सामने एक चट्टान पर 'शिवमारन बसदि' (२५६) ऐसा लेख है। इस लेख की लिपि से ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवतः इसमें गङ्गनरेश शिवमार द्वितीय, श्रीपुरुष के पुत्र, का उल्लेख है। शिवमार के द्वारा किये 'बसदि' (बस्ति) के बनने का लेख में उल्लेख है, सम्भव है यह वही चन्द्रप्रभ बस्ति हो, क्योंकि इसके निकट अन्य और कोई बस्ति नहीं है। यदि यह अनुमान ठीक हुआ तो यह बस्ति सन् ८०० ईस्वी के लगभग का सिद्ध होता है।

७ चामुण्डराय बस्ति—यह विशाल भवन बनावट और आकार में इस पर्वत पर सबसे सुन्दर है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई ६८ × ३६ फुट है। ऊपर दूसरा खण्ड और

एक सुन्दर गुम्मट भी है। इसमें नेमिनाथ स्वामी की पांच फुट ऊँची मनोहर प्रतिमा है। गर्भगृह के दरवाजे पर दोनों बाजुओं पर क्रमशः यक्ष सर्वाह्न और यक्षिणी कुष्माण्डिनी की मूर्त्तियां हैं। बाहरी दीवालें स्तम्भों, आलों और उत्कीर्ण या उचेली हुई प्रतिमाओं से अलंकृत हैं। बाहरी दरवाजे की दोनों बाजुओं पर नीचे की ओर' श्रीचामुण्डराजं माडिसिदं' (२२३) ऐसा लेख है। इससे स्पष्ट है कि यह बस्ति स्वयं गङ्गनरेश राचमल्ल के मन्त्री चामुण्डराज ने निर्माण कराई थी और उसका समय ९८२ ईस्वी के लगभग होना चाहिये। पर नेमिनाथ स्वामी के सिंहासन पर लेख है (६६) कि गङ्गराज सेनापति के पुत्र 'एचण' ने त्रैलोक्यरञ्जन मन्दिर अपरनाम बोप्पणचैत्यालय निर्माण कराया था। यह लेख सन् ११३८ के लगभग का अनुमान किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि एचण का निर्माण कराया हुआ चैत्यालय कोई अन्य रहा होगा जो अब ध्वंस हो गया है और यह नेमिनाथ स्वामी की प्रतिमा वहीं से लाकर इस बस्ति में विराजमान करा दी गई है। मन्दिर के ऊपर के खण्ड में एक पार्श्वनाथ भगवान् की तीन फुट ऊँची मूर्त्ति है। उनके सिंहासन पर लेख है (नं० ६७) कि चामुण्डराज मन्त्री के पुत्र जिनदेव ने बेलगोल में एक जिन-भवन निर्माण कराया। अनुमान किया जाता है कि इस लेख का तात्पर्य मन्दिर के इसी ऊपरी भाग से है जो नीचे के खण्ड से कुछ पीछे बना होगा।

८ शासन बस्ति—मन्दिर के दरवाजे पर जो लेख (शासन नं० ५९) है, जान पड़ता है, उसी से इसका नाम शासनबस्ति पड़ा है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई ५५ × २६ फुट है। गर्भगृह में आदिनाथ भगवान् की पाँच फुट ऊँची मूर्त्ति है जिसके दोनों ओर चौरी-वाहक खड़े हुए हैं। सुखनासि में यक्ष यक्षिणी गोमुख और चक्रेश्वरी की प्रतिमाएँ हैं। बाहरी दीवालों में स्तम्भों और आलों की सजावट है। बीच-बीच में प्रतिमाएँ भी उत्कीर्ण हैं। आदिनाथ स्वामी के सिंहासन पर लेख है (नं० ६५) कि इस मन्दिर को गङ्गराज सेनापति ने "इन्दिराकुलगृह" नाम से निर्माण कराया। दरवाज़े पर के लेख में समाचार है कि शक सं० १०३९ फाल्गुण सुदि ५ को गङ्गराज ने 'परम' नाम के ग्राम का दान दिया। यह ग्राम उन्हें विष्णुवर्द्धन नरेश से मिला था। इसी समय से कुछ पूर्व मन्दिर बना होगा।

९ मज्जिगण्णबस्ति—इसकी लम्बाई-चौड़ाई ३२ × १९ फुट है। इसमें अनन्तनाथ स्वामी की साढ़े तीन फुट ऊँची प्रतिमा है। बाहरी दीवाल के आसपास फूलदार चित्रकारी के पत्थरों का घेरा है। मन्दिर के नाम से अनुमान होता है कि उसे किसी मज्जिगण्ण नाम के व्यक्ति ने निर्माण कराया होगा। पर समय निश्चित किये जाने के कोई साधन उपलब्ध नहीं हैं।

१० एरडुकट्टेबस्ति—इस मन्दिर का नाम उसके दायीं और बायीं बाजू पर की सीढ़ियों पर से पड़ा है। इसकी

लम्बाई-चौड़ाई ५५ × २६ फुट है। आदिनाथ स्वामी की मूर्ति पाँच फुट ऊँची है और प्रभावली से अलंकृत है। दोनों ओर चौरी-वाहक खड़े हैं। गर्भगृह के बाहर सुखनासि में यक्ष और यक्षिणी की मूर्तियाँ हैं। आदिनाथ स्वामी के सिंहासन पर लेख है (नं० ६३) कि इस मन्दिर को गङ्गराज सेनापति की भार्या लक्ष्मी ने निर्माण कराया था।—

११ सवतिगन्धवारणबस्ति—होय्सलनरेश विष्णुवर्द्धन की रानी का नाम शान्तल देवी और उपनाम 'सवतिगन्धवारण' (सौतों के लिए मस्त हाथी) था। इसी पर से इस मन्दिर का यह नाम पड़ा है। साधारणतः इसे गन्धवारण-बस्ति कहते हैं। मन्दिर विशाल है जिसकी लम्बाई-चौड़ाई ६६ × ३५ फुट है। शान्तिनाथ स्वामी की मूर्ति प्रभावली-संयुक्त पाँच फुट ऊँची है। दोनों ओर दो चौरीवाहक खड़े हैं। सुखनासि में यक्ष यक्षिणी किम्पुरुष और महामानसि की मूर्तियाँ हैं। गर्भगृह के ऊपर एक अच्छी गुम्मट है। बाहरी दीवालें स्तम्भों से अलंकृत हैं। दरवाजे पर के लेख (नं० ५६) और शान्तिनाथ स्वामी के सिंहासन पर के लेख (नं० ६२) से विदित होता है कि इस बस्ति को विष्णुवर्द्धन नरेश की रानी शान्तल देवी ने शक सं० १०४४ में निर्माण कराया था।

१२ तेरिनबस्ति—इस मन्दिर के सम्मुख एक रथ (तेर) के आकार की इमारत बनी हुई है। इसी से इसका

नाम तेरिनबस्ति पड़ा है। इसमें बाहुबलि स्वामी की मूर्त्ति है। इसी से इसे बाहुबलि बस्ति भी कहते हैं। इसकी लम्बाई चौड़ाई ७०×२६ फुट है। बाहुबलि स्वामी की मूर्त्ति पाँच फुट ऊँची है। सन्मुख के रथाकार मन्दिर पर चारों ओर बावन जिन-मूर्त्तियाँ खुदी हुई हैं। मन्दिर दो प्रकार के होते हैं नन्दीश्वर और मेरु। उक्त रथाकार मन्दिर नन्दीश्वर प्रकार का कहा जाता है। इस पर के लेख (नं० १३७ शक सं० १०३८) से विदित होता है कि इस मन्दिर और बस्ति को विष्णुवर्द्धन नरेश के समय के पोय्सल सेठ की माता माचिकब्बे और नेमि सेठ की माता शान्तिकब्बे ने निर्माण कराया था।

१३ शान्तीश्वर बस्ति—इसकी लम्बाई-चौड़ाई ५६×३० फुट है। *यह मन्दिर ऊँची सतह पर बना हुआ है।* इसकी गुम्मट पर अच्छी कारीगरी है। गर्भगृह के बाहर सुखनासि में यक्ष-यक्षियों की मूर्त्तियाँ हैं। पीछे की दीवाल के मध्य-भाग में एक आला है जिसमें एक खड्गासन जिन-मूर्त्ति खुदी हुई है। इस मन्दिर को कब और किसने निर्माण कराया, यह निश्चय नहीं हो सका है।

१४ कूगेब्रह्मदेवस्तम्भ—यह विशाल स्तम्भ चन्द्रगिरि पर्वत पर के घेरे के दक्षिणी दरवाजे पर प्रतिष्ठित है। इसके शिखर पर पूर्वमुखी ब्रह्मदेव की छोटी सी पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। इसकी पीठिका आठों दिशाओं में आठ हस्तियों पर प्रतिष्ठित रही है पर अब केवल थोड़े से ही हाथी

रह गये हैं। स्तम्भ के चारों ओर एक लेख है (नं० ३८) (५९) जो गङ्गनरेश मारसिंह द्वितीय की मृत्यु का स्मारक है। इस राजा की मृत्यु सन् ९७४ ईस्वी में हुई थी। अतः यह स्तम्भ इससे पहले का सिद्ध होता है।

१५ महानवमी मण्डप—कत्तले बस्ति के गर्भगृह के दक्षिण की ओर दो सुन्दर पूर्व-मुख चतुस्तम्भ मण्डप बने हुए हैं। दोनों के मध्य में एक एक लेखयुक्त स्तम्भ है। उत्तर की ओर के मण्डप के स्तम्भ की बनावट बहुत सुन्दर है। उसका गुम्मटाकार शिखर बहुत ही दर्शनीय है। उस पर के लेख नं० ४२ (६६) में **नयकीर्त्ति** आचार्य के समाधि-मरण का संवाद है जो सन् ११७६ में हुआ। यह स्तम्भ उनके एक श्रावक शिष्य नागदेव मन्त्री ने स्थापित कराया था। ऐसे ही अन्य अनेक मण्डप इस पर्वत पर विद्यमान हैं जिनमें लेख-युक्त स्तम्भ प्रतिष्ठित हैं। एक चामुण्डराय बस्ति के दक्षिण की ओर, एक एरडुकट्टे बस्ति से पूर्व की ओर और दो तेरिन बस्ति से दक्षिण की ओर पाये जाते हैं।

१६ भरतेश्वर—महानवमी मण्डप से पश्चिम की ओर एक इमारत है जो अब रसोईघर के काम में आती है। इस इमारत के समीप एक नव फुट ऊँची पश्चिममुख मूर्त्ति है जो बाहुबलि के भ्राता भरतेश्वर की बतलाई जाती है। मूर्त्ति एक भारी चट्टान में घुटनों तक खोदी जाकर अपूर्ण छोड़ दी गई है। इस मूर्त्ति से थोड़ी दूर पर जो शिलालेख नं० २५ (६१) है

उससे अनुमान होता है कि वह किसी अरिट्टोनेमि नाम के कारीगर की बनाई हुई है। पर यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता क्योंकि लेख का जितना भाग पढ़ा जाता है उससे केवल इतना ही अर्थ निकलता कि 'गुरु अरिट्टोनेमि' ने बनवाया। पर क्या बनवाया यह कुछ स्पष्ट नहीं है। अरिट्टोनेमि अरिष्टनेमि का अपभ्रंश है। लेख ईसा की नवमीं शताब्दि का अनुमान किया जाता है।

१७ इरुवे ब्रह्मदेव मन्दिर—जैसा कि ऊपर कह आये हैं, केवल यही एक मन्दिर इस पहाड़ी पर ऐसा है जो घेरे के बाहर है। यह घेरे के उत्तर-दरवाजे के उत्तर में प्रतिष्ठित है। यहाँ ब्रह्मदेव की मूर्त्ति विराजमान है। सम्मुख एक वृहत् चट्टान है जिस पर जिन-प्रतिमाएँ, हाथी, स्तम्भ आदि खुदे हुए हैं। कहीं-कहीं खोदनेवालों के नाम भी दिये हुए हैं। मन्दिर के दरवाजे पर जो लेख (नं० २३५) है उसकी लिपि से यह दसवीं शताब्दि के मध्य-भाग का अनुमान किया जाता है।

१८ कञ्चिन दोणे—इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर से वायव्य की ओर एक चौकोर घेरे के भीतर चट्टान में एक कुण्ड है। यही कञ्चिन दोणे कहलाता है। 'दोणे' का अर्थ एक प्राकृतिक कुण्ड होता है और 'कञ्चिन' का एक धातु जिससे घण्टा आदि बनते हैं। कहा नहीं जा सकता कि इस कुण्ड का यह नाम क्यों पड़ा। यहाँ कई छोटे-छोटे लेख हैं। एक लेख है 'गुरुकेल्लकदम्ब तरसि' (२८२) अर्थात् कदम्ब की आज्ञा

से तीन शिलाएँ यहाँ लाई गईं। इनमें की दो शिलाएँ अब भी यहाँ विद्यमान हैं और तीसरी शिला टूट-फूट गई है। कुण्ड के भीतर एक स्तम्भ है जिस पर यह लेख है—'मानभ आनन्द-संवच्छरदल्लि कट्टिसिद दोणेयु' (२४४) अर्थात् इस कुण्ड को मानभ ने आनन्द-संवत्सर में बनवाया था। यह संवत् सम्भवतः शक सं० १११६ होगा।

१९ लक्किदोणे—यह दूसरा कुण्ड घेरे से पूर्व की ओर है। सम्भवतः यह किसी लक्कि नाम की स्त्री-द्वारा निर्माण कराये जाने के कारण लक्किदोण नाम से प्रसिद्ध हुआ है। कुण्ड से पश्चिम की ओर एक चट्टान है जिस पर कोई बीस छोटे-छोटे लेख हैं जिनमें प्रायः यात्रियों के नाम अङ्कित हैं। इनमें कई जैन आचार्यों, कवियों और राजपुरुषों के नाम हैं (नं० २८४-३१४)।

२० भद्रबाहु की गुफा—कहा जाता है कि अन्तिम श्रुत-केवली भद्रबाहु स्वामी ने इसी गुफा में देहोत्सर्ग किया था। उनके चरण इस गुफा में अङ्कित हैं और पूजे जाते हैं। गुफा में एक लेख भी पाया गया था (नं० ७१ (१६६) पर यह लेख अब गुफा में नहीं है। हाल में गुफा के सन्मुख एक भद्दा सा दरवाजा बनवा दिया गया है।

२१ चामुण्डराय की शिला—चन्द्रगिरि पर्वत के नीचे एक चट्टान है जो इस नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि चामुण्डराय ने इसी शिला पर खड़े होकर विन्ध्यगिरि पर्वत की

ओर बाण चलाया था जिससे गोम्मटेश्वर की विशालमूर्ति प्रकट हुई थी। शिला पर कई जैन गुरुओं के चित्र हैं जिनके नाम भी अङ्कित हैं।

चन्द्रगिरि पर्वत पर के अधिकांश प्राचीनतम शिलालेख या तो पार्श्वनाथ बस्ति के दक्षिण की शिला पर उत्कीर्ण हैं या उस शिला पर जो शासन बस्ति और चामुण्डराय बस्ति के सन्मुख है।

विन्ध्यगिरि

यह पर्वत दोड्डबेट्ट अर्थात् बड़ी पहाड़ी के नाम से भी प्रख्यात है। यह समुद्रतल से ३,३४७ फुट और नीचे के मैदान से लगभग ४७० फुट ऊँचा है। कभी-कभी इन्द्रगिरि नाम से भी इस पर्वत का सम्बोधन किया जाता है। पर्वत के शिखर पर पहुँचने के लिये नीचे से लगाकर कोई ५०० सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। ऊपर समतल चौक है जो एक छोटे घेरे से घिरा हुआ है। इस घेरे में बीच-बीच में तलघर हैं जिनमें जिन-प्रतिबिम्ब विराजमान हैं। इस घेरे के चारों ओर कुछ दूरी पर एक भारी दीवाल है जो कहीं-कहीं प्राकृतिक शिलाओं से बनी हुई है। चौक के ठीक बीचों-बीच गोम्मटेश्वर की वह विशाल खड्गासन मूर्त्ति है, जो अपनी दिव्यता से उस समस्त भूभाग को अलङ्कृत और पवित्र कर रही है।

१ गोम्मटेश्वर—यह नग्न, उत्तर-मुख, खड्गासन मूर्ति समस्त संसार की आश्चर्यकारी वस्तुओं में से है। सिर के बाल घुँघराले, कान बड़े और लम्बे, वक्षस्थल चौड़ा, विशाल बाहु नीचे को लटकते हुए और कटि किञ्चित् क्षीण है। मुख पर अपूर्व कान्ति और अगाध शान्ति है। घुटनों से कुछ ऊपर तक बमीठे दिखाये गये हैं जिनसे सर्प निकल रहे हैं। दोनों पैरों और बाहुओं से माधवी लता लिपट रही है तिस पर भी मुख पर अटल ध्यान-मुद्रा विराजमान है। मूर्ति क्या है मानो तपस्या का अवतार ही है। दृश्य बड़ा ही भव्य और प्रभावोत्पादक है। सिंहासन एक प्रफुल्ल कमल के आकार का बनाया गया है। इस कमल पर बायें चरण के नीचे तीन फुट चार इञ्च का माप खुदा हुआ है। कहा जाता है कि इसको अठारह से गुणित करने पर मूर्ति की ऊँचाई निकलती है। जो हो, पर मूर्तिकार ने किसी प्रकार के माप के लिये ही इसे खोदा होगा। निस्सन्देह मूर्तिकार ने अपने इस अपूर्व प्रयास में अनुपम सफलता प्राप्त की है। एशिया खण्ड ही नहीं समस्त भूतल का विचरण कर आइये, गोम्मटेश्वर की तुलना करने-वाली मूर्ति आपको क्वचित् ही दृष्टिगोचर होगी। बड़े-बड़े पश्चिमीय विद्वानों के मस्तिष्क इस मूर्ति की कारीगरी पर चक्कर खा गये हैं। इतने भारी और प्रबल पाषाण पर सिद्धहस्त कारीगर ने जिस कौशल से अपनी छैनी चलाई है उससे भारत के मूर्तिकारों का मस्तक सदैव गर्व से ऊँचा उठा रहेगा। यह

सम्भव नहीं जान पड़ता कि ५७ फुट की मूर्ति खोद निकालने के योग्य पाषाण कहीं अन्यत्र से लाकर उस ऊँची पहाड़ी पर प्रतिष्ठित किया जा सका होगा। इससे यही ठीक अनुमान होता है कि उसी स्थान पर किसी प्रकृतिप्रदत्त स्तम्भाकार चट्टान को काटकर इस मूर्त्ति का आविष्कार किया गया है। कम से कम एक हज़ार वर्ष से यह प्रतिमा सूर्य, मेघ, वायु आदि प्रकृति-देवी की अमोघ शक्तियों से बातें कर रही है पर अब तक उसमें किसी प्रकार की थोड़ी भी क्षति नहीं हुई। मानो मूर्त्ति-कार ने उसे आज ही उद्घाटित की हो।

एक पहाड़ी के ऊपर प्रतिष्ठित इतनी भारी मूर्त्ति को मापना भी कोई सरल कार्य नहीं है। इसी से उसकी ऊँचाई के सम्बन्ध में मतभेद है। बुचानन साहब ने उसकी ऊँचाई ७० फुट ३ इञ्च और सर आर्थर वेल्सली ने ६० फुट ३ इञ्च दी है। सन् १८६५ में मैसूर के चीफ कमिश्नर मि० बौरिंग ने मूर्त्ति का ठीक ठीक माप कराकर उसकी ऊँचाई ५७ फुट दर्ज की थी। सन् १८७१ ईस्वी में मस्तकाभिषेक के समय कुछ सर-कारी अफ़सरों ने मूर्त्ति का माप लिया था जिससे निम्न-लिखित माप मिले :—

	फुट इञ्च
चरण से कर्ण के अधोभाग तक	५०—०
कर्ण के अधोभाग से मस्तक तक (लगभग)	६—६

	फुट इंच
चरण की लम्बाई	९—०
चरण के अग्रभाग की चौड़ाई	४—६
चरण का अंगुष्ठ	२—९
पादपृष्ठ की ऊपर की गुलाई	६—४
जंघा की अर्ध गुलाई	१०—०
नितम्ब से कर्ण तक	२४—६
पृष्ठ-अस्थि के अधोभाग से कर्ण तक	२०—०
नाभि के नीचे उदर की चौड़ाई	१३—०
कटि की चौड़ाई	१०—०
कटि और टेहुनी से कर्ण तक	१७—०
बाहुमूल से कर्ण तक	७—०
वक्षःस्थल की चौड़ाई	२६—०
ग्रीवा के अधोभाग से कर्ण तक	२—६
तर्जनी की लम्बाई	३—६
मध्यमा की लम्बाई	५—३
अनामिका की लम्बाई	४—७
कनिष्ठिका की लम्बाई	२—८

लगभग एक सौ वर्ष पुराने 'सरसजनचिन्तामणि' काव्य के कर्ता कविचक्रवर्ति शान्तराज पण्डित के बनाये हुए सोलह श्लोक मिले हैं जिनमें गोम्मटेश्वर की मूर्ति के माप इंच और अंगुलों में दिये हैं। अन्तिम श्लोक से पता चलता है कि

मैसुर-नरेश कृष्णराज ओडेयर तृतीय की आज्ञा से कवि ने स्वयं ये माप लिये थे। ये श्लोक नीचे उद्धृत किये जाते हैं।

जयति बेलुगुल-श्री-गोमटेशोस्य मूर्त्तः
परिमितमधुनाहं वच्मि सर्वत्र स्पर्शात्।
स्वसमयजनानां भावनादेशनार्थं
परसमयजनानामद्भुतार्थं च साक्षात् ॥ १ ॥

पादान्मस्तकमध्यदेशचरमं पादार्ध-युक्ता तु षट्-
त्रिंशद्धस्तमितोच्छ्रयोस्ति हि यथा श्रीदोर्बलि-स्वामिनः।
पादाद्विंशतिहस्तसन्निभमितिर्नाभ्यन्तमस्त्युच्छ्रयः
पादार्धान्वितषोडशोच्छ्रयभरो नाभेश्शिरोन्तं तथा ॥ २ ॥

चुबुकन्मूर्ध-पर्यन्तं श्रीमद्बाहुबलीशिनः।
मस्त्यङ्गुलि-त्रयी-युक्त-हस्त-षट्कप्रमोच्छ्रयः ॥ ३ ॥

पादत्रयाधिक्ययुक्त-द्विहस्तप्रमितोच्छ्रयः।
प्रत्येकं कर्णयोरस्ति भगवद्दोर्बलीशिनः ॥ ४ ॥

पश्चाद्भुजवलीशस्य तिर्यग्भागेस्ति कर्णयोः।
अष्ट-हस्त-प्रमोच्छ्रायः प्रमाकृद्भिः प्रकीर्तितः ॥ ५ ॥

सौनन्देः परितः कण्ठं तिर्यगस्ति मनोहरम्।
पाद-त्रयाधिक-दश-हस्त-प्रमित-दीर्घता ॥ ६ ॥

सुनन्दा तनुजस्यास्ति पुरस्तात्कण्ठ-सूच्छ्रयः।
पाद-त्रयाधिक्य-युक्त हस्त-प्रमिति निश्चितः ॥ ७ ॥

भगवद्गोमटेशस्यांसयोरन्तरमस्य वै।
तिर्यगायतिरस्त्यैव खलु षोडश-हस्त-मा ॥ ८ ॥

पश्चपृष्ठक-संलक्ष्य रेखाद्वितय-दीर्घता ।
नवाङ्गुलाधिकस्यैकचतुर्हस्तप्रमेशितुः ॥ ९ ॥
परितो मध्यमेतस्य परीतत्वेन विस्तृतः ।
अस्ति विंशतिहस्तानां प्रमाणं दोर्बलीशिनः ॥ १० ॥
मध्यमाङ्गुलिपर्यन्तं स्कन्धाद्दैर्घ्यमीशितुः ।
बाहु-युग्मस्य पादाभ्यां युताष्टादशहस्तमा ॥ ११ ॥
मणिबन्धस्यास्य तिर्यक्परीतत्वात्तामन्ततः ।
द्विपादाधिक-षड्-हस्त-प्रमाणं परिगण्यते ॥ १२ ॥
हस्ताङ्गुष्ठोग्रयोरस्यैकाङ्गुष्ठात्पद्द्विहस्त-मा ।
लक्ष्यते गोम्मटेशस्य जगदाश्चर्यकारिणः ॥ १३ ॥
पादाङ्गुष्ठस्यास्य दैर्घ्यं द्विपादाधिकता-युतः ।
चतुष्टयस्य हस्तानां प्रमाणमिति निश्चितम् ॥ १४ ॥
दिव्य-श्रीपाद-दीर्घत्वं भगवद्गोमटेशिनः ।
सैकाङ्गुल-चतुर्हस्त-प्रमाणमिति वर्णितम् ॥ १५ ॥
श्रीमत्कृष्णनृपालकारितमहासंरोक-पूर्णोत्सवे
शिष्ट्या तस्य कटाक्षरोषिरगृतश्चातेन शान्तेन वै ।
आनीतं कवियमवरपुंदतर-श्रीशान्तराजेन तद्
वीरस्येत्थं परिमाणमलशिदाकारीदमेतद्विभोः ॥ १६ ॥

इसका निम्नलिखित तात्पर्य निकलता है—

	हस्त अंगुल
चरण से मस्तक तक	३६[illegible]—०
चरण से नाभि तक	२०—०

	हाथ अंगुल
[illegible] से मस्तक तक	११½—०
चिबुक से मस्तक तक	६—१
कर्ण की लम्बाई	३½—०
एक कर्ण से दूसरे कर्ण तक	८—०
माथे की चौड़ाई	१०½—०
माथे की लम्बाई	११—०
एक कन्धे से दूसरे कन्धे तक	१६—०
[illegible]	४—०
कटि की चौड़ाई	५७—०
[illegible]	१८—०
[illegible]	६½—०
[illegible]	३½—०
[illegible]	[illegible]
[illegible]	४—१

[illegible]

[illegible]

नाम ऋषभदेव प्रथम तीर्थङ्कर के पुत्र थे। इनका नाम बाहुबलि या भुजबलि भी था। इनके ज्येष्ठ भ्राता भरत थे। ऋषभदेव के दीक्षा धारण करने के पश्चात् भरत और बाहुबलि दोनों भ्राताओं में राज्य के लिये युद्ध हुआ जिसमें बाहुबलि की विजय हुई। पर संसार की गति से विरक्त हो उन्होंने राज्य अपने ज्येष्ठ भ्राता भरत को दे दिया और आप तपस्या के हेतु वन को चले गये। थोड़े ही काल में घोर तपस्या कर उन्होंने केवल ज्ञान प्राप्त किया। भरत ने, जो अब चक्रवर्ति राजा हो गये थे, पौदनपुर में उनकी शरीराकृति के अनुरूप ५२५ धनुष की प्रतिमा स्थापित कराई। समयानुसार मूर्त्ति के आसपास का प्रदेश कुक्कुट-सर्पों से व्याप्त हो गया जिससे उस मूर्त्ति का नाम कुक्कुटेश्वर पड़ गया। धीरे-धीरे वह मूर्त्ति लुप्त हो गई और उसके दर्शन केवल दीक्षित व्यक्तियों को मंत्रशक्ति से प्राप्य हो गये। चामुण्डराय मंत्री ने इस मूर्त्ति का वर्णन सुना और उन्हें उसके दर्शन करने की अभिलाषा हुई। पर पौदनपुर की यात्रा अशक्य जान उन्होंने उसी के समान स्वयं मूर्त्ति स्थापित कराने का विचार किया और तदनुसार इस मूर्त्ति का निर्माण कराया। इस वार्त्ता के पश्चात् लेख में मूर्त्ति का वर्णन है। यही वर्णन थोड़े-बहुत हेर-फेर के साथ भुजबलिशतक, भुजबलि-चरित, गोम्मटेश्वर-चरित, राजावलिकथा और स्थलपुराण में भी पाया जाता है। इनमें से पहले काव्य को छोड़ शेष सब कनाड़ी भाषा में हैं। ये सब ग्रंथ १६वीं

शताब्दि से लगाकर १९वीं शताब्दि तक के हैं। भुजबलि-चरित में वर्णन है कि आदिनाथ के दो पुत्र थे; भरत, रानी यशस्वती से और भुजबलि, रानी सुनन्दा से। भुजबलि का विवाह इच्छा देवी से हुआ था और वे पौदनपुर के राजा थे। कुछ मतभेद के कारण दोनों भाइयों में युद्ध हुआ और भरत को पराजय हुई। पर भुजबलि राज्य त्यागकर मुनि हो गये। भरत ने ५२५ मारु* प्रमाण भुजबलि की स्वर्णमूर्ति बनवाकर स्थापित कराई। कुक्कुट सर्पों से व्याप्त हो जाने के कारण केवल देव ही इस मूर्त्ति के दर्शन कर पाते थे। एक जैनाचार्य जिनसेन दक्षिण मथुरा को गये और उन्होंने इस मूर्त्ति का वर्णन चामुण्ड-राय की माता काललदेवी को सुनाया। उसे सुनकर माताजी ने प्रण किया कि जब तक गोम्मट देव के दर्शन न कर लूँगी, दूध नहीं खाऊँगी। जब अपनी पत्नी अजितादेवी के मुख से यह संवाद चामुण्डराय ने सुना तब वे अपनी माता को लेकर पौदनपुर की यात्रा को निकल पड़े। मार्ग में उन्होंने श्रवण-बेलगोल की चन्द्रगुप्त बस्ती में पार्श्वनाथ भगवान् के दर्शन किये और भद्रबाहु के चरणों की वन्दना की। उसी रात्रि को पद्मावती देवी ने उन्हें स्वप्न दिया कि कुक्कुट सर्पों के कारण पौदनपुर की वन्दना तुम्हारे लिये असम्भव है। पर तुम्हारी

* दोनों बाहुओं को फैलाने से एक हाथ की अंगुली के अग्रभाग से लगाकर दूसरे हाथ की अंगुली के अग्रभाग तक जितना अन्तर होता है उसे 'मारु' कहते हैं।

भक्ति से प्रसन्न होकर गोम्मटेश्वर तुम्हें यहीं बड़ी पहाड़ी (विन्ध्यगिरि) पर दर्शन देंगे। तुम शुद्ध होकर इस छोटी पहाड़ी (चन्द्रगिरि) पर से एक स्वर्ण बाण छोड़ो, और भगवान के दर्शन करो। माता जी को भी ऐसा ही स्वप्न हुआ। दूसरे दिन प्रातःकाल ही चामुण्डराय ने स्नान-पूजन से शुद्ध हो छोटी पहाड़ी की एक शिला पर अवस्थित होकर, दक्षिण दिशा को मुख करके एक स्वर्ण बाण छोड़ा जो बड़ी पहाड़ी के मस्तक पर की शिला में जाकर लगा। बाण के लगते ही गोम्मट स्वामी का मस्तक दृष्टिगोचर हुआ। फिर जैनगुरु ने हीरे की छैनी और मोती के हथौड़े से ज्योंही शिला पर प्रहार किया त्योंही शिला के पाषाण-खण्ड अलग जा गिरे और गोम्मटेश्वर की पूरी प्रतिमा निकल आई। फिर कारीगरों से चामुण्डराय ने दक्षिण बाजू पर ब्रह्मदेव सहित पाताल गम्भ, सन्मुख ब्रह्मदेव-सहित यक्ष-गम्भ, ऊपर का खण्ड, ब्रह्मसहित त्यागद कम्भ, अखण्ड बागिलु नामक दरवाजा और यत्र-तत्र सीढ़ियाँ बनवाई।

इसके पश्चात् अभिषेक की तैयारी हुई। पर जितना भी दुग्ध चामुण्डराय ने एकत्रित कराया उससे मूर्ति की जंघा से नीचे के स्नान नहीं हो सके। चामुण्डराय ने घबराकर गुरु से सलाह ली। उन्होंने आदेश दिया कि जो दुग्ध एक वृद्धा स्त्री अपनी 'गुल्लकायि' में लाई है उससे स्नान कराओ। आश्चर्य कि उस अत्यल्प दुग्ध की धारा गोम्मटेश के मस्तक पर छोड़ते ही समस्त मूर्ति के स्नान हो गये और सारी पहाड़ी पर दुग्ध

पहाड़ी पर विराजमान कर उनकी पूजन-अर्चन किया करते थे। जाते समय वे इन मूर्त्तियों को उठाने में असमर्थ हुए, इसी से वे उन्हें उसी स्थान पर छोड़कर चले गये।

उपर्युल्लिखित प्रमाणों से यह निर्विवादत: सिद्ध होता है कि गोम्मटेश्वर की स्थापना चामुण्डराय द्वारा हुई है। शिलालेख नं० ८५ (२३४), १०५ (२५४), ७६ (१७५) और ७५ (१७६) भी यही बात प्रमाणित करते हैं। शिलालेख नं० ७५, ७६ मूर्त्ति के आस-पास ही खुदे हैं और मूर्त्ति के निर्माण समय के ही प्रतीत होते हैं। चामुण्डराय कौन थे? भुजबलिशतक आदि ग्रन्थों से विदित होता है कि चामुण्डराय गङ्गनरेश राचमल्ल के मन्त्री थे। शिलालेख नं० १३७ (१४५) से भी यही सिद्ध होता है। राचमल्ल के राज्य की अवधि सन् ९७४ से ९८४ तक बाँधी गई है। अत: गोम्मटेश्वर की स्थापना इसी समय के लगभग होना चाहिये। चामुण्डराय का बनाया हुआ एक चामुण्डराय पुराण मिलता है। इसमें ग्रंथ-समाप्ति का समय शक सं० ९०० (सन् ९७८ ईस्वी) दिया हुआ है। इसमें चामुण्डराय के कृत्यों का वर्णन पाया जाता है पर गोम्मटेश्वर की प्रतिष्ठा का कहीं उल्लेख नहीं है। इससे अनुमान होता है कि उक्त ग्रन्थ की रचना के समय (सन् ९७८ ई०) तक चामुण्डराय को इस महत्कार्य के सम्पादन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। बाहुबलि-चरित्र में गोम्मटेश्वर की प्रतिष्ठा का समय इस प्रकार दिया है :—

"कल्क्यब्दे षट्शताख्ये विनुतविभवसंवत्सरे मासि चैत्रे
पञ्चम्यां शुक्लपक्षे दिनमणिदिवसे कुम्भलग्ने सुयोगे।
सौभाग्ये मस्तनाम्नि प्रकटित भगरणे सुप्रशस्तां चकार
श्रीमच्चामुण्डराजो बेल्गुलनगरे गोमटेशप्रतिष्ठाम्॥"

अर्थात् कल्कि सवत् ६०० में विभव संवत्सर में चैत्र शुक्ल ५ रविवार को कुम्भलग्न, सौभाग्य योग, मस्त (मृगशिरा) नक्षत्र में चामुण्डराज ने बेल्गुल नगर में गोमटेश की प्रतिष्ठा कराई। विद्याभूषण, काव्यतीर्थ, प्रो० शरच्चन्द्र घोषाल ने इस अनुमान पर कि यह तिथि गङ्गनरेश राचमल्ल के समय में (सन् ९७४ और ९८४ के बीच) ही पड़ना चाहिये, उक्त तिथि को तारीख २ अप्रेल ९८० ईस्वी के बराबर माना है। उनके कथनानुसार इस तारीख को रविवार चैत्र शुक्ल ५ तिथि थी और कुम्भ लग्न भी पड़ा था। हमने इस तारीख का मि० स्वामी कन्नूपिलाई के 'इंडियन एफेमेरिस' से मिलान किया तो २ अप्रेल ९८० ईस्वी को दिन शुक्रवार और तिथि १४ पायी। न जाने प्रोफेसर साहब ने किस आधार पर उस तारीख को रविवार और पञ्चमी तिथि मान लिया है। इसके अतिरिक्त प्रोफेसर साहब की तारीख में एक और भारी त्रुटि है। ऊपर उद्धृत श्लोक में संवत्सर का नाम 'विभव' दिया हुआ है। पर सन् ९८० ईस्वी (शक सं० ९०२) 'विभव' नहीं 'विक्रम' संवत्सर था। इन कारणों से प्रो० घोषाल की निश्चित की हुई तिथि में सन्देह होता है।

उपर्युक्त श्लोक में कल्कि संवत् ६०० में गोमटेश की प्रतिष्ठा होना कहा है। कल्कि कौन था और उसका संवत् कब से चला? हरिवंशपुराण, उत्तरपुराण, त्रिलोकसार और त्रिलोकप्रज्ञप्ति में कल्कि राजा का उल्लेख पाया जाता है। कल्कि का दूसरा नाम चतुर्मुख था। त्रिलोकप्रज्ञप्ति में कल्कि का समय इस प्रकार दिया है :—

णिव्वाणगदे वीरे चउसदइगिसट्ठिवासविच्छेदे।
जादो च सगणरिंदो रज्जं वस्सस्स दुसय बादाला ॥६३॥
दोण्णि सदा पणवण्णा गुत्ताणं चउमुहस्स बादालं।
वस्सं होदि सहस्सं केई एवं परूवंति ॥६४॥

अर्थात्—वीर निर्वाण के ४६१ वर्ष बीतने पर शक राजा हुआ, और इस वंश के राजाओं ने २४२ वर्ष राज्य किया। उनके पश्चात् गुप्तवंशी नरेशों का २५५ वर्ष तक राज्य रहा और फिर चतुर्मुख (कल्कि) ने ४२ वर्ष राज्य किया। कोई-कोई लोग इस तरह (४६१ + २४२ + २५५ + ४२ = १०००) एक हजार वर्ष बतलाते हैं। अन्य ग्रंथों में भी कल्कि का समय महावीर के निर्वाण से १००० वर्ष पश्चात् माना गया है। पर इन ग्रंथों में इस बात पर मत-भेद है कि निर्वाण संवत् से १००० वर्ष पीछे कल्कि का जन्म हुआ या मृत्यु। ऊपर हमने जिस मत का उल्लेख किया है उसके अनुसार १००० वर्ष में कल्कि के राज्य के ४२ वर्ष भी सम्मिलित हैं। अतः इस मत के अनुसार निर्वाण सं० १००० कल्कि की मृत्यु

का है। जिन मन्दों में कल्कि का उल्लेख पाया जाता है उन सबके अनुसार निर्वाण का समय शक सं० से ६०५ वर्ष, विक्रम सं० से ४७० वर्ष व ईस्वी सन् से ५२७ वर्ष पूर्व पड़ता है। अतएव कल्कि मृत्यु का समय सन् ४७२ ईस्वी आता है।

संवत् बहुधा राजा के राज्य-काल से प्रारम्भ किये जाते हैं। अतः कल्कि संवत् सन् ४७२—४२ = ४३० ईस्वी से प्रारम्भ हुआ होगा। गोम्मटेश की प्रतिष्ठा का समय कल्कि संवत् ६०० कहा गया है जो ऊपर की गणना के अनुसार सन् ईस्वी १०३० के बराबर है। हमने स्वामी कन्नूपिल्लाई के इण्डियन एफेमेरिस से इस संवत् के लगभग उपर्युक्त तिथि, वार, नक्षत्र आदि का मिलान किया तो २३ मार्च सन् १०२८ को चैत्र सुदि ५ रविवार पाया। इस दिन मृगशिरा नक्षत्र और सौभाग्य योग भी वर्तमान थे, और दक्षिणी गणना के अनुसार यह संवत्सर भी विभव था। इस प्रकार बाहुबलिचरित में दी हुई समस्त बातें इस तिथि में घटित होती हैं, जिससे विश्वास होता है कि गोम्मटेश की प्रतिष्ठा का ठीक समय सन् १०२८,२३ मार्च (शक सं० ९५१) है।*

इस तिथि के विरोध में केवल एक किंवदन्ती का प्रमाण प्रस्तुत किया जा सकता है। वह किंवदन्ती यह है कि गोम-

* उपर्युक्त विवेचन लिखे जाने के पश्चात् हमें मैसूर आर्किलाजिकल रिपोर्ट १९२३ देखने को मिली। इसमें डा० शाम शास्त्री ने विस्तृत रूप से इसी बात को प्रमाणित किया है।

टेश की मूर्त्ति की प्रतिष्ठा राचमल्लनरेश के समय में ही हुई थी और इस नरेश का समय शिलालेखों के आधार पर सन् ९७४ से ९८४ तक निश्चित किया गया है। पर इस किंवदन्ती पर विशेष ज़ोर नहीं दिया जा सकता क्योंकि एक तो इसके लिये कोई शिलालेखों का प्रमाण नहीं है और दूसरे यह कथन केवल भुजबलिशतक में ही पाया जाता है, जिसकी रचना का समय ईसा की सोलहवीं शताब्दि अनुमान किया जाता है। जिन अन्य ग्रन्थों में गोम्मटेश की प्रतिष्ठा का कथन है उनमें यह कहीं नहीं कहा गया कि यह कार्य राचमल्ल के जीते ही हुआ था। सन् ९७८ ईस्वी में रचे जानेवाले चामुण्डराय पुराण से यह निश्चित है ही कि उस समय तक मूर्त्ति की स्थापना नहीं हुई थी, और सन् १०२८ से पहले के किसी शिलालेख में इस प्रतिष्ठा का समाचार नहीं पाया जाता।

एक बात और है जिसके कारण ऊपर निश्चित किया हुआ समय ही गोमटेश की प्रतिष्ठा के लिये ठीक प्रतीत होता है। कहा जाता है कि नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्त्ति चामुण्डराय के गुरु थे और गोमटेश की प्रतिष्ठा के समय उनके साथ थे। द्रव्य-संग्रह नामक ग्रन्थ के टीकाकार ब्रह्मदेव ने ग्रन्थ के मूलकर्त्ता नेमिचन्द्र को धाराधीश भोजदेव के समकालीन कहा है। ऊपर निश्चित किये हुए समय के अनुसार यह कथन अयुक्ति-सङ्गत नहीं कहा जा सकता क्योंकि भोजदेव

का राज्य-काल उस समय विद्यमान था। भोजदेव के सन् १०१६, १०२२ और १०४२ ईस्वी के उल्लेख मिले हैं।

कुछ वर्षों के अन्तर से गोम्मटेश्वर का मस्तकाभिषेक होता है, जो बड़ी धूमधाम, बहुत क्रियाकाण्ड और भारी द्रव्य-व्यय के साथ मनाया जाता है। इसे महाभिषेक भी कहते हैं। इस मस्तकाभिषेक का सबसे प्राचीन उल्लेख शक सं० १३२० के लेख नं० १०५ (२५४) में पाया जाता है। इस लेख में कथन है कि पण्डितार्य ने सात बार गोम्मटेश्वर का मस्तकाभिषेक कराया था। पञ्चबाण कवि ने सन् १६१२ ईस्वी में शान्तवर्णि-द्वारा कराये हुए मस्तकाभिषेक का उल्लेख किया है, व अनन्त कवि ने सन् १६७७ में मैसूर नरेश चिक्कदेवराज ओडेयर के मन्त्री विशालाक्ष पण्डित-द्वारा कराये हुए और शान्तराज पण्डित ने सन् १८२५ के लगभग मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर तृतीय द्वारा कराये हुए मस्तकाभिषेक का उल्लेख किया है। शिलालेख नं० ९८ (२२३) में सन् १८२७ में होनेवाले मस्तकाभिषेक का उल्लेख है। सन् १९०९ में भी मस्तकाभिषेक हुआ था। अभी तक सबसे अन्तिम अभिषेक हाल ही में—मार्च सन् १९२५ में—हुआ है जिसके विषय में 'वीर' पत्र में यह समाचार प्रकाशित हुआ है—" ता० १५-३-२५ को श्रीमान् महाराजा कृष्णराज बहादुर मैसूर अपने दो सालों-सहित पहाड़ पर पधारे और अपनी तरफ से अभिषेक कराया। बन्दोबस्त बहुत अच्छा था। आज लगभग ३०,००० मनुष्य

अभिषेक देख सके जिसमें करीब पाँच हजार विन्ध्यगिरि पर थे और शेष सब चन्द्रगिरि पहाड़ पर इधर-उधर बैठकर दूर से अभिषेक देखते थे। महाराजा ने अभिषेक के लिए पाँच हजार रुप्या प्रदान किये। उन्होंने स्वयं गोम्मटस्वामी की प्रदक्षिणा की, नमस्कार किया तथा द्रव्य से पूजन की व कुछ रुपये प्रतिमाजी व भट्टारकजी को भेंट किये व भट्टारकजी को नमस्कार किया। सुबह ९ बजे से दोपहर एक बजे तक इस प्रथम अभिषेक का कार्य अतीव आनन्द व धर्म-प्रभावना के साथ हुआ। इस अभिषेक में जल, दुग्ध, दही, केला, पुष्प, नारियल व चुरमा, घृत, चन्दन, सर्वोषधि, इक्षुरस, लाल चन्दन, बदाम, खारक गुड, शक्कर, खसखस, फूल, चने की दाल आदि का अभिषेक उपाध्यायों द्वारा मचान पर से हुआ।"

कहा जाता है कि जब होयसल-नरेश विष्णुवर्द्धन जैन-धर्म को छोड़ वैष्णव धर्मावलम्बी हो गया तब रामानुजाचार्य ने गोम्मट की मूर्त्ति को तुड़वा डाला; पर इस कथन में कोई सत्य का अंश प्रतीत नहीं होता क्योंकि मूर्त्ति आज तक सर्वथा अक्षत है।

गोम्मटेश्वर की दो और विशाल मूर्त्तियाँ विद्यमान हैं। ये दोनों दक्षिण कनाड़ा जिले में ही हैं; एक कारकल में और दूसरी एनूर में। कारकल की मूर्त्ति ४१ फुट ५ इञ्च ऊँची है। इसे सन् १४३२ ईस्वी में जैनाचार्य ललितकीर्त्ति के उपदेश से वीर पाण्ड्य ने प्रतिष्ठित कराई थी। एनूर की मूर्त्ति ३५ फुट ऊँची है और सन् १६०४ में चारुकीर्त्ति पण्डित के

उपदेश से चामुण्डवंशीय 'विम्मराज' द्वारा प्रतिष्ठित की गई थीं। इन तीनों मूर्तियों की बनावट प्रायः एक सी ही है। वमीठे, सर्प और लताएँ तीनों में एक से ही दिखाये गये हैं।

विन्ध्यगिरि के गोम्मटेश्वर की दोनों बाजुओं पर यक्ष और यक्षिणी की मूर्तियाँ हैं, जिनके एक हाथ में चौरी और दूसरे में कोई फल है। मूर्ति के बायीं ओर एक गोल पाषाण का पात्र है जिसका नाम 'ललितसरोवर' खुदा हुआ है। मूर्ति के अभिषेक का जल इसी में एकत्र होता है। इस पाषाण-पात्र के भर जाने पर अभिषेक का जल एक प्रणाली-द्वारा मूर्ति के सम्मुख एक कुएँ में पहुँच जाता है और वहाँ से वह मन्दिर की सरहद के बाहर एक कन्दरा में पहुँचा दिया जाता है। इस कन्दरा का नाम 'गुल्लकायज्जि बागिलु' है। मूर्ति के सम्मुख का मण्डप नव सुन्दर खचित छतों से सजा हुआ है। आठ छतों पर अष्ट दिक्पालों की मूर्तियाँ हैं और बीच की नवमी छत पर गोम्मटेश के अभिषेक के लिये हाथ में कलश लिये हुए इन्द्र की मूर्ति है। ये छत बड़ी कारीगरी के बने हुए हैं। मध्य की छत पर खुदे हुए शिलालेख (नं० ३५१) से अनुमान होता है कि यह मण्डप बलदेव मन्त्री ने १२ वीं शताब्दि के प्रारम्भ में किसी समय निर्माण कराया था। शिलालेख नं० ११५ (२६७) से विदित होता है कि सेनापति भरतमय्य ने इस मण्डप का कठघरा (हप्पलिगे) निर्माण कराया था। शिलालेख नं० ७८ (१८२) में कथन है कि नय

चक्रवर्ति के शिष्य बसविसेट्टि ने कठघरे की दीवाल और चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ निर्माण कराई थीं और उसके पुत्रों ने उन प्रतिमाओं के सम्मुख जालीदार खिड़कियाँ बनवाईं। शिलालेख नं० १०३ (२२८) से ज्ञात होता है कि चङ्गाल्व-नरेश महादेव के प्रधान सचिव केशवनाथ के पुत्र चन्न बोम्मरस और नञ्जरायपट्टन के श्रावकों ने गोम्मटेश्वरमण्डप के ऊपर के खण्ड (पडिसाल) का जीर्णोद्धार कराया।

परकोटा—गोम्मटेश्वर की दोनों बाजुओं पर खुदे हुए शिलालेख नं० ७५ (१८०) व ७६ (१७७) से विदित होता है कि गोम्मटेश्वर का परकोटा गङ्गराज ने निर्माण कराया था। यही बात लेख नं० ४५ (१२५), ५९ (७३), ९० (२४०) व ५८१ से भी सिद्ध होती है। गङ्गराज होयसल नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति थे। उपर्युक्त शिलालेख शक सं० १०४० व उसके पश्चात् के हैं। इसके पहले के शिलालेखों में परकोटे का उल्लेख नहीं है। इससे सिद्ध होता है कि शक सं० १०३९ के लगभग ही इसका निर्माण हुआ है।

परकोटे के भीतर मण्डपों में इधर-उधर कुल ४३ जिन-मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं, जो इस प्रकार हैं—

आदि	१	सुमति	१	शीतल	२	अनन्त	१
अजित	२	सुपार्श्व	१	श्रेयांस	१	धर्म	१
संभव	२	चन्द्रप्रभ	३	वासुपूज्य	१	शान्ति	१
अभिनन्दन	२	पुष्पदन्त	२	विमल	२	कुन्थु	१

अर १ मुनिसुव्रत २ नेमि २ वर्द्धमान १
मल्लि २ नमि १ पार्श्व ४ बाहुबलि १
कुष्माण्डिनि २ १ (अज्ञात)

अधिकांश मूर्तियां ४ फुट ऊँची हैं। पांच-छः मूर्तियां पांच फुट, एक छः फुट व दो-तीन मूर्तियां तीन साढ़े-तीन फुट की हैं। एक चन्द्रप्रभ की व अन्तिम अज्ञात मूर्ति को छोड़कर शेष जिन मूर्तियों पर लेख हैं वे सब नयकीर्ति सिद्धान्तदेव और उनके शिष्य बालचन्द्र अध्यात्मि के समय की सिद्ध होती हैं। लेख नं० ७८ (१८२) व ३२७ (१५०) से ज्ञात होता है कि नयकीर्ति के शिष्य बसविसेट्टि ने यहां चतुर्विंशति तीर्थंकरों की प्रतिष्ठा कराई थी। पर केवल तीन मूर्तियों पर बसविसेट्टि का नाम पाया जाता है (लेख नं० ३१७, ३१८, ३२७)। उपर्युक्त मूर्तियों में पद्मप्रभ तीर्थंकर की कोई मूर्ति नहीं है। चन्द्रप्रभ की एक मूर्ति पर मारवाड़ी में लेख है कि शके (विक्रम) संवत् १६३५ में चंतजीरामलजी व अन्य सज्जनों ने प्रतिष्ठित कराई थी (३३१)। अज्ञात मूर्ति डेढ़ फुट की है। इस पर मारवाड़ी में लेख है कि शके (विक्रम) संवत् १५४८ में मगुशाजी जगद.. ...ने प्रतिष्ठित कराई (३३६)।

परकोटे के द्वारे पर दोनों बाजुओं पर छः छः फुट ऊँचे द्वारपालक हैं। परकोटे के बाहर गोम्मटेश्वर के ठीक सम्मुख लगभग छः फुट की ऊँचाई पर ब्रह्मदेवस्तम्भ है। इसमें ब्रह्मदेव की पद्मासन मूर्ति है। ऊपर गुम्मट है। स्तम्भ के नीचे कोई

पाँच फुट ऊँची 'गुल्लकायज्जि' की मूर्त्ति है, जिसके हाथ में 'गुल्लकायि' है। जन-श्रुति के अनुसार यह स्तम्भ और गुल्लकायज्जि की मूर्त्ति दोनों स्वयं चामुण्डराय ने प्रतिष्ठित कराये थे।

२ सिद्धर बस्ति—यह एक छोटा सा मन्दिर है जिसमें तीन फुट ऊँची सिद्ध भगवान् की मूर्त्ति विराजमान है। मूर्त्ति के दोनों ओर लगभग छः-छः फुट ऊँचे खचित स्तम्भ हैं। ये स्तम्भ महानवमी मण्डप के स्तम्भ के समान ही उच्च कारीगरी के बने हुए हैं। दायीं बाजू के स्तम्भ पर अर्हद्दास कवि का रचा हुआ पण्डितार्य की प्रशस्तिवाला बड़ा भारी सुन्दर लेख है [१०५ (२५४)] जिसके अनुसार पण्डितार्य की मृत्यु शक संवत् १३२० में हुई थी। इस स्तम्भ में पीठिका पर विराजमान, शिष्य को उपदेश देते हुए, एक आचार्य का चित्र है। शिष्य सन्मुख बैठा है। दूसरे चित्र में जिनमूर्त्ति है। बायीं बाजू के स्तम्भ पर मङ्गराज कवि का रचा हुआ सुन्दर लेख है [१०८ (२५८)] जिसमें शक सं० १३५५ में श्रुतमुनि के स्वर्गवास का उल्लेख है।

३ अखण्ड बागिलु—यह एक दरवाजे का नाम है। यह नाम इसलिये पड़ा क्योंकि यह पूरा दरवाजा एक अखण्ड शिला को काटकर बनाया गया है। दरवाजे का ऊपरी भाग बहुत ही सुन्दर खचित है। इसमें लक्ष्मी की पद्मासन मूर्त्ति खुदी है जिसको दोनों ओर से दो हाथी स्नान करा रहे हैं। जन-श्रुति के अनुसार यह द्वार भी चामुण्डराय ने निर्माण

कराया था। दरवाजे के दोनों ओर दायें-बायें क्रमशः बाहुबलि और भरत की मूर्त्तियाँ हैं। इन पर जो लेख हैं (३६८-३६९) उनसे विदित होता है कि वे गण्डविमुक्त सिद्धान्तदेव के शिष्य दण्डनायक भरतेश्वर द्वारा प्रतिष्ठित की गई हैं। इनका समय शक सं० १०५२ के लगभग प्रतीत होता है। इन मूर्तियों की प्रतिष्ठा का उल्लेख शिलालेख नं० ११५ (२६७) में भी आया है जिसके अनुसार ये मूर्त्तियाँ दरवाजे की शोभा बढ़ाने के लिये स्थापित की गई हैं। इस लेख के अनुसार इस दरवाजे की सीढ़ियाँ भी उक्त दण्डनायक ने ही निर्माण कराई हैं।

४ सिद्धरगुण्डु—अखण्ड दरवाजे की दाहिनी ओर एक वृहत् शिला है जिसे 'सिद्धर गुण्डु' (सिद्ध-शिला) कहते हैं। इस शिला पर अनेक लेख हैं। ऊपरी भाग की कई सतरों में जैनाचार्यों के चित्र हैं। कुछ चित्रों के नीचे नाम भी अङ्कित हैं।

५ गुल्लकायज्जियागिलु—यह एक दूसरे दरवाजे का नाम है। इस दरवाजे की दाहिनी ओर एक शिला पर एक बैठी हुई स्त्री का चित्र खुदा है। यह लगभग एक फुट का है। इसे लोगों ने गुल्लकायज्जि का चित्र समझ लिया है। इसी से उक्त दरवाजे का नाम गुल्लकायज्जियागिलु पड़ गया। पर चित्र के नीचे जो लेख (४१८) पाया गया है उससे विदित होता है कि वह एक मल्लिसेट्टि की पुत्री का चित्र है। गुल्लकायि की मूर्त्ति का वर्णन ऊपर कर ही चुके हैं।

६ स्मारक प्रसदेव स्तम्भ—यह स्मारक वेद (स्त[illegible] स्तम्भ) भी कहलाता है क्योंकि कहा जाता है कि यहाँ [illegible] दिया जाता था। इस स्तम्भ की कारीगरी दर्शनीय है। [illegible] जाता है कि यह स्तम्भ [illegible] है [illegible] नीचे से प्रमाण निकाल [illegible] जा सकता है। यह भी वस्तुपाल द्वारा स्थापित कहा जाता है और स्तम्भ पर खुदे हुए लेख नं० १०७ (२८१) से भी यह बात प्रमाणित होती है। इस लेख में वस्तुपाल के [illegible] का वर्णन है। दुर्भाग्यवश यह लेख पूरा पढ़ा नहीं जा सका। ज्ञात होता है कि [illegible] [नं० ११० (९८३)] दिखाने के लिये वस्तुपाल का लेख [illegible]। यदि यह लेख पूरा मिल जाता तो [illegible] की [illegible] का [illegible] भी ज्ञात हो जाता [illegible] आबू पर दो मूर्तियाँ खुदी हुई हैं [illegible] मूर्तियाँ, जिनके दोनों ओर [illegible] हुए हैं, [illegible] जाती हैं।

७ [illegible] —यह [illegible] है। [illegible] मूर्ति है। [illegible]

है। सम्भव है कि ये मूर्तियां चैमण्ण और उनकी धर्मपत्नी की हों। बस्ति से ईशान की ओर दो दोणे (कुण्डों) के बीच एक मण्डप बना हुआ है। उपर्युक्त लेख में सम्भवतः इसी मण्डप का उल्लेख है।

८ ओदेगल बस्ति—इसे त्रिकूट बस्ति भी कहते हैं क्योंकि इसमें तीन गर्भगृह हैं। चन्द्रगिरि पर्वत की शान्तीश्वर बस्ति के समान यह बस्ति भी खूब ऊँची सतह पर बनी हुई है। सीढ़ियों पर से जाना पड़ता है। भीतों की मजबूती के लिये इसमें पाषाण के आधार (ओदेगल) लगे हुए हैं, इसी से इसे ओदेगल बस्ती कहते हैं। बीच की गुफा में आदिनाथ की और दायीं बाईं गुफाओं में क्रमशः शान्तिनाथ और नेमिनाथ की पद्मासन मूर्तियाँ हैं। बस्ती के पश्चिम की ओर की चट्टान पर सत्ताइस लेख नागरी अक्षरों में हैं जिनमें अधिकतर तीर्थ-यात्रियों के नाम अङ्कित हैं (नं० ३७८–४०४)।

९ चौबीस तीर्थंकर बस्ति—यह एक छोटा सा देवालय है। इसमें एक अढ़ाई फुट ऊँचे पाषाण पर चौबीस तीर्थंकरों की मूर्त्तियाँ उत्कीर्ण हैं। नीचे एक कतार में तीन बड़ी मूर्त्तियाँ खुदी हुई हैं जिनके ऊपर प्रभावली के आकार में इकीस अन्य छोटी-छोटी मूर्त्तियाँ हैं। इस बस्ति के लेख नं० ११८ (३१३) से ज्ञात होता है कि इस चौबीस तीर्थंकर मूर्त्ति की स्थापना चारुकीर्त्ति पण्डित, धर्मचन्द्र आदि ने शक सं० १५७० में की थी।

१० ब्रह्मदेव मन्दिर—यह छोटा सा देवालय विन्ध्यगिरि के नीचे सीढ़ियों के समीप ही है। इसमें सिन्दूर से रँगा हुआ एक पाषाण है जिसे लोग ब्रह्म या 'जारुगुप्पे अप्प' कहते हैं। मन्दिर के पीछे चट्टान पर के लेख नं० १२१ (३२१) से ज्ञात होता है कि इसे हिरिसालि के गिरिगौड के कनिष्ठ भ्राता रङ्गय्य ने सम्भवतः शक सं० १६०० में निर्माण कराया था। मन्दिर के ऊपर दूसरी मंजिल भी है जो पीछे से निर्माण कराई गई विदित होती है। इसमें पार्श्वनाथ की मूर्त्ति है।

श्रवणबेल्गोल नगर

ऊपर कहा जा चुका है कि श्रवणबेल्गोल चन्द्रगिरि और विन्ध्यगिरि के बीच बसा हुआ है। यहाँ के प्राचीन स्मारक इस प्रकार हैं:—

१ भण्डारि बस्ति—यह श्रवण बेल्गोल का सबसे बड़ा मन्दिर है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई २६६ ×७८ फुट है। इसमें एक गर्भगृह, एक सुखनासि, एक मुखमण्डप और प्राकार हैं। गर्भगृह में एक सुन्दर चित्रमय वेदी पर चौबीस तीर्थंकरों की तीन २ फुट ऊँची मूर्त्तियाँ हैं। इसी से इसे चौबीस तीर्थंकरबस्ति भी कहते हैं। गर्भगृह में तीन दरवाजे हैं जिनकी बाज़ू-बाज़ू जालियाँ बनी हुई हैं। सुखनासि में पद्मावती और ब्रह्म की मूर्त्तियाँ हैं। नवरङ्ग के चार स्तम्भों के बीच

ज़मीन पर एक दस फुट का चौकोर पत्थर बिछा हुआ है। आगे के भाग और बरामदे में भी इतने इतने बड़े पत्थर लगे हुए हैं। ये भारी-भारी पाषाण यहाँ कैसे लाये गये होंगे, यह भी आश्चर्यजनक है। नवरङ्गद्वार की चित्रकारी बड़ी ही मनोहर है। इसमें लताएँ व मनुष्य और पशुओं के चित्र खुदे हुए हैं। मुख्य भवन के चारों ओर बरामदा और पाषाण का चार फुट ऊँचा कठघरा है। बस्ति के सन्मुख एक पाषाण-निर्मित सुन्दर मानस्तम्भ है। होयसल नरेश नरसिंह (प्रथम) के भण्डारि हुल्ल द्वारा निर्माण कराये जाने के कारण यह भण्डारि बस्ति कहलाती है। लेख नं० १३७ (३४५) और १३८ (३४९) से ज्ञात होता है कि यह शक सं० १०८१ में निर्माण कराई गई थी व नरसिंह नरेश ने इसे भव्य-चूडामणि नाम देकर इसकी रक्षा के हेतु सवणेरु ग्राम का दान दिया था। उक्त लेखों में हुल्ल और उनके बस्ति-निर्माण का सुन्दर वर्णन है।

२ अक्कन बस्ति—नगर भर में यही बस्ति होयसल-शिल्पकला का एकमात्र नमूना है। इस सुन्दर भवन में गर्भगृह, सुखनासि, नवरङ्ग और मुखमण्डप हैं। गर्भगृह में सप्तफणी पार्श्वनाथ की पाँच फुट ऊँची भव्य मूर्त्ति है। गर्भगृह के दरवाजे पर बड़ा अच्छा खुदाई का काम है। सुखनासि में एक दूसरे के सन्मुख साढ़े तीन फुट ऊँची पञ्चफणी धरणेन्द्र यक्ष और पद्मावती यक्षिणी की मूर्त्तियाँ हैं। दरवाजे के आसपास जालियाँ हैं। नवरङ्ग के चार काले पाषाण के

बने हुए आइने के सदृश चमकीले स्तम्भ और कुशल कारीगरी के बने हुए नवरङ्ग बड़े ही सुन्दर हैं। मंदिर की गुम्मट अनेक प्रकार की जिन-मूर्त्तियों से चित्रित है, शिखर पर सिंहललाट है। दक्षिण की दीवाल सीधी न होने के कारण उसमें पत्थर के आधार लगाये गये हैं। द्वारे के पास के लेख (नं० १२४ (३२७) से ज्ञात होता है कि यह बस्ति होय्सल नरेश बल्लाल (द्वितीय) के ब्राह्मण मंत्री चन्द्रमौलि की जैन धर्मावलम्बिनी भार्या आचियक्क ने शक सं० ११०३ में निर्माण कराई थी व राजा ने उसकी रक्षा के निमित्त बम्मेयनहल्लि नामक ग्राम का दान दिया था। 'अक्कन' आचियक्कन का ही संक्षिप्त रूप है इसी से इसे अक्कन बस्ति कहते हैं। यही बात लेख नं० ४३१ (३३१) व ४४४ से भी सिद्ध होती है।

९ सिद्धान्त बस्ति—यह बस्ति अक्कन बस्ति के पश्चिम की ओर है। किसी समय जैन सिद्धान्त के समस्त ग्रंथ इसी बस्ति के एक बन्द कमरे में रक्खे जाते थे। इसी से इसका नाम सिद्धान्त बस्ति पड़ा। कहा जाता है कि धवल, जयधवल आदि सिद्धान्त ग्रंथ यहीं से मूडबिद्री गये हैं। इसमें एक पाषाण पर चतुर्विंशति तीर्थंकरों की प्रतिमायें हैं। बीच में पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा है और उनके आसपास शेष तीर्थंकर हैं। यहीं के लेख नं० ४२० (३३२) से ज्ञात होता है कि यह चतुर्विंशति मूर्ति उत्तर भारत के किसी यात्री ने शक सं० १६२० में प्रतिष्ठित कराई थी।

४ दानशाले बस्ति—यह छोटा सा देवालय अक्कन बस्ति के द्वार के पास ही है। इसमें एक तीन फुट ऊँचे पाषाण पर पञ्चपरमेष्ठी की प्रतिमायें हैं। चिदानन्द कवि के मुनिवंशाभ्युदय (शक सं० १६०२) के अनुसार मैसूर के चिक्क देवराज ओडेयर ने अपने पूर्ववर्ती नृप दोड्ड देवराज ओडेयर के समय में (सन् १६५९—१६७२ ईस्वी) बेल्गोल की यात्रा की, दानशाला के दर्शन किये और राजा से उसके लिये मदनेय ग्राम का दान करवाया। यहाँ पहले दान दिया जाता रहा होगा इसी से इस बस्ति का यह नाम पड़ा।

५ नगर जिनालय—इस भवन में गर्भगृह, सुखनासि और नवरङ्ग हैं। इसमें आदिनाथ की प्रभावली संयुक्त अढ़ाई फुट ऊँची मूर्ति है। नवरङ्ग की बाईं ओर एक गुफा में दो फुट ऊँची ब्रह्मदेव की मूर्ति है जिसके दायें हाथ में कोई फल और बायें हाथ में कोड़े के आकार की कोई चीज है। पैरों में खड़ाऊँ हैं। पीठिका पर घोड़े का चिह्न बना हुआ है। यहाँ के लेख नं० १३० (३३५) से ज्ञात होता है कि इस मन्दिर को होय्सल नरेश बल्लाल (द्वितीय) के 'पट्टणस्वामी' व नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्ति के शिष्य नागदेव मंत्री ने शक सं० १११८ में निर्माण कराया था। नगर के महाजनों-द्वारा ही इसकी रक्षा होती थी इसी से इसका नाम नगर जिनालय पड़ा। 'श्रीनिलय' भी इस मंदिर का नाम रहा है। उक्त लेख में नागदेव मंत्री द्वारा कमठपार्श्वनाथबसदि के सन्मुख 'नृत्य

रङ्ग' और अश्मकुट्टिम (पाषाणभूमि) व अपने गुरु नय-कीर्ति देव की निषद्या निर्माण कराये जाने का भी उल्लेख है। लेख नं० १२२ (३२६) के अनुसार उन्होंने नयकीर्ति के नाम से ही नागसमुद्र नामक सरोवर भी बनवाया। यह सरोवर अब 'जिगणेकट्टे' कहलाता है। पर लेख नं० १०८ (२५८) में कहा गया है कि पण्डित यति के तप के प्रभाव से ही नगर जिनालय (नगर जिनालपद) की सृष्टि हुई।

६ मङ्गायि बस्ति—इसमें एक गर्भगृह, सुखनासि और नवरङ्ग है। इसमें एक साढ़े चार फुट ऊँची शान्तिनाथ की मूर्ति विराजमान है। सुखनासि के द्वार पर आजू-बाजू पाँच फुट ऊँची चवरवाहियों की मूर्तियाँ हैं। नवरङ्ग में वर्द्धमान स्वामी की मूर्ति है जिस पर लेख है, ४२९ (३३८)। मन्दिर के सन्मुख सुन्दरता से खचित दो हस्ती हैं। लेख नं० १३२ (३४१) व ४३० (३३९) से ज्ञात होता है कि यह बस्ति अभिनव चारुकीर्ति पण्डिताचार्य के शिष्य बेल्गोल के मङ्गायि ने बनवाई थी। उक्त लेखों में इसे त्रिभुवनचूड़ामणि कहा है। ये लेख शक की तेरहवीं शताब्दि के ज्ञात होते हैं। शान्तिनाथमूर्ति की पीठिका पर के लेख से विदित होता है कि वह मूर्ति पण्डिताचार्य की शिष्या व देवराय महाराज की रानी भीमादेवी ने प्रतिष्ठित कराई थी [लेख नं० ४२८ (३३७)]। ये देवराय सम्भवतः विजयनगर के राजा देवराज प्रथम हैं जिनका राज्य सन् १४०६ से १४१६ तक रहा था।

अन्त महावीर स्वामी की पीठिका पर के लेख से सिद्ध होता है कि उनकी प्रतिष्ठा पण्डितदेव की शिष्या वसमतिने कराई थी। इसका भी अन्तः समय ही अनुमान होता है। इसी मन्दिर के एक लेख [नं० १३४ (३४२)] से विदित होता है कि इसकी मरम्मत सम्भवतः शक सं० ११३४ में गेरसोप्पे के द्वितीय मठ्य के शिष्य गुम्मटण्ण ने कराई थी।

७ जैनमठ—यह यहाँ के गुरु का निवास-स्थान है। इमारत बहुत सुन्दर है, बीच में खुला हुआ आँगन है। हाल ही में दूसरी मञ्जिल भी बन गई है। मण्डप के खम्भे अच्छी कारीगरी के बने हुए हैं। उन पर खूब चित्रकारी है। यहाँ के तीन गर्भगृहों में अनेक पाषाण और धातु की मूर्त्तियाँ हैं। इनमें की अनेक मूर्त्तियाँ बहुत अर्वाचीन हैं। इन पर संस्कृत व तामिल भाषा में ग्रंथ अक्षरों के लेख हैं जिनसे ज्ञात होता है कि वे अधिकांश मद्रास प्रान्तीय धर्मिष्ठ भाइयों ने प्रदान की हैं। नवदेवता बिम्ब में पञ्चपरमेष्ठी के अतिरिक्त जिनधर्म, जिनागम, चैत्य और चैत्यालय भी चित्रित हैं। मठ की दीवालों पर तीर्थंकरों व जैन राजाओं के जीवन की घटनाओं के अनेक रङ्गीन चित्र हैं। इनमें मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर तृतीय के 'दसर दरबार' का भी चित्र है। पार्श्वनाथ के समवसरण व भरत चक्रवर्त्ति के जीवन के चित्र भी दर्शनीय हैं। चार चित्र नागकुमार की जीवन-घटनाओं के हैं। एक वन के दृश्य में षड्लेश्याओं के पुरुषों के चरित्र बड़ी उत्तम रीति

से चित्रित किये गये हैं। ऊपर की मञ्जिल में पार्श्वनाथ की मूर्त्ति है और एक काले पाषाण पर चतुर्विंशति तीर्थंकर खचित हैं।

कहा जाता है कि चामुण्डराय ने गोम्मटेश्वर की मूर्ति निर्माण कराकर अपने गुरु नेमिचन्द्र को यहाँ का मठाधीश नियुक्त किया। यह भी कहा जाता है कि इससे पहले भी यहाँ गुरु-परम्परा चली आती थी। लेख नं० १०५ (२५४) व १०८ (२५८) में उल्लेख है कि यहाँ के एक गुरु चारुकीर्त्ति पण्डित ने होयसल नरेश बल्लाल प्रथम (सन् ११००-११०६) को एक बड़ी दुस्साध्य व्याधि से मुक्त किया था जिससे उन्हें बल्लालजीवरक्षक की उपाधि मिली थी।

८ कल्याणि—यह नगर के बीच के एक छोटे से सरोवर का नाम है। इसके चारों ओर सीढ़ियाँ और दीवाल हैं। दीवाल के दरवाजे शिखरबद्ध हैं। उत्तर की ओर एक सभामण्डप है जिसके एक स्तम्भ पर लेख है (४४४ (३६५) कि यह सरोवर चिक्कदेव राजेन्द्र ने बनवाया। मैसूर के चिक्कदेवराजेन्द्र ने सन् १६७२ से १७०४ तक राज्य किया है। अनन्त कवि-कृत गोम्मटेश्वरचरित (शक सं०१७००) में वर्णन है कि चिक्कदेवराज ने अपने टकसाल के अध्यक्ष अनन्तय्य की प्रार्थना से 'कल्याणि' निर्माण कराया। पर सरोवर के पूर्ण होने से प्रथम ही राजा की मृत्यु हो गई, तब अनन्तय्य ने इसे चिक्कदेवराज के पौत्र कृष्णराज ओडेयर

प्रथम (सन् १७१३–१७३१) के समय में शिखर, सभामण्डप आदि बनवाकर पूर्ण कराया। सम्भवतः यही वह पुराना सरोवर रहा है जिस पर से इस नगर का नाम बेल्गुल (धवल सरोवर) पड़ा। उक्त पुरुषों ने सम्भवतः इसका जीर्णोद्धार कराया होगा। यह भी हो सकता है कि इस स्थान को नाम देनेवाला धवल सरोवर कोई अन्य ही रहा हो।

९ जक्किकट्टे—यह भण्डारि बस्ति के दक्षिण में एक छोटा सा सरोवर है। इसके पास की दो चट्टानों पर जैन प्रतिमाओं के नीचे के दो लेखों नं० ४४६ (३६७) और ४४७ (३६८) से ज्ञात होता है कि बोप्पदेव की माता, गङ्गराज के ज्येष्ठ भ्राता की भार्या, शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या जक्किमब्बे ने ये जिनमूर्त्तियाँ और सरोवर निर्माण कराये। लेख नं० ४३ (११७) व अन्य लेखों से सिद्ध है कि गङ्गराज होटसल नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति थे और शक सं० १०४४ में जीवित थे। इस लेख में जक्किमब्बे की भी प्रशस्ति है। गाणेदहित्ति के एक लेख नं० ४८६ (४००) से ज्ञात होता है कि इसी धर्मपरायणा साध्वी महिला ने यहाँ भी एक बस्ति निर्माण कराई थी।

१० चेन्नण्ण का कुण्ड—नगर से दक्षिण की ओर कुछ दूरी पर यह कुण्ड है। इसका निर्माता वही चेन्नण्ण बस्ति का निर्माता चेन्नण्ण है। चेन्नण्ण की कृतियों का उल्लेख लेख नं० १२३ तथा ४४८-४५३ व ४६३–४६५ में है।

नं० ४८० (३९०) से इस कुण्ड का समय शक सं० १५९९ के लगभग प्रतीत होता है।

श्रवणबेलगोल के आसपास के ग्राम

जिननाथ पुर—यह श्रवणबेल्गोल से एक मील उत्तर की ओर है। लेख नं० ४७८ (३८८) के अनुसार इसे होय्सल-नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति गङ्गराज ने शक सं० १०४० के लगभग बसाया था।

शान्तिनाथ बस्ति

यहाँ की शान्तिनाथ बस्ति होय्सल शिल्पकारी का बहुत सुन्दर नमूना है। इसमें एक गर्भगृह, सुखनासि और नवरङ्ग हैं। शान्तिनाथ की साढ़े पाँच फुट ऊँची मूर्ति बड़ी भव्य और दर्शनीय है। यह प्रभावली और दोनों ओर चमरवाहियों से सुसज्जित है। नवरङ्ग के चार स्तम्भ अच्छी मूर्ति की कारीगरी के बने हुए हैं। इसके नवछत भी बड़े सुन्दर हैं। आमने-सामने दो सुन्दर आले बने हुए हैं जो अब खाली हैं। बाहिरी दीवालों पर अनेक चित्रपट हैं। कई चित्र अपूर्ण ही रह गए हैं। इनमें तीर्थंकर, यक्ष, यक्षिणी, ब्रह्मा, सरस्वती, मन्मथ, मोहिनी, मृगवाहिनी, नायक, वाद्यवाही आदि के चित्र हैं। मूर्ति-चित्रों की संख्या [illegible] है।

यह बस्ति मैसूर राज्य भर के जैन मंदिरों में सबसे अधिक अलंकृत है। शान्तिनाथ की पीठिका के लेख नं० ४०१

(३८०) से ज्ञात होता है कि इस बस्ति को 'वसुधैकबान्धव रेचिमय्य' सेनापति ने बनवाकर सागरनन्दि सिद्धान्तदेव के अधिकार में दे दी थी। एक लेख (ए० क० अर्सीकेरे ७७ सन् १२२०) में उल्लेख है कि उक्त सेनापति कलचुरि-नरेश के मंत्री थे, पश्चात् इन्होंने होय्सल नरेश बल्लाल (द्वितीय) (सन् ११७३-१२२०) की शरण ली। इससे शान्तिनाथ बस्ति के निर्माण का समय लगभग शक सं० ११२० सिद्ध होता है। नवरङ्ग के एक स्तम्भ पर के लेख नं० ४७० (३८९) से विदित होता है कि इस बस्ति का जीर्णोद्धार पालेद पदुमन्न ने शक सं० १५५३ में कराया था।

ग्राम के पूर्व में अरेगल बस्ति नाम का एक दूसरा मंदिर है। यह शान्तिनाथ बस्ति से भी पुराना है। इसमें पार्श्वनाथ भगवान् की सप्तफणी, प्रभावली संयुक्त पाँच फुट ऊँची पद्मासन मूर्ति है। सुखनासि में धरणेन्द्र और पद्मावती के सुन्दर चित्र हैं। मन्दिर में सफाई अच्छी रहती है। एक चट्टान (अरेगल) के ऊपर निर्मित होने से ही यह मन्दिर अरेगल बस्ति कहलाता है। पार्श्वनाथ की पीठिका पर के लेख नं० ४७४ (३८१) से विदित होता है कि यह मूर्ति शक सं० १८१२ में बेलगुल के भुजबलैय्य ने प्रतिष्ठित कराई है। इसका कारण यह था कि प्राचीन मूर्ति बहुत खण्डित हो गई थी। यह प्राचीन मूर्ति अब पास ही के तालाब में पड़ी हुई है और उसका छत्र बस्ति के द्वारे के पास

अरेगल बस्ति

रक्खा हुआ है जहाँ पर कि लेख नं० १४४ (३८४) है। मंदिर में चतुर्विंशति तीर्थंकर, पञ्चपरमेष्ठी, नवदेवता, नन्दीश्वर आदि की धातुनिर्मित मूर्त्तियाँ भी हैं।

ग्राम की नैऋत दिशा में एक समाधिमण्डप है। इसे शिलाकूट कहते हैं। मण्डप चार फुट लम्बा-चौड़ा और पाँच फुट ऊँचा है। ऊपर शिखर है। इसके चारों ओर दीवालें हैं पर दरवाजा एक भी नहीं है। इस पर के लेख नं ४७८ (३८८) से वह बालचन्द्रदेव के तनय की निषद्या सिद्ध होती है जिनकी मृत्यु शक सं ११३६ में हुई। लेख में बालचन्द्रदेव के तनय का नाम घिस गया है, पर उनके गुरु बेलिकुम्ब के नेमिचन्द्र पण्डित व निषद्या निर्मापक बैरोज के नाम लक्ष में पढ़े जाते हैं। लेख के अन्तिम भाग में यह भी लिखा है कि एक साध्वी स्त्री कालब्बे ने सल्लेखना विधि से शरीरान्त किया। सम्भवतः यह उक्त मृत पुरुष की विधवा पत्नी रही होगी।

ऐसा ही एक समाधिमण्डप तावरेकेरे सरोवर के समीप है। इसके पास जो लेख (नं० १४२ (३६२) है उससे विदित होता है कि यह चारुकीर्ति पण्डित की निषद्या है जिनकी मृत्यु शक सं० १५६५ में हुई।

लेख नं० ४० (६४) में उल्लेख है कि देवकीर्ति पण्डित, जिनकी मृत्यु शक सं० १०८५ में हुई, ने जिननाथ पुर में एक दानशाला निर्माण कराई थी।

हलेबेलगोल—यह ग्राम श्रवणबेलगोल से चार मील उत्तर की ओर है। यहाँ का होय्सल शिल्पकारी का बना हुआ जैनमन्दिर ध्वंस अवस्था में है। गर्भगृह में अढ़ाई फुट की खड्गासन मूर्ति है। सुखनासि में लगभग पाँच फुट ऊँची सप्तफणी पार्श्वनाथ की खण्डित मूर्ति रक्खी है। नवरङ्ग में अच्छी चित्रकारी है। बीच की छत पर देवियों-सहित रथारूढ़ अष्टदिक्पालों के चित्र हैं जिनके बीच में पञ्चफणी धरणेन्द्र का चित्र है। धरणेन्द्र के बाँयें हाथ में धनुष और दाहिने में सम्भवतः शङ्ख है। नवरङ्ग में दो चमरवाही और एक तीर्थंकर मूर्ति खण्डित रक्खी हुई है। नवरङ्ग के द्वार पर अच्छी कारीगरी दिखलाई गई है। इस मन्दिर के सन् १०९४ के लेख (नं० ४९२) से विदित होता है कि विष्णु-वर्द्धन के पिता होय्सल एरेयङ्ग ने बेलगोल के मन्दिरों के जीर्णोद्धार के लिये जैनगुरु गोपनन्दि को राचनहल्ल ग्राम का दान दिया। इस लेख व लेख नं० ५५ (६९) में गोपनन्दि की खूब प्रशंसा पाई जाती है। यह बस्ति संभवतः लगभग शक सं० १०१६ की बनी हुई है।

इस ग्राम में एक शैव और एक वैष्णव मन्दिर भी है। ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में यहाँ अधिक मन्दिर रहे हैं क्योंकि यहाँ के एक तालाब की नहर में प्रायः सारा मसाला टूटे हुए मन्दिरों का लगा हुआ है। ग्राम के मध्य में एक तालाब के पास एक खण्डित जिन प्रतिमा भी है।

सायोहल्लि—यह ग्राम श्रवणबेलगुल से तीन मील पर है। यहाँ एक ध्वंस जैन मन्दिर है। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, लेख नं० ४८६ (४००) के अनुसार इसे गङ्गराज की भावज जकिमब्बे ने निर्माण कराया था।

लेखों की ऐतिहासिक उपयोगिता

विशेष राजवंशों से सम्बन्ध रखनेवाले लेखों का विवेचन करने से पूर्व यहाँ एक ऐसी घटना पर कुछ विचार करना आवश्यक है जिसका राजकीय व जैन-धार्मिक इतिहास से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। जैनसंघ के नायक भद्रबाहु स्वामी के साथ भारतसम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य की दक्षिण यात्रा का प्रसङ्ग जैसा जैन इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण है वैसा ही वह भारत के राजकीय इतिहास में अनुपेक्षणीय है। लगातार कई वर्षों से इस विषय पर इतिहासवेत्ताओं में मतभेद चला आता है। यद्यपि मतभेद का अभी तक अन्त नहीं हुआ, पर अधिकांश विद्वानों का झुकाव एक ओर होने से इस विषय का प्रायः निर्णय ही समझना चाहिए। संक्षेप में, जैनसाहित्य में यह प्रसङ्ग इस प्रकार पाया जाता है—अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी ने निमित्त-ज्ञान से जाना कि उत्तर भारत में एक बारह वर्ष का भीषण दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। ऐसी विपत्ति के समय में वहाँ मुनिवृत्ति का पालन होना कठिन जान

उन्होंने अपने समस्त शिष्यों-सहित दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। भारतसम्राट् चन्द्रगुप्त ने भी इस दुर्भिक्ष का समाचार पा, संसार से विरक्त हो, राज्यपाट छोड़ भद्रबाहु स्वामी से दीक्षा ली और उन्हीं के साथ गमन किया। जब यह मुनि-संघ श्रवण बेलगोल स्थान पर पहुँचा तब भद्रबाहु स्वामी ने अपनी आयु बहुत थोड़ी शेष जान, संघ को आगे बढ़ने की आज्ञा दी और आप चन्द्रगुप्त शिष्य-सहित छोटी पहाड़ी पर रहे। चन्द्रगुप्त मुनि ने अन्त समय तक उनकी खूब सेवा की और उनका शरीरान्त हो जाने पर उनके चरणचिह्न की पूजा में अपना शेष जीवन व्यतीत कर अन्त में सल्लेखना विधि से शरीरत्याग किया।

अब देखना चाहिए कि श्रवण बेलगोल के स्थानीय इतिहास से, शिलालेखों से व साहित्य से इस बात का कहाँ तक समर्थन होता है। कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त के वहाँ रहने से ही उस पहाड़ी का नाम चन्द्रगिरि पड़ा। इस पहाड़ी पर की प्राचीनतम वस्ति चन्द्रगुप्त द्वारा ही पहले-पहल निर्माण कराये जाने के कारण चन्द्रगुप्त बस्ति कहलाई। इस पहाड़ी पर की भद्रबाहु गुफा में चन्द्रगुप्त के भी चरण-चिह्न हैं। कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त ने इसी गुफा में समाधिमरण किया था। सेरिङ्गपट्टम के दो शिलालेखों (ए० क० ३, सेरिङ्गपट्टम १४७, १४८) में उल्लेख है कि कल्बप्पु शिखर (चन्द्रगिरि) पर महामुनि भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त के चरण-चिह्न हैं। ये शिला-

लेख लगभग शक सं० ८२२ के हैं। श्रवणबेल्गोल के लगभग शक सं० ५७२ के लेख नं० १७-१८ (३१) में कहा गया है कि 'जो जैनधर्म भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्र के तेज से भारी समृद्धि को प्राप्त हुआ था उसके किञ्चित् क्षीण हो जाने पर शान्तिसेन मुनि ने उसे पुनरुत्थापित किया।' शक सं० १०५० के लेख नं० ५४ (६७) (श्लोक ४) में भद्रबाहु और उनके शिष्य चन्द्रगुप्त का उल्लेख है। ऐसा ही उल्लेख शक सं० १०८५ के लेख नं० ४० (६४) (श्लोक ४-५) में व शक सं० १३५५ के लेख नं० १०८ (२५८) (श्लोक ८-९) में है। इन उल्लेखों में चन्द्रगुप्त की गुरुभक्ति और तपश्चरण की महिमा गाई गई है।

साहित्य में इस प्रसङ्ग का सबसे प्राचीन उल्लेख हरिषेण-कृत 'बृहत्कथाकोष' में पाया जाता है। यह ग्रन्थ शक सं० ८५३ का रचा हुआ है। इसमें भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त का वर्णन इस प्रकार पाया जाता है—'पौण्ड्रवर्धन देश में देवकोट नाम का नगर था। इस नगर का प्राचीन नाम कोटिपुर था। यहाँ पद्मरथ नाम का राजा राज्य करता था। इनके एक पुरोहित सोमशर्मा और उनकी भार्या सोमश्री के भद्रबाहु नामक पुत्र हुआ। एक दिन अन्य बालकों के साथ नगर में खेलते हुए भद्रबाहु को चतुर्थ श्रुतकेवली गोवर्धन ने देखा। उन्होंने देखकर जान लिया कि यही बालक अन्तिम श्रुतकेवली होनेवाला है। अतएव माता-पिता की अनुमति से उन्होंने

भद्रबाहु को अपने संरक्षण में ले लिया और उन्हें सब विद्याएँ सिखाईं। यथासमय भद्रबाहु ने गोवर्धन स्वामी से जिन दीक्षा धारण की। एक समय विहार करते हुए भद्रबाहु स्वामी उज्जैनी नगरी में पहुँचे और सिप्रा नदी के तीर एक उपवन में ठहरे। इस समय उज्जैनी में जैनधर्मावलम्बी राजा चन्द्रगुप्त अपनी रानी सुप्रभा-सहित राज्य करते थे। जब भद्रबाहु स्वामी आहार के निमित्त नगरी में गये तब एक गृह में झूले में झूलते हुए शिशु ने उन्हें चिल्लाकर मना किया और वहाँ से चले जाने को कहा। इस निमित्त से स्वामी को ज्ञात हो गया कि वहाँ एक बारह वर्ष का भीषण दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। इस पर उन्होंने समस्त संघ को बुलाकर सब हाल कहा और कहा कि "अब तुम लोगों को दक्षिण देश को चले जाना चाहिए। मैं स्वयं यहीं ठहरूँगा क्योंकि मेरी आयु क्षीण हो चुकी है।"*

जब चन्द्रगुप्त महाराज ने यह सुना तब उन्होंने विरक्त होकर भद्रबाहु स्वामी से जिन दीक्षा ले ली। फिर चन्द्रगुप्त मुनि, जो दशपूर्वियों में प्रथम थे, विशाखाचार्य के नाम से जैन संघ के नायक हुए। भद्रबाहु की आज्ञा से वे संघ को दक्षिण के पुन्नाट† देश को ले गये। इसी प्रकार रामिल्ल, स्थूलवृद्ध,

* अहमत्रैव तिष्ठामि क्षीणमायुर्ममाधुना।

† पुन्नाट बड़ा पुराना राज्य रहा है। कन्नड साहित्य में यह पुन्नाड के नाम से प्रसिद्ध है। 'टालेमी' ने इसका उल्लेख 'पौन्नट'

और भद्राचार्य अपने-अपने संघों-सहित सिंधु आदि देशों को भेजे गये। स्वयं भद्रबाहु स्वामी उज्जयिनी के 'भाद्रपद' नामक स्थान पर गये और वहाँ उन्होंने कई दिन तक अनशन व्रत कर समाधिमरण किया *। जब द्वादशवर्षीय दुर्भिक्ष का अन्त हो गया तब विशाखाचार्य संघ-सहित दक्षिण से मध्यदेश को लौट आये।

दूसरा ग्रंथ, जिसमें उपर्युक्त प्रसङ्ग आया है, रत्ननन्दिकृत भद्रबाहुचरित है। रत्ननन्दि, अनन्तकीर्ति के शिष्य ललितकीर्ति के शिष्य थे। उनका ठीक समय ज्ञात नहीं है पर वे पन्द्रहवीं सोलहवीं शताब्दि के लगभग अनुमान किये जाते हैं। इस ग्रन्थ में प्रायः ऊपर के ही समान भद्रबाहु का प्राथमिक वृत्तान्त देकर कहा गया है कि वे जब उज्जयिनी आ गये तब वहाँ के राजा 'चन्द्रगुप्त' ने उनकी खूब भक्ति की और उनसे

नाम से किया है और कहा है कि वहाँ रत्नमणि (beryl) बहुत पाये जाते हैं। यहाँ के राष्ट्रवर्मा आदि राजाओं की राजधानी 'कीर्तिपुर' थी। कीर्तिपुर कदाचित् मैसूर जिले के हेग्गड्ड वन्कोटे तालुके में कपिनी नदी पर के आधुनिक 'कित्तूर' का ही प्राचीन नाम है। हरिषेण और जिनसेन कवि अपने को पुन्नाट संघ के कहते हैं। यह संघ सम्भवतः 'कित्तूर' संघ का ही दूसरा नाम है जिसका उल्लेख शिलालेख नं० १६४ (८१) में आया है।

* प्राप्य भाद्रपदं देशं श्रीमदुज्जयिनीभवम्।
चकारानशनं धीरः स दिनानि बहून्यलम्॥
समाधिमरणं प्राप्य भद्रबाहुर्दिवं ययौ॥

अपने सोलह स्वप्नों का फल पूछा। इनके फल-कथन में भद्रबाहु ने कहा कि यहाँ द्वादश वर्ष का दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। इस पर चन्द्रगुप्त ने उनसे दीक्षा ले ली। फिर भद्रबाहु अपने बारह हज़ार शिष्यों-सहित 'कर्नाटक' को जाने के लिये दक्षिण को चल दिये। जब वे एक वन में पहुँचे तब अपनी आयु पूरी हुई जान उन्होंने विशाखाचार्य को अपने स्थान पर नियुक्त कर उन्हें संघ को आगे ले जाने के लिये कहा और आप चन्द्रगुप्ति-सहित वहीं ठहर गये। संघ चोल देश को चला गया। थोड़े समय पश्चात् भद्रबाहु ने समाधिमरण किया। चन्द्रगुप्ति उनके चरण-चिह्न बनाकर उनकी पूजा करते रहे। विशाखाचार्य जब दक्षिण से लौटे तब चन्द्रगुप्ति मुनि ने उनका आदर किया। विशाखाचार्य ने भद्रबाहु की समाधि की वन्दना कर कान्यकुब्ज को प्रस्थान किया।

चिदानन्द कवि के मुनिवंशाभ्युदय नामक कन्नड काव्य में भी भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त की कुछ वार्ता आई है। यह ग्रन्थ शक सं० १६०२ का बना हुआ है। इसमें कथन है कि "श्रुतकेवली भद्रबाहु बेल्गोल को आये और चिकबेट्ट (चन्द्रगिरि) पर ठहरे। कदाचित् एक व्याघ्र ने उन पर धावा किया और उनका शरीर विदीर्ण कर डाला। उनके चरणचिह्न अब तक गिरि पर एक गुफा में पूजे जाते हैं.. ......अर्हद्बलि की आज्ञा से दक्षिणाचार्य बेल्गोल आये। चन्द्रगुप्त भी यहाँ तीर्थयात्रा को आये थे। इन्होंने दक्षिणाचार्य से दीक्षा ग्रहण की

और उनके बनवाये हुए मन्दिर की तथा भद्रबाहु के चरण-चिह्नों की पूजा करते हुए वहाँ रहे। कुछ कालोपरान्त दक्षिणाचार्य ने अपना पद चन्द्रगुप्त को दे दिया।''

शक सं० १७६१ के बने हुए देवचन्द्रकृत राजावलीकथा नामक कन्नड ग्रन्थ में यह वार्ता प्रायः रत्ननन्दिकृत भद्रबाहुचरित के समान ही पाई जाती है। पर इस ग्रन्थ में और भी कई छोटी-छोटी बातें दी हुई हैं जो अधिक महत्त्व की नहीं हैं। यहाँ कथन है कि श्रुतकेवली विष्णु, नन्दिमित्र और अपराजित व पाँच सौ शिष्यों के साथ गोवर्धनाचार्य जम्बूस्वामी के समाधिस्थान की वन्दना करने के हेतु कोटिकपुर में आये। राजा पद्मरथ की सभा में भद्रबाहु ने एक लेख, जिसे अन्य कोई भी विद्वान् नहीं समझ सका था, राजा को समझाया। इससे उनकी विलक्षण बुद्धि का पता चला। कार्त्तिक की पूर्णमासी की रात्रि को पाटलिपुत्र के राजा चन्द्रगुप्त को सोलह स्वप्न हुए। प्रातःकाल यह समाचार पाकर कि भद्रबाहु नगर के उपवन में विराजमान हैं, राजा अपने मन्त्रियों-सहित उनके पास गये। राजा का अन्तिम स्वप्न यह था कि एक बारह फण का सर्प उनकी ओर आ रहा है। इसका फल भद्रबाहु ने यह बतलाया कि वहाँ बारह वर्ष का दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। एक दिन जब भद्रबाहु आहार के लिये नगर में गये तब उन्होंने एक गृह के सामने खड़े होकर सुना कि उस घर में एक झूले में झूलता हुआ बालक ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा है।

वह शिशु बारह बार चिल्लाया पर किसी ने उसकी आवाज नहीं सुनी। इससे स्वामीजी को विदित हुआ कि दुर्भिक्ष प्रारम्भ हो गया है। राजा के मन्त्रियों ने दुर्भिक्ष को रोकने के लिये कई यत्न किये। पर चन्द्रगुप्त ने उन सबके पापों के प्रायश्चित्त स्वरूप अपने पुत्र सिंहसेन को राज्य दे भद्रबाहु से जिन दीक्षा ले ली और उन्हीं के साथ हो गये। भद्रबाहु अपने बारह हजार शिष्यों-सहित दक्षिण को चल पड़े। एक पहाड़ी पर पहुँचने पर उन्हें विदित हुआ कि उनकी आयु अब बहुत थोड़ी शेष है; इसलिये उन्होंने विशाखाचार्य को संघ का नायक बनाकर उन्हें चोल और पाड्य देश को भेज दिया। केवल चन्द्रगुप्त को उन्होंने अपने साथ रहने की अनुमति दी। उनके समाधिमरण के पश्चात् चन्द्रगुप्त उनके चरणचिह्नों की पूजा करते रहे। कुछ समय पश्चात् सिंहसेन नरेश के पुत्र भास्कर नरेश भद्रबाहु के समाधिस्थान की तथा अपने पितामह की वन्दना के हेतु वहाँ आये और कुछ समय ठहरकर उन्होंने वहाँ जिनमन्दिर निर्माण कराये, तथा चन्द्रगिरि के समीप बेल्गोल नामक नगर बसाया। चन्द्रगुप्त ने उसी गिरि पर समाधिमरण किया।

इस सम्बन्ध में सबसे प्राचीन प्रमाण चन्द्रगिरि पर पार्श्वनाथ बस्ति के पास का शिलालेख (नं० १) है। यह लेख श्रवणबेल्गोल के समस्त लेखों में प्राचीनतम सिद्ध होता है। इस लेख में कथन है कि "महावीर स्वामी के पश्चात् परमर्षि

गौतम, लोहार्य, जम्बू, विष्णुदेव, अपराजित, गोवर्द्धन, भद्रबाहु, विशाख, प्रोष्ठिल, कृतिकार्य, जय, सिद्धार्थ, धृतिषेण, बुद्धिलादि गुरुपरम्परा में होनेवाले भद्रबाहु स्वामी के त्रैकालदर्शी निमित्त-ज्ञान द्वारा उज्जयिनी में यह कथन किये जाने पर कि वहाँ द्वादश वर्ष का वैषम्य (दुर्भिक्ष) पड़नेवाला है, सारे संघ ने उत्तरापथ से दक्षिणापथ को प्रस्थान किया और क्रम से वह एक बहुत समृद्धियुक्त जनपद में पहुँचा। यहाँ आचार्य प्रभाचन्द्र ने व्याघ्रादि व दरीगुफादि-संकुल सुन्दर कटवप्र नामक शिखर पर अपनी आयु अल्प ही शेष जान समाधितप करने की आज्ञा लेकर, समस्त संघ को आगे भेजकर व केवल एक शिष्य को साथ रखकर देह की समाधि-आराधना की।"

ऊपर इस विषय के जितने उल्लेख दिये गये हैं उनमें दो बातें सर्वसम्मत हैं—प्रथम यह कि भद्रबाहु ने बारह वर्ष के दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी की और दूसरे यह कि उस वाणी को सुनकर जैनसंघ दक्षिणापथ को गया। हरिषेण के अनुसार भद्रबाहु दक्षिणापथ को नहीं गये। उन्होंने उज्जयिनी के समीप ही समाधिमरण किया और चन्द्रगुप्ति मुनि अपर नाम विशाखाचार्य संघ को लेकर दक्षिण को गये। भद्रबाहुचरित तथा राजावलीकथा के अनुसार भद्रबाहु स्वामी ने ही मध्य-देश से संघ के नायक का काम किया तथा श्रवणबेल्गोल की छोटी पहाड़ी पर वे अपने शिष्य चन्द्रगुप्त-सहित ठहर गये। मुनिवंशाभ्युदय तथा [illegible] के दो मत,

श्रवणबेल्गोल के लेख नं० १७-१८, ४०, ५४ तथा १०८ भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त दोनों का चन्द्रगिरि से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। पर जैसा कि ऊपर के वृत्तान्त से विदित होगा, शिलालेख नं० १ की वार्ता इन सबसे विलक्षण है। उसके अनुसार त्रिकालदर्शी भद्रबाहु ने दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी की, जैन संघ दक्षिणापथ को गया व कटवप्र पर प्रभाचन्द्र ने जैन संघ को आगे भेजकर एक शिष्य-सहित समाधि-आराधना की। यह वार्ता स्वयं लेख के पूर्व और अपर भागों में वैषम्य उपस्थित करने के अतिरिक्त ऊपर उल्लिखित समस्त प्रमाणों के विरुद्ध पड़ती है। भद्रबाहु दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी करके कहाँ चले गये, प्रभाचन्द्र आचार्य कौन थे, उन्हें जैन संघ का नायकत्व कब और कहाँ से प्राप्त हो गया इत्यादि प्रश्नों का लेख में कोई उत्तर नहीं मिलता। इस उलझन को सुलझाने के लिये हमने लेख के मूल की सूक्ष्म रीति से जाँच की। इस जाँच से हमें ज्ञात हुआ कि उपर्युक्त सारा बखेड़ा लेख की छठी पंक्ति में 'आचार्यः प्रभाचन्द्रोनामावनितल ... 'इत्यादि पाठ से खड़ा होता है। यह पाठ डा० फ्लीट और रायबहादुर नरसिंहाचार का है। श्रवणबेल्गोल शिलालेखों के प्रथम संग्रह के रचयिता राइस साहब ने 'प्रभाचन्द्रोना..... ' की जगह 'प्रभाचन्द्रेण . . . ' पाठ दिया है। डा० टा० के० लडडू भी राइस साहब के पाठ को ठीक समझते हैं। 'प्रभाचन्द्रा' की जगह 'प्रभाचन्द्रेण' होने से उपर्युक्त सारा बखेड़ा सहज ही

सय हो जाता है। इससे 'आचार्यः' का सम्बन्ध भद्रबाहु स्वामी से हो जाता है और लेख का यह अर्थ निकलता है कि भद्रबाहु स्वामी संघ को आगे बढ़ने की आज्ञा देकर आप प्रभाचन्द्र नामक एक शिष्य-सहित कटवप्र पर ठहर गये और उन्होंने वहीं समाधिमरण किया। इससे लेख के पूर्वापर भागों में सामञ्जस्य स्थापित हो जाता है और अन्य प्रमाणों से कोई विरोध नहीं रहता। मूल में 'प्रभाचन्द्रोणा' 'प्रभाचन्द्रेणाम' भी पढ़ा जा सकता है। इस पाठ में कठिनाई केवल यह आती है कि 'म' अक्षर का कोई अर्थ व सम्बन्ध नहीं रहता। पर इसके परिहार मे यह कहा जा सकता है कि लेख को खोदनेवाले ने 'प्रभाचन्द्रेणनाम...'की जगह भ्रम से'प्रभाचन्द्रेणाम' खोद दिया है; वह 'न' को भूल गया। ऐसी भूलें शिलालेखों मे बहुधा पाई जाती हैं। प्रभाचन्द्र के भद्रबाहु के शिष्य होने से ऊपर के समस्त प्रमाणों द्वारा यह बात सहज ही समझ मे आ जाती है कि प्रभाचन्द्र चन्द्रगुप्त का ही नामान्तर व दीक्षा-नाम होगा।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि ये भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त कौन थे और कब हुए। शिलालेख नं० १, जिसकी वार्त्ता पर हम ऊपर विचार कर चुके हैं, अपनी लिखावट पर से अपने को लगभग शक संवत् की पाँचवीं-छठी शताब्दि का सिद्ध करता है। अतः उसमें उल्लिखित भद्रबाहु और प्रभाचन्द्र (चन्द्रगुप्त) शक की पाँचवीं छठी शताब्दि से पूर्व

होना चाहिये। दिगम्बर पट्टावलियों में महावीर स्वामी के समय से लगाकर शक की चार शताब्दियों तक 'भद्रबाहु' नाम के दो आचार्यों के उल्लेख मिलते हैं, एक तो अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु और दूसरे वे भद्रबाहु जिनसे सरस्वती गच्छ की नन्दी आम्नाय की पट्टावली प्रारम्भ होती है। दूसरे भद्रबाहु का समय ईस्वी पूर्व ५३ वर्ष व शक संवत् से १३१ वर्ष पूर्व पाया जाता है। इनके शिष्य का नाम गुप्तिगुप्त पाया जाता है जो इनके पश्चात् पट्ट के नायक हुए। डा० फ्लीट का मत है कि दक्षिण की यात्रा करनेवाले ये ही द्वितीय भद्रबाहु हैं और चन्द्रगुप्त उनके शिष्य गुप्तिगुप्त का ही नामान्तर है। पर इस मत के सम्बन्ध में कई शंकाएँ उत्पन्न होती हैं। प्रथम तो गुप्तिगुप्त और चन्द्रगुप्त को एक मानने के लिये कोई प्रमाण नहीं है, दूसरे इससे उपर्युक्त प्रमाणों में जो चन्द्रगुप्त नरेश के राज्य त्यागकर भद्रबाहु से दीक्षा लेने का उल्लेख है, उसका कुछ खुलासा नहीं होता और तीसरे जिस द्वादशवर्षीय दुर्भिक्ष के कारण भद्रबाहु ने दक्षिण की यात्रा की थी उस दुर्भिक्ष के द्वितीय भद्रबाहु के समय में पड़ने के कोई प्रमाण नहीं मिलते। इन कारणों से डा० फ्लीट की कल्पना बहुत कमज़ोर है और अन्य कोई विद्वान् उसका समर्थन नहीं करते। विद्वानों का अधिक झुकाव अब इसी एकमात्र युक्तिसंगत मत की ओर है कि दक्षिण की यात्रा करनेवाले भद्रबाहु अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु ही हैं और उनके

साथ जाने वाले उनके शिष्य चन्द्रगुप्त स्वयं भारत सम्राट् चन्द्रगुप्त के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हैं। यद्यपि वीर निर्वाण के समय का अब तक अन्तिम निर्णय न हो सकने के कारण भद्रबाहु का जो समय जैन पट्टावलियों और ग्रंथों में पाया जाता है तथा चन्द्रगुप्त सम्राट् का जो समय आजकल इतिहास सर्व सम्मति से स्वीकार करता है उनका ठीक समीकरण नहीं होता, * तथापि दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही सम्प्रदाय के ग्रंथों से भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त समसामयिक सिद्ध होते हैं। इन दोनों सम्प्रदायों के ग्रंथों में इस विषय पर कई विरोध होने पर भी वे उक्त बात पर एकमत हैं। हेमचन्द्राचार्य के 'परिशिष्ट पर्व' से यह भी सिद्ध होता है कि इस समय बारह वर्ष का दुर्भिक्ष पड़ा था, तथा 'इस भयङ्कर दुष्काल के पड़ने पर जब साधु समुदाय को भिक्षा का अभाव होने लगा तब सब लोग निर्वाह के लिये समुद्र के समीप गाँवों में चले गये'। इस समय चतुर्दशपूर्वधर श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु स्वामी

* दि० जैन ग्रंथों के अनुसार भद्रबाहु का आचार्यपद निर्वाण संवत् १३३ से १६२ तक २९ वर्ष रहा था प्रचलित निर्वाण संवत् के अनुसार ईस्वीपूर्व ३९४ से ३६५ तक पड़ता है, तथा इतिहासानुसार चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्य ईस्वीपूर्व ३२१ से २९८ तक माना जाता है। इस प्रकार भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त के राज्यकाल में ६० वर्ष का अन्तर पड़ता है। श्वेताम्बर ग्रंथों के अनुसार भद्रबाहु का समय नि० सं० १५६ से १७० तदनुसार ईस्वी पूर्व ३७१ से ३५७ तक सिद्ध होता है। इसका चन्द्रगुप्त के समय के साथ प्रायः समीकरण हो जाता है।

ने बारह वर्ष के महाप्राण नामक ध्यान की आराधना प्रारम्भ कर दी थी। परिशिष्ट पर्व के अनुसार भद्रबाहु स्वामी इस समय नेपाल की ओर चले गये थे और श्रीसंघ के बुलाने पर भी वे पाटलिपुत्र को नहीं आये जिसके कारण श्रीसंघ ने उन्हें संघबाह्य कर देने की भी धमकी दी। उक्त ग्रंथ में चन्द्रगुप्त के समाधि पूर्वक मरण करने का भी उल्लेख है।

इस प्रकार यद्यपि दिगम्बर और श्वेताम्बर ग्रन्थों में कई बारीकियों में मत-भेद है पर इन भेदों से ही मूल बातों की पुष्टि होती है क्योंकि उनसे यह सिद्ध होता है कि एक मत दूसरे मत की नकल मात्र नहीं है व मूल बातें दोनों के ग्रन्थों में प्राचीनकाल से चली आती हैं।

अब इस विषय पर भिन्न-भिन्न विद्वानों के मत देखिये। डा० ल्यूमन* और डा० हार्नले† श्रुतकेवली भद्रबाहु की दक्षिण यात्रा को स्वीकार करते हैं। टामस साहब अपनी एक पुस्तक‡ में लिखते हैं कि "चन्द्रगुप्त जैन समाज के व्यक्ति थे यह जैन ग्रन्थकारों ने एक स्वयंसिद्ध और सर्व प्रसिद्ध बात के रूप से लिखा है जिसके लिये कोई अनुमान प्रमाण देने की आवश्यकता ही नहीं थी। इस विषय में लेखों के प्रमाण बहुत प्राचीन और साधारणतः सन्देह-रहित हैं। मैगस्थनीज

* Vienna Oriental Journal VII, 382.

† Indian Antiquary XXI, 59-60.

‡ Jainism or the Early Faith of Asoka P. 23.

के कथनों से भी झलकता है कि चन्द्रगुप्त ने ब्राह्मणों के सिद्धान्तों के विपक्ष में श्रमणों (जैन मुनियों) के धर्मोपदेशों को अङ्गीकार किया था।" टामस साहब इसके आगे यह भी सिद्ध करते हैं कि चन्द्रगुप्त मौर्य के पुत्र और प्रपौत्र बिन्दुसार और अशोक भी जैनधर्मावलम्बी थे। इसके लिये उन्होंने 'मुद्राराक्षस' 'राजतरङ्गिणी' तथा 'आइने अकबरी' के प्रमाण दिये हैं। श्रीयुक्त जायसवाल महोदय लिखते हैं* कि "प्राचीन जैनग्रंथ और शिलालेख चन्द्रगुप्त को जैन राजर्षि प्रमाणित करते हैं। मेरे अध्ययन ने मुझे जैनग्रंथों की ऐतिहासिक वार्ताओं का आदर करने को बाध्य किया है। कोई कारण नहीं है कि हम जैनियों के इस कथन को कि चन्द्रगुप्त अपने राज्य के अन्तिम भाग में राज्य का त्याग जिन दीक्षा ले मुनि वृत्ति से मरण को प्राप्त हुए, न मानें। मैं पहला ही व्यक्ति यह माननेवाला नहीं हूँ। मि० राइस, जिन्होंने श्रवणबेल्गोला के शिलालेखों का अध्ययन किया है, पूर्णरूप से अपनी राय इसी पक्ष में देते हैं और मि० व्ही० स्मिथ भी अन्त में इस मत की ओर झुके हैं।" डा० स्मिथ लिखते हैं† कि "चन्द्रगुप्त मौर्य का घटना-पूर्ण राज्यकाल किस प्रकार समाप्त हुआ इस पर ठीक प्रकाश एक मात्र जैन कथाओं से ही

* Journal of the Behar and Orissa Research Society Vol. III.

†Oxford History of India 75-76.

पड़ता है। जैनियों ने सदैव उक्त मौर्य सम्राट् को बिम्बसार (श्रेणिक) के सदृश जैन धर्मावलम्बी माना है और उनके इस विश्वास को झूठ कहने के लिये कोई उपयुक्त कारण नहीं है। इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं है कि, शैशुनाग, नन्द और मौर्य राजवंशों के समय में जैन धर्म मगध प्रान्त में बहुत जोर पर था। चन्द्रगुप्त ने राजगद्दी एक कुशल ब्राह्मण की सहायता से प्राप्त की थी यह बात चन्द्रगुप्त के जैनधर्मावलम्बी होने के कुछ भी विरुद्ध नहीं पड़ती। 'मुद्राराक्षस' नामक नाटक में एक जैन साधु का उल्लेख है जो नन्द नरेश के और फिर मौर्य सम्राट् के मन्त्री राक्षस का ख़ास मित्र था।

"एक बार जहाँ चन्द्रगुप्त के जैनधर्मावलम्बी होने की बात मान ली वहाँ फिर उनके राज्य को त्याग करने व जैनविधि के अनुसार सल्लेखना द्वारा मरण करने की बात सहज ही विश्वसनीय हो जाती है। जैनग्रन्थ कहते हैं कि जब भद्रबाहु की द्वादशवर्षीय दुर्भिक्षवाली भविष्यवाणी उत्तर भारत में सच होने लगी तब आचार्य बारह हज़ार जैनियों को साथ लेकर अन्य सुदेश की खोज में दक्षिण को चल पड़े। महाराज चन्द्रगुप्त राज्य त्यागकर सङ्घ के साथ हो लिये। यह सङ्घ श्रवण बेल्गोला पहुँचा। यहाँ भद्रबाहु ने शरीर त्याग किया। राजर्षि चन्द्रगुप्त ने उनसे बारह वर्ष पीछे समाधिमरण किया। इस कथा का समर्थन श्रवणबेल्गोला के मन्दिरों आदि के नामों, ईस्वी की सातवीं शताब्दि के उपरान्त के लेखों तथा दसवीं

३८७; उदयेन्दिरम् का दानपत्र (सा० इ० इ० २, ३८७), कुडलूर का दानपत्र (मै० आ० रि० १९२१ पृ० २६); ए० क० ७, शिमोगा ४, ए० क० ८ नगर ३५ व ३६ इत्यादि। इसके अतिरिक्त गोम्मटसार वृत्ति के कर्ता अभयचन्द्र त्रैविद्य-चक्रवर्ती ने भी अपने ग्रन्थ की उत्थानिका में इस बात का उल्लेख किया है। इन अनेक उल्लेखों से यद्यपि यह स्पष्ट नहीं ज्ञात होता कि जैनाचार्य ने गङ्गराज्य की जड़ जमाने में किस प्रकार सहायता की थी तथापि यह बात पूर्णतः सिद्ध होती है कि गङ्गवंश की जड़ जमानेवाले जैनाचार्य सिंहनन्दि ही थे। कहा जाता है कि आचार्य पूज्यपाद देवनन्दि इसी वंश के राजा दुर्विनीत के राजगुरु थे। गङ्गवंश के अनेक राजा व अनेक जैनाचार्यों से सम्बन्ध रखते हैं।

लेख नं० ३८ (५९) में गङ्गनरेश मारसिंह के प्रताप का अच्छा वर्णन है। अनेक भारी भारी युद्धों में विजय पाकर अनेक दुर्ग किले आदि जीतकर व अनेक जैन मन्दिर और स्तम्भ निर्माण कराकर अन्त में अजितसेन भट्टारक के समीप सल्लेखना विधि से बङ्कापुर में उन्होंने शरीर त्याग किया। उन्होंने राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र (चतुर्थ) का अभिषेक किया था। यद्यपि इस लेख में इनके स्वर्गवास का समय नहीं दिया गया पर एक दूसरे लेख (ए० क० [illegible], [illegible] ८४) में कहा गया है कि उन्होंने शक [illegible] में शरीर त्याग किया था। गङ्गनरेश मारसिंह और राष्ट्रकूट नरेश कृष्णराज तृतीय इन

दोनों के बीच घनिष्ठ मित्रता थी। मारसिंह ने अनेक युद्ध कृष्णराज के लिये ही जीते थे। कुडलूर के दानपत्र (मैसूर आ० रि० १९२१ पृ० २६ सन ९६३) में कहा गया है कि स्वयं कृष्णराज ने मारसिंह का राज्याभिषेक किया था।

मारसिंह के उत्तराधिकारी राचमल्ल (चतुर्थ) थे। इन्हीं के मन्त्री चामुण्डराज ने विन्ध्यगिरि पर चामुण्डरायवसती निर्माण कराई और गोम्मटेश्वर की वह विशाल मूर्ति उद्घाटित की (नं० ७५-७६ आदि)। लेख नं० १०९ (२८१) यद्यपि अधूरा है तथापि इसमें चामुण्डराय का कुछ परिचय पाया जाता है। उससे विदित होता है कि चामुण्डराय ब्रह्मक्षत्र कुल के थे और उन्होंने अपने स्वामी के लिये अनेक युद्ध जीते थे। इतना ही नहीं चामुण्डराय एक कवि भी थे। उनका लिखा हुआ चामुण्डराय पुराण नाम का एक कनड़ ग्रन्थ भी पाया जाता है। यह अधिकांश गद्य में है। इसमें चौबीस तीर्थंकरों के जीवन का वर्णन है। यह ग्रन्थ उन्होंने शक सं० ९०० में समाप्त किया था। इस ग्रन्थ में भी उनके कुल व गुरु अजितसेन आदि का परिचय पाया जाता है तथा किस प्रकार भिन्न भिन्न युद्ध जीतकर उन्होंने समर धुरन्धर, वीर मार्तण्ड, रणरङ्गसिंग, वैरिकुलकालदण्ड, भुजविक्रम, समर-परशुराम की उपाधियाँ प्राप्त की थीं इसका भी वर्णन इस ग्रन्थ में है। वे अपनी सत्यनिष्ठा के कारण सत्ययुधिष्ठिर कह-लाते थे। कई लेखों में उनका उल्लेख केवल 'राय' नाम से

ही किया गया है नं० १३७ (३४५)। लेख नं० ६० (१२१) में उल्लेख है कि चामुण्डराय के पुत्र, व अजितसेन के शिष्य जिनदेवन ने बेल्गोल में एक जैन मन्दिर निर्माण कराया था।

इनके अतिरिक्त अन्य कई लेखों में गङ्गवंश के ऐसे नरेशों का उल्लेख मात्र आया है, जिनका अभी तक अन्य कहीं कोई विशेष परिचय नहीं पाया गया। लेख नं० २४६ (४१५) में जिस शिवमार बसदि का उल्लेख है वह सम्भवतः गङ्गवंश के शिवमार नाम (सम्भवतः शिवमार द्वि० श्री-पुरुष के पुत्र) ने निर्माण कराई थी। लेख नं० ६० (१३८) में किसी गङ्गरस अपर नाम रक्कसमणि का उल्लेख है जिसके बोप्पण नाम के एक वीर योद्धा ने बद्देग और कोलियगङ्ग के विरुद्ध युद्ध करते हुए अपने प्राण विसर्जित किये। बद्देग राष्ट्रकूटनरेश अमोघवर्ष तृतीय का उपनाम भी था। गङ्गरस मारसिंह नरेश की उपाधि भी था (नं० ३ (५८)। लेख नं० ६१ (१३६) में [illegible] अपर नाम [illegible] का उल्लेख है। निश्चयतः नहीं कहा जा सकता कि यह भी कोई गङ्गवंशी नरेश का नाम है या नहीं, किन्तु कुछ गङ्गनरेशों की [illegible] उपाधि था। [illegible], रक्कसगङ्ग के दत्तक पुत्र का नाम [illegible] था (ए० क० ८, नगर ३५) व मारसिंह की उपाधि गङ्गविद्याधर थी ३८ (५९)। अतएव सम्भव है कि [illegible] व [illegible] भी कोई गङ्गनरेश रहा हो। नं० [illegible] (१४०) में गङ्गराज व [illegible] के महामण्डला-

सिग के एक नाती नागवर्म के सल्लेखना मरण का उल्लेख है। सुडि व कूडलूर के दान-पत्रों (ए० इ० ३, १५८; म० आ० रि० १९२५, पृ० २५) में गङ्गनरेश एरेयप्प और उनके पुत्र नरसिंग का उल्लेख है। सम्भव है कि उपर्युक्त लेख के एरेयङ्ग और नरसिंग ये ही हों।

कुछ लेखों में बिना किसी राजा के नाम के गंगवंश मात्र का उल्लेख है [लेख नं० १६३ (३७); १४१ (४११); २४६ (१६४); ४६९ (३७८)]। लेख नं० ५५ (६९) में उल्लेख है कि जो जैन धर्म हास अवस्था को प्राप्त हो गया था उसे गोपनन्दि ने पुनः गङ्गकाल के समान समृद्धि और ख्याति पर पहुँचाया। लेख नं० ५४ (६७) में उल्लेख है कि श्रीविजय का गङ्गनरेशों ने बहुत सम्मान किया था। लेख नं० १४७ (३४४) में उल्लेख है कि दुद्ध ने जिन कोल्लंगेरे में अनेक बसतियाँ निर्माण कराई थीं उसकी नींव गङ्गनरेशों ने ही डाली थी। लेख नं० ४८६ में गङ्ग बाडि का उल्लेख है।

२ राष्ट्रकूटवंश—राष्ट्रकूटवंश का दक्षिण भारत में इतिहास ईस्वी सन् की आठवीं शताब्दि के आद्यभाग से प्रारम्भ होता है। इस समय राष्ट्रकूटवंश के दन्तिदुर्ग नामक एक राजा ने चालुक्यनरेश कीर्तिवर्मा द्वितीय को परास्त कर राष्ट्रकूट साम्राज्य की नींव डाली। उसके उत्तराधिकारी कृष्ण प्रथम ने चालुक्य राज्य के प्रायः सारे प्रदेश अपने आधीन कर लिये। कृष्ण के पश्चात् क्रमशः गोविन्द (द्वितीय) और ध्रुव ने राज्य

किया। इनके समय में राष्ट्रकूट राज्य का विस्तार और भी बढ़ गया। आगामी नरेश गोविन्द तृतीय के समय में राष्ट्रकूट राज्य विन्ध्य और मालवा से लगाकर काञ्ची तक फैल गया। इन्होंने अपने भाई इन्द्रराज को लाट (गुजरात) का सूबेदार बनाया। गोविन्द तृतीय के पश्चात् अमोघवर्ष राजा हुए जिन्होंने लगभग सन ८१५ से ८७७ ईस्वी तक राज्य किया। इन्होंने अपनी राजधानी नासिक को छोड़ मान्यखेट में स्थापित की। इनके समय में जैन धर्म की खूब उन्नति हुई। अनेक जैन कवि—जैसे जिनसेन, गुणभद्र, महावीर आदि—इनके समय में हुए। गुणभद्राचार्य ने उत्तर पुराण में कहा है कि राजा अमोघवर्ष जिनसेनाचार्य को प्रणाम करके अपने को धन्य समझता था। अमोघवर्ष स्वयं भी कवि थे। इनकी बनाई हुई 'रत्नमालिका' नामक पुस्तक से ज्ञात होता है कि वे अन्त समय में राज्य का त्यागकर मुनि हो गये थे।

"विवेकात्त्यक्तराज्येन राज्ञेयं रत्नमालिका।
रचितामोघवर्षेण सुधियां सदलंकृतिः॥"

अमोघवर्ष के पश्चात् कृष्णराज द्वितीय हुए जिनकी अकालवर्ष, शुभतुङ्ग, श्रीपृथ्वीवल्लभ, वल्लभराज, महाराजाधिराज, परमेश्वर परमभट्टारक उपाधियां पाई जाती हैं। इनके पश्चात् इन्द्र (तृतीय) हुए जिन्होंने कन्नौज पर चढ़ाई कर वहां के राजा महीपाल को कुछ समय के लिये सिंहासनच्युत कर दिया। इनके उत्तराधिकारियों में कृष्णराज तृतीय सबसे प्रतापी हुए

जिन्होंने राजादित्य चोल के ऊपर सन् ९४९ में बड़ी भारी विजय प्राप्त की। इस समय के युद्धों का मूल कारण धार्मिक था। राष्ट्रकूटनरेश जैनधर्मपोषक और चोलनरेश शैव धर्म-पोषक थे। इनके समय में सोमदेव, पुष्पदन्त, इन्द्रनन्दि आदि अनेक जैनाचार्य हुए हैं। कृष्णराज के उत्तराधिकारी खोटिग-देव और उनके पीछे कर्कराज द्वितीय हुए। इनके समय में चालुक्यवंश पुनः जागृत हो उठा। इस वंश के तैल व तैलप ने कर्कराज को सन् ९७३ में बुरी तरह परास्त कर दिया जिससे राष्ट्रकूट वंश का प्रताप सदैव के लिये अस्त हो गया। जैसा कि आगे विदित होगा, लेख नं० ५७ (शक सं० ९०४) में कृष्णराज तृतीय के पौत्र एक इन्द्रराज (चतुर्थ) का भी उल्लेख है व लेख नं० ३८ में कहा गया है कि गङ्गनरेश मार-सिंह ने इन्द्र का अभिषेक किया था। सम्भवतः राष्ट्रकूटवंश के हितैषी गङ्गनरेश ने राष्ट्रकूट राज्य को रक्षित रखने के लिये यह प्रयत्न किया पर इतिहास में इसका कोई फल देखने में नहीं आता। दक्षिण का राष्ट्रकूटवंश इतिहास के नक्शे से उड़ गया।

अब इस संग्रह के लेखों में इस वंश के जो उल्लेख हैं उनका परिचय कराया जाता है।

इस वंश के पद्दोग व अमोघवर्ष तृतीय ने कोङ्गंय गंग के साथ गङ्गवज्र व रक्तसमणि के विरुद्ध युद्ध किया था, ऐसा लेख नं० ६० (१३८) (अनु॰ शक ८६२) के उल्लेख में

ज्ञात होता है। लेख नं० १०९ (२८१) (अनु० शक ९४०) से ज्ञात होता है कि राष्ट्रकूटनरेश इन्द्र की आज्ञा से चामुण्डराय के स्वामी जगदेकवीर राचमल्ल ने वज्वलदेव को परास्त किया था। लेख नं० ३८ (५९) (शक ८९६) से विदित होता है कि राष्ट्रकूटनरेश कृष्ण तृतीय के लिये गङ्गनरेश मारसिंह ने गुर्जर प्रदेश को जीता था व राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र (चतुर्थ) का राज्याभिषेक किया था। इन उल्लेखों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि गङ्गवंश और राष्ट्रकूटवंश के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध था। इस वंश का सबसे प्राचीन लेख, जो इस संग्रह में आया है, लेख नं० २४ (३५) (अनु० शक ७०२) है। इस लेख में ध्रुव के पुत्र व गोविन्द (तृतीय) के ज्येष्ठ भ्राता रणावलोक कम्बय्य का उल्लेख है। एक लेख (ए० क० ४, हेग्गडदेवनकोटे ९३) से ज्ञात होता है कि जब गङ्गराज शिवमार द्वितीय को ध्रुव ने कैद कर लिया था तब राजकुमार कम्ब गङ्गप्रदेश के शासक नियुक्त किये गये थे व ए० क० ५, नेलमङ्गल ६१ से ज्ञात होता है कि कम्ब शक सं० ७२४ (ई० सन् ८०२) में गङ्गप्रदेश का शासन कर रहे थे। हाल ही में [illegible] से कुछ ताम्रपत्र मिले हैं (मै० आ० रि० १९२० पृ० ३१) जिनसे ज्ञात होता है कि जिस समय कम्ब का शिविर तलवननगर (तलकाड) में था तब उन्होंने अपने पुत्र शङ्करगण की प्रार्थना से शक सं० ७२२ (सन् ८०० ई०) में एक ग्राम का दान जैनाचार्य वर्धमान को दिया था। अन्य प्रमाणों से ज्ञात

हुआ है कि ध्रुव नरेश ने अपना उत्तराधिकारी अपने कनिष्ठ पुत्र गोविन्द (तृतीय) को बनाया था व कम्ब को गङ्गप्रदेश दिया था। इस हेतु कम्ब ने गोविन्द के विरुद्ध तैयारी की पर अन्त में उन्हें गोविन्द का आधिपत्य स्वीकार करना पड़ा।

लेख नं० ५७ (१३३) में इन्द्र चतुर्थ की किसी गेंद के खेल में चतुराई आदि का वर्णन है व उल्लेख है कि उन्होंने शक सं० ९०४ में श्रवणबेल्गुल में सल्लेखना मरण किया। लेख में यह भी कहा गया है कि इन्द्र कृष्ण (तृतीय) के पौत्र, गङ्गगांगेय (बूतुग) के कन्यापुत्र व राजचूडामणि के दामाद थे। यह विदित नहीं हुआ कि ये राजचूडामणि कौन थे। इन्द्र की रट्टकन्दर्प, राजमार्तण्ड, चलदङ्कराव, चलदग्गलि, कीर्तिनारायण, एलेवबेडेंग, गेडेगलाभरण, कलिगलोलाण्ड और धीरर वीर ये उपाधियाँ थीं। जैसा ऊपर कहा जा चुका है, गङ्गनरेश मारसिंह ने इन्द्र का राज्याभिषेक किया था। लेख नं० ५८ (१३४) 'मावणगन्धहस्ति' उपाधिधारी एक वीर योधा पिट्ट की मृत्यु का स्मारक है। लेख में इस वीर के पराक्रम-वर्णन के पश्चात् कहा गया है कि उसे राजचूडामणि मार्गेडे-मल्ल ने अपना सेनापति बनाया था। लेख की लिपि और राजचूडामणि व चित्रभानु संवत्सर के उल्लेख से अनुमान होता है कि यह भी इन्द्र चतुर्थ के समय का है।

प्रसङ्गवश लेख नं० ५४ (६७) में साहसतुङ्ग और कृष्ण-राज का उल्लेख है। अकलङ्कदेव ने अपनी विद्वत्ता का वर्णन

है जिसका उल्लेख ए० क० ३, मैसूर ३७ के लेख में पाया जाता है। इस लेख में वे 'समधिगतपञ्चमहाशब्द' महा-सामन्त कहे गये हैं। जहाँ से यह लेख मिला है उसी वरुब नामक ग्राम में अन्य भी अनेक वीरगल हैं जिनमें गोगि के अनुजीवी योद्धाओं के रण में मारे जाने के उल्लेख हैं (मैं० आ० रि० १९१६ पृ० ४६-४७)। लेख नं० ४५ (१२५) और ५९ (७३) में उल्लेख है कि होय्सलनरेश विष्णुवर्धन के सेनापति गङ्गराज ने चालुक्य सम्राट् त्रिभुवनमल्ल पेर्माडि-देव (विक्रमादित्य षष्ठ (१०७६-११२६ ई०) को भारी पराजय दी। इन लेखों में गङ्गराज का कन्नेगाल में चालुक्य सेना पर रात्रि में धावा मारने व उसे हराकर उसकी रसद व वाहन आदि सब स्वाधीन कर अपने स्वामी को देने का जोर-दार वर्णन है। नं० १४४ (३८४) होय्सलवंश का लेख है पर उसके आदि में चालुक्याभरण त्रिभुवनमल्ल की राज्य-वृद्धि का उल्लेख है जिससे होय्सल राज्य के ऊपर त्रिभुवन-मल्ल के आधिपत्य का पता चलता है। लेख नं० ५५ (६९) में मलधारि गुणचन्द्र "मुनीन्द्र बलिपुरे मल्लिकामोद शान्तीशच-रणार्चकः" कहे गये हैं (पद्य नं० २०)। अन्य अनेक लेखों (ए० क० ७, शिकारपूर २० अ, १२५, १२६, १५३; ए० इ० १२, १४४) से ज्ञात हुआ है कि मल्लिकामोद चालुक्य-नरेश जयसिंह प्रथम की उपाधि थी। इससे अनुमान किया जा सकता है कि सम्भवतः बलिपुर में शान्तिनाथ की प्रतिष्ठा

जयसिंह नरेश ने ही कराई थी। इसी लेख में यह भी उल्लेख है कि वासवचन्द्र ने अपने वाद-पराक्रम से चालुक्य राजधानी में बालसरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी। लेख नं० ५४ (६७) में उल्लेख है कि वादिराज ने चालुक्य राजधानी में भारी ख्याति प्राप्त की थी तथा जयसिंह (प्रथम) ने उनकी सेवा की थी (पद्य ४१, ४२) इसी लेख में यह भी उल्लेख है कि जिन जैनाचार्य को पोय्सलनरेश ने स्वामी की उपाधि दी था उन्हें ही आहवमल्ल (चालुक्यनरेश १०४२-१०६८ ई०) ने शब्दचतुर्मुख की उपाधि प्रदान की थी। लेख नं० १२८ (३२७) व १३७ (३४५) में होयसल नरेश एरेयङ्ग चालुक्य नरेश की दक्षिण बाहु कहे गये हैं (पद्य नं० ८)।

४ होय्सलवंश—पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में कादुर जिले के मुदेगरे तालुका में 'अंगडि' नाम का एक स्थान है। यही स्थान होय्सल नरेशों का उद्गमस्थान है। इसी का प्राचीन नाम शशकपुर है जहां पर अब भी वासन्तिका देवी का मन्दिर विद्यमान है। यहां पर 'सल' नामक एक सामन्त ने एक व्याघ्र से जैनमुनि की रक्षा करने के कारण पोय्सल नाम प्राप्त किया। इस वंश के भावी नरेशों ने अपने को 'मलपरोल्-गण्ड' अर्थात् 'मलपाओं' (पहाड़ सामन्तों) में मुख्य कहा है। इसी से सिद्ध होता है कि प्रारम्भ में होय्सलवंश पहाड़ी था। इस वंश के एक 'काम' नाम के नृप के कुछ शिलालेख मिले हैं जिनमें उसके कुर्ग के कोङ्गाल्व नरेशों से

युद्ध करने के समाचार पाये जाते हैं। होय्सलनरेश इस समय चालुक्यनरेश के माण्डलिक राजा थे। जिस समय ईसा की ११ वीं शताब्दि के प्रारम्भ में चोलनरेशों द्वारा गङ्गवंश का अन्त हो गया उस समय होय्सल माण्डलिकों को अपना प्रावल्य बढ़ाने का अवसर मिला। 'काम' के उत्तराधिकारी 'विनयादित्य' ने चोलों से लड़-भिड़कर अपना प्रभुत्व बढ़ाया यहाँ तक कि चालुक्यनरेश सोमेश्वर आहवमल्ल के महामण्डलेश्वरों में विनयादित्य का नाम गङ्गवाडि ९६००० के साथ लिया जाने लगा। विनयादित्य के उत्तराधिकारी बल्लाल ने अपनी राजधानी शशपुरी से 'बेलूर' में हटा ली। द्वारासमुद्र में भी उनकी राजधानी रहने लगी। इन्होंने चङ्गाल्वनरेशों से युद्ध किया था। इनके उत्तराधिकारी विष्णुवर्द्धन के समय में होय्सल नरेशों का प्रभाव बहुत ही बढ़ गया। गङ्गवाडि का पुराना राज्य सब उनके आधीन हो गया और विष्णुवर्द्धन ने कई अन्य प्रदेश भी जीते। प्रारम्भ में विष्णुवर्द्धन जैन धर्मावलम्बी थे पर पीछे वैष्णव हो गये थे। तथापि जैन धर्म में उनकी सहानुभूति बनी ही रही। विष्णुवर्द्धन ने लगभग सन् ११०६ से ११४१ तक राज्य किया और फिर उनके पुत्र नरसिंह ने सन् ११७३ तक। नरसिंह ने अपने पिता के समान ही होय्सल राज्य की वृद्धि की। उनके पुत्र वीर बल्लाल के समय में यह राज्य चालुक्य साम्राज्य के अन्तर्गत नहीं रहा और स्वतंत्र हो गया। वीर बल्लाल ने सन् १२२०

तक राज्य किया। इसके पश्चात् वीर बल्लाल के उत्तराधिकारियों ने होय्सल राज्य को नब्बे वर्ष तक और कायम रक्खा। सन् १३१० ईस्वी में दक्षिण पर मुसलमानों की चढ़ाई हुई। दिल्ली के सुल्तान अल्लाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलिक काफ़ूर ने होय्सल राज्य को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला, होय्सलनरेश को पकड़कर क़ैद कर लिया और राजधानी द्वारासमुद्र का भी नाश कर डाला। द्वारासमुद्र का पूर्णतः सत्यानाश मुसलमानी फ़ौजों ने सन् १३२६-२७ में किया।

अब इस वंश के सम्बन्ध के जो उल्लेख संगृहीत लेखों में आये हैं उनका परिचय दिया जाता है।

इस संग्रह में होय्सलवंश के सबसे अधिक लेख हैं। लेख नं० ५३ (१४३), ५६ (१३२), १४४ (३४८) व ४९३ में विनयादित्य से लगाकर विष्णुवर्धन तक, लेख नं १३७ (३४५) और १३८ (३४६) में विनयादित्य से नारसिंह (प्रथम) तक व १२४ (३२७), १३० (३३५) और ४९१ में विनयादित्य से बल्लाल (द्वितीय) तक की वंशपरम्परा पाई जाती है। नं० ५६ (१३२) में इस वंश की उत्पत्ति का इस प्रकार वर्णन पाया जाता है—"विष्णु के कमलनाल से उत्पन्न ब्रह्मा के अत्रि, अत्रि के चन्द्र, चन्द्र के बुध, बुध के पुरूरव, पुरूरव के आयु, आयु के नहुष, नहुष के ययाति व ययाति के यदु नामक पुत्र उत्पन्न हुए। यदु के वंश में अनेक नृपति हुए। इस वंश के प्रख्यात नरेशों में एक सल नामक नृपति हुए। एक

समय एक मुनिवर ने एक कराल व्याघ्र को देखकर कहा 'पोटसल' 'हे सल, इसे मारो'। इस वृत्तान्त पर से राजा ने अपना नाम पोटसल रक्खा और व्याघ्र का चिह्न धारण किया। इसके आगे द्वारावती के नरेश पोटसल कहलाये और व्याघ्र उनका लाञ्छन पड़ गया। इन्हीं नरेशों में विनयादित्य हुए''। अन्य शिलालेखों (ए० क० ५, अर्सिकेरे १४१, १५७) से ज्ञात होता है कि विनयादित्य के पिता नृप काम होय्सल थे। अनेक लेखों (ए० क० ५, मञ्जराबाद ४३; अर्कलगुद ७६; ए० क० ६, मूडुगेरे १६) से सिद्ध है कि नृप काम ने भी उसी प्रदेश पर राज्य किया था। लेख नं० ४४ (११८) में भी नृप काम का एचि के रक्षक के रूप में उल्लेख है (पद्य ५) अतएव यह कुछ समझ में नहीं आता कि उपर्युक्त वंशावली में उनका नाम क्यों नहीं सम्मिलित किया गया। विनयादित्य के विषय में लेख नं० ५४ (६७) में कहा गया है कि उन्होंने शान्तिदेव मुनि की चरणसेवा से राज्यलक्ष्मी प्राप्त की थी (पद्य नं० ४१), तथा लेख नं० ५३ (१४३) में कहा गया है कि उन्होंने कितने ही तालाब व कितने ही जैनमन्दिर आदि निर्माण कराये थे यहां तक कि ईंटों के लिए जो भूमि खोदी गई वहां तालाब बन गये, जिन पर्वतों से पत्थर निकाला गया वे पृथ्वी के समतल हो गये, जिन रास्तों से चूने की गाड़ियाँ निकलीं वे रास्ते गहरी घाटियां हो गये। पोयसल नरेश जैनमंदिर निर्माण कराने में ऐसे दत्तचित्त थे। (पद्य नं० ४—५)।

विनयादित्य के केलेयब्बरसि रानी से एरेयङ्ग पुत्र हुए जो लेख नं० १२४ (३२७) व १३७ (३४५) में चालुक्यनरेश की दक्षिण बाहु कहे गये हैं। लेख नं १३८ (३४९) के कई पद्यों में इस नरेश के प्रताप का वर्णन पाया जाता है। वे यहाँ 'क्षत्रकुलप्रदीप' व 'क्षत्रमौलिमणि' 'साक्षात्समर-कृतान्त' व मालवमण्डलेश्वर पुरी धारा को जलानेवाले, कराल चोलकटक को भगानेवाले, चक्रगोट्ट के हरानेवाले, व कलिङ्ग का विध्वंस करनेवाले कहे गये हैं।

लेख नं० ४९२ (शक १०१५) विनयादित्य के पुत्र एरेयङ्ग के समय का है। इस लेख में एरेयङ्ग और उनके गुरु गोपनन्दि की कीर्ति के पश्चात् नरेश द्वारा चन्द्रगिरि की बस्तियों के जीर्णोद्धार के हेतु गोपनन्दि को कुछ ग्रामों का दान दिये जाने का उल्लेख है। एरेयङ्ग गङ्गमण्डल पर राज्य करते थे, लेख में इसका भी उल्लेख है। एरेयङ्ग की रानी एचलदेवी से बल्लाल, विष्णुवर्धन और उदयादित्य ये तीन पुत्र उत्पन्न हुए।

विष्णुवर्धन की उपाधियों व प्रतापादि का वर्णन लेख नं० ५३ (१४३), ५६ (१३२), १२४ (३२७), १३७ (३४५), १३८ (३४९), १४४ (३८४) और ४९३ में पाया जाता है। वे महामण्डलेश्वर, समधिगतपञ्चमहाशब्द, त्रिभुवनमल्ल, द्वारावतीपुरवराधीश्वर, यादवकुलाम्बरद्युमणि, सम्यक्त्वचूड़ामणि, मलपरोलगण्ड, तलकाडु-कोङ्ग-नङ्गलि-कोय्यूर-उच्चङ्गि-नोलम्बवाडि-हानुगल-गोण्ड, भुजबल वीरगङ्ग आदि प्रताप-

सूचक पदवियों से विभूषित किये गये हैं। उन्होंने इतने दुर्जेय दुर्ग जीते, इतने नरेशों को पराजित किया व इतने आश्रितों को उच्च पदों पर नियुक्त किया कि जिससे ब्रह्मा भी चकित हो जाता है। लेखों में उनकी विजयों का खूब वर्णन है। लेख नं० २२९ (१३७) जो शक सं० १०३९ का है विष्णुवर्द्धन के राज्यकाल का ही है। इस लेख में पोय्सलसेट्टि और नेमिसेट्टि नाम के दो राजव्यापारियों का उल्लेख है। इन व्यापारियों की माताओं माचिकब्बे और शान्तिकब्बे ने जिनमन्दिर और नन्दीश्वर निर्माण कराकर भानुकीर्ति मुनि से जिन दीक्षा ले ली। यह मन्दिर चन्द्रगिरि पर तेरिन बस्ति के नाम से प्रसिद्ध है। लेख नं० ४४५ (३६६) अधूरा है पर इसमें विष्णुवर्द्धन का उल्लेख है। नं० ४७८ (३८८) से ज्ञात होता है कि इस नृपति के हिरियदण्डनायक, स्वामिद्रोहघरट्ट गङ्गराज ने बेन्गुल में जिननाथपुर निर्माण कराया। यह लेख बहुत घिस गया है। विदित होता है कि गङ्गराज ने उक्त नरेश की अनुमति से कुछ दान भी मन्दिर को दिया था। लेख में कंपण का उल्लेख है। 'कम्पण' एक ग्राम विशेष था। लेख नं० ४९३ (शक १०५०) में विष्णुवर्द्धन के बसदियों के जीर्णोद्धार व ऋषियों को आहारदान के हेतु शल्य ग्राम के दान का उल्लेख है। यह दान नन्दि संघ, द्रमिल गण, अरुङ्गलान्वय के श्रीपाल त्रैविद्यदेव को दिया गया। लेख में उक्त अन्वय की परम्परा भी है। लेख नं० ४९० में चालुक्य

त्रिभुवनमल्ल के साथ-साथ विष्णुवर्द्धन का उल्लेख है जिससे सिद्ध होता है कि विष्णुवर्द्धन चालुक्यों के आधिपत्य को स्वीकार करते थे। इस लेख में नयकीर्ति के स्वर्गवास का भी उल्लेख है। लेख नं० ४५ (१२५), ५९ (७३), ९० (२४०), १४४ (३८४) ३६० (२५१) तथा ४२६ (३६१) विष्णुवर्द्धन नरेश ही के समय के हैं। इन लेखों में गङ्गराज की वंशावली तथा उनके प्रतापमय व धार्मिक कार्यों का वर्णन पाया जाता है। गङ्गराज का वंशवृक्ष इस प्रकार है—

कौण्डिन्यगोत्रीय नागवर्मा

मार—माकणब्बे

एच (अपर नाम बुधमित्र—नृपकाम होरसल के आश्रित)—पोचिकब्बे

बम्मचमूप   गङ्गराज

(देखो लेख नं० १४४, पृ० २९९)

लेख नं० ४४ (११८) में गङ्गराज की ये उपाधियां पाई जाती हैं—समधिगतपञ्चमहाशब्द, महासामन्ताधिपति, महाप्रचण्डदण्डनायक, वैरिभयदायक, गोत्रपवित्र, बुधजनमित्र, श्रीजैनधर्मामृताम्बुधिप्रवर्द्धनसुधाकर, सम्यक्त्वरत्नाकर, आहार-

भयभैपज्यशास्त्रदानविनोद, भव्यजनहृदयप्रमोद, विष्णुवर्द्धन-भूपालहोय्सलमहाराजराज्याभिषेकपूर्णकुम्भ, धर्महर्म्योद्धरणमूलस्तम्भ और द्रोहघरट्ट। इसी लेख में यह भी कहा गया है कि गङ्गराज के पिता मुद्दूर के कनकनन्दि आचार्य के शिष्य थे। चालुक्यवंशवर्णन में कहा जा चुका है कि इन्होंने कन्नेगाल में चालुक्य-सेना को पराजित किया था। उनके तलकाडु, कोङ्गु, चेङ्गिरि आदि स्वाधीन करने, नरसिंग को यमलोक भेजने, अदियम, तिमिल, दाम, दामोदरादि शत्रुओं को पराजित करने का वर्णन लेख नं० ९० (२४०) के ९, १० व ११ पद्यों में पाया जाता है। जिस प्रकार इन्द्र का वज्र, बलराम का हल, विष्णु का चक्र, शक्तिधर की शक्ति व अर्जुन का गाण्डीव उसी प्रकार विष्णुवर्द्धन नरेश के गङ्गराज सहायक थे। गङ्गराज जैसे पराक्रमी थे वैसे ही धर्मिष्ठ भी थे। उन्होंने गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाया, गङ्गवाडि परगने के समस्त जिनमन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया, तथा अनेक स्थानों पर नवीन जिनमन्दिर निर्माण कराये। प्राचीन कुन्दकुन्दान्वय के वे उद्धारक थे। इन्हीं कारणों से वे चामुण्डराय से भी सौगुणे अधिक धन्य कहे गये हैं। धर्म बल से गङ्गराज में अलौकिक शक्ति थी। लेख नं० ५९ (७३) के पद्य १४ में कहा गया है कि जिस प्रकार जिनधर्माग्रणी अत्तियब्बरसि के प्रभाव से गोदावरी नदी का प्रवाह रुक गया था उसी प्रकार कावेरी के पूर से घिर आने पर भी, जिनभक्ति के

कारण गङ्गराज की लेशमात्र भी हानि नहीं हुई। जब वे कन्नेगल में चालुक्यों को पराजित कर लौटे तब विष्णुवर्द्धन ने प्रसन्न होकर उनसे कोई वरदान माँगने को कहा। उन्होंने परम नामक ग्राम माँगकर उसे अपनी माता तथा भार्या द्वारा निर्माण कराये हुए जिनमन्दिरों के हेतु दान कर दिया। इसी प्रकार उन्होंने गोविन्दवाडि ग्राम प्राप्त कर गोम्मटेश्वर को अर्पण किया। गङ्गराज शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य थे। लेख नं० ५९ (७३) से विदित होता है कि दण्डनायक एचिराज ने इस परम ग्राम के दान का समर्थन किया था।

गङ्गराज से सम्बन्ध रखनेवाले और भी अनेक शिलालेख हैं, यद्यपि उनमें गङ्गराज के समय के नरेश का नाम नहीं आया। लेख नं० ४६ (१२६) गङ्गराज की भार्या लक्ष्मी ने अपने भ्राता बूचन की मृत्यु के स्मरणार्थ लिखवाया था। बूचन शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य थे। लेख नं० ४७ (१२७) जैनाचार्य मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव की मृत्यु का स्मारक है और इसे गङ्गराज और उनकी भार्या लक्ष्मी ने लिखवाया था। लेख नं० ४८ (१२८) लक्ष्मीमतिजी ने अपनी भगिनी देमति के स्मरणार्थ लिखवाया था। लेख नं० ६१ (१३०) से ज्ञात होता है कि शुभचन्द्रदेव की शिष्या लक्ष्मी ने एक जिन मन्दिर निर्माण कराया जो अब 'एरडुकट्टे बस्ति' के नाम से प्रख्यात है। लेख नं० ६४ (७०) में कहा गया है कि गङ्गराज ने अपनी माता पोचब्बे के हेतु कत्तले बस्ति निर्माण कराई। लेख नं०

६५ (७४) में गङ्गराज के इन्द्रकुल गृह (शासन वसित) बनवाने का उल्लेख है। लेख नं० ७५ (१८०) और ७६ (१७७) में गङ्गराज द्वारा गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाये जाने का उल्लेख है। लेख नं० ४३ (११७), ४४ (११८), ४८ और (१२८) गङ्गराज द्वारा निर्माण कराये हुए क्रमशः उनके गुरु शुभचन्द्र, उनकी माता पोचिकब्बे और भार्या लक्ष्मी के स्मारक हैं। लेख नं० १४४ (३८४) में गङ्गराज के वंश का बहुत कुछ परिचय मिलता है व लेख नं० ४४६ (३६७), ४४७ (३६८) और ४८६ (४००) में गङ्गराज के ज्येष्ठ भ्राता बम्मदेव की भार्या जक्कणब्बे के सत्कार्यों का उल्लेख है। ये सब लेख विष्णुवर्द्धन नरेश के समय के व उस समय से सम्बन्ध रखनेवाले हैं इसी लिये इनका यहाँ उल्लेख करना आवश्यक हुआ।

विष्णुवर्द्धन के समय के अन्य लेख इस प्रकार हैं। लेख नं० १४३ (३७७) में राजा के नाम के साथ ही गङ्गराज के नामोल्लेख के पश्चात् कहा गया है कि बलदङ्गराय हेडेओय और अन्य सज्जनों ने कुछ दान किया। जान पड़ता है यह दान गोम्मटेश्वर के दायीं ओर की एक कंदरा को भरकर समतल करने के लिये दिया गया था। लेख नं० ५६ (१३२) में विष्णुवर्द्धन की रानी शान्तलदेवी द्वारा 'सवति गन्धवारण बस्ति' के निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। इस लेख में मेघचन्द्र के शिष्य प्रभाचन्द्र की स्तुति, होयसल वंश की उत्पत्ति

व विष्णुवर्द्धन तक की वंशावलि, विष्णुवर्द्धन की उपाधियों व शान्तलदेवी की प्रशंसा व उनके वंश का परिचय पाया जाता है। शान्तलदेवी की उपाधियों में 'उद्वृत्तसवतिगन्धवारण' अर्थात् 'उच्छृंखल सौतों के लिये मत्त हाथी' भी पाया जाता है। शान्तलदेवी की इसी उपाधि पर से बस्ति का उक्त नाम पड़ा। लेख नं० ६२ (१३१) में भी इस मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। इस लेख में यह भी कहा गया है कि उक्त मन्दिर में शान्तिनाथ की मूर्ति स्थापित की गई थी। लेख नं० ५३ (१४३) (शक १०५०) में शान्तलदेवी की मृत्यु का उल्लेख है जो 'शिवगङ्ग' में हुई। यह स्थान अब बङ्गलोर से कोई तीस मील की दूरी पर शैवों का तीर्थस्थान है। लेख में शान्तलदेवी के वंश का भी परिचय है। उनके पिता पेर्गडे मारसिङ्गय्य शैव थे पर माता माचिकब्बे जिन भक्त थीं। लेख नं० ५१ (१४१) और ५२ (१४८) (शक १०४१) में शान्तलदेवी के मामा के पुत्र बलदेव और उनके मामा सिङ्गिमय्य की मृत्यु का उल्लेख है। बलदेव ने मोरिङ्गेरे में समाधिमरण किया तब उनकी माता और भगिनी ने उनकी स्मारक एक पट्टशाला (वाचनालय) स्थापित की। सिङ्गिमय्य के समाधिमरण पर उनकी भार्या और भावज ने स्मारक लिखवाया। लेख नं० ३६८ (२६५) और ३६९ (२६६) में दण्डनायक भरतेश्वर द्वारा दो मूर्तियों के स्थापित कराये जाने का उल्लेख है। भरतेश्वर गण्डविमुक्त सिद्धान्तदेव के

शिष्य थे और अन्य शिलालेखों (नागमङ्गल ३२ ए० क० ४, चिक्कमगलूर १६० ए० क० ६) से सिद्ध है कि वे और उनके बड़े भाई मरियाने विष्णुवर्द्धन नरेश के सेनापति थे। लेख नं० ४० (६४) (शक १०८१) में भी भरत के गण्डविमुक्तदेव के शिष्य होने का उल्लेख है। लेख नं० ११५ (२६७) से विदित होता है कि भरतेश्वर ने जिन दो मूर्तियों की स्थापना कराई थी वे भरत और बाहुबली स्वामी की मूर्तियाँ थीं। इस लेख में भरतेश्वर के अन्य धार्मिक कार्यों का भी उल्लेख है। उन्होंने उक्त दोनों मूर्तियों के आसपास कटघर (हप्पलिगे) बनवाया, गोम्मटेश्वर के आसपास बड़ा गर्भगृह बनवाया, सीढ़ियाँ बनवाईं तथा गङ्गवाडि में दो पुरानी बस्तियों का उद्धार कराया और अस्सी नवीन बस्तियाँ निर्माण कराईं। यह लेख भरत की पुत्री शान्तलदेवी ने लिखवाया था। लेख नं० ६८ (१५४) और ३५१ (२२१) भी इसी नाम के सज्जन के विदित होते हैं जहाँ कुछ भिन्न एक पुरुष का उल्लेख है।

विष्णुवर्द्धन और लक्ष्मीदेवी के पुत्र नारसिंह प्रथम हुए जिनकी दिग्विजय आदि का वर्णन लेख नं० १३० (३४५) और १३८ (३४९) में है। लेख नं० १३८ (३४९) में कथन है कि इस नरेश के भण्डारि और मन्त्री हुल्ल ने बेलगोल में चतुर्विंशति जिनालय निर्माण कराया। यह मन्दिर भण्डारि बस्ति के नाम से प्रसिद्ध है। लेख में विष्णुवर्द्धन से नारसिंह प्रथम तक के वर्णन और हुल्ल के वंशादि का

के पश्चात् कहा गया है कि एक बार अपनी दिग्विजय के समय राजा बेल्गोल में आये, गोम्मटेश्वर की वन्दना की और हुल्ल के बनवाये हुए चतुर्विंशति जिनालय के दर्शन कर उन्होंने उस मन्दिर का नाम 'भव्यचूडामणि' रक्खा क्योंकि हुल्ल की उपाधि 'सम्यक्त्वचूडामणि' थी। फिर उन्होंने मन्दिर के पूजन, दान तथा जीर्णोद्धार के हेतु 'सवणेरु' नामक ग्राम का दान किया। लेख में यह भी उल्लेख है कि हुल्ल ने नरेश की अनुमति से गोम्मटपुर के तथा व्यापारी वस्तुओं पर के कुछ कर (टैक्स) का दान मन्दिर को कर दिया। हुल्ल वाजि वंश के जक्किराज (यक्षराज) और लोकाम्बिका के पुत्र, लक्ष्मण और अमर के ज्येष्ठ भ्राता तथा मलधारि स्वामी के शिष्य थे। सवणेरु ग्राम का दान उन्होंने भानुकीर्ति को दिया था। वे राज्यप्रबन्ध में 'यौगन्धरायण' से भी अधिक कुशल और राजनीति में बृहस्पति से भी अधिक प्रवीण थे। लेख नं. १३८ (३४४) में भी नारसिंह के बेल्गोल की वन्दना करने का उल्लेख है और इस लेख से यह भी ज्ञात होता है कि हुल्ल विष्णुवर्द्धन के समय में भी राजदरबार में थे। लेख नं० ९० (२४०) व ९६१ से विदित होता है कि वे [illegible] बल्लाल द्वितीय के समय में भी विद्यमान थे क्योंकि उन्होंने उस राजा से एक दान प्राप्त किया था। इस लेख में हुल्ल की कीर्ति और धर्मपरायणता का खूब वर्णन है। वे चामुण्डराय और गङ्गराज की श्रेणी में ही सम्मिलित किये गये हैं। उन्होंने

के लिये देखो लेख नं० ११२४)। उनके गुरु नयकीर्ति और [illegible] के लेख में कहा गया है कि चन्द्रमौलि की प्रार्थना पर बल्लालदेव ने आचलदेवी द्वारा निर्मापित मंदिर के हेतु [illegible] ग्राम का दान दिया। लेख में और भी दानों का उल्लेख है। इस दान का उल्लेख [illegible] ग्राम के लेख नं० ४४४ (शक ११०४) तथा लेख नं० १०७ (४१६) और ४१६ (३३१) में भी है। लेख नं० १३० (३३५) में [illegible] आचार्य [illegible] के पश्चात् [illegible] नयकीर्ति की कीर्ति का वर्णन है और फिर उन के 'पट्टाचार्य' [illegible] का परिचय है। इसी लेख नं० १३० में [illegible] गुरु नयकीर्ति को [illegible] बताया है का उल्लेख लेख नं० ४२ (६६) में भी है। [illegible] के गुरु और [illegible] और कुछ [illegible] का परिचय लेख नं० १२० (३३६) और ४८० (४०७) में पाया जाता है। लेख नं० ४०१ (३०७) में [illegible] के [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible]

शिकारपुर १९७) लेख नं० ४९५ में बल्लालदेव के समय में अपने गुरु श्रीपाल योगीन्द्र के स्वर्गवास होने पर वादिराजदेव के परवादिमल्ल जिनालय निर्माण कराने व भूमिदान देने का उल्लेख है।

इस राज्य का अन्तिम लेख नं० १२८ (३३३) (शक ११२८) का है जिसमें वीर बल्लालदेव के कुमार सोमेश्वरदेव और उनके मंत्री रामदेव नायक का उल्लेख है। इतिहास में कहीं अन्यत्र बल्लालदेव के सोमेश्वर नामक पुत्र का कोई उल्लेख नहीं पाया जाता। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि सम्भवतः नरेश का कोई प्रतिनिधि ही यहाँ विनय से अपने को नरेश का पुत्र कहता है। (लेख के सारांश के लिये देखो नं० १२८)।

बल्लाल द्वितीय के पुत्र नारसिंह द्वितीय के समय का एक ही लेख इस संग्रह में आया है। लेख नं० ८१ (१२६) में कहा गया है कि पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर नारसिंह के राज्य में पदुमसेट्टि के पुत्र व आध्यात्मिक बालचन्द्र के शिष्य गोम्मटसेट्टि ने गोम्मटेश्वर की पूजा के लिये बारह गद्याण का दान दिया।

नारसिंह द्वितीय के उत्तराधिकारी सोमेश्वर के समय का लेख नं० ४९९ (शक ११७०) है। इसमें सोमेश्वर की विजय व कीर्ति का परिचय उनकी उपाधियों से पाया जाता है। लेख में कहा गया है कि सोमेश्वर के सेनापति 'शान्त' ने

शान्तिनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया। लेख में माघनन्दि आचार्यों की परम्परा भी दी है।

लेख नं० ८६ (२४६) (शक ११४१) में वीर मारसिंह तृतीय (भोगेश्वर के पुत्र व मारसिंह द्वितीय के पौत्र) का उल्लेख है। लेख नं० १२८ (३३४) (शक १२०४) भी सम्भवतः इसी राजा के समय का है। इस लेख में होयसल वंश की स्तुति है, और कहा गया है कि चंग शासक के गोत्र के गुरु मेघनन्दि थे। ये ही सम्भवतः शान्तिनाथ के कर्ता थे जिनका उल्लेख लेख के प्रथम पद्य में ही है। (शान्तिनाथ के लिये देखो लेख नं० ८६)।

लेख नं० १०४ (२५४) (शक १३८०) के ४६ वें पद्य में व लेख नं० १०८ (२५८) (शक १३५५) के १४ वें पद्य में उल्लेख है कि बल्लाल नरेश की एक घोर व्याधि से चारुकीर्ति गुरु ने रक्षा की थी। यह नरेश इस वंश के प्रथम बल्लाल विष्णुवर्द्धन के ज्येष्ठ भ्राता माने जाते हैं जिन्होंने बहुत अल्पकाल राज्य किया था। 'भुजबलि शतक' में कहा गया है कि इस नरेश का पूर्वजन्म का वैरकारी भारी प्रेत बाधा थी जिसे चारुकीर्ति ने दूर की। इसी से इन आचार्यों को 'बल्लालजीव रक्षक' की उपाधि प्राप्त हुई।

विजयनगर

जब सन् १३२७ ईस्वी में मुहम्मद तुगलक ने होयसल राज्य का पूर्ण रूप से सत्यानाश कर डाला और होयसल राज्य को अपने साम्राज्य में मिला लिया तब दक्षिण के अन्य राज्य सचेत हुए। वे सब दो वीर योधाओं के नायकत्व में एकत्र हुए। इन वीर योधाओं, जिनके वंश आदि का विशेष कुछ पता नहीं चलता, ने थोड़े ही वर्षों में एक राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी उन्होंने विजयनगर बनाई। उक्त दोनों वीरों के नाम क्रमशः हरीहर और बुक्क थे और वे दोनों भ्राता थे। इन्होंने मुसलमानों के बढ़ते प्रवाह को रोक दिया। इसी समय दक्षिण में मुसलमानों ने बहमनी राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी गुलबर्गा थी। अब दक्षिण में ये दोनों राज्य ही मुख्य रहे और दोनों आपस में लगातार झगड़ते रहे। सन् १४८१ के लगभग बहमनी राज्य बरार, बिदर, अहमदनगर, गोलकुण्डा और बीजापुर इन पांच भागों में बट गया। विजयनगर नरेशों का झगड़ा बीजापुर के आदिल शाहों से चलता रहा। इसमें अधिकतः विजयनगर विजयी रहता था क्योंकि उक्त पांचों मुसलमानी राज्यों में द्वेष था। अन्त में मुसलमानी राजाओं ने अपनी भूल पहचान ली। वे सन् १५६५ में एक होकर तालीकोटा के मैदान पर इकट्ठे हुए और यहां दक्षिण भारत में हिन्दू साम्राज्य का निपटारा सदैव के लिये हो गया। विजयनगर नरेश रामराय कैद कर लिये

गये और मार डाले गये और उनकी सुन्दर राजधानी विजयनगर विध्वंस कर दी गई। यह संक्षिप्त में विजयनगर राज्य का इतिहास है।

अब संग्रहीत लेखों में इस राज्य के जो उल्लेख आये हैं उन्हें देखिये।

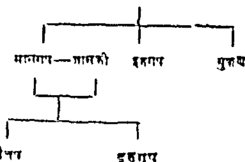
इस राजवंश के सम्बन्ध का सबसे प्रथम और सबसे महत्व का लेख नं० १२६ (३४४) (शक १२९०) का है जिसमें बुक्कराय प्रथम द्वारा जैन और वैष्णव सम्प्रदायों के बीच शान्ति और संधि स्थापित किये जाने का वर्णन है। वैष्णवों ने जैनियों के अधिकारों में कुछ हस्तक्षेप किया था। इसके लिये जैनियों ने नरेश से प्रार्थना की। नरेश ने जैनियों का हाथ वैष्णवों के हाथ पर रखकर कहा कि धार्मिकता में जैनियों और वैष्णवों में कोई भेद नहीं है। जैनियों को पूर्ववत् ही पञ्च-महावाद्य और कलश का अधिकार है। जैन दर्शन की हानि व वृद्धि को वैष्णवों को अपनी ही हानि व वृद्धि समझना चाहिए। श्री वैष्णवों को इस विषय के शासन समस्त बस्तियों में लगा देना चाहिए। जब तक सूर्य और चन्द्र हैं तब तक वैष्णव जैन धर्म की रक्षा करेंगे। इसके अतिरिक्त लेख में कहा गया है कि प्रत्येक जैन गृह से कुछ द्रव्य प्रति वर्ष एकत्रित किया जायगा जिससे बेल्गोल के देव की रक्षा के लिये बीस रक्षक रक्खे जावेंगे व शेष द्रव्य मंदिरों के जीर्णोद्धारादि में खर्च किया जावेगा। जो इस शासन का उल्लंघन करेगा

वह राज्य का, संघ का व समुदाय का द्रोही ठहरेगा। इस सम्बन्ध में कदम्बहल्लि की शान्तीश्वर बस्ती का स्तम्भ लेख भी महत्त्वपूर्ण है। इस लेख में शैवों द्वारा जैनियों के अधिकारों की रक्षा का उल्लेख है। उसमें कहा गया है कि यमादि आठ गुणों के धारक, गुरु और देवों के भक्त, कलिकाल की कालिमा के प्रक्षालक, लाकुलीश्वर सिद्धान्त के अनुयायी, पञ्चदीक्षा क्रियाओं के विधायक सात करोड़ भौरुडों ने एकत्रित होकर मूलसंघ, देशीगण, पुस्तक गच्छ के कदम्बहल्लि के जिनालय को 'एकोटि जिनालय' की उपाधि तथा पञ्चमहावाद्य का अधिकार प्रदान किया। जो कोई इसमें 'ऐसा नहीं होना चाहिए' कहेगा वह शिव का द्रोही ठहरेगा। यह लेख लगभग शक सं० ११२२ का है।

लेख नं० १२६ (३२९) में हरिहर द्वितीय की मृत्यु का उल्लेख है जो तारण संवत्सर (शक १३६८) भाद्रपद कृष्णा दशमी सोमवार को हुई। अन्य एक लेख (ए० क० ८, तीर्थहल्लि १२९) से भी इसी बात का समर्थन होता है। लेख नं० ४२८ (३३७) से विदित होता है कि देवराय महाराय की रानी व पण्डिताचार्य की शिष्या भीमादेवी ने मङ्गायी बस्ति में शान्तिनाथ भगवान् की प्रतिष्ठा कराई। यह राजा सम्भवतः देवराय प्रथम है। शिलालेख से यह नई बात विदित होती है कि इस राजा की रानी जैनधर्मावलम्बिनी थी। यह लेख लगभग शक सं० १३३२ का है। लेख

नं० ८२ (२५३) (शक १३४४) में हरिहर द्वितीय के सेनापति इरुगप का परिचय है और कहा गया है कि उन्होंने बेल्गोल, एक वनकुञ्ज और एक तालाब का दान गोम्मटेश्वर के हेतु कर दिया। लेख में इरुगप की वंशावली इस प्रकार पाई जाती है—

बैच दण्डनायक (बुक्कराय प्र० के मंत्री)



बैचप इरुगप

लेख में पण्डितार्य और श्रुतमुनि की प्रशंसा के पश्चात् कहा गया है कि श्रुतमुनि के [illegible] दान दिया गया था। यह लेख शक सं० १३५५ का है जिससे विदित होता है कि इरुगप हरिहर द्वितीय के समय में भी विद्यमान थे। इरुगप संस्कृत के अच्छे विद्वान थे। उन्होंने 'नानार्थरत्नमाला' नामक संस्कृत-कोष की रचना की था। उनके तीन और लेख मिले हैं (ए० इ० ७, ११६, ए० क० ५ १—११६) जिनमें से एक शक सं० १३०७ और १३२८ के हैं जिनमें पण्डितार्य का उल्लेख है व तीसरा शक सं० १३५० का है और उसमें

कथन है कि इरुगप ने विजयनगर में कुंथजिनालय निर्माण कराया। लेख नं० १२५ (३२८) और १२७ (३३०) में देवराय द्वितीय की क्षय संवत्सर (शक १३६८) में मृत्यु का उल्लेख है।

मैसूर राजवंश

लेख नं० ८४ (२५०) शक सं० १५५६ का है। इसमें मैसूर नरेश चामराज ओडेयर द्वारा बेल्गोल के मंदिरों की जमीन के, जो बहुत दिनों से रहन थी, मुक्त कराये जाने का उल्लेख है। नरेश ने जिन लोगों को इस अवसर पर बुलवाया था उनमें भुजबलि चरित के कर्ता पञ्चबाण कवि के पुत्र बोम्मण्ण व कवि बोमण्ण भी थे। इसी विषय का कुछ और विशेष विवरण लेख नं० १४० (३५२) (शक १५५६) में पाया जाता है। इस लेख में राजा की ओर से मंदिर की भूमि रहन करने व कराने का निषेध किया गया है। यद्यपि लेखों में इस बात का उल्लेख नहीं है तथापि यह प्रायः निश्चय ही है कि उक्त विषय के निर्णय के लिये नरेश बेल्गोल अवश्य गये होंगे। चिदानन्द कवि के मुनिवंशाभ्युदय में नरेश की बेल्गोल की यात्रा का इस प्रकार वर्णन है। "मैसूर नरेश चामराज बेल्गोल में आये और गर्भगृह में से गोम्मटेश्वर के दर्शन किये। फिर उन्होंने द्वारे पर आकर दोनों बाजुओं के

शिलालेख पढ़वाये। उन्होंने यह ज्ञात किया कि किस प्रकार चामुण्डराय बेल्गोल आये थे और अपने गुरु नेमिचन्द्र की प्रेरणा से उन्होंने गोम्मटेश्वर को एक लाख छयानवे हजार 'वरह' की आय के ग्रामों का दान दिया था। इसके पश्चात् नरेश चिक्कर बस्ति में गये और वहाँ के लेखों से जैनाचार्यों की वंशावली, उनके महत्व व उनके कार्यों का परिचय प्राप्त किया। फिर उन्होंने यह पूछा कि अब गुरु कहाँ गये। बम्मय कवि, जो मन्दिर के अध्यक्षों में से थे, ने उत्तर दिया कि जगदेव के तेनुगु सामन्त के त्रास के कारण गोम्मटेश्वर की पूजा बन्द कर दी गई है और गुरु चारुकीर्ति इस स्थान को छोड़ भैरव-राज की रक्षा में भल्लातकीपुर (गेरुसोप्पे) में रहते हैं। इस पर नरेश ने गुरु को बुला लेने के लिये कहा और नया दान देने का वचन दिया। फिर उन्होंने भण्डारि बस्ति के दर्शन किए और चन्द्रगिरि के सब मंदिरों के दर्शन कर वे श्रीरङ्ग-पट्टण को लौट गए। पश्चात् बोम्मु और पदुमण्ण पण्डित चारु-कीर्ति को लाने के लिये भल्लातकीपुर भेजे गये। उनके आने पर वे सत्कार से बेलगोल पहुँचाये गये और राजा ने वचना-नुसार दान दिया। उपरोक्त वर्णन में जिस जगदेव का उल्लेख आया है वह चेन्नपट्टन का सामन्त राजा था। वह शक सं० १५५२ में चामराज द्वारा हराकर राज्यच्युत कर दिया गया।

लेख नं० ४४४ (३६५) में चिक्कदेवराज ओडेयर द्वारा बेल्गोल में एक कल्याणी (कुण्ड) निर्माण कराये जाने का

उल्लेख है। लेख नं० ८३ (२५९) में कृष्णराज ओडेयर के शक सं० १६४५ में बेल्गोल में आने व गोम्मटेश्वर के हेतु बेल्गोल आदि कई ग्रामों के दान का व चिक्कदेवराजवाले कुण्ड के निकट बनी हुई दानशाला के हेतु कबाले नामक ग्राम के दान का उल्लेख है। लेख में कहा गया है कि गोम्मटेश्वर के दर्शन कर नरेश बहुत ही प्रसन्न हुए और पुलकितगात्र होकर उन्होंने उक्त दान दिये। अनन्तकवि कृत 'गोम्मटेश्वर चरित' में भी इस नरेश की बेल्गोल-यात्रा का वर्णन है।

लेख नं० ४३३ (३५३) और ४३४ (३५४) कागज पर लिखी हुई कृष्णराज ओडेयर तृतीय की सनदें हैं जो समय-समय पर बेल्गोल के गुरु को दी गई हैं। इनमें की प्रथम सनद नरेश के मंत्री पुर्णय्य की दी हुई है और उस में कृष्णराज ओडेयर प्रथम के दान का समर्थन किया गया है। द्वितीय सनद स्वयं नरेश ने दी है। उसमें बेल्गोल के समस्त मंदिरों के खर्च व जीर्णोद्धार के लिये तीन ग्रामों के दान का उल्लेख है। इस लेख में समस्त मंदिरों की संख्या तैंतीस दी है—विन्ध्यगिरि पर आठ, चन्द्रगिरि पर सोलह, ग्राम में आठ व मलेयूर की पहाड़ी पर एक। इससे पूर्व मठ को उक्त मंदिरों के खर्च व जीर्णोद्धार के लिये राज्य से एक सौ बीस वरह का दान मिलता था। पर यह उक्त कार्य के लिये बढ़ेष्ट नहीं था इसी से राजमहल के

लक्ष्मी पंडित की प्रार्थना पर इसके बदले तीन ग्रामों का उक्त दान दिया गया *।

कृष्णराज ओडेयर तृतीय के समय का एक और लेख नं० ९८ (२२३) (शक १७४८) है। इस लेख में उल्लेख है कि चामुण्डराज के एक वंशज, कृष्णराज के प्रधान अङ्गरक्षक की मृत्यु गोम्मटेश्वर के मस्तकाभिषेक के दिवस हुई। इस पर उनके पुत्र ने गोम्मट स्वामी की प्रतिवर्ष पूजा के हेतु कुछ दान दिया।

वर्तमान महाराजा कृष्णराज ओडेयर चतुर्थ का नाम तिथि सहित चन्द्रगिरि के शिखर पर अंकित है जो नवम्बर १९०० ईस्वी में उनके बेल्गोल आने का स्मारक है।

कदम्ब वंश

अनुमान शक की नवमी शताब्दि के लेख नं० २८२ (४४३) में काञ्चिन दोणे के पास एक कदम्ब राजा की आज्ञा से तीन शिलायें लाई जाने का उल्लेख है। यह कदम्ब नरेश कौन था व शिलायें किस हेतु लाई गई थीं यह विदित करने के कोई साधन उपलब्ध नहीं हैं।

---

* लेख नं० १४१ राइस साहब के संग्रह में छपा है पर श्रीयुक्त नरसिंहाचार के नये संस्करण में वह नहीं छापा गया। श्रीयुक्त नरसिंहाचार का कथन है कि यह लेख उपर्युक्त दोनों सनदों के ऊपर से तैयार किया गया है और इसका अब मठ में पता नहीं चलता (देखो लेख नं० १४१)

नोलम्ब व पल्लव वंश

लेख नं० १०९ (२८१) में चामुण्डराज द्वारा नोलम्ब नरेश के हराये जाने का उल्लेख है। सम्भवतः यह नरेश दिलीप का पुत्र नन्नि नोलम्ब था। लेख नं० १२० (३१८) में बरकेरे के वीर पल्लवराय व उसके पुत्र शङ्कर नायक के नाम पाये जाते हैं। शङ्कर नायक का नाम लेख नं० ७३ (१७०) व २४९ (१७१) में भी पाया जाता है। ये लेख लगभग शक सं० ११४० के हैं।

चोलवंश

शक की दसवीं शताब्दि के एक अपूर्ण लेख नं० ४६९ (३७८) में एक चोल पेर्मडि का गङ्गों के साथ युद्ध का उल्लेख है। सम्भवतः यह नरेश राजेन्द्र चोल ही था जो गङ्गनरेश भूतराय द्वारा शक सं० ८७१ के लगभग मारा गया था जिसका कि उल्लेख आतकूर के लेख में है। लेख नं० ९० (२४०), ३६० (२५१) व ४८६ (३९७) में गङ्गराज द्वारा चोलराज नरसिंह वर्मा व दामोदर की पराजय का उल्लेख है।

कोङ्गाल्ववंश

कोङ्गाल्व नरेशों का राज्य अर्कल्गुड तालुका के अन्तर्गत कावेरी और हेमवती नदियों के बीच था। इनके लेख शक सं० ९४२ से १०९२ तक के पाये गये हैं। इन्हीं के दक्षिण में चङ्गाल्व राज्य था। इस वंश का सबसे अच्छा परिचय लेख नं० ५०० में राजा की उपाधियों में पाया जाता है।

यहाँ इस वंश के राजा राजेन्द्र पृथ्वी 'समधिगतपंचमहाशब्द', 'महामण्डलेश्वर', 'श्रीरत्नपुरवराधीश्वर', [illegible] व 'सूर्यवंशविभूषण' कहे गये हैं। इससे स्पष्ट है कि कोकल्ल नरेश सूर्यवंशी थे और चन्द्रवंश से इनकी सम्बन्धित थी। श्रीपुर व रतनपुर चौक राज्य की [illegible] थी। इस वंश के शिलालेखों से अब तक जिन [illegible] राजाओं के नाम व समय विदित हुए हैं— [illegible]

कलिंगराज कोकल्ल ....

[illegible] ....१०[illegible]

[illegible] ....१०[illegible]

[illegible] ..[illegible]

[illegible] ...[illegible]

[illegible]

पड्नाडु (आधुनिक हुनसूर तालुका) था। लेख नं० १०३ (२८८) में कथन है कि इस वंश के एक नरेश कुलोत्तुङ्ग चङ्गाल्व महादेव के मन्त्री के पुत्र ने गोम्मटेश्वर की ऊपरी मञ्जिल का शक सं० १४२२ में जीर्णोद्धार कराया। उक्त नरेश का उल्लेख एक और लेख में भी पाया गया है (ए. क. ४, हुनसूर ६३)

निडुगलवंश

निडुगल नरेश सूर्यवंशी थे और अपने को करिकाल चोल के वंशज कहते थे। वे ओरेयूरपुरवरेश्वर की उपाधि धारण करते थे। ओरेयूर (त्रिचनापल्ली के समीप) चोल राज्य की प्राचीन राजधानी थी। ये नरेश चोल महाराजा भी कहलाते थे। उनकी राजधानी पेञ्जेरु थी जो अब अनन्तपुर जिले में हेमावती कहलाती है। होय्सल नरेश विष्णुवर्द्धन के समय इस वंश का एक 'इरुङ्गोल' नाम का राजा राज्य करता था। लेख नं० ४२ (६६) में उसके नयकीर्ति सिद्धान्तदेव के शिष्य होने व लेख नं० १३८ (३४९) में उसके विष्णुवर्द्धन द्वारा हराये जाने का उल्लेख है।

उपर्युक्त राजकुलों के अतिरिक्त कुछ लेखों में और भी फुटकर राजाओं व राजवंशों का उल्लेख है। लेख नं० १५२ (११) में अरिष्टनेमि गुरु के समाधिमरण के समय दिण्डिकराज उपस्थित थे। दिण्डिक का उल्लेख एक और लेख (सा. इ. इ. ३–२८१) में भी आया है पर वह लेख लगभग

सन् ८०० का है और प्रस्तुत लेख उससे कोई दो सौ वर्ष प्राचीन अनुमान किया जाता है। लेख नं० १४ (२४) की नाग्सेन प्रशस्ति में नागनायक नाम के एक सामन्त राजा का उल्लेख है। लेख नं० ५५ (६९) में कहा गया है कि पद्मनन्दि धाराधीश भोज द्वारा व यशःकीर्ति सिंहलनरेश द्वारा सम्मानित हुए थे। लेख नं० ५४ (६७) में कहा है कि अकलङ्क देव ने हिमशीतल नरेश की सभा में बौद्धों को परास्त किया था व चतुर्मुखदेव ने पाण्ड्यनरेश द्वारा स्वामी की उपाधि प्राप्त की थी। लेख नं० ३० (१४४) में गङ्गकीर्तिराज व नं० ३८१ (५५०) में मारसिंह, राचमल्ल, का उल्लेख है। लेख नं० ५० (६४) में आचार्य [illegible] सिद्धान्तदेव के शिष्य [illegible] और [illegible] के शिष्य कहे गये हैं। [illegible] के शिष्य होने का [illegible] (१ ग, १५, १४) में भी पाया जाता है। [illegible] के शिष्य [illegible] ने [illegible] में [illegible] कहा है। नं० ४०० (१२०) में [illegible] व नं० ५१ (६१) में [illegible] का उल्लेख है। [illegible] ने [illegible] की [illegible] बनवाई थी। लेख नं० १०१ (३५५) में [illegible] आदि [illegible] राजाओं का [illegible] का उल्लेख है।

लेखों का मूल प्रयोजन

प्रस्तुत लेखों का मूल प्रयोजन धार्मिक है। इस समूह में लगभग एक सौ लेख मुनियों, आर्जिकाओं, श्रावक और श्राविकाओं के समाधिमरण के स्मारक हैं; लगभग एक सौ मन्दिर-निर्माण, मूर्तिप्रतिष्ठा, दानशाला, वाचनालय, मन्दिरों के दरवाजे, परकोटे, सिढ़ियाँ, रङ्गशालायें, तालाब, कुण्ड, उद्यान, जीर्णोद्धार आदि कार्यों के स्मारक हैं, अन्य एक सौ के लगभग मन्दिरों के खर्च, जीर्णोद्धार, पूजा, अभिषेक, आहारदान आदि के लिये ग्राम, भूमि, व रकम के दान के स्मारक हैं, लगभग एक सौ साठ संघों और यात्रियों की तीर्थयात्रा के स्मारक हैं और शेष चालीस ऐसे हैं जो या तो किसी आचार्य, श्रावक, व योधा की स्तुति मात्र हैं, व किसी स्थान-विशेष का नाम मात्र अंकित करते हैं व जिनका प्रयोजन अपूर्ण होने के कारण स्पष्ट विदित नहीं हो सकता।

सल्लेखना—समाधिमरण से सम्बन्ध रखनेवाले सौ लेखों में अधिकांश—अर्थात् लगभग साठ—सातवीं आठवीं शताब्दि व उससे पूर्व के हैं और शेष उससे पश्चात् के। इससे अनुमान होता है कि सातवीं आठवीं शताब्दि में सल्लेखना का जितना प्रचार था उतना उससे पश्चात् की शताब्दियों में नहीं रहा। समाधिमरण करनेवालों में लगभग सोलह के संख्या स्त्रियों—अर्जिकाओं व श्राविकाओं—की भी है। लेखों में कहीं पर इसे सल्लेखना, कहीं समाधि, कहीं संन्यसन,

कहीं व्रत व उपवास व अनशन द्वारा मरण व स्वर्गारोहण कहा है। अनेक स्थानों पर *सल्लेखना मरण* की सूचना केवल मुनियों व श्रावकों की निषद्याओं (स्मारकों) से चलता है।

सल्लेखना क्यों और किस प्रकार की जाती थी इसके सम्बन्ध में प्राचीन जैन ग्रन्थों में समाचार मिलते हैं। इस विषय पर समन्तभद्र स्वामी कृत रत्नकरण्ड श्रावकाचार में इस प्रकार कहा है—

उपसर्गे दुर्भिक्षे जरसि रुजायां च निःप्रतीकारे।
धर्माय तनुविमोचनमाहुः सल्लेखनामार्याः ॥ १ ॥
स्नेहं वैरं सङ्गं परिग्रहं चापहाय शुद्धमनाः।
स्वजनं परिजनमपि च क्षान्त्वा क्षमयेत्प्रियैर्वचनैः ॥ २ ॥
आलोच्य सर्वमेनः कृतकारितमनुमतं च निर्व्याजम्।
आरोपयेन्महाव्रतमामरणस्थायि निःशेषम् ॥ ३ ॥
शोकं भयमवसादं क्लेदं कालुष्यमरतिमपि हित्वा।
सत्त्वोत्साहमुदीर्य च मनः प्रसाद्यं श्रुतैरमृतैः ॥ ४ ॥
आहारं परिहाप्य क्रमशः स्निग्धं विवर्धयेत्पानं।
स्निग्धं च हापयित्वा खरपानं पूरयेत्क्रमशः ॥ ६ ॥
खरपानहापनामपि कृत्वा कृत्वोपवासमपि शक्त्या।
पञ्चनमस्कारमनास्तनुं त्यजेत्सर्वयत्नेन ॥ ६ ॥

अर्थात् "जब कोई उपसर्ग व दुर्भिक्ष पड़े, व बुढ़ापा व व्याधि सतावे और निवारण न की जा सके उस समय धर्म की रक्षा के हेतु शरीर त्याग करने को सल्लेखना कहते हैं। इसके

वन्दना करनी चाहिए। श्रवणबेल्गोल बहुत काल से एक ऐसा ही स्थान माना जाता रहा है। इस लेख-संग्रह में लगभग १६० लेख तीर्थ-यात्रियों के हैं। इनमें से अधिकांश-लगभग १०७—दक्षिण भारत के यात्रियों के और शेष उत्तर भारत-वासियों के हैं। दक्षिणी यात्रियों के लेखों में लगभग ५४ में केवल यात्रियों के नाम मात्र अंकित हैं, शेष लेखों में यात्रियों की केवल उपाधियाँ व उपाधियों सहित नाम पाये जाते हैं। कुछ लेखों में यह भी स्पष्ट कहा है कि अमुक यात्री व यात्रियों ने देव की व तीर्थ की वन्दना की। यात्रियों के जो नाम पाये जाते हैं उनमें से कुछ ये हैं—श्रीधरम्, वीतराशि, चावुण्डराय, कविरत्न, चकलङ्क पण्डित, मलमकुमार महामुनि, माधव चमावर, गङ्गदेव मणि, चन्द्रकीर्ति, नागवर्म, मारसिङ्गय्य और मल्लिषेण। सम्भव है कि इनमें के 'कविरत्न' वही कनाड़ भाषा के प्रसिद्ध कवि हों जिन्हें चालुक्य नरेश तैल तृतीय ने 'कविचक्रवर्ति' की उपाधि से विभूषित किया था व जिन्होंने शक सं० ९१५ में 'अजितपुराण' की रचना की थी। नागवर्म सम्भवतः वही प्रसिद्ध कनाड़ी कवि हों जिन्हें गङ्गनरेश रक्कसगङ्ग ने अपने दरबार में रक्खा था और जिन्होंने 'छन्दोम्बुधि' और 'कादम्बरी' नामक काव्यों की रचना की थी। 'चन्द्रकीर्ति' सम्भव है वे ही आचार्य हों जिनका उल्लेख ४९ (११७) में आया है। आश्चर्य नहीं जो चावुण्डराय और मारसिङ्गय्य क्रमशः चावुण्डराज मन्त्री और मारसिंह नरेश ही

हों। केवल उपाधियों में से कुछ इस प्रकार हैं—समधिगत पञ्चमहाशब्द; महामण्डलेश्वर, श्रीराजन चट्ट (राजव्यापारी), श्रीबडवरघण्ट (गरीबों का सेवक), रणधीर, इत्यादि। उपाधि-सहित नामों के उदाहरण इस प्रकार हैं—श्री ऐचय्य-विरोधि-निष्ठुर, श्रीजिनमार्गनीति-सम्पन्न-सर्पचूडामणि, श्रीवत्सराज बालादित्य, अरिष्टनेमि पण्डित परसमयध्वंसक, इत्यादि। जिनके साथ में यह भी कहा गया है कि उन्होंने देव की व तीर्थ की वन्दना की, उनमें से कुछ के नाम ये हैं—मल्लिषेण भट्टारक के शिष्य चरेङ्गय्य, अभयनन्दि पण्डित के शिष्य कोत्तय्य,* श्रीधर्मचन्द्रगीतय्य, नयनन्दि त्रिगुप्तदेव के शिष्य मधुवय्य, नागति के राजा इत्यादि। कुछ शिल्पियों के नाम भी हैं, जैसे—गण्डविमुक्तसिद्धान्तदेव के शिष्य भोधरोज, बिद्दिग, बमोज, चन्द्रादित्य और नागवर्मा।

इस प्रकार के शिलालेख यों तो निरुपयोगी समझ पड़ते हैं पर इतिहासखोजक के लिये कभी-कभी ये ही बड़े उपयोगी सिद्ध होते हैं। कम से कम इनसे यह बात तो सिद्ध होती ही है कि कितने प्राचीन समय से इस स्थान तीर्थ माना जाता रहा है और यति, मुनि, कवि, राजा, शिल्पी आदि कितने प्रकार के यात्रियों ने समय समय पर इस स्थान की पूजा वन्दना करना अपना धर्म समझा है। इससे इस स्थान की धार्मिकता, प्राचीनता और प्रसिद्धि का पता चलता है।

उत्तर भारत के यात्रियों के लेखों की संख्या लगभग ५३ है। ये सब मारवाड़ी-हिन्दी भाषा में हैं। लिपि के अनुसार ये लेख दो भागों में विभक्त किये जा सकते हैं। ३६ लेखों की लिपि नागरी है और १७ की महाजनी। नागरी लेखों का समय लगभग शक सं० १४०० से १७६० तक है। इनमें के दो लेख स्याही से लिखे हुए हैं। इन लेखों में के अधिकांश यात्री काष्ठा संघ के थे जिनमें के कुछ मण्डितटगच्छ के थे। यह गच्छ काष्ठा संघ के ही अन्तर्गत है। कुछ यात्रियों के साथ उनकी **बघेरवाल** जाति व **गोनागा** और **पोनहा** गोत्र का उल्लेख है। कुछ लेखों में यात्रियों के निवासस्थान पुरस्थान, माडवागढ़ व गुड़घटीपुर का उल्लेख है। महाजनी लिपि के १७ लेख उस विचित्र लिपि के हैं जिसे मुण्डा भाषा कहते हैं। इसकी विशेषता यह है कि इसमें मात्रायें प्रायः नहीं लगाई जातीं। केवल 'अ' और 'इ' की मात्राओं से ही अन्य सब मात्राओं का भी काम निकाल लिया जाता है। व्यञ्जनों में 'ज' और 'भ', 'ट' और 'ठ', 'ड' और 'ढ', 'भ' और 'व' में कोई भेद नहीं रक्खा जाता। यह भाषा आगरा, अवध और पञ्जाब प्रदेशों के व्यापारी महाजनों में प्रचलित है। कुछ लेखों में 'टाकरी' लिपि के अक्षर भी पाये जाते हैं, जो पञ्जाब के पहाड़ी हिस्सों में प्रचलित हैं। इस पर से अनुमान किया जा सकता है कि उक्त सब प्रदेशों से यात्री इस तीर्थस्थान की वन्दना को आते थे। उल्लिखित यात्रियों में अधिकांश श्रम-

वाल और सरावगी जातियों के थे। अग्रवालों के अन्तर्गत ही वे सब अवान्तर भेद पाये जाते हैं जिनका उल्लेख लेखों में आया है; यथा—नरसनवाला, सहनवाला, गङ्गानिया इत्यादि। अनेक यात्रियों ने अपने को 'पानीपथीय' कहा है जिससे विदित होता है कि वे 'पानीपत' के थे। लेखों में गोयल और गर्ग गोत्रों व शाहगंज और मोहनगढ़ स्थानों के नाम भी आते हैं। इन लेखों का समय लगभग शक सं० १६७० से १७१० तक है।

जीर्णोद्धार और दान—मन्दिरादिनिर्माण, जीर्णोद्धार और पूजाभिषेकादि के हेतु दान से सम्बन्ध रखनेवाले लेखों की संख्या लगभग दो सौ है। मन्दिरादिनिर्माण के विषय के लेखों का पर्याप्त परिचय पहले मन्दिरों आदि के वर्णन में आ चुका है। यहाँ शेष लेखों में से मुख्य २ का कुछ परिचय दिया जाता है। शक सं० ११०० के लगभग के लेख नं० ८८ (२१०), ८४ (२३८) और ५७ (२४२) में गोम्मटेश्वर की पूजा के हेतु पुष्पों के लिए दान का उल्लेख है। प्रथम लेख में कहा गया है कि समुदायाश्रित [illegible] के व्यापारी [illegible] ने अध्यात्मि बालचन्द्रदेव से कुछ भूमि मोल लेकर उसे गोम्मटेश की नित्य पूजा में बीस पुष्पमालाओं के [illegible] था। द्वितीय लेख में कथन है कि [illegible] के [illegible] ने [illegible] की पूजार्थ पुष्पों के लिये कुछ भूमि का दान [illegible] को दिया। तीसरे

लेख में उल्लेख है कि बेल्गोल के समस्त व्यापारियों ने 'संघ' से कुछ भूमि खरीद कर उसे मालाकार को गोम्मटेश की पूजा में पुष्प देने के लिये दान कर दी। लेख नं० ९१ (२४१) में कथन है कि बेल्गोल के समस्त व्यापारियों ने गोम्मटेश और पार्श्वदेव की पूजा में पुष्पों के लिये प्रतिवर्ष कुछ चन्दा देने का वचन दिया। लेख नं० ९३ (२४३) के अनुसार चेन्नि सेट्टि के पुत्र व चन्द्रकीर्ति भट्टारक के शिष्य कल्लय्य ने कुछ द्रव्य का दान इस हेतु दिया कि कम से कम पुष्पों की छः माला प्रतिदिवस *गोम्मटदेव और तीर्थंकरों को चढ़ाई जावें।* लेख नं० ९४, ९५, ९७ व ३३० (२४४, २४५, २४७, २००) में गोम्मटेश के प्रतिदिन अभिषेक के हेतु दुग्ध के लिये दान का उल्लेख है। इन लेखों में दुग्ध का परिमाण भी दिया गया है। और बेल्गोल के व्यापारी इस कार्य के प्रबन्धक नियुक्त किये गये हैं। लेख नं० १०६ (२५५) (शक सं० १३३१) में गोम्मटेश की मध्याह्न पूजन के हेतु दान का उल्लेख है।

लगभग शक सं० ११०० के लेख नं० ८६, ८७, ३६१ (२३५, २३६, २५२) में बमविसेट्टि द्वारा स्थापित चतुर्विंशति तीर्थंकरों की अष्टविध पूजा के हेतु व्यापारियों के वार्षिक चन्दों का उल्लेख है। इसी प्रकार लेख नं० ९९-१०२, १३१, १३५, १३७, ४५४ और ४७५ में भिन्न भिन्न सत्पुरुषों द्वारा भिन्न-भिन्न देवों और मन्दिरों की भिन्न भिन्न प्रकार की सेवा और पूजा के हेतु भिन्न-भिन्न समय पर नाना प्रकार के दानों का उल्लेख है।

लेख नं० १३४ (३४२) में कहा गया है कि हिरियअय्य के शिष्य गुम्मटन्न ने चन्द्रगिरि पर की चिक्कबस्ति, उत्तरीय दरवाजे पर की तीन बस्तियों और मङ्गायि बस्ति का जीर्णोद्धार कराया। लेख नं० ३७० (२७०) के अनुसार बेगूरु के बैयण ने एक बड़ा हौज और छप्पर बनवाया। नं० ४६८ (५००) के अनुसार एक साध्वी स्त्री जिण्णन्न ने एक मन्दिर को रथ का दान दिया, व नं० ४८३ के अनुसार मदेय नायक ने एक नन्दिस्तम्भ बनवाया।

लेखों से तत्कालीन दूध के भाव का अनुमान- अनेक लेखों में मस्तकाभिषेक के हेतु दुग्ध के लिये दान दिये जाने के उल्लेख हैं जिनसे उस समय के दूध के भाव का कुछ ज्ञान हो सकता है। उदाहरणार्थ, शक सं० ११९७ के एक लेख नं० ९१ (२४५) में कहा गया है कि हुलसूर के केतिसेट्टि ने गोम्मटदेव के नित्याभिषेक के लिये ३ मान दूध के लिये ३ गद्याण का दान दिया। यह दूध उक्त रकम के व्याज से जब तक सूर्य और चन्द्र हैं तब तक लिया जावे। गद्याण दक्षिण भारत का एक प्राचीन सोने का सिक्का है जो करीब दस आना भर होता है, और मान दक्षिण भारत का एक माप है जो ठीक दो सेर का होता है। अतएव स्पष्ट है कि १॥।≈) भर (दो आना कम दो तोला) सोने के व्याज भर के व्याज से ३६० × ३ × २ = २१६० सेर दूध आता था। शक सं० ११२८ के लेख नं० १२८ (३३३) से ज्ञात होता

है कि उस समय आठ 'द्रम्म' का सालाना एक 'द्रम्म' ब्याज आ सकता था अर्थात् ब्याज की दर सालाना मूल रकम का अष्टमांश थी। इसके अनुसार १॥।=) भर सोने का साल भर का ब्याज =)॥। (पौने चार आना) भर सोना हुआ। अतएव स्पष्ट है कि शक की बारहवीं शताब्दी के लगभग अर्थात् आज से छः सात सौ वर्ष पूर्व दक्षिण भारत में पौने चार आना भर सोने का २१६० सेर दूध बिकता था। इसे आजकल के चाँदी सोने के भाव के अनुसार इस प्रकार कह सकते हैं कि उस समय एक रुपया का लगभग साढ़े नौ मन दूध आता था।

इसी प्रकार लेख नं० ५४ (२४४) में जो नित्यप्रति ३ मान दूध के लिये ४ गद्याण के दान का उल्लेख है उसका हिसाब लगाने से २१६० सेर दूध की कीमत पाँच आना भर सोना निकलती है। शक सं० १२०१ के लेख १३१ (३३६) में नित्यप्रति एक 'बल्ल' दूध के लिये पाँच 'गद्याण' के दान का उल्लेख है जिसके अनुसार ३६० 'बल्ल' दूध की कीमत सवा छः आना भर सोना निकलती है। बल्ल सम्भवतः उस समय 'मान' से बड़ा कोई माप रहा है*।

---

* 'गद्याण' और 'मान' का अर्थ मुझे श्रीयुत पं० नाथूरामजी प्रेमी द्वारा विदित हुआ है। उन्होंने श्रवण बेल्गोला से समाचार में आकर अपने पहले पत्र में मुझे इस प्रकार लिखा था—"गद्याण = यह माप अनुमान १ तोले के बराबर होता है और एक सुवर्ण नाण्य (?) को

आचार्यों की वंशावली

जैन इतिहास की दृष्टि से वे लेख बहुत महत्त्वपूर्ण हैं जिनमें आचार्यों की परम्परायें दी हैं। परन्तु संग्रह के इस खण्ड लेखों में ऐसी परम्परायें व पट्टावलियाँ पाई जाती हैं। इस सम्बन्ध में सबसे पहले हम उन लेखों को लेते हैं जिनमें उन श्रुतकेवली आचार्यों का क्रमबद्ध उल्लेख पाया है जिन्होंने महावीर स्वामी के पश्चात् जैन आगम का संरक्षण और प्रचार किया। ऐसे लेख नं० १ और १०५ (२५४) हैं। इनमें इन आचार्यों की निम्नलिखित परम्परा पाई जाती है [illegible] हरिवंश पुराण की गुर्वावली भी दी जाती है।

[illegible]

	नं० १०५ (२५४)	हरिवंश पुराण	नं० १
	(शक सं० १३२०)	(शक सं० ७०५)	(अनु० ७ वीं शताब्दी)
	महावीर	महावीर	महावीर
११ गणधर ३ केवली	१ इन्द्रभूति । गौतम	१ गौतम	१ गौतम
	२ अग्निभूति		
	३ वायुभूति		
	४ अकम्पन		
	५ मौर्य		
	६ सुधर्म । सुधर्म	२ सुधर्म	२ लोहाचार्य
	७ पुत्र		
	८ मैत्रेय		
	९ मौण्ड्य		
	१० अन्धवेल		
	११ प्रभासक । जम्बू	३ जम्बू	३ जम्बू
५ श्रुतकेवली	१ विष्णु	१ विष्णु	१ विष्णुदेव
	२ अपराजित	२ नन्दिमित्र	२ अपराजित
	३ नन्दिमित्र	३ अपराजित	३ गोवर्धन
	४ गोवर्द्धन	४ गोवर्द्धन	४ भद्रबाहु
	५ भद्रबाहु	५ भद्रबाहु	

११ दशपूर्वी	१ क्षत्रिय	१ विशाख	१ विशाख
	२ प्रोष्ठिल	२ प्रोष्ठिल	२ प्रोष्ठिल
	३ गङ्गदेव	३ क्षत्रिय	३ कृत्तिकार्य (क्षत्रिकार्य)
	४ जय	४ जय	४ जय
	५ सुधर्म	५ नाग	५ नाम (नाग)
	६ विजय	६ सिद्धार्थ	६ सिद्धार्थ
	७ विशाख	७ धृतिषेण	७ धृतिषेण
	८ बुद्धिल	८ विजय	८ बुद्धिल आदि-
	९ धृतिषेण	९ बुद्धिल	
	१० नागसेन	१० गङ्गदेव	
	११ सिद्धार्थ	११ धर्मसेन	
५ एकादशांगी	१ नक्षत्र	१ नक्षत्र	
	२ पाण्डु	२ यशःपाल	
	३ जयपाल	३ पाण्डु	
	४ कंसाचार्य	४ ध्रुवसेन	
	५ द्रुमसेन (धृतिसेन)	५ कंसाचार्य	
४ आचारांगी	१ लोह	१ सुभद्र	
	२ सुभद्र	२ यशोभद्र	
	३ जयभद्र	३ यशोबाहु	
	४ यशोबाहु	४ लोहाचार्य	

यह अङ्गधारी आचार्यों की पट्टावली है। नामों के क्रम में जो हेर फेर पाये जाते हैं, उसका कारण यह है कि लेख नं० १०५ हरिवंश पुराण से भिन्न छन्दों में लिखा गया है। कवि को उपजाति छन्द में नामों का समावेश करने के लिये उनको इधर उधर रखना पड़ा है। इसी कारण कहीं कहीं नामों में भी हेर फेर पाये जाते हैं। लेख में यशःपाल के लिये जयपाल, धर्मसेन के लिये सुधर्म, और यशोभद्र की जगह जयभद्र नाम आये हैं। ध्रुवसेन की जगह जो लेख में द्रुमसेन पाया जाता है, वह संभवतः मूल लेख के पढ़ने में भूल हुई है। लेख नं० १ में जो अपूर्ण परम्परा पाई जाती है उसका कारण यह ज्ञात होता है कि वहाँ लेखक का अभिप्राय पूर्ण पट्टावलि देने का नहीं था। उन्होंने कुछ नाम देकर आदि लगाकर उस सुप्रसिद्ध परम्परा का उल्लेख मात्र किया है। इसी से श्रुतकेवलियों के बीच एक नाम छूट भी गया है। इन लेखों में यद्यपि इन आचार्यों का समय नहीं बतलाया गया तथापि इन्द्रनन्दिकृत श्रुतावतार से जाना जाता है कि महावीर स्वामी के पश्चात् तीन केवली ६२ वर्ष में, पांच श्रुतकेवली १०० वर्ष में, ग्यारह दशपूर्वी १८३ वर्ष में, पांच एकादशाङ्गी २२० वर्ष में और चार एकाङ्गी ११८ वर्ष में हुए हैं। इस प्रकार महावीर स्वामी की मृत्यु के पश्चात् आचारांगधारियों तक ६८३ वर्ष व्यतीत हुए थे।

बहुत से लेखों में इन आचार्यों की परम्परा कुन्द-कुन्दाचार्य से ली गई है। दुर्भाग्यवश किसी भी लेख में उपर्युक्त

श्रुतज्ञानियों और कुन्दकुन्दाचार्य के बीच की पूरी गुरुपरम्परा नहीं पाई जाती। केवल उपर्युक्त लेख नं० १०५ में ही इस बीच के आचार्यों के कुछ नाम पाये जाते हैं जो इस प्रकार हैं—

१ कुम्भ	७ सर्वज्ञ
२ विनीत या अविनीत	८ सर्वगुप्त
३ हलधर	९ महीधर
४ वसुदेव	१० धनपाल
५ अचल	११ महावीर
६ मेरुधीर	१२ वीरट्ट इत्यादि

नन्दि संघ की पट्टावली में कुन्दकुन्दाचार्य की गुरुपरम्परा इस प्रकार पाई जाती है :—

भद्रबाहु
|
गुप्तिगुप्त
|
माघनन्दि
|
जिनचन्द्र
|
कुन्दकुन्द

इन्द्रनन्दिकृत श्रुतावतार के अनुसार कुन्दकुन्द उन आचार्यों में हुए हैं जिन्होंने सिद्धान्त के आगमज्ञान के लोप होने के पश्चात् आगम का पुस्तकारूढ़ किया।

कुन्दकुन्दाचार्य जैन इतिहास, विशेषतः दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के इतिहास, में सबसे महत्वपूर्ण पुरुष हुए हैं। वे प्राचीन और नवीन सम्प्रदाय के बीच की एक कड़ी हैं। उनसे पहले जो भद्रबाहु आदि श्रुतज्ञानी हो गये हैं उनके नाममात्र के सिवाय उनके कोई ग्रंथ आदि हमें अब तक प्राप्त नहीं हुए हैं। कुन्दकुन्दाचार्य से कुछ प्रथम ही जिन पुष्पदन्त, भूतबलि आदि आचार्यों ने आगम को पुस्तकारूढ किया उनके भी ग्रन्थों का अब कुछ पता नहीं चलता। पर कुन्दकुन्दाचार्य के अनेक ग्रन्थ हमें प्राप्त हैं। आगे के प्रायः सभी आचार्यों ने इनका स्मरण किया है और अपने को कुन्दकुन्दान्वय के कह-कर प्रसिद्ध किया है। लेखों में दिगम्बर सम्प्रदाय का एक और विशेष नाम मूल संघ पाया जाता है। यह नाम सम्भवतः सबसे प्रथम दिगम्बर संघ का श्वेताम्बर संघ से पृथक् निर्देश करने के लिये दिया गया। अनुमान शक संवत् १०२२ के शिलालेख नं० ५५ में कुन्दकुन्द को ही मूल संघ के आदि गणी कहा है यथा—

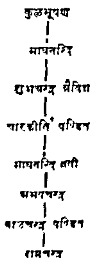
श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने।

श्रीकोण्डकुन्दनामाभून्मूलसंघाग्रणीर्गणी॥

पर शिलालेख नं० ४२, ४३, ४७ और ५० (क्रमशः शकसं० १०९९, १०४५, १०३७ और १०६०) में गौतमादि मुनीश्वरों का स्मरण कर कहा गया है कि उन्हीं की सन्तान के नन्दि गण में पद्मनन्दि अपर नाम कुन्दकुन्दाचार्य हुए। लेख

नं० ५४ (शक १०५०), ४० (शक १०८५) और १०८ (शक १३५५) में गौतम स्वामी के उल्लेख के पश्चात् उन्हीं की सन्तति में भद्रबाहु और फिर उनके शिष्य चन्द्रगुप्त का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उनके ही अन्वय में कुन्द-कुन्द मुनि हुए। इन लेखों में इस स्थल पर संघ गणादि का नाम निर्देश नहीं किया गया।

लेख नं० ४१ में बिना किसी पूर्व सम्बन्ध के यह आचार्य-परम्परा भी दी है—

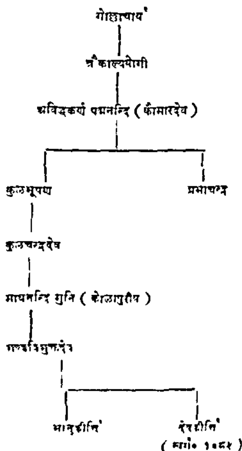


लेख नं० ४७, ४३, ५० और ४२ में वर्णित कुन्दकुन्दान्वय की परम्परा इस प्रकार पाई जाती है।

शक सं० १०८५ के लेख नं० ४० में निम्न प्रकार आचार्य-परम्परा पाई जाती है —

गौतमादि
(उनकी सन्तान में)
भद्रबाहु
|
चन्द्रगुप्त
(उनके अन्वय में)
पद्मनन्दि (कुन्दकुन्द)
(उनके अन्वय में)
उमास्वाति (गृद्धपिच्छ)
|
बलाकपिच्छ
(उनकी परम्परा में)
समन्तभद्र
(उनके पश्चात्)
देवनन्दि (जिनेन्द्रबुद्धि व पूज्यपाद)
(उनके पश्चात्)
अकलङ्क

(उनकी सन्तति में मूल संघ में नन्दिगण का जो देशीगण प्रभेद हुआ उसमें गोल्लदेशाधिप हुए।)



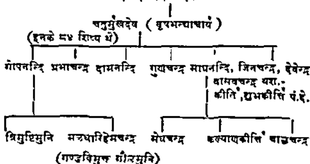
अनुमान शक सं० १०२२ के लेख नं० ५५ की आचार्य परम्परा इस प्रकार है—

मूल संघ, देशीगण, वक्रगच्छ

कुन्दकुन्द (मूलसंघाग्रणी)

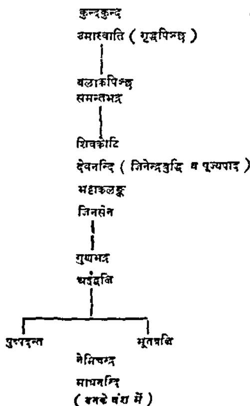
(इनके अन्वय में)

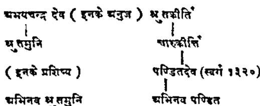
देवेन्द्र सिद्धान्तदेव



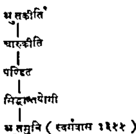
मूल पद्यात्मक लेख के पश्चात् आचार्यों के नामों की गद्य में पुनरावृत्ति है। इस नामावली में ऊपर के भाग से कुछ विशेषतायें पाई जाती हैं। मूलसंघ देशीगण, वक्रगच्छ कुन्दकुन्दान्वय में यहाँ देवेन्द्र सिद्धान्तदेव से प्रथम भद्रदेव का नामोल्लेख है। देवेन्द्र सिद्धान्तदेव के पश्चात् चतुर्मुखदेव का द्वितीय नाम वृषभनन्द्याचार्य दिया है। चतुर्मुखदेव के शिष्यों में महेन्द्रचन्द्र पण्डितदेव का नाम अधिक है। माघनन्दि के शिष्यों में त्रिरत्ननन्दि का नाम अधिक है। यशःकीर्ति और वासवचन्द्र गोपनन्दि के शिष्यों में गिनाये गये हैं। इनमें चन्द्रनन्दि का नाम अधिक है।

लेख नं० १०५ (शक १३२०) की कुन्दकुन्दाचार्य तक की परम्परा हम ऊपर देख चुके हैं। कुन्दकुन्दाचार्य से आगे इस लेख की गुरु-परम्परा इस प्रकार है—



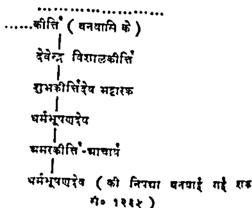


लेख नं० १०८ की परम्परा आदि से अकलङ्कदेव तक लेख नं० ४० के समान दी है। अकलङ्कदेव के पश्चात् संघ-भेद हुआ जिसकी इंगुलेश्वर बलि की कुछ परम्परा इस प्रकार दी है।



शक संवत् १२९५ के लेख नं० १११ में मूलसंघ बलात्कार गण की कुछ परम्परा निम्न प्रकार पाई जाती है। लेख बहुत घिसा हुआ होने के कारण परम्परा के ऊपर और नीचे के कुछ नाम स्पष्ट नहीं पढ़े गये।

मूल संघ—बलात्कार गण



शक सं० १०४७ के लेख नं० ४९३ में नन्दि संघ, द्रमिण-गण अरुङ्गलान्वय की निम्न प्रकार परम्परा है। इस लेख में आचार्यों का गुरु-शिष्य-सम्बन्ध नहीं बतलाया गया केवल एक के पश्चात् दूसरे हुए ऐसा कहा गया है।

नन्दि संघ, द्रमिणगण, अरुङ्गलान्वय

महावीर स्वामी
|
गौतम गणधर

... .

समन्तभद्रव्रती

एक सन्धिसुमति-भट्टारक
अकलङ्कदेव वादीभसिंह
वक्रग्रीवाचार्य
श्रीनन्द्याचार्य
सिंहनन्द्याचार्य
श्रीपाल भट्टारक
कनकसेन वादिराजदेव
श्रीविजयशान्तिदेव
पुष्पसेन सिद्धान्तदेव
वादिराज
शान्तिषेण देव
कुमारसेन सैद्धान्तिक
मल्लिषेण मलधारि
श्रीपाल त्रैविद्यदेव (शक सं० १०४७ में
विष्णुवर्द्धन नरेश ने शल्य ग्राम का दान दिया।)

लगभग शक सं० १०९९ के लेख नं० ११३ में उल्लेख है कि देसी गण पुस्तक गच्छ कुन्दकुन्दान्वय के निम्नलिखित आचार्यों ने मिलकर पञ्चकल्याणोत्सव मनाया—

त्रिभुवनराजगुरु भानुचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती, सोमचन्द्र सि० च०, चतुर्मुख भट्टारकदेव, सिंहनन्दि भट्टाचार्य, शान्ति भट्टारक, शान्तिकीर्त्ति, कनकचन्द्र मलधारिदेव और नेमिचन्द्र मलधारिदेव।

शान्तिदेव (विनयादित्य पोय्सल नरेश द्वारा पूज्य) चतुर्मुखदेव (पाण्ड्य नरेश द्वारा स्वामी की उपाधि और आहवमल्लनरेश द्वारा चतुर्मुखदेव की उपाधि प्राप्त की)
गुणसेन (मुल्लूर के)
अजितसेन वादीभसिंह

शान्तिनाथ कविताकान्त		पद्मनाभ वादिकोलाहल
कुमारसेन
मल्लिषेण मलधारि (अजितसेन पण्डितदेव के शिष्य, स्वर्गवास शक सं० १०५०)

उपर्युक्त वंशावलियों के आचार्यों में से कुछ के विषय में और जो जो बातें लेखों में कही गई हैं वे इस प्रकार हैं—

कुन्दकुन्दाचार्य*—ये मूल संघ के अग्रगामी थे (मूल-संघाग्रणी) (५५)। इन्होंने उत्तम चारित्र द्वारा चारण ऋद्धि प्राप्त की थी (४०, ४२, ४३, ४७, ५०) जिसके बल से वे पृथ्वी से चार अंगुल ऊपर चलते थे (१०५) मानो यह बताने के हेतु कि वे बाह्य और अभ्यन्तर रज से अस्पृष्ट हैं (१०५)।

उमास्वाति—ये गृद्धपिच्छाचार्य कहलाते थे (४२, ४३, ४७, ५०) वे बलाकपिच्छ के गुरु और तत्वार्थसूत्र के कर्ता थे (१०५)।

* इन आचार्यों के विषय में विशेष ज्ञान के लिये माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला के 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' की भूमिका देखिए।

समन्तभद्र—ये वादिसिंह, गमकत्व और समागविन्
निधि पदों से विभूषित थे (४०, ५४ ४९३) इन्होंने भस्म
व्याधि को जीता तथा पाटलिपुत्र, मालवा, सिन्धु, टक (पञ्जाब)
काञ्चीपुर, विदिशा (उज्जैन) व करहाटक (कोल्हापुर) में
वादियों को आमन्त्रित करने के लिये भेरी बजाई। इन्होंने
'धूर्जटि'* की जिह्वा को भी स्थगित कर दिया था (५४)।
समन्तभद्र 'भद्रमूर्ति' जिन शासन के प्रणेता और प्रतिवाद-शैलों
को वाग्वज्र से चूर्ण करनेवाले थे (१०८)

शिवकोटि—ये समन्तभद्र के शिष्य व तत्त्वार्थसूत्रटीका
के कर्ता थे (१०५)।

पूज्यपाद—इनका दीक्षा नाम 'देवनन्दि' था, बुद्धि
के कारण ये जिनेन्द्रबुद्धि कहलाए तथा इनके पादों की पूजा
वनदेवता करते थे इसलिए विद्वानों में ये पूज्यपाद के नाम से
प्रख्यात हुए (४०, १०५)। ये जैनेन्द्र व्याकरण,
सर्वार्थसिद्धि (टीका) जैनाभिषेक, समाधिशतक, छन्द-
शास्त्र व स्वास्थ्यशास्त्र के कर्ता थे (४०)। कुमुद के एक
लेख (रि ए. ई. ६६७) में ये न्यायकुमुदचन्द्रोदय न्यास,
शाकटायन सूत्र न्यास, जैनेन्द्र न्यास, पाणिनि सूत्र के शब्दावतार

* 'धूर्जटि' की जिह्वा को स्थगित करने का [illegible] 'धूर्जटि' [illegible]
दिया गया है (६६, ४६६)। धूर्जटि शङ्कर की उपाधि है व
[illegible] शङ्कराचार्य की भी है। [illegible] है कि शङ्कराचार्य [illegible]
के पश्चात् माने गये हैं।

न्यास, वैद्यशास्त्र और तत्त्वार्थ सूत्रटीका (सर्वार्थसिद्धि) के कर्त्ता कहे गये हैं। वे सुराधीश्वरपूज्यपाद, अप्रतिमौषर्द्धि, 'विदेहजिनदर्शनपूतगात्र' थे। उनके पादप्रक्षालित जल से लोहा भी सुवर्ण हो जाता था (१०८)*।

गोल्लाचार्य—ये मुनि होने से प्रथम गोल्ल देश के नरेश थे। नूत्न चन्दिल नरेश के वंशचूड़ामणि थे (४७)।

त्रैकाल्ययोगी—इन्होंने एक महाराक्षस को अपना शिष्य बना लिया था। उनके स्मरणमात्र से भूत प्रेत भाग जाते थे। उन्होंने करञ्ज के तैल को घृत में परिवर्तित कर दिया था (४७)।

गोपनन्दि—बड़े भारी कवि और तर्क प्रवीण थे। उन्होंने जैन धर्म की वैसी ही उन्नति की जैसी गङ्गनरेशों के समय में हुई थी। उन्होंने धूर्जटि की जिह्वा को भी स्थगित कर दिया था (५५—४९२)।

प्रभाचन्द्र—ये धारा के भोज नरेश द्वारा सम्मानित हुए थे (५५)।

दामनन्दि—इन्होंने महावादि 'विष्णुभट्ट' को परास्त किया था जिससे वे 'महावादिविष्णुभट्टघरट्ट' कहे गये हैं (५५)।

जिनचन्द्र—ये व्याकरण में पूज्यपाद, तर्क में भट्टाकलङ्क और साहित्य में भारवि थे (५५)।

---

*विशेष जानने के लिये माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला के रत्नकरण्ड श्रावकाचार की भूमिका व 'जैन साहित्य संशोधक' भा० १ अं० २, देखिए पृ० ८०-८८।

रामचन्द्र—इन्होंने चालुक्य नरेश के कटक में बाल-सरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी (५५)।

यशःकीर्ति—इन्होंने सिंहल नरेश से सम्मान प्राप्त किया था (४१)।

कल्याणकीर्ति—शाकिनी आदि भूत-प्रेतों को भगाने में प्रवीण थे (५४)।

श्रुतकीर्ति—'राघवपाण्डवीय' काव्य के कर्ता थे। यह काव्य अनुलोमप्रतिलोम नामक चित्रालङ्कार-युक्त था अर्थात् वह आदि से अन्त व अन्त से आदि की ओर एक सा पढ़ा जा सकता था। जैसा कि काव्य के नाम से ही विदित होता है वह द्वयर्थक भी था। श्रुतकीर्ति ने देवेन्द्र व अन्य विपक्षियों को वाद में परास्त किया था। सम्भव है कि उक्त देवेन्द्र उस नाम के वे ही श्वेताम्बराचार्य हों जिनके विषय में प्रभावक चरित में कहा गया है कि उन्होंने दिगम्बराचार्य कुमुदचन्द्र को परास्त किया था। (लेख नं० ४० के नीचे का फुटनोट देखिए।)

वादिराज—जयसिंह चालुक्य द्वारा सम्मानित हुए थे (५४)।

चतुर्मुखदेव—पाण्ड्य नरेश से स्वामी की उपाधि प्राप्त की थी।

इन आचार्यों के अतिरिक्त अन्य जिन प्रभावशाली आचार्यों का परिचय हमें लेखों से मिलता है उनका विवरण ऊपर ऐति-

में कोई चारित्र-भेद नहीं है। कई लेखों (१११, १२६ आदि) में बलात्कारगण का उल्लेख है। इन्हीं उल्लेखों से स्पष्ट है कि यह भी नन्दिगण व देशीगण से अभिन्न है।

लेख नं० १०५ में कहा गया है कि प्रत्येक संघ गण, गच्छ और बलि (शाखा) में विभाजित है। देशीगण का सबसे प्रसिद्ध गच्छ **पुस्तकगच्छ** है जिसका उल्लेख अधिकांश लेखों में पाया जाता है। इसी गण का दूसरा गच्छ 'वक्रगच्छ' है जिसकी एक परम्परा लेख नं० ५५ (लगभग शक १०८२) में पाई जाती है। लेख नं० १०५, १०८ व १२६ में देशीगण की **इंगुलेश्वरबलि** (शाखा) का उल्लेख है। बलि या शाखा किसी आचार्य-विशेष व स्थान-विशेष के नाम से निर्दिष्ट होती थी। देशीगण की एक दूसरी 'हनसोगे' नामक शाखा का उल्लेख लेख नं० ७० में पाया जाता है। लेख घिसा हुआ होने से वहाँ यह स्पष्ट नहीं ज्ञात होता कि यह शाखा देशीगण की ही है। पर जिन आचार्यों (गुणचन्द्र व नयकीर्त्ति) को वहाँ हनसोगे शाखा का कहा है वे ही लेख नं० १२४ में मूल संघ देशीगण, पुस्तकगच्छ के कहे गये हैं। इसी से उक्त शाखा का देशीगणान्तर्गत होना सिद्ध होता है। हनसोगे शाखा का कई अन्य लेखों में भी उल्लेख आया है। हनसोगे एक

पुस्तकगच्छ और वक्रगच्छ

इंगुलेश्वरबलि

हनसोगे व पनसोगे बलि

स्थान-विशेष का नाम था। कहीं-कहीं इसे पनसोगेबलि भी कहा है। (शि० ए० जै० नं० २२३, २३९, ४४९ आदि)

अनेक लेखों (२८, ३१, २११, २१२, २१४, २१८) में नविलूर संघ का उल्लेख है। इसी संघ को कहीं-कहीं (२७, २०७, २१५) नमिलूर संघ कहा है। इसी का दूसरा नाम 'मयूर संघ' पाया जाता है (२७, २९)। लेख नं० २७ में पहले नमिलूर संघ का उल्लेख है और फिर उसे ही मयूर संघ कहा है। लेख नं० २९ में इसे 'मयूर ग्राम' संघ कहा है जिससे स्पष्ट है कि यह संघ बलि व शाखा के समान स्थान-विशेष की अपेक्षा से पृथक् निर्दिष्ट हुआ है। कहीं पर स्पष्ट उल्लेख तो नहीं पाया गया पर जान पड़ता है कि यह भी देशीगण के ही अन्तर्गत है। इसी प्रकार जो लेख नं० १९४ में कित्तूर संघ* नं० २०२, २०६ में कोलातूर संघ नं० ४९६ में दिंगिडगूर शाखा व नं० २२० में 'श्रीपुरान्वय' का उल्लेख है वे सब भी देशीगण की ही स्थानीय शाखाएँ विदित होती हैं।

नविलूर, नमिलूर व मयूर संघ

* कित्तूर मैसूर जिले के हेग्गडदेवनकोटे तालुका में है। इसका प्राचीन नाम कीर्तिपुर था जो पुन्नाट राज्य की राजधानी था। कनड़ साहित्य में पुन्नाट राज्य का उल्लेख है। टालेमी ने भी 'पौन्नट' नाम से इसका उल्लेख किया है। इसी राज्य का पुन्नाट संघ प्रसिद्ध है। हरिवंश पुराण के कर्त्ता जिनसेन व कथाकोष के कर्त्ता हरिषेण पुन्नाट-संघीय ही थे। सम्भवतः कित्तूर संघ पुन्नाट संघ का ही दूसरा नाम है।

कुछ गर्भित लेख नं० १०,११,१२,१३,२०,२० २४ २५,१०२,१०८,१११,११२ और ११४ को छोड़ शेष लेखों में उल्लिखित आचार्यों का परिचय।

क्रम आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ,गण,गच्छादि	लेख नं०	समय लगभग में	विशेष विवरण
१ [illegible]देव मुनि	[illegible]	×	१२	श० ६२२	समाधिमरण।
२ [illegible]सेन मुनि	×	×	१०	"	समाधिमरण। भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्र ने जिस धर्म की उन्नति की थी उसके क्षीण होने पर इन मुनिराज ने उसे पुनरुत्थापित किया।
३ [illegible] आचार्य	,,	×	१२२ (१२४) (२१०)	"	समाधिमरण। इनके अनेक शिष्य थे। समाधि के समय 'दिण्डिकराज' साक्षी थे। लेख नं० १२४ व २१० यद्यपि क्रमशः ८वीं व ११वीं शताब्दि के अनुमान किये जाते हैं तथापि सम्भवतः उनमें भी इन्हीं आचार्य का उल्लेख है। लेख नं० २१० में वे 'परमसमयदुर्गमरु' पद से विभूषित किये गये हैं व 'मलेपोल्द' के कहे गये हैं।
४ [illegible] आचार्य	×		१२४	"	इनके किसी शिष्य ने समाधिमरण किया।
५ [illegible]	×	,	०	श० ११२२	गुरु शिष्य का समाधिमरण। ये ही सम्भवतः लेख नं० ६ के गुणसेन गुरु के व लेख नं० ११ के [illegible] गुरु के गुरु थे।

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ,गण,गच्छादि	लेख नं०	समय शक सं०में	विशेष विवरण
६	चरितश्री मुनि	×	×	३	अ० ६२२	समाधिमरण।
७	पानप (मौनद)	×	×	६	”	समाधिमरण ।
८	बलदेव गुरु	धर्मसेन गुरु	×	७	”	” । इनके गुरु 'कित्तूर' परगने में 'वेल्माद' नामक स्थान के थे।
९	उग्रसेन गुरु	पट्टिनि गुरु	×	८	”	” । इनके गुरु 'मालनूर' के थे। उग्रसेनजी ने एक मास तक अनशन किया।
१०	गुणसेन गुरु	मौनि गुरु	×	९	”	” । लेख नं० २ में सम्भवतः इन्हीं मौनिगुरु का उल्लेख है। गुणसेन 'कोद्दर' के थे।
११	उल्लिकल गुरु	×	×	११	”	” ।
१२	काळाबि(कला-एक) गुरु	×	×	१२	”	एक शिष्य का समाधिमरण ।
१३	नागसेन गुरु	ऋषभसेन गुरु	×	१४	”	समाधिमरण ।
१४	सिंहनंदि गुरु	वेट्टेडे गुरु	×	१५	”	” ।
१५	गुणभूषित	×	नन्दिगगण(?)	२१	”	” । लेख बहुत घिसा है, इससे भाव स्पष्ट नहीं हुआ।

××	×		१११	समाधिमरण	। ये गुरु 'इङ्गूर' के थे।
	×	नविलूर संघ		"	
	×			"	
	×			"	
	×			"	। ये आचार्य 'नदि' राज्य के थे।
	×	नमिलूर संघ	११६	"	
	×		११७	"	
	×		११३	"	
	×		११४	"	
	×		११८	"	। ये 'वेगूर' के थे।
	×			"	। ये दक्षिण 'मधुरा' से आये थे। इन्हें मरने न मनाया था।
	×		११०	"	
			१११	"	
			११०		। जिनका...

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ,गण,गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
२९	बलदेवाचार्य	×	×	११५	श०६२२	समाधिमरण।
३०	पद्मनन्दि मुनि	×	×	११६	"	" ।
३१	पुष्पनन्दि	×	×	११७	"	" ।
३२	त्रिलोक भट्टारक	×	कोटातूर संघ	२०३	"	" ।
३३	इन्द्रनन्दि आचार्य	×	×	२०५	"	" ।
३४	पुष्पसेनाचार्य	×	नविलूर संघ	२१२	"	समाधिमरण।
३५	श्रीदेवाचार्य	×	×	२१३	"	"
३६	मल्लिषेण भट्टारक	×	×	१४६	अनु० ८वीं शताब्दि	इनके एक शिष्य ने तीर्थ वन्दना की।
३७	कुमारनन्दि भट्टारक	×	×	२२७	"	×
३८	अजितसेन भट्टारक " मुनि	×	×	३८ ६७	अनु० ८२१	लेख नं० ३८ में कहा गया है कि गङ्गनरेश मारसिंह ने इनके निकट समाधिमरण किया। व लेख नं० ६७ के अनुसार इनके शिष्य चामुण्डराय के पुत्र जिनदेवन ने जिन-मंदिर बनवाया।
३९	मलधारिदेव	नयनन्दि विमुक्त	×	२०४	अनु० ९७०	नयनन्दि विमुक्त के एक शिष्य ने तीर्थ वंदना की।
४०	रत्ननन्दिदेव	×	×	४१८	श०१०००	महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल कोदण्डल ने

						कुछ भूमि का दान दिया ।
४१	प्रभाचन्द्रसिद्धान्त देव	×	×	५००	श०१००१	जैन्यालय के हेतु कोङ्गाल्व नरेश अदटरादित्य द्वारा भूमिदान । उपाधि-अभयसिद्धान्तरत्नाकर ।
४२	गण्डविमुक्तदेव	×	मूलसंघ कानूर गण तगरिल गच्छ	,,	,,	कोङ्गाल्वनरेश राजेन्द्र पृथुवी द्वारा बस्ती-निर्माण और भूमिदान ।
४३	देवनन्दि भट्टारक	×	×	४९९	श०१०००	
४४	गोपनन्दि पण्डित देव	चतुर्मुखदेव	मू० दे० पु०	४९२	श०१०१५	पोय्सलनरेश त्रिभुवनमल्ल एरेयङ्ग ने बस्तियों के जीर्णोद्धार के हेतु ग्राम का दान दिया । गोपनन्दि ने क्षीण होते हुए जैनधर्म का गङ्ग नरेशों की सहायता से पुनरुद्धार किया । ये षड्दर्शन के ज्ञाता थे ।
४५	देवेन्द्रसिद्धान्तदेव	×	,,	,,	,,	उपर्युक्त नरेश के गुरुओं में से थे ।
४६	अकलङ्क पण्डित	×	×	१६६	श०१०२०	×
४७	शान्तनन्दि देव	×	×	२२४	,,	चरणचिह्न हैं ।
४८	चन्द्रकीर्तिदेव	×	×	२२५	,,	,,
४९	अभयनन्दिपण्डित	×	×	२२	श०१०२२	एक शिष्य ने देववन्दना की ।
५०	शुभचन्द्रसि० देव	कु० मलधारिदेव	मू० दे० पु०	४६	१०३७	ये पोय्सल नरेश विष्णुवर्द्धन के मंत्री
				४९	१०३९	गङ्गराज दण्डनायक और उनके कुटुम्ब
				४५, ६३,	१०४०	के गुरु थे । इन्होंने उक्त कुटुम्ब के सदस्यों
				१४६५,		से कितने ही जिनालय निर्माण कराये,

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
				४४६, ४४७, ४८१, ४८६,	श० १०४१	जीर्णोद्धार कराया, मूर्तियाँ प्रतिष्ठित कराई और कितनों ही को दीक्षा, सन्यास आदि दिये।
				४१	१०४२	
				४८,६२	१०४४	
				५३	१०५०	
				६०	श० ११००	
२१	दिवाकरनन्दि	देवेन्द्र सि० देव	मू० दे० पु०	११९	१०४१	इस लेख से यह गुरुक्रम विदित होता है— देवेन्द्र सि० देव | दिवाकरनन्दि | मलधारिदेव, शुभचन्द्र देव सि० मु०
२२	भानुकीर्त्ति मुनि	×				
२३	प्रभाचन्द्र सि० देव	मेघचन्द्र त्रै० देव	मू० दे०	२२१	१०३१	पोय्सल राजश्रेष्ठि ने इनसे दीक्षा ली।
				५१,५२	१०४१	इनकी एक शिष्या ने पट्टशाला (वाचनालय) स्थापित कराई।
				४५	१०४३	ये विष्णुवर्द्धन
				५६	१०४५	नरेश की रानी शान्तलदेवी के गुरु थे।

				४३	१०५०	इनके निर्माण कराये हुए बसदि गन्धवारण मन्दिर के लिये इन्हें ग्राम आदि के दान दिये गये थे।
४४	चारकीर्ति देव	×	×	,,	,,	लेख के लेखक बोकिमय्य के गुरु।
४५	कनकनन्दि	×	×	४४	१०४१	ये मुल्लूर निवासी थे (मुल्लूर कुर्ग में है)। नृपकाम पोय्सळ के आश्रित पोचिगाङ्क के गुरु थे।
४६	वर्धमानदेव	×	×	४३	१०५०	इनकी और प्रभाचन्द्र सि० देव की साक्षी से शान्तलदेवी की माता ने संन्यास लिया था।
४७	रविचन्द्रदेव					
४८	गण्डविमुक्त सि० देव	×	मू० दे० पु०	३६८ २४१	१०५० श०१०७०	इनके शिष्य दण्डनायक भरतेश्वर ने बाहुबलि स्वामी का पादपीठ निर्माण कराया।
४९	नयकीर्ति	×	×	४१०	१०५०	विष्णुवर्धन नरेश के राज्यकाल में नयकीर्ति का स्वर्गवास हो जाने पर कल्याणकीर्ति को जिनालय बनवाने व पूजनादि के हेतु भूमि का दान दिया गया।
५०	कल्याणकीर्ति	×	×			
५१	भानुकीर्तिदेव	×	×	१४४	श०१०५०	
५२	माधवचन्द्रदेव	शुभचन्द्र सि० देव	मू० दे० पु०	,,	,,	
५३	नयकीर्ति देव प्र० म० (हिरिय)	×	×	३६४	श०१०६५	
५४	नयकीर्ति देव (चिक्क)					
५५	शुभकीर्तिदेव	×	×	१८८	श०१०६७	

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
६६	त्रिकालयोगी	×	×	४७३	श० १०६०	
६७	अभयदेव	×	मूलसंघ	"	"	
६८	पु० मलधारि-देव	×	×	१३७	श० १०८०	हुल्ल मंत्री के गुरु।
६९	नयकीर्ति सि० देव (म० म०	गुणचन्द्र सि० दे०	मू० दे० पु० इंगलेश्वर शाखा	"	"	हुल्ल मंत्री ने ग्राम का दान दिया।
				७८	श० १०२०	
				१२२	"	
				३१७-२०	"	
				३२४	"	
				३२६	"	
				३२७	"	
७०	दामनन्दित्रै० देव			१३८	१०८१	
७१	भानुकीर्ति सि० देव			१३७	श० १०८३	
				६६	" १०६२	
				७०	" १०६२	
७२	बालचन्द्रदेव अध्यात्मि	म० म० नय-कीर्ति देव	मू० दे० पु० इंगलेश्वर शाखा	४६१	" १०६२	कुन्दकुन्दाचार्य के प्राभृत ग्रंथ पर इनकी कनाड़ी टीका पाई जाती है।
७३	प्रभाचन्द्रदेव			६०	" ११००	
				१०४	"	

क्रमांक	नाम	गुरु	संघ	लेख नं०	समय	विशेष
				१८७	"	
७४	माघनन्दि भट्टारक			८६	" ११०१	
				१२४	" ११०३	
७५	पद्मनन्दिदेव मंत्रवादि			४१६	"	
				४१४	११०४	
७६	नेमिचन्द्रपं० देव			१३०	श० १११८	
				१०१ } १२६ } ११८ }	" १११०	
				१२८	" ११२८	
				८१	श० ११२१	
७७	लक्ष्मनन्दि मुनि					
७८	माधवचन्द्र व्रती	देवकीर्ति भ०भ०	×	३६	१०८५	देवकीर्ति मुनि बड़े भारी कवि, तार्किक और वक्ता थे। इस तिथि को उनका स्वर्गवास होने पर इन शिष्यों ने उनकी निषद्या बनवाई।
७९	त्रिभुवनमल्ल योगी					
८०	मेघचन्द्र	गण्डविमुक्त सिद्धान्त (द्वितीय) नयकीर्ति देव	मू० दे० पु०	४१५	११०८	इनके एक शिष्य रामदेव विभु ने जिनालय बनवाया व दान दिया।
८१	नयकीर्ति देव		×	४०६	श० १११०	
८२	धनकीर्ति देव	×	×	२४३	श० ११११	

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ,गण,गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
८३	चन्द्रप्रभदेव म० म०	हिरियनयकीर्ति	×	८८,८९ अ	११०८	
८४	चन्द्रकीर्ति	×	×		११२०	
८५	कनकनन्दिदेव	×	×	२३८ अ	११२०	
८६	मल्लिषेण	×	×	२५१	,,	इनकी प्रतिमा है।
८७	सागरनन्दि सि० देव	शुभचन्द्र त्रै० देव	मू० दे० पु०	४६१ ४७१	,, ,,	
८८	शुभचन्द्र त्रै० देव	माघनन्दि सि० देव	,,	,,	,,	
८९	वादिराज	×	×	४५९ अ०	११२२	
९०	मल्लिषेण मलधारि	×	×	,,	,,	
९१	आषाढयोगीन्द्र	×	×	,,	,,	
९२	वादिराजदेव	भीपाळ योगीन्द्र	×	,,	,,	
९३	शान्तिशिवपण्डित	,,	×	,,	,,	
९४	परवादिमल्ल पण्डित	,,	×	,,	,,	
९५	नेमिचन्द्र पं० देव म०म० राजगुरु	×	×	४७५	११२९	

९६	अभयनन्दि	×	×	४६१	श०११७०	
९७	श्रुतकीर्ति	×	×	”	”	
९८	गुणचन्द्र	×	×	”	”	
९९	भानुकीर्ति	माघनन्दिसि०च०	मू० दे० पु०	४६६	११७०	
१००	माघनन्दि भट्टारक	भानुकीर्ति	”	”	”	
१०१	चन्द्रप्रभदेव	नयकीर्ति देव म० म०	×	६६	श०११६६	
१०२	चन्द्रकीर्तिभट्टारक	×	×	६६	श०११६७	
१०३	प्रभाचन्द्र भट्टारक	×	×	६४,६७	”	
१०४	मुनिचन्द्रदेव	उदयचन्द्रदेव म० म०	×	१६७	१२००	इन आचार्यों और अन्य सज्जनों ने चन्दा किया।
१०५	पद्मनन्दिदेव	चन्द्रप्रभदेव	×	”	”	
१०६	कुमुदचन्द्र	×	×	१२६	१२०५	
१०७	माघनन्दि सि०च०	×	×	”	”	होय्सलराय राजगुरु। सम्भवतः ये ही उस शास्त्रसार के कर्ता हैं जिसका उल्लेख प्रारम्भ के एक श्लोक में आया है। माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला नं० २१ में एक 'शास्त्रसार समुच्चय' नामक ग्रन्थ छपा है और भूमिका में कहा गया है कि सम्भवत ये कुमुदचन्द्र के गुरु थे। (देखो मा० ग्र० भूमिका पृ० २३-२४)

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
१२१.	अजितकीर्ति	चारुकीर्ति — अजितकीर्ति — शान्तकीर्ति	देसी गण	७२	१०११	एक मास के अनशन से सल्लेखना।
१२३	चारुकीर्ति पं० आचार्य	×	मू० दे० पु०	४१३ ४३४	१०३२ १०६२	मैसूर-नरेश कृष्णराज की ओर से सनदें प्राप्त कीं।
१२४	सन्मतिसागरवर्णी	चारुकीर्ति गुरु	,,	४३६ ४६१ ४६७ ४३३ ४६६	१०७८ ,, ,, १०८० ,,	इनके मनोरथ से बिम्बस्थापना की गई।

संकेताक्षरों का अर्थ

अ० व अनु० = अनुमानतः। कु० = कुक्कुटासन। त्रै० देव = त्रैविद्यदेव। पं० आचार्य = पंडिताचार्य। पं० देव = पंडितदेव। मल = मलधारी। म० म० = महामण्डलाचार्य। मू० दे० पु० = मूल संघ, देशीगण, पुस्तक-गच्छ। सि० देव = सिद्धान्तदेव। सि० च० = सिद्धान्त चक्रवर्ती। सि० मु० = सिद्धान्त मुनीश्वर।

पार्श्वनाथ बस्ति के दक्षिण पा. ओर के शिलालेख

१ (१)

(लगभग शक सं० ५२२)

सिद्धम् स्वस्ति ।

जितम्भगवता श्रीमद्धर्म्म-तीर्त्थ-विधायिना ।
वर्द्धमानेन सम्प्राप्त-सिद्धि-सौख्यामृतात्मना ॥ १ ॥
लोकालोक-द्वयाधारम्वस्तु स्थास्नु चरिष्णु वा ।
*सच्चिदालोक-शक्तिः स्वा व्यश्नुते यस्य केवला ॥ २ ॥
जगत्यचिन्त्य-माहात्म्य-पूजातिशयमीयुषः ।
तीर्त्थकृन्नाम पुण्यौघ-महार्हन्त्यमुपेयुषः ॥ ३ ॥
तदनु श्री-विशालयम् (लायाम्†) जयत्यद्य जगद्धितम् ।
तस्य शासनमव्याजं प्रवादि-मत-शासनम् ॥ ४ ॥

अथ खलु सकल-जगदुदय-करणोदित-निरतिशय-गुणा-स्पदीभूत-परमजिन-शासन-सरस्समभिवर्द्धित - भव्यजन - कमल-विकसन-वितिमिर-गुण-किरण-सहस्र-महोति महावीर-सवितरि परिनिर्वृते भगवत्परमर्षि - गौतम - गणधर - साक्षाच्छिष्य-

---

* सच्चिदा † विशालेयम्

[illegible]

२ (७०)

([illegible] शक सं० ६२२)

सदेयरेनाड सिन्दूर मौनिगुरवडिगळ [illegible] नागमतिगन्तियर् मूरु तिङ्गळ् नोन्तु मुडिपिदर् ।

* [illegible] † प्रभाकरैय ‡ [illegible] § [illegible]

[बदेरेगाड्[1] में चित्तूर के मौनि गुरु की शिष्या नागमति गन्तियर् ने तीन मास के व्रत के पश्चात् समाधिमरण किया ।]

३ (१२)

(लगभग शक सं० ६२२)

ओं । दुरिताभृद् वृषभाख्कीर्त्यमरे पादेश्वरान[illegible]म्

दुर-मिथ्यात्व-प्रमुक-ध्वि[illegible]-नृपनाम्नोंदृग[illegible]

[illegible]विघा[illegible]मुनिभि[illegible]

चरित[illegible]नामधेयप्रगुणनिन्ध्रतागं [illegible] ॥

[पाप, अज्ञान व मिथ्यात्व को हरा और इन्द्रियों का दमन कर कटवप्र पर्वत पर [illegible] मुनि-व्रत [illegible] को प्राप्त हुए ।]

४ (१७)

(लगभग शक सं० ६२२)

......गमुतीन्तु मुडिपिदर् ।

[[illegible] समाधिमरण किया ।]

५ (१८)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति श्री अकुलाय् गिर् [illegible] मुडिपिदर् ।

[[illegible] ने [illegible] समाधिमरण किया ।]

६ (१९)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री मेघुदोरेय [illegible]-भटारर्बोन्तु मुडिपिदार् ।

[1] [illegible] के एक [illegible] में बदेरेगाड् का उल्लेख [illegible] है । [illegible] है बदेरेगाड् भी इसी का नाम हो (इंडि. एण्टी. ८, १९८) [illegible] ।

[मेदुवेरे के चामर भट्टार ने अनशन प्राणोत्सर्ग किया ।]

७ (२५)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री किनूरा नेम्मादरा धर्म्मसेनगुरवडिगला शिष्यर् बालदेवगुरवडिगल् सन्यासमनं नोन्तु मुडिपिदार् ।

[किनूर में नेम्माद के धर्मसेनगुरु के शिष्य बलदेवगुरु ने सन्यासव्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया ।]

८ (२५)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री मासनूर पट्टिनि गुरवडिगल शिष्यर् उग्रसेनगुरवडिगल् ओन्दु तिङ्गल् सन्यासमनं नोन्तु मुडिपिदार् ।

[मलनूर के पट्टिनिगुरु के शिष्य उग्रसेनगुरु ने एक मास तक सन्यास-व्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया ।]

९ (८)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री अगलिय मौनिगुरवर शिष्य कोट्टरद गुणसेनगुरवर्नोन्तु मुडिप्पिदार् ।

[अगलि के मौनिगुरु के शिष्य कोट्टर के गुणसेन गुरु ने व्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया ।]

१० (७)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री पेरुमालु गुरवडिगला शिष्य धणणे कुत्तारेविकुरवि...डिप्पिदार् ।

* एचि ।

[illegible] की शिष्या [illegible] (*) ने [illegible] किया ।]

११ (८)

(लगभग शक सं० [illegible])

श्री [illegible] वडिगळ् [illegible]......दार् ।

[[illegible] गुरु (या [illegible] के गुरु) ने अन [illegible] [illegible] किया

१२ (४)

(लगभग शक सं० [illegible])

[illegible] डिगळ् [illegible] ....

[[illegible] (या [illegible] के गुरु) ने अन [illegible] (समाधिमरण किया)]

१३ (११)

(लगभग शक सं० [illegible])

श्री [illegible] गुरवडिगळ शिष्यर् [illegible] [illegible] कलापकद गुरवडिगळ [illegible] [illegible] सन्यासनं [illegible] मुडिपिदार् ।

[[illegible] में [illegible] के कलापक* गुरु [illegible] गुरु के शिष्य ने [illegible] दिन तक सन्यास का [illegible] समाधिमरण किया ।]

१४ (३४)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री-ऋषभसेन गुरवडिगळ शिष्यर् नागसेन गुरवडिगळ् सन्यासनविधि इन्तु मुडिपिदार् ।

* कलापक का तात्पर्य गुरुसमूह या संघ होता है ।

नागसेनमनघं गुणाधिकं नागनायकजितारिमण्डलं ।
राजपूज्यममलश्रीयाम्पदं कामदं हतमदं नमाम्यहं ॥

[ऋषभसेनगुरु के शिष्य नागसेनगुरु ने सन्यास-विधि से प्राणोत्सर्ग किया ।]

१५ (२)

(लगभग शक सं० ५७२)

श्री । उद्यानैर्ज्जितनन्दनं घ्वनदलिव्यामस्तकोत्पन्न—
व्यामिश्रीकृत†-शालिपिञ्जरदिशं कृत्वा तु बाह्याचलं ।
सर्व्वप्राणिदयार्थदाक्षिभगवद्ध्यानेन‡सम्बोधयन्
आराध्याचलमस्तके **कनकसत्सेनो**त्मवत्सस्पति ॥ १ ॥
अहो बहिर्गिरिरित्यक्त्वा **बलदेव**मुनिरश्रीमान् ।
आराधनम्प्रगृह्णीत्वा सिद्धलोकं गतर्पुनः ॥ २ ॥

१६ (३०)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री . . स्मडिगल् नोन्तु कालं केयदार् ।

[...स्मडिगल ने व्रत पाल देहोत्सर्ग किया ।]

१७-१८ (३१)

(लगभग शक सं० ५७२)

श्री —**भद्रबाहु** सचन्द्रगुप्तमुनीन्द्रयुग्मदिनोप्पेवल् ।
भद्रमागिद धर्म्ममन्दु वलिक्केवन्दिनिसल्कलो ॥

---

† व्यापि श्रीकृत ‡ भगवंता (शा) सेन (यथा पुस्तीराम)

विट्टमाघर शान्तिसेनमुनीशनाकिएवेल्गोल ।
अद्रिमेलशनादि विट्टपुनर्भवक्के आगि . . ॥

[जो जैन-धर्म भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्र के तेज से भारी समृद्धि को प्राप्त हुआ था उसके किञ्चित् क्षीण हो जाने पर शान्तिसेन मुनि ने उसे पुनरुत्थापित किया। इन मुनियों ने वेल्गोल पर्वत पर अशन आदि का त्याग कर पुनर्जन्म को जीत लिया।]

१९ (३२)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री वेट्टेडे गुरवडिगलमाणाक्कर्सिङ्गणन्दिगुरवडिगल्नोन्तु-कालं-केयदार् ।

[वेट्टेडेगुरु के शिष्य सिंहनन्दिगुरु ने व्रत पाल देहोत्सर्ग किया]

२० (२६)

(लगभग शक सं० ६२२)

....

.....यरछरि पीठ दिल्दा नान्

......तारि कुमाररि नन्दिकेयेर्ता

त्थिरदरलिन्तुपेगुरम सुरलोकविभूति एय्दिदार् ।

[......इस प्रकार पेगुरम (?) ने सुरलोक विभूति को प्राप्त किया।]

२१ (२८)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति श्रीगुणभूपितमादि वलाडःदेरिमिदा निसिदिगे सद्धम्मगुरुसन्तानान् मन्द्रिग-गयता-नयान् गिरिवलदामे-

लवि......स्थलमान् तीरदाणमार्कलगं नेलदि मानदा सद्धम्मदा गेलि ससानदि पवान् ।

[इस लेख का भाव स्पष्ट नहीं हुआ ।]

२२ (४८)

(लगभग शक सं० १०२२)

श्री अभयणन्दि पण्डितर गुड्ड कोत्तय्य वन्दिश्चि देवर वन्दिसिद ।

[अभयनन्दि पण्डित के गृहस्थ शिष्य कोत्तय्य ने यहाँ आकर देव-वन्दना की ।]

२३ (२८)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति श्रीइनुङ्गूरा मे*लुगवासगुरवर्कल्वप्प मेट्टमेल्कालं केयदार् ।

[इनुङ्गुर के मेलगवासगुरु ने कल्वप्प (कटवप्र) पर्वत पर देहोत्सर्ग किया ।]

२४ (३५)

(लगभग शक सं० ७२२)

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दपदकेदलिप्वजमान्या··· महामहासामन्ताधिपति श्रीवल्लभ···हा-राजाधिराज··· मंभर-महाराजरा मगन्दिर् रणावलोक-श्रीकम्बय्यन् पृथुवीराज्यं गेयं व···रमर्कूहवप्पु···ल पेर्गडत्ति दिना वांसदिम-

* मे

इट्टु कोट्टु···सेन पडिगलं मनसिजरा···गनाभरसि बेनेएत्ति
मैनमुज्ममिसुवल्लि कोट्टु पोलमेरे सट्टग्गेरेय किलकेरे पैगि
पचरकल्ल मेगे भल्लिन्दा बसेल् कर्ग्गल्मारदु सल्लु पेरिय भाल
···वारि मरल् पुगुमपेरि···तारेयु भालरे मेरे दुबेट्टगे निरुकल्लु
कोवछदा पेरिय पलचु पल्लि कुडित्तु भरमरा श्रीकरणमुं·····
············गादियर दिपिडगगामुण्डरुम् एन्नुवरु···वड्डरु-
वल्लभ-गामुण्डरुम् वन्दि पन्नुव रुपिड मारम्मनु कादलूर
श्रीविक्रम-गामुण्डरुं कलिदुर्ग्गगामुण्डरुं अगदिपो·····
·····यरर···रणापारगामुण्डरु अन्दमासल उत्तम
गामुण्डरुं नविलूर नाल्गामुण्डरुं बेलगोलद गोविन्दपा-
डिय व..ल्लामन्दुं येलगोलदा वलि गोविन्दपाडिगं कोट्टु.

बहुभिर्व्वसुधाभुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलं ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमिः ॥*

[श्रीवल्लभमहाराज के पुत्र महासामन्ताधिपति रणावलोक श्रीकम्बय्यन् के राज्य में मनसिज (?) की रानी के व्याधि से मुक्त होने के पश्चात् मौन व्रत समाप्त होने पर कुछ भूमि का दान दिया गया था, जिसकी सीमा आदि लेख में दी है। लेख दान की शपथ के साथ समाप्त होता है।]

---

* ये दो श्लोक सर्वपुरीराम में बहुत प्रसिद्ध हैं। इसमें 'यदाभूमि' के स्थान पर 'यथाभूमि' व 'स्वदत्तं' 'परदत्तं' 'हरन्ति' 'तथायां' पाठ हैं।

२५ * (६१)

(लगभग शक सं० ८२२)

श्रीमत्······पु···शिष्यर्प्परिट्टोनेमि माडिसिदर् सिरं.

[..के शिष्य अरिट्टोनेमि ने बनवाया ।]

---

* ...रेश्वर की बस्ति के दक्षिण की ओर ।

शासनवस्ति के पूर्व की ओर के शिलालेख

२६ (८८)

(लगभग शक सं० ६२२)

सुरचापंबोले विद्युल्लतेगल तेरवोलमञ्जुवोल्तेवोरि बेगं।
पिरिगुं श्रीरूप-लीला-धन-विभव-महाराशिगल्निल्लवार्ग्गं ॥
परमार्त्थं मेच्चेनानीधरधियुलिरवानेन्दु सन्यासनं-गे-।
य्दुरु सत्वनन्दिसेन-प्रवर-मुनिवरन्देवलोकक्के सन्दान् ॥

[रूप, लीला, धन व विभव, इन्द्र-धनुष, बिजली व ओसबिन्दु के समान क्षणिक हैं, ऐसा विचारकर नन्दिसेन मुनि ने सन्यास धार सुरलोक को प्रयाण किया।]

२७ (११४)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री ॥ शुभान्वित-श्रीनमिलूरसङ्घदा। प्रभावती······।
प्रभाव्यमी-पर्व्वतदुल्ले नोन्तुताम्। स्वभाव सौन्दर्य्य कराङ्ग-
राधिपर् ॥

ग्रामे मयूरसङ्घ्स्य आर्य्यिका दमितामती।
कटवप्रगिरिमध्यस्था साधिता च समाधिता ॥

[नमिलूरसंघ की प्रभावती ने इस पर्वत पर व्रत धार दिव्य शरीर प्राप्त किया।]

[मयूरग्रामसंघ की आर्यिका दमितामती ने कटवप्र पर्वत पर समाधि-मरण किया ।]

२८ (८८)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री ॥ तपमान्द्वादशदा विधानमुखदिन् कॆरॆदॆन्दुवाधात्रिमॆल् ।
चपलिल्ला नविलूर सङ्घदमहानन्तामतीखन्तियार् ॥
विपुलश्रीकटवप्रनल् गिरियमेल्नोन्वोन्दु सन्मार्ग्गदिन् ।
उपमील्या सुरलोकसौख्यदेडेयान्तामॆरिद इन्दाल् मनम् ॥

[नविलूर संघ की अनन्तामती-गन्ति ने द्वादश तप धार कटवप्र पर्वत पर यथाविधि व्रतों का पालन किया और सुरलोक का अनुपम सुख प्राप्त किया ।]

२६ (१०८)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री ॥ अनवरतप्रालम्पि भृत-शरयममेन्तें विष्छेयं
वनदोळयोग्य... नक्कुमदि......गनो...
मनवमिकुल .....रदि...नोन्तुसमाधिकूडिदों
अनुपम दिव्यपदु सुरलोकद मार्ग्ग दोलिल्दरिन्त्रिनिम् ॥
मयूरग्रामसंघस्य मौन्दर्या-शार्य्य-नामिका ।
कटप्रगिरिशैलेष माधितस्य समाधितः ॥

[उत्साह के साथ आत्म-संयम-सहित समाधि व्रत का पालन किया और सहज ही अनुपम सुरलोक का मार्ग ग्रहण किया । (?)]

[मयूरग्रामसंघ की आर्या ने कटवप्र पर्वत पर समाधि-मरण किया ।]

३० (१०५)

(लगभग शक सं० ६२२)

भद्रादिनामननेकं गुणकीर्त्तिदेन्तान्
तुङ्गोत्थभक्तिवशदिन् तोरदिह्रिदेहम्
पोङ्गोल् विचित्रगिरिकूटमयंकुचेल्लम्।

[गुणकीर्त्ति ने भक्ति सहित यहां देहोत्सर्ग किया।]

३१ (१०६)

(लगभग शक सं० ६२२)

नविलूरा श्रीसङ्घदुल्ले गुरवंनम्मौनियाचारियर्
भवराशिप्यरनिन्दिताग्र्युयमि ··· वृषभनन्दीमुनी।
भवविरक्तैन-सुमार्गदुल्ले नष्टदेन्दाराधना-योगदिन्
भवरं साधिसि स्वर्गलोकसुख-चित्त ...... भाधिगल्।

[नविलूर संघ के मौनिय आचार्य के शिष्य वृषभनन्दि मुनि ने समाधि-मरण किया।]

३२ (११३)

(लगभग शक सं० ६२२)

बनग मृत्युवरवागरि देन्दु सुपण्डितन्।
अनेक-शील-गुणमालेगलिन्मगिदोपिदोन्॥
विनय-देवसेन-नाम-महामुनि नोन्तु पिम्।
इन दरिन्दु पलिवङ्गदे वान्दिवमेरिदान्॥

[मृत्यु का समय निकट जान गुणवान् और शीलवान् देवसेन महामुनि मन वाऊ स्वर्ग-गामी हुए।]

३३ (८३)

(लगभग शक सं० ६२२)

पडेंपरंगीनडे केरदु तने सडयममान्कोलतूरमडु . . ।
वडे कोरेदिन्तुवाल्दुदरिदिमेनगेन्दु ममाधि कूडिएं ॥
पडे-विडियल्करडि कटवप्रवंगिरियं निल्लदनन्धन
पडेगमोलिप्प......न्दी-सुरलोक-महा-विमरलननादं ।

["अब मेरे लिये जीवन असम्भव है" ऐसा कहकर कोल-तूर संघ के......(?) ने समाधि-व्रत लिया और कटवप्र पर्वत पर से सुरलोक प्राप्त किया ।]

३४ (८४)

(लगभग शक सं० ६२२)

स्वस्ति श्री

मनवद्यनदि-राष्ट्रदुल्ले प्रथित-यशो ..न्दकान्वन्दु.. लाम्
विनयाचार प्रभावन्वपदिप्रधिकन्चन्द्र-देवाचार्य नामन्
उदित-श्री-कल्वप्पिनुल्ले रिषिगिरि-शिले-मेल्नोन्तुवन्देहमिकि
निरवद्यन रि स्वर्ग शिवनिलेपडेदान्साधुगलपूज्यमानन् । .

[नदिराज्य के यशस्वी, प्रभावयुक्त, शील-सदाचार-सम्पन्न चन्द्रदेव आचार्य कल्वप्प नामक ऋषिपर्वत पर व्रत पाल स्वर्गगामी हुए ।]

३५ (७६)

(लगभग शक सं० ६२२)

सिद्धम्

नेरेदाद व्रत-शील-नोन्पि-गुणदिं स्वाध्याय-सम्पत्तिनिम् ।

१५

करेइल्-नल्वप-धर्म्मदा-ससिमति-श्री-गन्तियर्व्वेन्दुमेल् ॥
परिदायुप्यमनेन्दु नोडेनगे बानिन्तेन्दु कल्वप्पिनुल् ।
तोरदाराधने-नोन्तु तीर्थ-गिरि-मेल् स्वर्गालयक्केरिदार् ॥

[व्रत-शील-आदि-सम्पन्न ससिमति-गन्ति कल्वप्पु पर्वत पर आई और यह कहकर कि मुझे इसी मार्ग का अनुसरण करना है तीर्थगिरि पर सन्यास धारणकर स्वर्गगामी हुईं ।]



कांचिन दोणे के मार्ग पर के शिलालेख

३६ (१४५)

(लगभग शक सं० ६२२)

श्री **एरेयगये** कवट्टद लो......।

[कवट्ट में एरेयगवे......]

३७ (१४६)

(लगभग शक सं० १०७२)

श्रीमतु **गरुडकेसिराज** स्थिरं जीयातु ।

३८ (५९)

(शक सं० ८९६)

कूगे ब्रह्मदेव स्तम्भ पर

(दक्षिणमुख)

स्वस्ति स......म् उदधि कृत्वावधि मेदिनी

..पक . ...धत्रो भुञ्जन् भुजासेर्ब्बलात् ।

न्यश्रीजग......पतेर्गाङ्गान्वयव्योमाभुजा

मूला-स्यमभू.........वनितावक्त्रेन्दुमेघोदयः ॥ १ ॥

गद्यं । तस्य सकलभुवनभिनेत्रग्रगत्रस्तकगुर-

कौमुदी-महातेजायमानस्य। सत्यवाक्यकोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराजस्य। कृष्णराजोत्तरदिग्विजयविदितगुर्जराधिराजस्य। वनगजमल्लप्रतिमल्लवल्लवदल्लदर्प्प-दलनप्रकटीकृतविक्रमस्य। गण्डमार्त्तण्ड-प्रतापपरिरचित-सिंहासनादि-सकल-राज्य-चिह्नस्य। विन्ध्याटवीनिकटवर्त्ति...ण्डक-किरातप्रकरभङ्ग-करस्य। भुजबलपरि...... मान्यखेट-प्रवेशितचक्रवर्त्तिकट...विक्रम... श्रीमदिन्द्रराजपट्टबन्धोत्सवस्य।.. ...समुत्साहितगमरसज्ञयज्जल......प...नस्य। भयोपनतवनवासिदेशाधि...... महिकुण्डलमदङ्गिपादि-समस्त-वस्तुम ... ..गगुपमस्थ-सङ्कीर्त्तनस्य। प्रथतमाटूरवंशजस्य......ज-भुवसत-भुज-बलावलेप-गजघटाटोपगर्व्वदुर्व्वृत्तकलनोलम्बाधिराजसमरविध्वंसकस्य। समुन्मूलितराज्यकण्टकस्य। मच्चूर्ण्णितोचङ्गिगिरिदुर्गस्य। संहृतनरगाभिधानशबरप्रधानस्य। प्रतापावनतचेर-चोल-पाण्ड्य-पल्लवस्य। प्रतिपालितजिनशासनस्य।.........त-महाध्वजस्य। बलबदरिनृपद्रविणापहरण......कृतमहादानस्य। परिपालितसेतुबन्धभै...न्धुसम्बन्धवसुन्धरावलस्य। श्रीनोलम्बकु(लान्त)कदेवस्य। शौर्य्यशासनं धर्म्मशासनं च सम्भवतु दिग्मण्डलान्तरमाकल्पान्तरमाचन्द्रतारम्॥

(पश्चिममुख)

......था के स्पु पायान्त......तिरिशरशेशरं
...... नान्य गवाहुतो ... ... श्रीगङ्गचूडामणि
...बना...द...चाणि...कं पल्लव...मा...पेनामितं...

...भुजावलेपमल...कृत्वा...गं स्वयं ... गुत्तियगङ्गभूपति ... नोलम्बान्तकः॥ .....यिय......मन्मुखं...युधि......गादलव ......प्रतिगज......विक्रमं ॥...लसमिव... नोलम्बान्तकः ......मूलोकादनेकन्द्र...नेकयन्धान्धक... चोल-पल्लव...का नन्दहेतोर...श्रीमारसिंह-चि ... विशक-चय-चन्द्रय...चन्द्र ...व...य्येर......दर्प्प...गं सं...गं...ह...रः॥...वज्रोपमा ...न्महाविजयोत्सवे......सिंहासनोर्व्वी-च...

इत्याधिष्कृत-वीर-मङ्कर-गिरः चालुक्य-चूडामणे
राजादित्य-हरेर्व्वामिरजनिश्रीगङ्ग-चूडामणि ।
दैत्येन्द्रैर्म्मधुकैटभप्रभृतिभिर्व्वीरैर्म्मुरद्वे...
किं मायारिभिरित्यमुदितमिति चमात्कृ-शङ्काक...
...लैर्भ्भंगासुरस्य वसुधानन्दाश्रुमिश्रैरिशा...
दार्थैरकरोरमरागमवनीपर्क नोलम्बान्तकः ।

(उत्तरमुख)

(प्रथम ८ पंक्तियाँ अस्पष्ट हैं)

..... गन... . श-चमाधृतः ....
याव ... न ..... ह ...ति...तिना......पर......र्षि ॥
......मिश्रीकृत-म.. क-वीर-विजय-श्रेय.........गुत्तिय-गङ्ग
भूपमितियं विरचं............ ....कृता......ति पविमद
.........बहम्यदुरात्मनिन-कृष्णमिता भिरद्गराज...ग...कृष्ण-
वत...यश-व्रत.........श्रीगङ्ग-चूडामणिरिति धरत्री नीतियं
......कीर्त्तिः ॥ ......तत्स्वति मारसिंह-नृपतिर्व्विख्यात-

[इस लेख में गङ्गराज मारसिंह के प्रताप का वर्णन है । इसमें कथ
है कि मारसिंह ने (राष्ट्रकूट नरेश) कृष्णराज (तृतीय) के लि
गुर्जर देश को विजय किया, कृष्णराज के विपक्षी अल्ल का मद चू
किया; विन्ध्य पर्वत की तली में रहने वाले किरातों के समूहों को
जीता; मान्यखेट में नृप (कृष्णराज) की सेना की रक्षा की, इन्द्रराज
(चतुर्थ) का अभिषेक कराया, पातालमल्ल के कनिष्ठ भ्राता वज्जल
को पराजित किया; वनवासीनरेश की धन सम्पत्ति का अपहरण किया,
माट्र वंश का मस्तक झुकाया, नोलम्ब कुल के नरेशों का सर्वनाश किया,
काडुवट्टि जिस दुर्ग को नहीं जीत सका था उस उच्चङ्गि दुर्ग को स्वाधीन
किया, शबराधिपति नरग का संहार किया; चौड़ नरेश राजादित्य को
जीता, तापी-तट, मान्यखेट, गोनूर, उच्चङ्गि, बनवासि व पाभसे के युद्ध
जीते, व चेर, चोड़, पाण्ड्य और पल्लव नरेशों को परास्त किया व जैन
धर्म का प्रतिपालन किया और अनेक जिन मन्दिर बनवाये । अन्त में
उन्होंने राज्य का परित्याग कर अजितसेन भट्टारक के समीप तीन दिवस
तक सल्लेखना व्रतका पालन कर बंकापुर में देहोत्सर्ग किया । लेख
में वे गङ्ग चूड़ामणि, नोलम्बान्तक, गुत्तिय-गङ्ग, मण्डलिकत्रिनेत्र, गङ्ग-
विद्याधर, गङ्गकन्दर्प, गङ्गवज्र, गङ्गसिंह, सत्यवाक्य कोङ्गणिवर्म-धर्म-
महाराजाधिराज आदि अनेक पदवियों से विभूषित किये गये हैं ।]

३९ (६३)

महनवमी मण्डप में

(शक सं० १०८५)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ १ ॥

टैलासाध्यदोले गङ्ग-चूडामणिया।
  तुडिदने कावुदने एल्दे-
गिडदिरुजवनिट्ट रक्के निनगीवुदनें
  तुडिदने एम्बुदु कय्यदु
तुडिदुदु तप्पुगुमे गङ्ग-चूडामणिया॥

इन्तु विन्ध्याटवी-निकट-वापी-तटदुं। मान्यखेट-पुरवरदुं। गोनूरुमुच्चङ्गियुं। बनवासिदेशदुं। पाभसेयकोटेयुं। मोदलागे पल्लवेडेयोलमरियरं पिरियरुवं कादि गेल्दु पल्लवेडेगलोल महाध्वजमनेत्तिसि महादानंगेय्दु नेगल्द गङ्ग-विद्याधरं। गङ्गरोल्गण्डं। गङ्गरसिङ्गं। गङ्गचूडामणि गङ्गकन्दर्प्प। गङ्गवज्रं। चलदुत्तरङ्गं। गुत्तियगङ्गं। धर्म्मावतारं। जगदेकवीरं। तुडिदन्तेगण्डं। मद्दितमार्त्तण्डं। कदनकर्क्कशं। मण्डलिक त्रिणेत्रं। श्रीमन्नोलम्ब्यकुलान्तकदेवं पल्लवेडेगलोलं पलदिगलं मानस्तम्भङ्गलुवं माडिसिद। मङ्गलं। धर्म्म(म)ङ्गलं नमस्यं नडयिसिपलियमोन्दुवर्षं राज्यमं पत्तुनिट्टु बङ्कापुरदोलू अजितसेनभट्टारकर श्रीपादमनिधियोल् आराधनाविधियिमूददे... सं नोन्तु समाधियं साधिसिदं॥

वृत्त॥ एले चोलाखिविपाल सन्तवेदरयं नी नीविकेलू निम्नतुं-गोले माण्डलिक पापडय पल्लय मयन्नोल्हडिविसिमम-ण्डलदि पिङ्ग्दे निलदीगनिशनिन्तुं न...गङ्ग-मण्डलिकं देवनिवासदल विजयं-गेय्द नोलम्बान्तकं॥

[इस लेख में गङ्गराज मारसिंह के प्रताप का वर्णन है। इसमें कथन है कि मारसिंह ने (राष्ट्रकूट नरेश) कृष्णराज (तृतीय) के लिए गुर्जर देश को विजय किया; कृष्णराज के विपक्षी अल्ल का मद चूर किया; विन्ध्य पर्वत की तली में रहने वाले किरातों के समूहों को जीता; मान्यखेट में नृप (कृष्णराज) की सेना की रक्षा की, इन्द्रराज (चतुर्थ) का अभिषेक कराया; पातालमल्ल के कनिष्ठ भ्राता वज्जल को पराजित किया; वनवासीनरेश की धन सम्पत्ति का अपहरण किया; माटूर वंश का मस्तक झुकाया, नोलम्ब कुल के नरेशों का सर्वनाश किया; काडुवट्टि जिस दुर्ग को नहीं जीत सका था उस उच्छङ्गि दुर्ग को स्वाधीन किया, शबराधिपति नरग का संहार किया; चौड़ नरेश राजादित्य को जीता; तापी-तट, मान्यखेट, गोनूर, उच्छङ्गि, बनवासि व पाभसे के युद्ध जीते, व चेर, चोड़, पाण्ड्य और पल्लव नरेशों को परास्त किया व जैन धर्म का प्रतिपालन किया और अनेक जिन मन्दिर बनवाये। अन्त में उन्होंने राज्य का परित्याग कर अजितसेन भट्टारक के समीप तीन दिवस तक सल्लेखना व्रतका पालन कर बंकापुर में देहोत्सर्ग किया। लेख में वे गङ्ग चूड़ामणि, नोलम्बान्तक, गुत्तिय-गङ्ग, मण्डलिकत्रिनेत्र, गङ्ग-विद्याधर, गङ्गकन्दर्प, गङ्गवज्र, गङ्गसिंह, सत्यवाक्य कोङ्गणिवर्म-धर्म-महाराजाधिराज आदि अनेक पदवियों से विभूषित किये गये हैं।]

३८ (६३)

महनवमी मण्डप में

(शक सं० १०८५)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्त-भुवन-स्तुत्य-नित्य-निरवद्य-विद्या-विभव-प्रभाव-प्रह्वरुद्रवीपाल-मौलि-मणि-मयूख-शेखरीभूत-पूत-पद-नख-प्रकरहं। जितवृजिनजिनपतिमतपयःपयोधिलीलासुधाकरहं। चार्व्वाकखर्व्वीगर्व्वदुर्व्वारोर्व्वीधरोत्पाटनपटिष्ठनिष्ठुरोपालम्भदम्भोलिदण्डरहं अकुण्ठ-कण्ठ-कण्ठीरव-गम्भीर-भूरि-भीम-ध्वान-निर्द्दलितदुर्द्दमबौद्धमदवेदण्डहम्। अप्रतिहत-प्रसरदसम-प्रसदुपन्यसननित्यनैसित्य-पात्र-दात्र-दलितनैयायिकनयनिकरनरहं। चपलकपिलविपुलविपिनदहन-दावानलरहं। शुम्भदम्भोद-नादनोदितवितवैशेषिकप्रकरमदमरालरहं। शरदमलशशधरकरनिकरनीहारहाराकारानुवर्त्तिकीर्त्तिवल्लीवेल्लितदिगन्तरालरुमप्पश्रीमन्मण्डलाचार्य्यर श्रीमद्देवकीर्त्तिपण्डितदेवरु।

कुर्व्वेनमः कपिल-वादि-वनाग्नि-वह्नये
  चार्व्वाक-वादि-मकराकर-वाडवाग्नये।
बौद्धोग्रवादितिमिरप्रविभेदभानवे
  श्रीदेवकीर्त्तिमुनये कविवादिवाग्मिने ॥ २ ॥
मद्भूलं अल्पवल्गीविजयमुपनयं वण्डनैतण्डिकोलि-
श्रीखण्डं मूलखण्ड झटिति विघटयन्वादमेकान्तमेदं।
निर्भिन्दंगण्डशैलं सपदि विदमयन्मूलशिनौद्भवार्जे-
म्फूर्ज्जन्मेवामदोद्यं जयतु विजयते देवकीर्त्तिद्विपेन्द्रः ॥ ३ ॥
चतुर्म्मुखचतुर्व्वक्त्रनिर्गमागमदुस्सहा।
देवकीर्त्तिमुखाम्भोजे नृत्यतीति सरस्वती ॥ ४ ॥
चतुरवे सन्कविन्त्रंशाभिमनं शब्दकर्त्तारोल् प्रम-

अनेगसिद्धांतदोल् प्रबोदमं सदागम-तर्क-विचारदोल् सुप्र-
ज्यदे तपदोल् पविमले चरित्रदोल्नोन्दि विराजिसल् प्रसि-
द्दने मुनि-देवकीर्त्ति-विबुधाग्रणिगोप्पुवुदी धरित्रियोल् ॥ ५ ॥
शकवर्षमासिरद एम्भत्तदनेय ॥

वर्षे ख्यात-सुभानु-नामनि सिते पक्षे सदाषाढ़के
मासे सन्नवमीतिथौ बुध-युते वारे दिनेशोदये ।
श्रीमत्तार्किकचक्रवर्त्ति-स्यादिमवर्ग्गीडकीर्त्तिप्रियो
भाव· स्वर्गवधूमनःप्रियतम. श्रीदेवकीर्त्तिव्रती ॥ ६ ॥
जातंकीर्त्त्यवशेषके यतिपतौ श्रीदेवकीर्त्तिप्रभौ
वादीभेभरिपौ जिनेश्वर-मत-क्षीराब्धितारापतौ ।
क स्थाने यरवागधूर्ज्जिनमुनिप्रातं ममेति स्फुटं
चाक्रोशं कुरुते समस्तधरणी दाक्षिण्य-लक्ष्मीरपि ॥ ७ ॥
तच्छिष्या लुक्षलचन्दिमुनिपः श्रीमाधवेन्दुव्रती
भव्याम्भोरुहभास्करस्त्रिभुवनाख्यानश्च योगीश्वरः ।
एते ते गुरुभक्तितो गुरुनिषद्यायाः प्रतिष्ठामिमां
भूत्याकाममकारयन्निजयशस्सम्पूर्ण्णदिग्मण्डलाः ॥ ८ ॥

[इस लेख में अपने समय के अद्वितीय कवि, तार्किक और वक्ता महामण्डलाचार्य मुनि देवकीर्त्ति पण्डित की विद्वत्ता का व्याख्यान है । इस समय जैनाचार्य के सम्मुख सांख्यिक, चार्वाक, नैयायिक, वेदान्ती, बौद्ध आदि सभी दार्शनिक हार मानते थे।

शक सं० १०८२ सुभानु संवत्सर आषाढ़ शुक्ल ९ बुधवार को सूर्योदय के समय इन तार्किक चक्रवर्त्ति श्री देवकीर्त्ति मुनि का स्वर्ग-

वास हुआ। उनके शिष्य लक्ष्मनन्दि, माधवेन्दु और त्रिभुवनमल्ल ने अपने गुरु की स्मारक यह निषद्या प्रतिष्ठित कराई।]

४० (६४)

उसी स्तम्भ पर

(शक सं० १०८५)

(दक्षिणमुख)

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थ-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभिन्नघन भानवे ॥१॥
श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमल-जिनवरानीक-सौधोरु-वार्द्धिः
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्य-बोधोरु वेदिः ।
शस्तस्यात्कार-मुद्रा-शबलित-जनतानन्द नादोरु-घोषः
स्थेयादाचन्द्र-तारं परम-सुख-महावीर्य-वीची-निकायः ॥२॥
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गा श्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ बोधनिधिर्बभूव ॥३॥
[श्री] भद्रस्सर्व्वतो यो हि भद्रबाहुरिति श्रुतः ।
श्रुतकेवलिनाथेषु चरमः परमो मुनिः ॥४॥
चन्द्र-प्रकाशोज्ज्वल-सान्द्र-कीर्त्तिः श्रीचन्द्रगुप्तोऽजनि तस्य शिष्यः ।
यस्य प्रभावाद्वनदेवताभिराराधितः स्वस्य गणो मुनीनां ॥५॥
तस्यान्वये भू-विदिते बभूव यः पद्मनन्दि-प्रथमाभिधानः ।
श्रीकोण्डकुन्दादि मुनीश्वराख्यस्सत्संयमादुद्गत-चारणर्द्धिः ॥६॥
अभूदुमास्वाति मुनीश्वरोऽसावाचार्य्य-शब्दोत्तर-गृद्धपिच्छः ।

तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेष-पदार्थ-वेदी ॥७॥
श्री **गृद्धपिच्छ**-मुनिपस्य **बलाकपिच्छः**
शिष्योऽजनिष्टभुवनत्रयवर्त्तिकीर्त्तिः ।
चारित्रचञ्चुरखिलावनिपाल-मौलि-
माला-शिलीमुख-विराजितपादपद्मः ॥८॥
एवं महाचार्य-परम्परायां स्यात्कारमुद्राङ्कितत्वदीपः ।
भद्रस्समन्ताद्गुणतोगणीशस्स**मन्तभद्रो**ऽजनिवादिसिंहः ॥९॥
ततः ॥
यो **देवनन्दि**-प्रथमाभिधानो बुद्ध्या महत्या स **जिनेन्द्रबुद्धिः**।
श्री**पूज्यपादो**ऽजनिदेवताभिर्यत्पूजितं पाद-युगं यदीयं ॥१०॥
जैनेन्द्रं निज-शब्द-भोगमतुलं सर्व्वार्थसिद्धिः परा
सिद्धान्ते निपुणत्वमुद्धकविता जैनाभिषेकःस्वकः ।
छन्दस्सूक्ष्मधियं समाधिशतक-स्वास्थ्यं यदीयं विदा
माख्यातीह स **पूज्यपाद**-मुनिपः पूज्यो मुनीनां गणैः ॥११॥
ततश्च ॥
(पश्चिममुख)
अजनिष्टाकलङ्कं यज्जिनशासनमादितः ।
अकलङ्कं बभौ येन सोऽ**कलङ्को** महामतिः ॥१२॥
इत्याद्युद्धमुनीन्द्रसन्ततिनिधौ श्रीमूलसङ्घे ततो
जाते **नन्दि**गण-प्रभेदविलसद्देशीगणेविश्रुते ।
गोल्लाचार्य्य इति प्रसिद्ध-मुनिपोऽभूद्गोल्लदेशाधिपः
पूर्व्वं केन च हेतुना भवभिया दीक्षां गृहीतस्सुधीः ॥१३॥

श्रीमत्त्रैकाल्ययोगी समजनि महिका काय-लग्ना तनुत्रं
यस्याभूद्वृष्टि-धारानिशितशर-गणाग्रीष्ममार्त्तण्डबिम्बे ।
चक्रं सद्वृत्तचापाकलित-यति-वरस्याघशत्रून्विजेतुं
गोल्लाचार्य्यस्य शिष्यस्स जयतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दुः ॥१४॥

तच्छिष्यस्य ॥

अविद्धकर्णादिक**पद्मनन्दिसैद्धान्ति**काख्योऽजनि यस्य लोके।
कौमारदेव-व्रतिताप्रसिद्धिर्जीयात्तु सो ज्ञाननिधिस्सधीरः ॥१५॥

तच्छिष्यः **कुलभूषणा**ख्ययतिपश्चारित्रवारांनिधि-
स्सिद्धान्ताम्बुधिपारगो नतविनेयस्तत्सधर्म्मो महान् ।
शब्दाम्भोरुहभास्करः प्रथिततर्कग्रन्थकारः **प्रभा—**
चन्द्राख्यो मुनिराज-पण्डितवरः श्रीकुण्डकुन्दान्वयः ॥१६॥

तस्य श्री**कुलभूषणा**ख्यसुमुनेश्शिष्यो विनेयस्तुत-
स्सद्वृत्तः कुलचन्द्रदेवमुनिपस्सिद्धान्तविद्यानिधिः ।
तच्छिष्योऽजनि **माघनन्दि**मुनिपः **कोल्लापुरे** तीर्थकृ-
द्राद्धान्तार्ण्णवपारगोऽचलधृतिश्चारित्रचक्रेश्वरः ॥१७॥

एलें मार्गि मनवचनदि तिळिगोळ्तं माणिक्यदि मण्डना—
वनितारोपितनि नमं शुभदमा गिर्प्पन्तिरिर्दत्तुनि-
म्मंत्तवीगल् **कुलचन्द्रदेव**-चरणाम्भोजातसेवानिति—
प्रतसैद्धान्तिक**माघनन्दि**मुनिपं श्रीकोण्डकुन्दान्वयम् ॥१८॥

हिमवत्कुत्कील-मुनाकन-तरक्षतरणार-हारेन्दुकुन्दो—
पमकीर्त्तिं-व्याप्तदिग्मण्डलनवनत-भू-मण्डलं भव्य-पद्मो-
प-मरीचीमण्डलं पण्डित-ततितिनुत माघनन्द्याख्यवार्यं

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible] ॥

([illegible])

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

प्रति राघवपाण्डवीयमं विभु (बु) धचम-
त्कृतियेनिसि गत-प्रत्या —
गतदिं पेल्दमलकीर्त्तियं प्रकटिसिदं ॥२४॥

मवरमजरु ॥

यो बौद्धक्षितिभृत्करालकुलिशश्चार्वाकमेघान (नि) लो
मीमांसा-मत-वर्त्ति-वादि-मदवन्मातङ्ग कण्ठीरवः ॥
स्याद्वादाब्धि-शरत्समुद्गतसुधा-शोचिस्समस्तैस्तुत-
स्स श्रीमान्भुवि भासते कनकनन्दि-ख्यात-योगीश्वरः ॥२५॥

वेतालाः मुकुलीकृताञ्जलिपुटा संसेवते यत्पदं
क्ष्मोहिङ्गः प्रतिहारको निवसति द्वारे च यस्यान्तिके ।
येन क्रीडति मन्वतं गुनतपोलक्ष्मीर्य्यशः (·) श्रीप्रिय—
स्सोऽयं शुम्भति देवचन्द्रमुनिपो भट्टारकोग्राग्रणी ॥२६॥

अवर सधर्म्मर्मा घनन्दि-त्रैविद्य-देवर विशालकीर्त्ति-
श्रीमद्देवकीर्त्ति-पण्डितदेवर शिष्यरु श्रीशुभचन्द्रत्रैविद्य-
देवरुं गण्डविमुक्तवादि चतुर्म्मुख-रामचन्द्रत्रैविद्यदेवरुं
वादिवज्राङ्कुश-श्रीमदकलङ्कत्रैविद्यदेवरुमापरमेश्वरन गुड्डुगलु
माणिक्यभण्डारि मरियाने दण्डनायकरु श्रीमन्महाप्रधानं
सर्व्वाधिकारिहिरियदण्डनायकंभरतिमय्यङ्गलुंश्रीकरणद हेग्गडे
बूचिमय्यङ्गलुं जगदेक-दानि हेग्गडे कोरय्यनुं।

चकमहं गिर मालि-वंश-तिलक-श्री-पद्मराजं निता-
-न्विदे मोक्षाभिदे श्रोत्र वन्दिने शुभीभावारे दैवे दिवी-

-श्री-कदम्ब-स्तुत-पाद-पद्मनदं मार्ग्गं यदुक्षोणिपा-
-लक-चूडामणि नारसिङ्गनेनलेवोम्पुष्पनोहुल्ल पं ॥२७॥

श्रीमन्महाप्रधानं सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि अभिनवगङ्ग-दण्डनायक-श्रीहुल्लराजं तम्म गुरुगलप्पश्रीकोण्डकुन्दान्वयद श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद श्रीकोल्लापुरद श्रीरूप-नारायणन बसदिय प्रतिबद्धद श्रीमत्केल्लङ्गेरेय प्रतापपुरवं पुनर्भ्म-रणवं माडिसि जिननाथपुरदलु कल्ल दानशालेयं माडिसिद श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यदेवकीर्त्तिपण्डितदेवर्गे परोक्षविनय-वागि निशिदियं माडिसिद अवर शिष्यर्लक्खणन्दि-माधव-त्रिभुवनदेवर्महादान-पूजाभिषेक-माडि प्रतिष्ठेयं माडिदरु मङ्गल महा श्री श्री श्री ॥

[इस लेख में गौतम गणधर से लगाकर मुनिदेवकीर्त्ति पण्डितदेव की गुरु-परम्परा दी है† । कनकनन्दि और देवचन्द्र के भ्राता श्रुतकीर्त्ति त्रैविद्य मुनि की प्रशंसा में कहा गया है कि उन्होंने देवेन्द्र सदृश विपक्ष-वादियों को पराजित किया और एक चमत्कारी काव्य राघव-पाण्डवीय की रचना की जो आदि से अन्त को व अन्त से आदि को दोनों ओर पढ़ा जा सके × । प्रतापपुर की रूपनारायण बस्ती का

† भूमिका देखो ।

× श्रुतकीर्त्ति की प्रशंसा के ये दोनों छन्द नागचन्द्रकृत 'रामचन्द्र-चरितपुराण' अपर नाम 'पम्प रामायण' के प्रथम आश्वास में सं० २४-२५ पर भी पाये जाते हैं । इस काव्य की रचना शक सं० १०२२ के लगभग हुई है । जिन विपक्ष-सैद्धान्तिक देवेन्द्र का यहां उल्लेख है वे सम्भवतः 'प्रमाणनय-तत्त्वालोकालङ्कार' के कर्त्ता वादि-प्रवर श्वेताम्बरा-

जीर्णोद्धार व जिननाथपुर में एक दानशाला का निर्माण कराने वाले महामण्डलाचार्य देवकीर्त्ति पण्डितदेव के स्वर्गवास होने पर यादव-वंशी नारसिंह नरेश (प्रथम) के मंत्री हुल्लप ने यह निषद्या निर्माण कराई जिसकी प्रतिष्ठा देवकीर्त्ति आचार्य के शिष्य लक्खनन्दि, माधव और त्रिभुवनदेव ने दान सहित की।]

४१ (६५)

उसी मण्डप में

(शक सं० १२३५)

श्रीमत्स्याद्वादमुद्राङ्कितममलमहीनेन्द्रचक्रेश्वरेड्यं
जैनीयं शासनं विश्रुतमखिलहितं दोषदूरं गभीरं।
जीयात्कारुण्यजन्मावनिरमितगुणैर्व्वर्ण्यनीक-प्रवेकैः
संसेव्यं मुक्तिकन्या-परिचय-करणप्रौढमेतत्त्रिलोक्यां ॥१॥

श्रीमूलसङ्घ-देशीगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दान्वाये।
गुरुकुलमिह कथमिति चेद्ब्रवीमि सङ्क्षेपतो भुवने ॥२॥
यः सेव्यः सर्व्वलोकैः परहितचरितं यं समाराधयन्ते
भव्या येन प्रबुद्धं स्वपर-भव-महा-शास्त्र-तत्त्वं नितान्तं।
यस्मै मुक्त्यङ्गना संस्पृहयति दुरितं भीरुतां याति यस्मा—
द्यस्याशानास्ति यस्मिंस्त्रिभुवन-महितो विद्यते शीलराशिः ॥३॥

चार्य देवेन्द्र व देवसूरि हैं, जिनके विषय में प्रभावक-चरित में कहा गया है कि उन्होंने वि० सं० ११८१ में दिगम्बराचार्य कुमुदचन्द्र को वाद में पराजित किया था।]

तन्मेघचन्द्रत्रैविद्यशिष्यो राद्धान्तवेदी लोकप्रसिद्धः।
श्रीवीरणंदी मोसुलदन्तेवासी गुणाब्धिः प्राप्ताङ्गजन्मा ॥४॥
यः स्याद्वाद-रहस्य-वाडनिपुणोऽगण्यप्रभावो जना-
नन्दः श्रीमदनन्तकीर्त्तिमुनिपश्चारित्रभास्वत्तनुः।
कामोमाद्रि-गर-द्विजापहरणे रूढो नरेन्द्रोऽभव-
त्तच्छिष्यो गुरुपञ्चकस्मृति-पथ-स्वच्छन्द-सन्मानसः ॥ ५॥
मलधारिरामचन्द्रो यमी तदीय-प्रशस्य-शिष्योऽसौ।
चरणयुगलसेवापरिगतजनतैति चन्द्रतां जगति ॥ ६ ॥
परपरिणतिदूरोऽध्यात्मसत्सारधीरो
विषय-विरति-भावो जैनमार्ग-प्रभावः।
कुमत-घन-समीरो ध्वस्तमायान्धकारो
निरितशमुनिविनूतो रागकोपादिघातः ॥ ७ ॥
चित्ते शुभावनां जैनीं वाक्ये पञ्चनमस्क्रियां।
काये व्रतसमारोपं कुर्वन्नध्यात्मविन्मुनिः ॥ ८ ॥
पञ्चत्रिंशत्संयुत-शत-द्वयाधिक-सहस्र-गुतवर्षेषु।
वृत्तेषु शकनृपस्य तु काले विस्तीर्णविलसदर्णवसंत्ते॥९॥
प्रमादि (सं)वत्सरेमासे श्रावणे ससुमत्यजन्।
पक्षे कृष्णचतुर्दश्यां शुभचन्द्रो महायतिः ॥१०॥
श्रमरपुरममरवास वृद्ध-जिन-चैत्य-चैत्यभवनानां।
दर्शन-कुतूहलेन तु यातो यातार्त्त-रौद्र-परिणाम. ॥ ११ ॥
तच्छिष्यर् ॥
दुरितान्धकाररविद्दिम—

-करेरोगेदर्प्पद्मणन्दिपण्डितदेवर् ।
वर-माधवेन्दु-समया—
भरणश्रीमूलसङ्घ-देशीगणदोल् ॥ १२ ॥
गुरु-रामचन्द्र-यतिपन
वर-शिष्य-शुभेन्दुमुनिय निम्मिगेयं वि—
स्तरदिं माडिसिदं बेलु—
करेयधिपं राय-राज-गुरुगुम्मट्टं ॥ १३ ॥
श्रीविजय-पार्श्व-जिनवर-चरणारुण-कमल-युगल-यजन-रतः।
बोगार-राज-नामा तद्वैयापृत्यतो हि शुभचन्द्रः ॥ १४ ॥
हेयादेय-विवेकता जनतया यस्मात्मदादीयते
तस्य श्रीकुलभूषणस्य वरशिष्यो माघनन्दिव्रती ।
सिद्धान्ताम्बुधितीरगो विशद-कीर्त्तिस्तस्य शिष्योऽभवन्
त्रैविद्यः शुभचन्द्र-योगि-तिलकः स्याद्वाद-विद्याञ्चितः॥१५॥
तच्छिष्यश्चारुकीर्त्ति-प्रथित-गुण-गण-पण्डितस्तस्य शिष्यः
ख्यातः श्रीमाघनन्दि-व्रति-पति-नुत-भट्टारकस्तस्य शिष्यः ।
सिद्धान्ताम्भोधिशीत-द्युतिरभयशशी तस्य शिष्यो महीयान्
बालेन्दुः पण्डितस्तत्पदनुतिरमलो रामचन्द्रोऽमलाङ्गः॥१६॥
चित्रं सम्प्रति पद्मनन्दिनिह कृत्स्नं तावकीनं तपः
पद्मानन्द्यपि विश्रुतामप्रमद इत्यासीत्समतां नम्रतां ।
कामं पूरयसे शुभेन्दु-पद-भक्तयामक्त-चेतः सदा
कामं दूरयसे निराकृत-महा-मोहान्धकारागम ॥१७॥
काम-विदारोदारः समावृतोप्यत्तमो जगतिभासि

श्रीपद्मनन्दिपण्डित पण्डित-जन-हृदय-कुमुदशीतकर ॥१८॥
पण्डित-समुदयपति शुभचन्द्र-प्रिय-शिष्य भवति
मुदयामि ।
श्री-पद्म-नन्दि-पण्डित-यतीश भयदित-मुनिपमालोक ॥१९॥
श्रीमदध्यात्मिशुभचन्द्रदेवस्य स्वर्गप्राप्तेशतस्य पद्म
नन्दि-पण्डितदेवेन माधवचन्द्रदेवेन च परोक्ष-विनय-निर्मित्तं
निषद्यका कारिता ॥ भद्रं भवतु जिनशासनाय ॥

[इस लेख में शुभचन्द्र मुनि की आचार्यपरम्परा और उनके स्वर्गवास की तिथि दी हुई है। कुन्दकुन्दान्वय, मूल संघ, पुस्तक गच्छ, देशी गण में गुरुशिष्य परम्परा से मेघचन्द्र त्रैविद्य, वीरनन्दि, कनककीर्ति, ब्रह्मचारि रामचन्द्र और शुभचन्द्र मुनि हुए। शुभचन्द्र मुनि का शक सं० १२१५ श्रावण कृष्ण १० को स्वर्गवास हुआ। इनके शिष्य पद्मनन्दि पण्डितदेव और माधवचन्द्र ने इनकी निषद्या निर्माण कराई। लेख में रामचन्द्र मुनि की आचार्य परम्परा इस प्रकार दी है। कुलभूषण, माघनन्दि व्रती, शुभचन्द्र त्रैविद्य, चारुकीर्ति पण्डित, माघनन्दि भट्टारक, कनकचन्द्र, नागचन्द्र पण्डित और रामचन्द्र।]

---

४८ (६६)

महानवमी मण्डप के उत्तर में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १०४८)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १

श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमल-जिनवरानीक-सौधोरु-वार्द्धिः
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्य-बोधोरु-वेदिः ।
शस्त-स्यात्कार-मुद्रा-शबलित-जनतानन्द-नादोरु-घोषः
स्थेयादाचन्द्रतारं परम-सुख-महावीर्य्य-वीची-निकायः ॥२॥
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गा श्रीगौतमाद्याप्रभविष्णवस्ते ।
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धि-युक्तास्तत्सन्ततौ नन्दिगणे बभूव ॥३॥
श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामा ह्याचार्य्यशब्दोत्तरकौण्डकुन्दः
द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धिः ॥४॥
अभूदुमास्वातिमुनीश्वरोसावाचार्य्य-शब्दोत्तरगृद्ध्रपिञ्छः ।
तदन्वये तत्सदृशो(शो)ऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेष-
पदार्थ-वेदी ॥५॥

श्रीगृद्ध्रपिञ्छ-मुनिपस्य बलाकपिञ्छ-
शिष्योऽजनिष्ट भुवनत्रय-वर्ति-कीर्त्तिः ।
चारित्रचुञ्चुरखिलावनिपालमौलि-
माला-शिलीमुख-विराजित-पाद-पद्मः ॥६॥
तच्छिष्यो गुणनन्दिपण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर
स्तर्क-व्याकरणादि-शास्त्र-निपुणस्साहित्य-विद्यापतिः ।
मिथ्यावादिमदान्ध-सिन्धुर-घटासङ्घट्टकण्ठीरवो
भव्याम्भोज-दिवाकरो विजयतां कन्दर्प्प-दर्प्पापहः ॥ ७ ॥
तच्छिष्यास्त्रिशता विवेक-निधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता
स्तेषूत्कृष्टतमा द्विसप्तविमितास्सिद्धान्त-शास्त्रार्थक—
व्याख्याने पटवो विचित्र-चरितास्तेषु प्रसिद्धोमुनि—

श्रीनानून-नय-प्रमाणनिपुणो देवेन्द्र-सैद्धान्तिक ॥ ८ ॥
अजनि महिपचूडा-रत्नराराजिताङ्घ्रि
र्विजित-मकरकेतूद्दण्ड-दोर्दण्ड-गर्व्वः ।
कुनय-निकर-भूध्रानीक-दम्भोलि-दण्ड
स्सजयतु विबुधचन्द्राभारती-भास-पट्टः ॥ ९ ॥
तच्छिष्यः कलधौतनन्दिमुनिपस्सिद्धान्त-चक्रेश्वर
पारावार-परीत-धारिणि-कुल-व्याप्तोरुकीर्त्तीश्वरः ।
पञ्चाक्षोन्मद-कुम्भि-कुम्भ-दलन-प्रोन्मुक्त मुक्ताफल-
प्रांशु-प्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनी-वल्लभ ॥ १० ॥
अवर्गें रविचन्द्र-सिद्धान्तविदर्गंपूर्णचन्द्रसिद्धान्तमुनि-
प्रवररवर्गें शिष्यप्रवर श्रीदामनन्दि-सन्मुनि पतिगल् ॥ ११ ॥
बोधित-भव्यरल्प-मदनागंद-वर्जित शुद्ध-मानसर्
श्रीधरदेवरवरवर्गें तनुभवरादरा यता—
श्रीधरणीद शिखरबाल् नगन्दमलधारिदेवर
श्रीधरदेवर लतनोन्द्र-ति (कि)रीट-मराच्चितमन्न् ॥ १२ ॥
ज्ञानप्रावनिधान-जालकमिरा-रत्न-प्रभा-भासुर-
श्रीपादाम्बुरुद-द्वया वर-तपोलक्ष्मीमनारञ्जन ।
मार-व्यूह-महीधर-दुर्द्धरपविः सत्सौख्यार्णवश्रीण-
स्त्यातश्रीधरदेव एष मुनिपो भाभाति भूमण्डले ॥ १३ ॥
तच्छिष्यर ॥
भव्याम्भोरुह-षण्ड-चण्ड-किरण- कर्पूर-हारा-म्बुरा-
शौर्मिश्रीधरश्रीकृतपरिशिरकदिशावकाशवरिष्ठेण ।

(दक्षिणमुख)

भाति श्रीजिन-पुङ्गव-प्रवचनाम्भोराशि-राका-शशी
भूमौ विश्रुत-माघनन्दिमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः ॥१४॥

तच्छिष्यर् ॥

सच्छीलश् शरदिन्दु-कुन्द-विशद-प्रोद्यद्यशा-श्रीपति-
र्भव्यद्दर्पक-दर्प्प-दाव-दहन-ज्वालालि-कालाम्बुदः ।
श्रीजैनेन्द्र-वचःपयोनिधि-शरत्सम्पूर्ण-चन्द्रः क्षितौ
भाति श्रीगुणचन्द्र-देव-मुनिपो राद्धान्त-चक्राधिपः ॥१५॥

तत्सधर्म्मर् ॥

उद्भूते नुत-मेघचन्द्र-शशिनि प्रोद्यद्यशश्चन्द्रिकं
संवर्द्धेत तदस्तु नाम नितरां राद्धान्त-रत्नाकर ।
चित्रं तावदिदं पयोधि-परिधि-क्षोणी समुद्भासयत्
प्रायं शास्त्र विजृम्भते भरत-शास्त्राम्भोजिनी सन्ततम् ॥१६॥

तत्सधर्म्मर् ॥

चन्द्र इव धवल-कीर्त्तिर्द्धवलीकुरुते समस्त भुवनं यस्य ।
स श्रीचन्द्रकीर्त्तिसकल-भट्टारक-चक्रवर्त्ति नाम्ना विभाति ॥१७॥

तत्सधर्म्मर् ॥

नैयायिकभ-सिंहो मीमांसकतिमिर-निकरनिरसन-तपनः
बौद्ध-वन-दाव-दहनो जयति महानुदयचन्द्र-राद्धान्तः ॥१८
सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती श्रीगुणचन्द्रव्रतीश्वरस्य सुतः
श्रीनयकीर्त्ति-मुनीन्द्रो जितरतिपति-मदिमाविनायंवरो शिव
॥१९॥

मम्यनवरत-विनत-महिप-मुकुट-मौक्तिक-मयूख-माला-सरो-मण्डनीभूत-चारुचरणारविन्दरं। भव्यजन-हृदयानन्दरं। कोण्डकुन्दान्वय-गगन-मार्त्तण्डरं। लीला-मात्र-विजिताखण्ड-कुसुमकाण्डरं। देशीय-गण-गजेन्द्र-सान्द्र-मद-धारावभासरं। विलसद्विलासरं। पुस्तकगच्छस्वच्छ-सरसी-सरोजरं। वन्दि-जनसुरभूजरं। श्रीमद्गुणचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति-चारुतर-चरण-सरसीरुह-षट्चरणरं। अशेष-दोषदूरीकरणपरिणतान्तःकरण-रम्मप्प श्रीमन्नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति गले न्तप्परेन्दडे॥

माद्यन्-प्रमदा-मुग्धाब्जमुकुरश्चारित्र-चूडामणि
श्रीजैनागम-वार्द्धि-वर्द्धन-सुधाशोचिस्समुद्भासते।
यश्शल्य-त्रय-गारव-त्रय-समदण्ड-त्रय-ध्वंसक —
स्स श्रीमान्नयकीर्त्ति देवमुनिपस्सैद्धान्तिकाग्रेसरः॥२०॥

माणिक्यनन्दिमुनिप श्रीनयकीर्त्तिव्रतीश्वरस्य सधर्म्मः।
गुणचन्द्रदेवतनया राद्धान्त-पयोधि-पारगो भुवि भाति॥२१॥

हार-क्षीर-हराट्टहास-दलभृत्कुन्देन्दु-मन्दाकिनी—
कर्प्पूर-स्फटिक-स्फुरद्रुयशा-धौतत्रिलोकोदरः।
उद्दण्ड-स्मर-भूरि-भूधरपविः ख्यातो बभूवर्च्चितो
मश्रीमान्नयकीर्त्ति देवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः॥२२॥

शाके रन्ध्रनवद्युचन्द्रमसि दुर्म्मुख्याख्य*संवत्सरे
वैशाखेधवले चतुर्द्दशदिने वारे च सूर्य्यात्मजे।
पूर्व्वाह्णे प्रहरेगतेऽर्द्धसहिते स्वर्गं जगामात्मवान्

* ख्य

विख्यातो **नयकीर्त्ति**-देव-मुनिपो राद्धान्त-चक्राधिपः ॥२३॥
श्रीमज्जैन-वचोब्धि-वर्द्धन-विधुस्साहित्यविद्यानिधिम्

(पश्चिम मुख)

सर्प्पद्दर्प्पक-हस्ति-मस्तक-लुठत्प्रोत्कण्ठ-कण्ठीरवः ।
स श्रीमान् **गुणचन्द्र**देवतनयम्मौजन्यजन्यावनि
स्थेयान् श्री**नयकीर्त्ति** देवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः ॥२४॥
गुरुवादं खचराधिपङ्गे बलिगं दानक्के बिण्पिङ्गे तां
गुरुवादं सुर-भूधरक्के नेगल्दा कैलास-शैलक्के तां ।
गुरुवादं विनुतङ्गे राजिसुविरङ्गोलङ्गे लोकक्के सद्
गुरुवादं **नयकीर्त्ति**देवमुनिपं राद्धान्त-चक्राधिपं ॥२५॥

वच्छिष्यर् ॥

हिमकर-शरदभ्र-क्षीर-कल्लोल-जाल-स्फटिक-सित-यश-श्री-
शुभ्र-दिक्-चक्रवालः ।
मदन-मद-तिमिस्र-श्रेणितीव्रांशुमाली जयति निखिल-वन्द्यो
मेघचन्द्र-व्रतीन्द्रः ॥२६॥

तत्सधर्म्मर् ॥

कन्दर्प्पाहवकर्पितोद्धुरतनुत्राणोपमोरस्थली
यश्चद्भूरमक्षा विनेय-जनता-नीरेजिनी-भानवः ।
त्यक्ताशेष-बहिर्व्विकल्प-निचयारचारित्र-चक्रेश्वर
शुम्मन्त्यणिलतटाक-शासि-**मलधारि**-स्वामिनो भूतल ॥२७॥

तत्सधर्म्मर् ॥

षट्-कर्म्म-विषय-मन्त्रे नानाविध-रोग-हारि-वैद्ये च ।

जगदेकसूरिरिव श्रीधरदेवो बभूव जगति प्रथितः ॥२८॥

तत्सधर्म्मर् ॥

तर्क-व्याकरणागम-साहित्य-प्रभृति-सकल-शास्त्रार्थज्ञ ।
विख्यात-दामनन्दि-त्रैविद्य-मुनीश्वरो धरायां जयति ॥२९॥
श्रीमज्जैनमताब्जिनीदिनकरो नैय्यायिकाध्वान्तस्
श्चार्वाकावनिभृत्करालकुलिशो बौद्धाब्धिकुम्भोद्भवः ।
सांख्याम्भामकगन्धसिन्धुरशिरोनिर्भेदकण्ठीरव—
स्त्रैविद्योत्तमदामनन्दिमुनिपस्सोऽयं भुवि भ्राजते ॥३०॥

तत्सधर्म्मर् ॥

दुग्धाब्धि-स्फटिकेन्दु-कुन्द-कुमुद-व्याभासि-कीर्त्तिप्रिय-
स्सिद्धान्तोदधि-वर्द्धनामृतकरःपारार्थ्य-रत्नाकरः ।
ख्यात-श्री-नयकीर्त्तिदेवमुनिपश्रीपाद-पद्म-प्रियो ।
भात्यस्यां भुवि भानुकीर्त्ति-मुनिपस्सिद्धान्तचक्राधिपः ॥३१॥
उरगेन्द्र-क्षीर-नीराकर-रजत-गिरि-श्रीसितच्छत्र-गङ्गा—
हरहासैरावतेभ-स्फटिक-वृषभ-शुभ्राभ्रनीहार-हारा—।
मर-राज-श्वेत-पङ्केरुह-हलधर-वाक्-शङ्ख-हंसेन्दु-कुन्दो-
त्करचञ्चत्कीर्त्तिकान्तं धरेयोल्सेसेदनी भानुकीर्त्ति-व्रतीन्द्रं

तत्सधर्म्मर् ॥ ॥३२॥

मदृशाकृति-शोभिताखिलकला-पूर्णस्स्मर-ध्वंसकः
शश्वद्विश्व-वियोगि-हृत्सुखकर-श्रीबालचन्द्रो मुनिः ।
चत्रेणोन-कलेन-काम-सुहृदा चञ्चद्वियोगिद्विषा
लोकेस्मिन्नुपमीयते कथमसौ तेनात्र बालेन्दुना ॥३३॥

अखण्ड-मदन-मद-गज-निर्भेदन-पटुतर-प्रताप-मृगेन्द्रः ।
भव्य-कुमुदौघ-विकसन-चन्द्रो भुवि भाति **बालचन्द्र**-मु
॥३

तारादि-चीर-पूर-स्फटिक-सुर-सरित्तारहारेन्दु-कुन्द—
श्वेतागलकीर्त्ति-लक्ष्मी-**प्रसर**-धवलिताशेषदिक्-चक्रवाल
श्रीमत्सिद्धान्त-चक्रेश्वर-सुत-**नयकीर्त्ति**-व्रतीशाङ्घ्रि-भक्त

(उत्तर मुख)

श्रीमान्भट्टारकेशो जगति विजयते मेघचन्द्र-व्रतीन्द्रः ॥३
गाम्भीर्य्ये मकराकरो वितरणे कल्पद्रुमस्तेजसि
प्रोद्यण्ड-द्युमणिः कलास्वपि शशी धैर्य्ये पुनर्मन्दरः ।
सर्व्वोर्व्वी-परिपूर्ण-निर्म्मल-यशो-लक्ष्मी-मनो-रञ्जनो
मात्यस्यां भुवि **माघनन्दि**मुनिपो भट्टारकाग्रेसरः ॥३६
वसुपूर्णसमस्ताशःक्षितिचक्रे विराजते ।
चञ्चत्कुवलयानन्द-**प्रभाचन्द्रो**मुनीश्वरः ॥३७॥
वत्सधर्म्मर् ॥

अखण्डमदकोटयो नियमिताखितिष्ठन्ति येन चित्तौ
यद्वाग्जातसुधारसोऽखिलविपच्छेदकरशोभते ।
यत्तन्त्रोद्भविधिःसमस्तजनतारोग्याय संवर्त्तते
सोऽयं शुम्भति **पद्मनन्दि**मुनिनाथो मन्त्रवादीश्वरः ॥३८
वत्सधर्म्मर् ॥

चच्चच्चन्द्र-मरीचि-शारद-घन-क्षीराब्धि-तारावल—
प्रोद्यत्कीर्त्ति-विकास-पाण्डुर-तर-ब्रह्माण्ड-भाण्डोदरः ।

यावान्ता-कठिन-स्तन-श्रुय-तटी-द्वारा गभीरस्थिर
मोऽयं सन्नत-**नेमिचन्द्र**-मुनिपो विभ्राजते भूतले ॥३९॥
भण्डाराधिकृत-समस्त-सचिवाधीशो जगद्विश्रुत—
श्रीहुल्लो **नयकीर्त्ति**-देव-मुनि-पादाम्भोज-युग्मप्रिय ।
कीर्त्ति-श्री-निलय परार्थ-चरितो नित्यं विभाति चितौ
सोऽयं श्रीजिनधर्म-रक्षकरः सम्यक्त्व-रत्नाकरः ॥४०॥
श्रीमन्त्रीकरणाधिपस्सचिवनाथो विश्व-विद्यानिधि-
श्चातुर्व्वर्ण्य-महाप्रदान-करणोत्साही चितौ शोभते ।
श्रीनीलो जिन-धर्म-निर्म्मल-मनास्साहित्य-विद्याप्रिय-
स्सोजन्यैक-निधिश्शशाङ्क-विशद-प्रोद्यश-श्रीपतिः ॥४१॥
आराध्यो जिनपो गुरुश्च **नयकीर्त्ति**-ख्यात-योगीश्वरो
शांताम्बा जननी तु यस्य जनक (:) श्रीयक्ष**देवो** विभुः ।
श्रीमत्कामलता-सुता पुरपति श्री **मल्लिनाथ**स्सुतो
भात्यस्यां भुवि **नागदेव**-सचिवश्रण्डाधिकाग्रणीः ॥४२॥
सुर-नाज-शरदिन्दु-प्रस्फुरत्कीर्त्ति-शुभ्रो
भवदखिल-दिगन्तो वाग्वधू-चित्तकान्त ।
बुध-निधि-**नयकीर्त्ति**-ख्यात-योगीन्द्र-पादा—
म्बुज-युगकृत-सेव. शोभते **नागदेवः** ॥४३॥
ख्यातश्रीनयकीर्त्ति देवमुनिनाथानां पयःप्रोल्लस-
त्कीर्त्तिनां परमं परोक्ष-विनय कर्तुं निषध्यालयं ।
भक्त्याकारयदाशशाङ्क-दिनकृत्सार स्थिर स्थायिनं
श्रीनागस्सचिवोत्तमो निजयशश्रीशुभ्र-दिग्मण्डलः ॥४४॥

[इस लेख में नागदेव मंत्री द्वारा अपने गुरु श्री नयकीर्ति योगीन्द्र की निषद्या निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। नयकीर्तिमुनि का स्वर्गवास शक सं० १०११ वैशाख शुक्ल १४ को हुआ था। मुनि की विस्तार-सहित वर्णन की हुई गुरु-परम्परा में निम्नलिखित आचार्यों का उल्लेख आया है। पद्मनन्दि अपर नाम कुन्दकुन्द, उमास्वाति गृद्धपिच्छ, बलाकपिच्छ, गुणनन्दि, देवेन्द्र सैद्धान्तिक, कलधौतनन्दि, रविचन्द्र अपर नाम सम्पूर्णचन्द्र, दामनन्दिमुनि श्रीधरदेव, मलधारिदेव, श्रीधरदेव, माघनन्दि मुनि, गुणचन्द्रमुनि, मेघचन्द्र, चन्द्रकीर्ति भट्टारक और वृषचन्द्र पण्डितदेव। नयकीर्ति गुणचन्द्रमुनि के शिष्य थे और उनके सधर्म गुणचन्द्र मुनि के पुत्र माणिक्यनन्दि थे। उनकी शिष्य-मण्डली में मेघचन्द्र त्रैविद्य, मलधारिस्वामी, श्रीधरदेव, दामनन्दि त्रैविद्य, भानुकीर्ति मुनि, बालचन्द्र मुनि, माघनन्दि मुनि, प्रभाचन्द्र मुनि, पद्मनन्दि मुनि और नेमिचन्द्र मुनि थे।]

४३ (११७)

चामुण्डराय बस्ति के दक्षिण की ओर मण्डप में प्रथम स्तम्भ पर

(शक सं० १०४५)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परम गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥१॥
श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमल-जिनवरानीकसौधोरु-वार्द्धिः
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्य-बोधोरु-वेदिः ।
शस्तस्यात्कार-मुद्रा-शबलित-जनतानन्द-नादोरुघोषः
स्थेयादाचन्द्रतारं परम-सुख-महा-वीर्य्य-वीची-निकायः ॥२॥

श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्न-वर्गाश्श्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते ।
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ नन्दिगणे बभूव ॥३॥
श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामा ह्याचार्यशब्दोत्तरकोण्ड-
कुन्दः ।
द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धिः ॥४॥
अभूदुमास्वातिमुनीश्वरोऽसावाचार्यशब्दोत्तरगृद्ध्र
पिञ्छः ।
तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्थवेदी ।५।
श्रीगृद्ध्रपिञ्छ-मुनिपस्य बलाकपिञ्छश्शिष्योऽजनिष्टभुवन-
त्रयवर्त्तिकीर्त्तिः ।
चारित्रचुञ्चुरखिलावनिपालमौलिमाला-शिलीमुख-विरा-
जित-पाद-पद्मः ।।६।।
तच्छिष्यो गुणनन्दिपण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वरः
तर्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्साहित्यविद्यापतिः ।
मिथ्यावादिमदान्धसिन्धुर-घटा-सङ्घट्ट-कण्ठीरवो
भव्याम्भोजदिवाकरो विजयतां कन्दर्प-दर्पापहः ॥७॥
तच्छिष्यास्त्रिशता विवेकनिधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता-
स्तेषूत्कृष्टतमाद्विसप्ततिमितास्सिद्धान्तशास्त्रार्थक-
व्याख्याने पटवो विचित्र-चरितास्तेषु प्रसिद्धो मुनिः
नानानूननयप्रमाणनिपुणो देवेन्द्रसैद्धान्तिकः ॥७॥
अजनिमहिप-चूड़ा-रत्न-राराजिताङ्घ्रिर्विजितमकरकेतूद्द
ण्डदोर्दण्डगर्व्वः ।

[इस लेख में नागदेव मंत्री द्वारा अपने गुरु श्री नयकीर्ति योगीन्द्र की निषद्या निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। नयकीर्तिमुनि का स्वर्गवास शक सं० १०११ वैशाख शुक्ल १४ को हुआ था। मुनि की विस्तार-सहित वर्णन की हुई गुरु-परम्परा में निम्नलिखित आचार्यों का उल्लेख आया है। पद्मनन्दि अपर नाम कुन्दकुन्द, उमास्वाति गृद्धपिच्छ, बलाकपिच्छ, गुणनन्दि, देवेन्द्र सैद्धान्तिक, कलधौतनन्दि, रविचन्द्र अपर नाम सम्पूर्णचन्द्र, दामनन्दिमुनि, श्रीधरदेव, मलधारिदेव, श्रीधरदेव, माघनन्दि मुनि, गुणचन्द्रमुनि, मेघचन्द्र, चन्द्रकीर्ति भट्टारक और उदयचन्द्र पण्डितदेव। नयकीर्ति गुणचन्द्रमुनि के शिष्य थे और उनके सधर्म गुणचन्द्र मुनि के पुत्र माणिक्यनन्दि थे। उनकी शिष्य-मण्डली में मेघचन्द्र त्रैविद्य, मलधारिस्वामी, श्रीधरदेव, दामनन्दि त्रैविद्य, भानुकीर्ति मुनि, बालचन्द्र मुनि, माघनन्दि मुनि, प्रभाचन्द्र मुनि, पद्मनन्दि मुनि और नेमिचन्द्र मुनि थे।]

४३ (११७)

चामुण्डराय वस्ति के दक्षिण की ओर मण्डप में प्रथम स्तम्भ पर

(शक सं० १०४५)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परम गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥१॥
श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमल-जिनवरानीकसौधोरु-वार्द्धिः
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्य-बोधोरु-वेदिः।
शस्तस्यात्कार-मुद्रा-शबलित-जनतानन्द-नादोरुघोषः
स्थेयादाचन्द्रतारं परम-सुख-महा-वीर्य-वीची-निकायः ॥२॥

कुनयनिकरभूध्रानीकदम्भोलिदण्डःस जयतु विबुधेन्द्रो
भारती-भालपट्टः ॥९॥

(दक्षिणमुख)

तच्छिष्यः**कलधौतनन्दि**मुनिपः सैद्धान्तचक्रेश्वरः
पारावारपरीतधारिणि-कुल-व्याप्तोरुकीर्त्तीश्वरः ।
पञ्चाक्षोन्मदकुम्भि-कुम्भ-दलन-प्रोन्मुक्त-मुक्ताफल—
प्रांशुप्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनीवल्लभः ॥१०॥
अवर्गे **रविचन्द्र**सिद्धा—
न्तविदर्सम्पूर्णचन्द्र-सिद्धान्त-मुनि- ।
प्रवररवरवर्गेशिष्य—
प्रवरश्री**दामनन्दि**-मन्मुनि-पतिगलु ॥११॥
वेधितभव्यरस्तमदनर्म्मद-वर्जित-शुद्ध-मानसर्
श्रीधरदेवरेम्बरवर्गमतनुभवरादराथशम्
श्रीधरर्गाद शिष्यरवरोल् नेगल्दर्म्म**लधारि**-देवर ।
श्रीधरदेवरुनतनरेन्द्र-किरीट-तटार्च्चित-क्रमर् ॥१२॥
मलधारिदेवरिन्दं
बेलगिदुदु जिनेन्द्रशासन मुन्ननि—
र्म्मलमागिमत्तमीगल्
बेलगिदपुदु **चन्द्रकीर्त्ति**भट्टारकरिं ॥१३॥ .
अवर शिष्यर ॥
परमात्मामिन्न-शास्त्र-सरजनिलयं सिद्धान्त-चूडामणि
स्फुरिताचारपरं विनेयजनतानन्दं गुणानीकसु—

न्दरनेम्युमतिथि समस्त-भुवन-प्रस्तुत्यनादं दिवा—
करणन्दि-व्रतिनाथनुज्वलयशा विश्वाजिनाशातटं ॥१४॥
विदितव्याकरणद तर्कद सिद्धान्तद विशेपदि वैविद्या—
स्पदरेन्दो-धरेयण्णिपुदु दिवाकरणन्दिदेवसिद्धान्तिगरं ।१५।
धरराद्धान्तिकचक्रवर्त्ति दुरितप्रध्वंसि कन्दर्पसि—
न्धुरसिंहं वर-शील-सद्गुण-महाम्भोराशि षट्कप्रपु·
ष्कर-हंसेभ-शशाङ्क-सन्निभ-यश-श्री-रूपनो दिवा·
करणन्दिव्रतिनिर्म्मदं निरुपमं भूपेन्द्रवृन्दार्च्चितं ॥१६॥

(पश्चिममुख)

वर-भव्यानन-पद्ममुज्वलरनक्षालोकनेत्रोत्पल
कोरगल्लापतमल्लमं परयलेन्त जैनमार्गामला—
म्बरमत्युज्वलमागले चेजगितेभूभागमं श्रीदिवा—
करणन्दिव्रतिशाबिदयाकरकराकारम्बालुवर्ण्णेनुत ॥१७॥
यद्वक्त्रचन्द्रबिलसद्वचनामृताम्भःपानेननुष्यतिविनेयचको

रवृन्द ।

जैनेन्द्रशासनसरोवरराजहंसो जीयादसौभुवि दिवाकरण·
न्दिदेवः ॥१८॥

मवर शिष्यरु ॥

गण्डविमुक्तदेव-मलधारि-मुनीन्द्ररपादपद्मम
कण्डादमाप्पमे नेनेद भव्यजनकमकोण्डखण्ड —
दण्ड-विरोधि-दण्ड-नृप-दण्ड-पराप्पृषु-पसदण्ड-को—
दण्ड-कराल-दण्डधर-दण्डभयं-पेरपिङ्गि-पोगवें ॥१९॥

बलयुतरं बलदत्त्युव लतान्तशरद्विदिरागितागिस
भ्वलिसे पलच्वि तुल्दवननोडिसिमेय् वर्णयाद दूसरिं।
कलेयदे निन्द करर्युनद कर्गिद सिरिपनमके-वेत्त क—
सलमेनिसिसु पुत्तडहमेय्य मलं मलधारि-देवरं ॥२०॥
मरेदुमदोम्मे लैाकिकद वार्त्तेयनाडद केत्त वागिलं
सेरेयद भानुवस्तमितमागिरे पोगद मेय्यनोम्मेयुं।
तुरिसद कुक्कुटासनकं सोल्लद गण्डविमुक्तवृत्तियं
मरेयद घोर-दुश्चर-तपश्चरितं मलधारिदेवर ॥२१॥

श्री-चारित्र-चक्रवर्त्ति गल शिष्यरु ॥

पञ्चेन्द्रिय प्रथित-सामज-कुम्भपीठ-निर्भेद-लम्पट-महोम-समम-सिंह ।
सिद्धान्त-वारिनिधि-पूर्ण-निशाधिनाथो वाभाति भूरिभुवने शुभचन्द्रदेवः ॥२२॥

शुभ्राभ्राभसुरद्विपामरसरित्तारापतिस्फुट—
ज्योत्स्ना-कुन्द-शशाङ्क-कम्बु-कमलाभासा-तरङ्गोत्करः ।
प्रख्य-प्रस्फुल-कीर्त्ति मन्त्वमिमां गायन्ति देवाङ्गना
दिक्कन्या शुभचन्द्रदेव भवतश्चारित्रभूमामिनि ॥२३॥

शुभचन्द्रमुनीन्द्रयश
स्तमेयान्नमरियागमादिर्न्ता भन्द ।
प्रभुनेगिर्द कन्दि कुन्दिद—
नमन-गिरामणिमदंक कन्दुं कुन्दु ॥२४॥
एनसु विनयद्रवद—

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

([illegible])

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

महाराजराज्यसमुद्धरणकलिगलाभरणश्रीजैनधर्म्मामृताम्बुधिप्रवर्द्ध-
न-सुधाकर-सम्यक्त—रत्नाकराद्यनेकनामावलीसमालङ्कृतरप्पश्रीम-
न्महाप्रधानदण्डनायकगङ्गराजं सम्म गुरुगल् श्रीमूलसङ्घददेसि-
गणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवर्गे परोक्षविनयं
निसिधिगेय निलिसि महापूजेयं माडि महादानमं गेय्दरु॥
श्रीमहानुभावनसिगे ॥ शुभचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुड्ड ॥

धरजिनपूजेयनता—
दरदिन्दं जकणब्बे माडिसुवलुस—।
चरिते गुणान्वितें यें—
न्दी धरयोलग मेचि पोगलुतिर्प्पुदु निच्चं ॥२६॥
दोरेये जकणिकब्बेगी भुवनदोल् चारित्रदोल् शीलदोल्
परमश्रीजिनपूजेयोल् सकलदानाश्चर्य्यदोल् सत्यदोल् ।
गुरुपादाम्बुजभक्तियोल् विनयदोल् भव्यर्कलं कन्दरा—
दरदि मन्निसुतिर्प्प पेम्पिनेडेयोल् मत्तन्यकान्ताजनम् ॥३०॥
श्रीमत्प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवर गुड्ड हेग्गडेमर्दिमय्यंबरेदं ॥
विरुदरूवारिमुखतिलकं वर्द्धमानाचारि तोडरिसिद
गङ्गुल महा ॥ श्री श्री ॥

[इस लेख में पोय्सल महाराज गङ्गनरेश विष्णुवर्द्धन द्वारा अपने गुरु शुभचन्द्र देव की निषद्या निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। शुभचन्द्र देव का स्वर्गारोहण शक सं० १०४२, श्रावण कृष्णा १० को हुआ था। इनके गुरु परम्परा-वर्णन में मलधारिदेव और श्रीधरदेव के नाम तक के प्रथम ग्यारह श्लोक वे ही हैं जो मल्लिषेण शिलालेख नं० ५४ (६७) के हैं। इसके पश्चात् चन्द्रकीर्ति भट्टारक, दिवाकरनन्दि,

ग्गुंरुगलुदात्तविसनरदात्तयशं नृपकामयोग्सलं
पोरेद महीशानेन्दोडेन्ते यणिगुपरानेंगल्देंचिगाड्डन ॥५॥

कं [द] ॥ मनुचरितनेचिगाड्डन
मनेयोल् मुनिजनसमूहमुं सुभजनमु ।
जिनपूजने जिनवन्दने
जिनमहिमेगलावकालमुं शोभिसुगु ॥६॥

श्रामहानुभावनडंङ्कियेन्तप्पनेन्दोडे ।

वत्तम-गुण-ततिवनिता—
कृतिगनोप्तकोण्डुदेन्दु जगमेल्लं क—।
र्योत्तुविनमगलगुणग—
ण्यातिगे जगदोलगे पोषिकरवेये गोन्तसु ॥७॥

मनुवं जिनपतिनुतिपि ।
यनमं मुनिजनदनुतिपिं सकलमिदि—
र्मनगोल्मो मल्गुगेगाल्
मनमं जगदोलगं पोषिकरवेवेनिरिपन्नु ॥८॥

जन विनुतनेचिगाड्डन—
मनस्वगोड्डेमि मद्रगाजचगूना—
जन जननि जननि गुगन—
वेने वेगल्मन् पोषिकध्ये गुणदुजनिपि ॥९॥

दोर्निमिद पोवाल्विकं पति—
जनमं सुचजनम मेग्येतोर्मे समन्त—
वडने मडिन्दु पदे फ्नवम—

[न] नन्तमं नेरपि परपि जममंअगदोलु ॥१०॥

व [चन] ॥ इन्तेनिसिदापोचाम्बिकं बेल्गोलद तीर्थं मोदलागनेकतीर्थंगलोलु पलवुं चैत्यालयङ्गल माडिसि महादान गेय्दु ॥

वृ [त्त] ॥ श्रदनिन्नेनेम्बेनानेन्दमरद सुकृतमं नोड रोमाञ्च माद—

पुदु पेल्वुदोगदिन्दं स्मरिसिपदेनसो वोतरागाय गार्हे-
स्थ्यद योपिदु भावदी कालद परिशुतियिं गेल्दु सल्लेखनास-
म्पददिन्दं देविपोचाम्बिके सुरपदमं लीलेयिं सूरेगोण्डल् ॥११॥

सकवर्ष १०४३ नेय शार्व्वरि संवत्सरदाषाढ़ शुद्ध ५ सोमवारदन्दु सन्न्यसनमं कैकोण्डु एकपार्श्वनियमदि पञ्च-पदमनुच्चारिसुत्त देवलोकक्के सन्दलु ॥ आ जगज्जननियपुत्रं ॥ समधिगतपञ्चमहाशब्द महासामन्ताधिपति महाप्रचण्डदण्ड-नायकं । वैरिभयदायकं । गोत्रपवित्रं । बुधजनमित्रं । श्रीजैन-धर्म्मामृताम्बुधिप्रवर्द्धनसुधाकरं । सम्यक्त्वरत्नाकरं । आहाराभय-भैषज्य-शास्त्रदानविनोद । भव्यजनहृदयप्रमोद । विष्णुवर्द्धन भूपालहोय्सलमहाराजराज्याभिषेकपूर्ण्णकुम्भ । धर्म्महर्म्योद्ध-रणमूलस्तम्भ । कुदिदन्तेगण्डपगंडरं वेट्टोण्ड । प्रोद्यप्रताद्यनेक नामावलीसमालङ्कृतरप्प श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं गङ्ग-राजं तम्मातमाम्बिके पोचलदेवियर दिवक्के सलतु परोक्षविन-यक्केन्दी निसिधिगेयं निलिसि प्रतिष्ठे गेय्दु महादानपूजाभ्यर्च-नाभिषेकङ्गलं माडिद मङ्गलमहा श्री श्री ॥

श्री प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवगुड्डं पेर्ग्गडे चावराजं बरेदं ॥
रूवारिहोय्सलाचारियमगं वर्द्धमानाचारि बिरुदरूवारि-
मुखतिलकं कण्डरिसिद ॥

[इस लेख में 'मार' और 'माकणब्बे' के सुपुत्र 'एचि' व 'एचि-गाङ्क' की भार्या 'पोचिकब्बे' की धर्मपरायणता और अन्त में संन्यास-विधि से स्वर्गारोहण का उल्लेख है। पोचिकब्बे ने अनेक धार्मिक कार्य किये। उन्होंने बेल्गोल में अनेक मन्दिर बनवाये। शक सं० १०४३, आषाढ़ सुदि ५ सोमवार को इस धर्मवती महिला का स्वर्गवास हो जाने पर उसके प्रतापी पुत्र महासामान्ताधिपति, महाप्रचण्ड दण्डनायक, विष्णुवर्द्धन महाराज के मंत्री गङ्गराज ने अपनी माता की स्मारक यह निषद्या निर्माण कराई।

यह लेख प्रभाचन्द्र सिद्धान्त देव के गृहस्थ शिष्य चावराज का रचा हुआ और होयसलाचारि के पुत्र वर्धमानाचारि द्वारा उत्कीर्ण है]

४५ (१२५)

एरडु कट्टे वस्ति के पश्चिम की ओर एक पाषाण पर।

(लगभग शक सं० १०४०)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे ।
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसे ॥ २ ॥
स्वस्ति 'समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर द्वारवतीपुर वराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलपरोल्

गण्डाद्यनेकनामावली-समालङ्कृतरुम् श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभु-
वनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुज-बलवीर गङ्ग विष्णुवर्द्धन
होय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा चन्द्रा-
र्कतारं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ जननाधारनुदारनन्यवनितादूरं वचासुन्दरी-
घनकुच-स्तन-हारनुपरागधीरं भारतीबल्लभं ।
अनघं मानिनं मायकणद्ये विबुधप्रव्यालधर्मप्रभु-
वनं निकायागमचरित्रे सार्थकतिंदं मदाचन्द्रनो ॥ ३ ॥

कन्द ॥ बिरुदनमल्ल बुधजन —
मित्र द्विजकुलपवित्रनेनिप जगदोलु ।
पात्रमरिपुकुलकन्दपमित्र
कीर्त्तिकन्याकान्त सकलचरित्र ॥ ४ ॥
मनुचरितनविनाडुन
मनेयालुगुरिजनमाल्कुरं बुधजनमुं ।
जिनपूजनंजिनवन्दने
जिनपद्मिनीकान्त कालम संतिसुगुं ॥ ५ ॥
बलमगुलतिबनिता-
वृत्तिबलेनिप्पिरदेरनु जगताल कै-
दपेनविनतनगुलदर
स्पत्तिनं जगद्वाल चालुकडेदनान्तनु ॥ ६ ॥
समंजिसितिदेविराजन दण्डिकरवेन गुणनिविकनीत्वेदर-
सा-देव-राज-भरितकण्ठे नोदीण्डे विपुल सुखम कीर्तिप्रिय बल

बाप्पनुवसम-समर-रस-रसिक-रिपु-नृप-कलापावलेप-लोप-लोलुप-कृपाणनुवाहाराभय-भैषज्य-शास्त्रदान-विनोदनुं सकल-लोक-शोकापनोदनुं ॥

वृत्त ॥ वज्रं वज्रभृतो हलं हलभृतश्चक्रं तथा चक्रिण

शक्तिश्शक्तिधरस्य गाण्डिवधनुर्गाण्डीव-कोदण्डिनः ।

यस्तद्वत वितनोति विष्णुनृपतेष्कार्य्यं कथं माद्दशै-

र्गङ्गो गाङ्ग-तरङ्गरञ्जित-यशो-राशिस्सवर्ण्यो भवेत् ॥ ७ ॥

इन्तेनिप श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं द्रोहघरट्टगङ्गराजं चालुक्यचक्रवर्त्ति त्रिभुवनमल्ल पेर्म्माडिदेवनदलं पन्निर्व्वर्-स्सामन्तर्व्वेरसुकण्णेगालवीडिनलुविर्ट्टिरे ॥

कन्द ॥ तेगेवारुवमं हारुव

यगेयं तनगिरुल बवरवेनुत सवङ्गं ।

बुगुवकटकिगरनलिरं

पुगिसिदुदु भुजासि गङ्गदण्डाधिपन ॥ ८ ॥

वचन ॥ एम्बिनमवस्कन्दकेलियिन्दमनिवरुं सामन्तरुमं भङ्गिसि तदीयवस्तु-वाहनसमूहमं निजस्वामिगे तन्दु कोट्टुनिज-भुजावष्टम्भकेमेच्चि मेचिदें बेडिकोल्लेने ॥

कन्द । परमप्रसादमं पडेदु

राज्यमं धनमनेनुमं बेडदन-

स्वरमागे बेडिकोण्डं

परमननिदनर्द्दर्च्चनाश्रितचित्त ॥ ९ ॥

बन्नुवेडिकोण्डु ॥

गुणमणिगणसिंधु रिशष्टलोकैकबन्धुः
विबुधमधुपपुञ्जः फुल्लबाणादिसञ्जः ॥१ ॥
श्रीवधुचन्द्रलेखे सुरभूरुहदुद्भवदिं पयोधिवे-
लावधु पेम्पुवेत्तबोल निन्दिते नागले चारुरूपली- ।
लावति दण्डनायकिति लकनेदेमति बूचिराजने-
म्बीविभु पुट्टे पेम्पु वडेदार्ज्जिसिदलु पिरिदप्प कीर्त्तिय ॥२।
भावयव्वेय मगनेन्तप्पनेन्दडे ॥

स्वस्ति समस्तभुवनभवनविख्यातख्यातिक्रान्तानिकामकमनी यमुखकमलपरागपरभागसुभगीकृतात्मीयवक्त्रनुं । स्वकीयकायका न्तिपरिहसितकुसुमचापगात्रनुं । आहाराभयभैषज्यशास्त्रदान विनोदनुं । सकललोकशोकापनोदनुं । निखिलगुणगणाभरणनुं जिनचरणशरणनुमेनिसिद बूचणं ।

वृत्त ॥ विनयद सीमे सत्यद तवर्म्मने शौचद जन्मभूमि ये-
न्दनवरतं पोगल्वुदु जनं विबुधोरुकरकैरवप्रबो-
धनहिमरोचियं नेगर्द बूचिपनुद्धपरार्त्थसद्गुणा-
भिनवदधीचियं सुभटभीकरविक्रमसव्यसाचियं ॥ ३ ॥

आ-वण्णं सककवर्ष १०३७ नेय **विजयसंवत्सरद वैशाखसुद्ध १० आदित्यवार** दन्दु सर्व्वसङ्गपरित्यागपूर्व्वकं मुडिपिदं ॥

(पश्चिममुख)

पद्य ॥ त्यागंमवर्ण्णगुणाधिक वदनुजं शौर्य्यं च तद्गाम्भर्यं
धैर्य्यं गर्व्वगुणातिशायवरियुं ज्ञाने मनोऽन्यं सतां ।

दोषासंगतुरः गुणैकनमनं श्रीकूचणोऽन्यादिवं
प्राप्तं सत्पुरुषीकरोति कृतार्थं किं वा न चातुर्यभाक् ॥ ४ ॥
यो श्रीऽर्यो गजकेसरिभूपसत्पुत्रं दानकवे कूचणो
वागराख्यान्तुरभूभभूपमवनी गम्भीरभावा विधेः ।
यो रत्नाकरभूपगुणनि-गुण यो मेरुभूपं गत-
स्सोऽप्य त्राम्यमना मनोविरुचिरं गीर्वाणभूयंगतः ॥ ५ ॥
माराकारदृशि प्रसिद्धतराम्यस्फूर्जित-कीर्तिति
प्रागम्यगाम्भीर्यप्रगुणवगुणरत्नरूपैर्मनीषीति च ।
श्रीमद्गूचणभूपत्रं त्रिपथगा लक्ष्मीगदत्ता शिला—
स्तम्भ स्थापपतिम भूपगगुणप्रख्यातिवृद्धि प्रति ॥ ६ ॥
धरे कृपुवारगु विबुधविनेयनिकायमनायमाग्नुवाक्-
सरसियुमीगर्जी जगदोलागमनादरदीयेपादने—
न्दिरदं विषादमादमाद्वुसिरं भव्यजनान्त [रङ्ग] दोलु
निरुपमनंपूदिद नेगरं बूचियणं दिविजेन्द्रलोकमं ॥७॥
श्री मूलसङ्घद देसिगगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्रसिद्धान्त-
देवर गुड्डं बूचणन निसिधिगे ॥

[इस लेख में 'मारुणे' माता के पुत्र 'बूचिराज' व बूचण के सौन्दर्य, शौर्य और सद्गुणों का उल्लेख है । यह तेजस्वी और धर्मिष्ठ पुरुष शक सं० १०३७ वैशाख सुदि १० रविवार को सर्व-परिग्रह का त्यागकर स्वर्गगामी हुआ । इसके स्मरणार्थ सेनापति गङ्ग ने एक पाषाण-स्तम्भ आरोपित कराया ।

बूचिराज के गुरु मूल संघ, देशीगण पुस्तक गच्छ के शुभचन्द्र सिद्धान्त देव थे ।]

४७ (१२७)

उसी मण्डप में द्वितीय स्तम्भ पर

(शक सं० १०३७)

(दक्षिणमुख)

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थ-ध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥ १ ॥
श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमलजिनवरानीकसौधोरुवार्द्धिः
प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्यबोधोरु-वेदिः ।
शस्तस्यात्कारमुद्राशबलितजनतानन्दनादोरुघोषः
स्थेयादाचन्द्रतारं परमसुखमहावीर्य्यवीचीनिकायः ॥ २ ॥
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गाः श्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते ।
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ **नन्दिगणे** बभूव ॥३॥
श्रीपद्मनन्दी**त्यनवद्यनामाह्याचार्य्यशब्दोत्तर**कोण्डकुन्दः ।
द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धिः ॥४॥
अभूदुमास्वातिमुनीश्वरोऽसावाचार्य्यशब्दोत्तरगृद्धपिञ्छः ।
तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्थवेदी ॥५॥
श्रीगृद्धपिञ्छमुनिपस्य**बलाकपिञ्छः**
शिष्योऽजनिष्टभुवनत्रयवर्त्तिकीर्त्तिः ।
चारित्रचुञ्चुरखिलावनिपालमौलि-
मालाशिलीमुखविराजितपादपद्मः ॥६॥
तच्छिष्यो**गुणनन्दि**पण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर-
स्तर्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्साहित्यविद्यापतिः ।

मिथ्यावादिमदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टकण्ठीरवो
भव्याम्भोजदिवाकरो विजयतां कन्दर्प्पदर्प्पापहः ॥७॥
तच्छिष्यास्त्रिशता विवेकनिधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता-
स्तेषूत्कृष्टतमा द्विसप्ततिमितास्सिद्धान्तशास्त्रार्त्थक-
व्याख्याने पटवो विचित्रचरितास्तेषु प्रसिद्धो मुनिः
नानानूननयप्रमाणनिपुणो देवेन्द्रसैद्धान्तिकः ॥८॥
अजनि महिपचूडारत्नराराजिताङ्घ्रि-
र्व्विजितमकरकेतूद्दण्डदोर्द्दण्डगर्व्वः ।
कुनयनिकरभूध्रानीकदम्भोलिदण्ड-
स्स जयतु विबुधेन्द्रो भारतीभालपट्टः ॥९॥
तच्छिष्यः कलधौतनन्दिमुनिपस्सैद्धान्तचक्रेश्वरः
पारावारपरीतधारिणिकुलव्याप्तोरुकीर्त्तीश्वरः ।
पञ्चाक्षोन्मदकुम्भिकुम्भदलनप्रोन्मुक्तमुक्ताफल—
प्रांशुप्राञ्चितकेसरी बुधनुता वाक्कामिनीवल्लभः ॥१०॥
तत्पुत्रको महेन्द्रादिकीर्त्तिर्म्मदनशङ्करः ।
यस्य वाग्देवता शक्ता श्रीर्वा मालामयूयुजत् ॥११॥
तच्छिष्योऽयं वीरणन्दी कवि-गमक-महावादि-वाग्मित्वयुक्तो
यस्य श्रीनाकसिन्धुत्रिदशपतिगजाकाशसङ्काशकीर्त्ति ।
गायन्त्युच्चैर्द्दिगन्ते त्रिदशयुवतयः प्रीतिरागानुबन्धात्
सोऽयं जीयात्प्रमादप्रकरमहिधराभीलदम्भोलिदण्डः ॥१२॥
श्रीगोल्लाचार्य्यनामा समजनि मुनिपश्शुद्धरत्नत्रयात्मा
सिद्धात्मार्त्थ-सार्त्थ-प्रकटनपटु-सिद्धान्त-शास्त्राब्धि-वीची—

सङ्घातचालिताहः प्रमदमदकलालीढबुद्धिप्रभावः
जीयाद्भूपाल-मौलि-द्युमणि-विदलिताङ्घ्र्यब्जलक्ष्मीविलासः ॥
पेर्गडे चावराजं बरेदंमङ्गल ॥

(पश्चिममुख)

वीरणन्दिविबुधेन्द्रसन्ततौ नूत्नचन्द्रिलनरेन्द्रवंशचू-
डामणिः प्रथितगोल्लदेशभूपालकः किमपि कारणेन सः ॥१४॥
श्रीमत्**त्रैकाल्ययोगी** समजनि महिकाकायलग्नातनुत्रं
यस्याभूद्वृष्टिधारा निशित-शर-गणा ग्रीष्ममार्त्तण्डबिम्बं ।
चक्रंसद्वृत्तचापाकलितयतिवरस्याघशत्रूनिजेतुं
गोल्लाचार्य्यस्य शिष्यस्सजयतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दुः ॥१५॥
तपस्सामर्थ्यतो यस्य ब्रह्मोऽभूद्ब्रह्मराक्षसः ।
यस्य स्मरणमात्रेण मुञ्चन्ति च महाग्रहाः ॥१६॥
प्राग्याश्यता गतं लोके करञ्जस्य हि तैलकं ।
तपस्सामर्थ्यतस्तस्य तपः किं वर्णितुं क्षमं ॥१७॥
त्रैकाल्य-योगि-यतिपाम-विनेयरत्न-
सिद्धान्तवार्द्धिपरिवर्द्धनपूर्णचन्द्रः ।
दिग्नागकुम्भशिखिनोज्ज्वलकीर्त्तिकान्तो
जीयादसावभयनन्दिमुनिर्जगत्यां ॥१८॥
येनाशेषपरीषहादिरिपवस्सम्यग्जिताः प्रोद्धताः
येनाप्ता दशलक्षणोत्तममहाधर्म्माख्यकल्पद्रुमाः ।
येनाशेष-भवोपताप-हननस्वाध्यात्मसंवेदनं
प्राप्तं स्यादभयादिनन्दिमुनिपस्सोऽयं कृतार्थो भुवि ॥१९॥

सच्छिद्धान्तसकलागमार्थनिपुणो लोकज्ञतासंयुत-
गाम्भीर्यादिविविधचारचरितश्रीमान्यकन्दाङ्कुरः ।
मिथ्यात्वान्धकारप्रतापदहनश्रीसोमदेवप्रभु-
श्रीपादाम्बुजफलेन्दुनाममुनिपः कामाटवीपावकः ॥२०॥
अपि च सकलचन्द्रो विश्वविद्याभरेश
प्रगुणपदपयोजः कुन्ददारेन्दुरोचिः ।
त्रिदशगजयुगश्वेतसिन्धुप्रकाश
प्रतिमविशदकीर्त्तिर्व्वागवधूकर्णपूरः ॥२१॥
शिष्यस्तस्य दृढव्रतशमनिधिस्सत्संयमाम्भोनिधिः
शीलानां विपुलालयस्समितिभिर्युक्तस्त्रिगुप्तिश्रितः ।
नानासद्गुणरत्नरोहणगिरिर् प्रोद्यत्तपो जन्मभूः
प्रख्यातो भुवि मेघचन्द्रमुनिपस्त्रैविद्यचक्राधिपः ॥ २२ ॥
त्रैविद्ययोगीश्वर-मेघचन्द्रस्याभूत्प्रभाचन्द्रमुनिस्सुशिष्यः ।
शुभद्रताम्भोनिधिपूर्णचन्द्रो निर्धूतदण्डत्रितयो विशल्यः २३
पुष्पास्त्रानून-दानोत्कट-कट-करटिप्रच्छेद-दृप्यन्मृगेन्द्रः
नानाभव्याब्जषण्डप्रतति-विकसन-श्रीविधानैकभानुः ।
संसाराम्भोधिमध्याक्षरणकरणतायानरत्नत्रयेशः
सम्यग्जैनागमार्थान्वित-विमलमतिः श्री प्रभाचन्द्र
योगी ॥ २४ ॥

(उत्तरमुख)

श्रीभूपालकमौलिलालितपदस्सज्ञानलक्ष्मीपति—
श्चारित्रोत्करवाहनश्शितयशश्शुभ्रातपत्राश्रितः ।

त्रैलोक्याद्भुवमन्मथारिविजयस्सद्धर्म्मचक्राधिपः
पृथ्वीसंस्तवतूर्य्यघोषनिनदस्त्रैविद्यचक्रेश्वरः ॥ २५ ॥
शाब्दीघस्य शिरोमणिः प्रविलसत्तर्कत्रचूडामणिः
सैद्धान्तेद्धशिरोमणिः प्रशमवद् व्रातस्य चूडामणिः ।
प्रोद्यत्संयमिनां शिरोमणिरुदच्चद्भव्यरत्नामणि-
र्जीयात्सन्नुतमेघचन्द्रमुनिपस्त्रैविद्यचूडामणिः ॥ २६ ॥
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रयमिनः पत्युर्म्ममासि प्रिया
वाग्देवी दिसदावहित्थहृदया तद्व्रश्यकर्म्मार्त्थिनी ।
कीर्त्तिर्व्वारिधिदिक्कुलाचलकुले स्यादात्मा प्रष्टुम-
प्यन्वेष्टुं मणिमन्त्रतन्त्रनिचयं सा सम्भ्रमाभ्राम्यति ॥२७॥
तर्कन्यायसुवस्त्रवेदिरमलार्हत्सूक्तितन्मौक्तिकः
शब्दग्रन्थविशुद्धशङ्खकलितस्स्याद्वादसद्विद्रुमः ।
व्याख्यानोर्जितघोषणर् प्रविपुलप्रज्ञोद्धवीचीचयो
जीयाद्विश्रुतमेघचन्द्र-मुनिपस्त्रैविद्य-रत्नाकरः ॥ २८ ॥
श्रीमूलसङ्घकृत-पुस्तक-गच्छ-देशी
योद्यद्गणाधिपसुतार्किकचक्रवर्त्ती ।
सैद्धान्तिकेश्वरशिखामणिमेघचन्द्र-
स्त्रैविद्यदेव इति सद्विबुधा(:) स्तुवन्ति ॥ २९ ॥
सिद्धान्ते जिन वीरसेन-सदृश. शास्त्राब्ज-भा-भास्करः
षट्तर्केष्वकलङ्कदेवविबुधः साक्षादयं भूतले ।
सर्व्व-व्याकरणे विपश्चिदधिपः श्रीपूज्यपादस्स्वयं
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रमुनिपो वादीभपञ्चाननः ॥ ३० ॥

त्रैलोक्याद्भुतमन्मथारिविजयरसद्धर्म्मचक्राधिपः
पृथ्वोसंस्तवतूर्य्यघोपनिनदस्त्रैविद्यचक्रेश्वरः ॥ २५ ॥
शाब्दीघस्य शिरोमणिः प्रविलसत्तर्कस्य चूडामणिः
सैद्धान्तेद्धशिरोमणिः प्रशमवद् व्रातस्य चूडामणिः।
योगत्संयमिनां शिरोमणिरुदच्चद्भव्यरत्नामणि-
र्जीयात्सश्रुतमेघचन्द्रमुनिपस्त्रैविद्यचूडामणिः ॥ २६ ॥
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रयमिनः पत्युर्म्ममासि प्रिया
वाग्देवी दिमहावदित्यहृदया तद्गयकर्म्मार्त्थिनी।
कीर्त्तिर्व्वारिधिदिक्कुलाचलकुले स्थादात्मा प्रद्युम-
ध्यन्वेन्दु मणिमन्त्रतन्त्रनिचयं सा सम्भ्रमाभ्राम्यति ॥२७॥
तर्कन्यायसुवर्णवेदिरमलार्हत्सूक्तिसन्मौक्तिकः
शब्दग्रन्थविशुद्धशङ्खकलितस्याद्वादसद्विद्रुमः ।
व्याख्यानोर्जितघोषणः प्रविपुलप्रज्ञोद्धवीचीचयो
जीयाद्विश्रुतमेघचन्द्र-मुनिपस्त्रैविद्य-रत्नाकरः ॥ २८ ॥

श्रीमूलसङ्घकृत-पुस्तक-गच्छ-देशी
योगद्गणाधिपसुतार्किकचक्रवर्त्ती।
सैद्धान्तिकेश्वरशिखामणिमेघचन्द्र-
स्त्रैविद्यदेव इति सद्विबुधा(:) स्तुवन्ति ॥ २९ ॥

सिद्धान्ते जिन वीरसेन-सदृशः शास्त्राब्ज-भा-भास्करः
षट्तर्केष्वकलङ्कदेवविबुधः साक्षादयं भूतले।
सर्व्व-व्याकरणे विपश्चिदधिपः श्रीपूज्यपादस्स्वयं
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रमुनिपो वादीभपञ्चाननः ॥ ३० ॥

मवर गुड्डि ॥

परमपदार्थनिर्णयमनान्त विदग्धते दुर्णयङ्गलोळ्
परिचयमेन्दुमिल्लदविमुग्धते लमिनियङ्गे चित्तदोळ् ।
पिरिदनुरागमं पडेद रूपु विनेयजनान्तरङ्गदोळ्
निरुपमभक्तिय पडेद पेम्पिवु लक्ष्मवेगेन्दुमन्वितं ॥ ३ ॥
चतुरतेयोळ् लावण्य दो-
लतिशयमेने नेगल्द देवभक्तियोळिन्ती
क्षितियोळगे गङ्गराजन
मति लक्ष्म्यम्बिकेयोलितरसतियरोरेये ॥ ४ ॥
सौभाग्यदोळमदांदं
सोमास्पदमादरूपिनोळिप प्रथ्य-
चोभूत लच्मियेन्दपु-
दो भूतळमिनितुमंन्दे लक्ष्मीमतियं ॥ ५ ॥
शोभेयनें कय्कोण्डुदो
सौभाग्यद कणियेनिप लक्ष्मीमतिपि-
न्दों भुवन-वलदोळाहा-
राभय-भैश(ष)ज्यशास्त्रदानविधानं ॥ ६ ॥
वितरणगुणमदे वनिता—
कृतियं कय्कोण्डुदेनिप महिमेय लक्ष्मी-
मतियल्लदो देवताधि-
ष्ठितेयल्लदे केवलं मनुष्याङ्गनेये ॥ ७ ॥
इभगमने हरिणलोचने

कलधौतनन्दि के पुत्र महेन्द्रकीर्ति हुए जिनकी आचार्य परम्परा में क्रम से वीरनन्दि, गोल्लाचार्य, त्रैकाल्ययोगी, अभयनन्दि और सकलचन्द्र मुनि हुए। लेख में इन आचार्यों के तप और प्रभाव का अच्छा वर्णन है। त्रैकाल्ययोगी के विषय में कहा गया है कि तप के प्रभाव से एक महाराक्षस उनका शिष्य होगया था। उनके स्मरणमात्र से बड़े बड़े भूत भागते थे, उनके प्रताप से करञ्ज का तैल घृत में परिवर्तित होगया था। सकलचन्द्रमुनि के शिष्य मेघचन्द्र त्रैविद्य हुए जो सिद्धान्त में वीरसेन, तर्क में अकलङ्क और व्याकरण में पूज्यपाद के समान विद्वान् थे।

शक सं० १०३७ मार्गसिर सुदि १४ बृहस्पतिवार को उन्होंने सद्ध्यानसहित शरीर-त्याग किया। उनके प्रमुख शिष्य प्रभाचन्द्र सिद्धान्त देव ने महाप्रधान दण्डनायक गङ्गराज द्वारा उनकी निषद्या निर्माण कराई।

लेख चावराज का लिखा हुआ है।]

४८ (१२८)

उसी मण्डप में तृतीय स्तम्भ पर

(शक सं० १०४४)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं॥ १ ॥
जयतु दुरितदूरः क्षीरकूपारहारः
प्रथितपृथुलकीर्त्तिश्रीशुभेन्दुव्रतीशः।
गुणमणिगणसिन्धुः शिष्टलोकैकबन्धुः
विबुध-मधुप-पुञ्जः पुञ्जबाणादि-सञ्जः॥ २ ॥

अवर शुद्धि ॥

परमपदार्थनिर्णयमनान्त विदग्धते दुर्णयङ्गलोल्
परिचयमेन्दुमिल्लदतिमुग्धते बभिनियङ्ग चित्तदोल् ।
पिरिदनुरागमं पडेव रूपु विनेयजनान्तरङ्गदोल्
निरुपमभक्तियं पडेव पेम्पिवु लक्ष्मलेगेन्दुमन्वितं ॥ ३ ॥
चतुरतेयोल् लावण्य दो-
लतिशयमेने नेगल्द देवभक्तियोलिन्ती
चितियोलगे गङ्गराजन
सति लक्ष्म्यम्बिकेयोलितरसतियरोरेये ॥ ४ ॥
सौभाग्यदोलमर्दोद
सोभाग्यदमादरूपिनोलिं प्रश्य-
चोभूत लक्ष्मियेन्दपु-
दीं भूतलमिनितुमंय्दे लक्ष्मीमतियं ॥ ५ ॥
शोभेयनें कय्कोण्डुदो
सौभाग्यद कणियेनिप्प लक्ष्मीमतियि-
न्दी भुवन-तलदोलाद्दा-
राभय-भैश(ष)ज्यशास्त्रदानविधानं ॥ ६ ॥
वितरणगुणमदे वनिता-
कृतियं कय्कोण्डुदेनिप महिमेय लक्ष्मी-
मतियेन्तवो देवताधि-
ष्ठितेयल्लदे केवलं मनुष्याङ्गनेये ॥ ७ ॥
इभगमने हरिणलोचने

शुभलक्षणे गङ्गराजनर्द्धाङ्गने ता-
नभिनवरुग्मिणियेनल्कॆ
त्रिभुवनदॊल् पॊल्वरॊलरे लक्ष्मीमतियं ॥ ८ ॥

श्रीमूलसङ्घद देसियगणद पुस्तकगच्छद श्रीमत्-शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवर गुड्डि दण्डनायकिति लकव्वे सक वर्ष १०४४ नेय प्लवसम्वत्सरद शुद ११ शुक्रवारदन्दु सन्यसनं गेय्दु समाधिविरसि मुडिपि देवलोकक्के सन्दल् ॥

परोक्षविनेयक्के निषिधिगेयं श्रीमद्दण्डनायक-गङ्गराजं निलिसि प्रतिष्ठेमाडि महादानमहापुजेगलं माडिदरु मङ्गल महा श्री श्री ॥

[इस लेख में दण्डनायक गङ्गराज की धर्मपत्नी लक्ष्मीमति के गुण, शील और दान की प्रशंसा की गई है। इस धर्मपरायण साध्वी महिला ने शक सं० १०४४ में सैन्यास-विधि से शरीर त्याग किया। वह मूलसंघ पुस्तक-गच्छ देशीगण के शुभचन्द्राचार्य की शिष्या थी। अपनी साध्वी स्त्री की स्मृति में दण्डनायक गङ्गराज ने यह निषद्या निर्माण कराई।]

४९ (१२९)

उसी मण्डप में चतुर्थ स्तम्भ पर

(शक सं० १०४२)

(उत्तरमुख)

भद्रमस्तु जिनशासनस्य ॥

जयतु दुरितदूरः क्षीरकूपारहारः

प्रथितपृथुलकीर्त्तिश्श्री शुभेन्द्र व्रतीशः ।
गुणमणिगणसिन्धुः शिष्टलोकैकबन्धुः
विबुधमधुपफुल्ल' फुल्लबाणादिगन्धः ॥ १ ॥

श्रीवधुचन्द्रलेखे सुरभूरुहदुद्भवदि पयोधि-वे-
लावधु पेम्पु वेत्तवोलनिन्दिते नागले चारुरूपली-
लावति दण्डनायकिति लक्कले देमति भूमिराजनं
म्बी विभु पुट्टे पेम्पु वडेदाग्र्जिसिदल् पिरिदप्पकीर्त्तियं ॥२॥

वचन ॥ आ चन्वेय मगळुं वप्पलेन्दहे । स्वस्ति निम्मुपाति-जितवृजिन-भाग-भगवदर्हद्दर्हणीयचारुचरणारविन्दद्वन्द्वानन्दन-न्दनशेमाविलोकनीयाचमायमाण-लक्ष्मीविलासेयुं । अपहसन्ती-यस्तोयजीवितेशजीवितान्तजीवनविनोदानारतरतरतिविलासेयुं । कालेयकालरागरंगाविकलसकलवाग्विज्ञानातिप्रचण्डचा-मुण्डातिभेद्राजश्रीप्रमानसराजमानराजहंसवनिताकल्पेयुं । परमजिनमतपरित्राणकरणकारणीभूत-जिनशासनदेवताकारा-कल्पेयुं । अभिरामगुणगणवशीकरणीयतानुकरणीयचरणीसुनेयुं । श्रीसाहित्यसत्यापितश्रीरोदसुनेयुं । सद्धर्मानुरागमतियुंपनिमि-दहेमियक ॥

पद्य ॥ श्रीचामुण्डमनोमनोरथरथस्थापारहंकक्रिया
श्रीचामुण्डमनस्सरोजरजसाराजद्विरेफाङ्गना ।
श्रीचामुण्डगृहाङ्गणोद्गतमहाश्रीकल्पवल्ली स्वयं
श्रीचामुण्डमनःप्रिया विजयतां श्रीदेमवत्यङ्गना ॥ ३ ॥

(पश्चिममुख)

आहारं त्रिजगज्जनाय विभयं भीताय दिव्यौषधं
व्याधिव्यापदुपेतदीनमुखिने श्रोत्रे च शास्त्रागमं ।
एवं देवमतिस्सदैव ददती प्रप्रचये स्वायुषा--
मर्हद्देवमतिंविधाय विधिना दिव्या वधू प्रोदभू ॥ ४ ॥
आसीत्परक्षोभकरप्रतापाशेषावनीपालकृतादरस्य ।
चामुण्डनाम्नो वणिजःप्रियाग्र्या मुख्यामती या भुविदे-
मतीवि ॥ ५ ॥

भूलोक-चैत्यालय-चैत्य-पूजा-व्यापार-कृत्यादरतां‌ऽवतीर्णा
स्वर्गात्सुरश्रीतिविलोक्यमाना पुण्येनलावण्यगुणेनयात्र॥६॥
आहारशास्त्राभयभेषजानां दा‌यिन्यलंवर्ण्यचतुष्टयाय ।
पश्चात्समाधिक्रिययायुरन्ते स्वस्थानवत्स्वः प्रविवेशयोच्चैः॥७॥
सद्धर्म्मशत्रुं कलिकालराजं जित्वा व्यवस्थापितधर्म्मवृत्या ।
यस्याजयस्तम्भनिभंशिलाया स्तम्भंव्यवस्थापयतिस्म लक्ष्मीः॥८॥

श्रीमूलसङ्घद देशिगगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवर गुड्डि सकवर्ष १०४२ नेय विकारिसंवत्सर-दफाल्गुणब ११ बृहवारदन्दु सन्यासन विधियिं देमियक्क मुडिपिदलु ॥

[इस लेख में चामुण्ड नाम के किसी प्रतिष्ठित और राजसन्मानित वणिक् की धर्मवती भार्या 'देमति' व 'देवमति' की प्रशंसा है। इस महिला की माता का नाम 'नागले' व उसके एक भाई और बहिन के नाम क्रमशः बूचिराज और लक्कले थे। दान-पुण्य के कार्यों में जीवन

व्यतीत कर इस महिला ने शक सं० १०४२, फाल्गुण वदि ११ बृहस्पति वार को सन्यास-विधि से शरीर त्याग किया। यह महिला शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या थी।]

५० (१४०)

गन्धवारण बस्ती के प्रथम मण्डप में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १०६८)

(पूर्वमुख)

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥ १ ॥
श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमलजिनवरानीकसौधोरुवार्द्धिः
प्रध्वस्ताघप्रमेयप्रचयविषयकैवल्यबोधोरुवेदिः ।
शस्तस्यात्कारमुद्राशबलितजनतानन्दनादोरुघोषः
स्थेयादाचन्द्रतारं परमसुखमहावीर्यवीचीनिकायः ॥ २ ॥
श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गाः श्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते ।
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ नन्दिगणे बभूव ॥ ३ ॥
श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामा ह्याचार्यशब्दोत्तरकौण्डकुन्दः ।
द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धिः ॥ ४ ॥
अभूदुमास्वाति मुनीश्वरोऽसावाचार्यशब्दोत्तरगृद्ध-
पिञ्छः ।
तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्थवेदी ॥ ५ ॥
श्रीगृद्धपिञ्छमुनिपस्य बलाकपिञ्छः
शिष्योऽजनिष्ट भुवनत्रयवर्त्तिकीर्त्तिः ।

चारित्रचञ्चुरखिलावनिपालमौलि-
मालाशिलीमुखविराजितपादपद्मः ॥ ६ ॥
तच्छिष्यो **गुणनन्दि** पण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर-
स्तर्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्साहित्यविद्यापतिः ।
मिथ्यावादिमदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टकण्ठीरवो
भव्याम्भोजदिवाकरो विजयतां कन्दर्प्पदर्पापहः ॥ ७ ॥
तच्छिष्यास्त्रिशता विवेकनिधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता-
स्तेषूत्कृष्टतमा द्विसप्ततिमितास्सिद्धान्तशास्त्रार्थक-
व्याख्याने पटवो विचित्रचरितास्तेषु प्रसिद्धो मुनिः
नानानूननयप्रमाणनिपुणो **देवेन्द्रसैद्धान्तिकः** ॥ ८ ॥
अजनि महिपचूडारत्नराराजिताङ्घ्रि -
र्व्विजितमकरकेतूद्दण्डदोर्द्दण्डगर्व्वः ।
कुनयनिकरभूध्रानीकदम्भोलिदण्ड
स्सजयतु **विबुधेन्द्रो** भारतीभालपट्टः ॥ ९ ॥
तच्छिष्यः **कलधौतनन्दि**मुनिपस्सैद्धान्तचक्रेश्वरः
पारावारपरीतधारिणिकुलव्याप्तोरुकीर्त्तीश्वरः ।
पञ्चाचोन्मदकुम्भिकुम्भदलनप्रोन्मुक्तमुक्ताफल—
प्रांशुप्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनीवल्लभः ॥ १० ॥
तत्पुत्रको **महेन्द्रादिकीर्त्ति**र्म्मदनशङ्करः ।
यस्य वाग्देवता शक्ता श्रीवां मालामयूयुजत् ॥ ११ ॥
तच्छिष्यो **वीरणन्दी** कवि-गमक-महावादि-वाग्मित्वयुक्तो
यस्य श्रीनाकसिन्धुत्रिदशपतिगजाकारसङ्काशकीर्त्तिः ।

गायन्त्युच्चैर्दिगन्ते त्रिदशयुवतयः प्रीतिरागानुबन्धात्
सोऽयं जीयात्प्रमादप्रकरमहिधराभीलदम्भोलिदण्डः ॥१२॥
श्रीगोल्लाचार्य्यनामा समजनि मुनिपश्शुद्धरत्नत्रयात्मा
सिद्धात्मार्त्थ-स्वार्थ-प्रकटनपटु-सिद्धान्त शास्त्राब्धि-वीची-
सङ्घातक्षालिताहः प्रमदमदकलालीढबुद्धिप्रभावः
जीयाद्भूपाल-मौलि-द्युमणि-विदलिताङ्घ्रि रत्नमयूखा-
विलासः ॥ १३ ॥
वीरणन्दिविबुधेन्द्रसन्ततौ नूत्नचन्द्रिलनरेन्द्रवंशचू-
डामणि: प्रथितगोल्लदेशभूपालकः किमपि कारणेन सः ॥१४॥
श्रीमत्त्रैकाल्ययोगी समजनि महिकाकायकल्लातनुत्रं
यस्याभूद्वृष्टिधारा निशित-शर-गणा ग्रीष्ममार्त्तण्डबिम्बं ।
चक्रंसद्वृत्तचापाकलितयतिवरस्याघशत्रून्विजेतुं
गोल्लाचार्य्यस्य शिष्यस्स जयतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दुः ॥१५॥
गङ्गण्णन लिखित

(दक्षिणमुख)

तपस्सामर्थ्यतो यस्य छात्रोऽभूद्ब्रह्मराक्षसः ।
यस्य स्मरणमात्रेण मुञ्चन्ति च महाग्रहाः ॥ १६ ॥
प्राग्याज्यतां गतं लोके करञ्जस्य हि तैलकं ;
तपस्सामर्थ्यतस्तस्य तपः किं वर्ण्णितुं क्षमं ॥ १७ ॥
त्रैकाल्य-योगि-यतिपाग्र-विनेयरत्न-
स्याद्वादवार्धिपरिवर्द्धनपूर्णचन्द्रः ।
दिग्नागकुम्भपिहितोज्ज्वलकीर्त्तिकान्तो

जीयादसावभयनन्दिमुनिर्जगत्यां ॥ १८ ॥

येनाशेषपरीषहादिरिपवस्सम्यग्जिताः प्रोद्धताः
येनाप्ता दशलक्षणोत्तममहाधर्म्माख्यकल्पद्रुमाः ।
येनाशेष-भवोपताप-हननं स्वाध्यात्मसंवेदनं
प्राप्तं स्यादभयादिनन्दिमुनिपस्सोऽयं कृतार्थो भुवि ॥ १९ ॥

तच्छिष्यस्सकलागमार्थनिपुणो लोकज्ञतासंयुत-
स्सद्चारित्रविचित्रचारुचरितस्सौजन्य कन्दाङ्कुरः ।
मिथ्यात्वाब्जवनप्रतापदहनश्श्रीसोमदेवप्रभु-
र्जीयात्सत्सकलेन्दु नाममुनिपः कामाटवीपावकः ॥ २० ॥

अपिच **सकलचन्द्रो** विश्वविश्वम्भरेश-
प्रणुतपदपयोजः कुन्दहारेन्दुरोचिः ।
त्रिदशगजसुवमव्योमसिन्धुप्रकाश-
प्रतिमविशदकीर्त्तिर्व्वाग्वधूकर्णपूरः ॥ २१ ॥

शिष्यस्तस्य दृढव्रतश्शमनिधिस्सत्संयमाम्भोनिधिः
शीलानां विपुलालयस्समितिभिर्युक्तस्त्रिगुप्तिश्रितः ।
नानासद्गुणरत्नरोहणगिरिः प्रोद्यत्तपोजन्मभूः
प्रख्यातो भुवि **मेघचन्द्र** मुनिपस्त्रैविद्यचक्राधिपः ॥२२॥

श्रीभूपालकमौलिलालितपदस्सज्ञानलक्ष्मीपति—
स्सच्चारित्रोत्करवाहनश्शितयशश्शुभ्रातपत्राश्रितः ।
त्रैलोक्याद्भुतमन्मथारिविजयस्सद्धर्म्मचक्राधिपः
पृथ्वीसंस्तवतूर्य्यघोषनिनदस्त्रैविद्यचक्रेश्वरः ॥ २३ ॥

चन्द्रगिरि पर्वत परके शिलालेख

शाब्दीघस्य शिरोमणिः प्रविलसत्तर्कस्य चूडामणिः
सैद्धान्तपुशिरोमणिः प्रशमवद्-भावस्य चूडामणि ।
प्रोद्यत्संयमिनां शिरोमणिरिद ... चूडामणि—
र्जीयात्सुवमेघचन्द्रमुनिपस्त्रैविद्यचूडामणिः ॥ ५४ ॥

त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रयमिन· पत्युर्गुणानां प्रिया
वाग्देवी हिमदीधितिरद्धृदया तद्वंश्यकन्यायिनी ।
कीर्त्तिश्चांशिरिधि दिक्कुलाचलकुलस्याद्रात्म [.] पन्दुम
व्यन्वेदुं मणिमन्त्रतन्त्रनिचयं मा सम्भ्रमाभावयति ॥ ५५ ॥

सर्व्वन्यायसुवनवेदिरमलाहॅत्सूक्तिसन्मौक्तिक
शब्दग्रन्थविशुद्धशङ्खनिलयस्याद्वाददलद्रुम ।
व्याख्यानोर्मिलसत्पावन प्रविपुलप्रश्नोद्धवीचीचयो
जीयाद्विश्रुतमेघचन्द्र मुनिपस्त्रैविद्य-रत्नाकर· ॥ ५६ ॥

श्रीमूलसङ्घकृत-पुस्तक-गच्छ देशी
योद्गताधिपसुतार्किकचक्रवर्त्ती ।
सैद्धान्तिकेश्वरशिखामणिमेघचन्द्र—
स्त्रैविद्यदेव इति सद्विबुधा ( ) स्तुवन्ति ॥ ५७ ॥

सिद्धान्ते जिनवीरसेन-सदृशस्शास्त्राब्ज-भा-भास्कर·
षट्तर्केष्वकलङ्कदेवविबुधस्साक्षादयं भूतले ।
सर्व्व-व्याकरणे विपश्चिदधिप श्रीपूज्यपादस्स्वयं
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रमुनिपो वादीभपञ्चाननः ॥ ५८ ॥

निरिशा मताहद परमागमहादरमस्य गुरुपदव निरित्त

(पश्चिममुख)

रुद्राणीशस्य कण्ठं धवलयति हिमज्योतिषो लाञ्छनमङ्कं
पीतं सौवर्ण्णशैलं शिशुदिनपवनं राहुदेहं नितान्तं ।
श्रीकान्तावक्षभाङ्गं कमलभवपुर्म्मेघचन्द्रव्रतीन्द्र-
त्रैविद्यस्याखिलाशावलयनिलयसत्कीर्त्तिचन्द्रातपोऽसौ ॥२

मूवत्तारुं गुणदिं
भावजनं कट्टि पेट्टवेत्तेदर् गुणदिं ।
भाविपडे मेघचन्द्र-
त्रैविद्यदेवंतो शान्तरसमं तळेदर् ॥ ३० ॥

मुनिनाथं दशधर्म्मधारिदृढपट्त्रिंशद्गुणं दिव्यभा-
ण-निधानं निनगिच्चु चापमलिनोज्ज्वासूत्रमीरोन्देपू—
विन बाणङ्गलुमप्पदे हीननधिकङ्गाक्षेपमं माल्पुदा—
श्र नयं दर्प्पक मेघचन्द्रमुनियोल् माणुनिन्नदोर्द्दर्प्पमं ॥३१॥

श्रवणीयं शब्दविद्यापरिणतिमहनीयं महातर्क्कविद्या—
प्रवणत्वं श्लाघनीयं जिननिगदितसंशुद्धसिद्धान्तविद्या—
प्रवणप्रागल्भ्यमेन्देन्दुपचितपुलकं कीर्त्तिसल् कूर्त्तु विद्व-
न्निवहं त्रैविद्यनामप्रविदितनेसेदं मेघचन्द्रव्रतीन्द्रं ॥ ३२ ॥

चमेगीगल् जीवनं तीविदुदतुलतपःश्रीगे लावण्यमीगल्
समेमन्दिर्द्दत्तु तन्नि श्रुतवधुगधिकप्रौढियायत्ती गळेन्द-
न्दे महाविख्यातियं ताल्दिदनमलचरित्रोत्तमं भव्यचेता—
रमणं त्रैविद्यविद्योदितविशदयशं मेघचन्द्र व्रतीन्द्रं ॥३३॥

इदे हंसीवृन्दमीण्दल् पगेदपुदु चकोरीचयं चञ्चुविन्दं
कदुकल् मार्द्दप्पुदीशं जडेयोलिगिरिमल्लेन्दिर्द्दपंसेज्जेगेरल् ।

पदेदर्पं कृष्णनेम्यन्वेसेदु विसलमरकन्दलीकन्दकान्त
पुदिदतो मेघचन्द्रव्रतिविलकजगद्भर्तिकीर्त्तिप्रकाशं ॥१४॥
पूजितविदग्धविबुध-स—
मार्ज श्रैविद्यमेघचन्द्रव्रति रा—
राजिसिदं विनमितमुनि—
राजं वृषभगणभगणतारारार्ज ॥ १५ ॥
त्वध्यात्मरतनतुरार—
त्युध्धरने योगव्वे योगव्वे जिनशासनन्दु—
त्याविधिसुधांशुवनविल-क—
कृष्ठवलिमकीर्त्ति मेघचन्द्रव्रतिय ॥ १६ ॥
तत्सधर्म्मर ॥
श्रीमालचन्द्रमुनिराजपवित्रपुत्र.
प्रोद्दमवादिजनमानसमानवित्र: ।
जीयादयं जितमनोजभुजप्रताप
स्याद्वादसूक्तिशुभगश्शुभकीर्त्तिदेव ॥ १७ ॥
किवापस्मृतिविम्गुग किमुफणिमग्न किमुपपद-
स्यमो ऽसिमत्त्वदक्षगृहवचोम्भानानने हरयने ।
नत्त्वानेशुभकीर्त्तिदेवविदुपा विट्टेषिमायाविव
वत्रावाजार्ष लिखेन जिहितमतिर्व्वादीवराकस्वयं ॥ १८ ॥
चनदर्प्पोत्सद्धयौद्ध-क्षितिधरपविर्यायवन्दगों वन्दगों वन—
दनेभवैयायिकोग्रतिमिरतरणिगों वन्दगों वन्दगों वन-
दवैतन्मीमांसकोग्रत्कारि-करिरिपु गों वन्दगों वन्दगों वन

दने पो पो वादि योगेन्दुलिवुदु शुभकीर्त्तिकीर्त्तिप्रघोषं ॥३९॥
वितथोक्तियल्तजंपशु—
पतिमाङ्गि येनिप्प मूवरं शुभकीर्त्ति—
प्रतिम स्रिधियोल् नामो—
चितवरितरेतोडर्देदितरवादिगळलवे ॥ ४० ॥
सिङ्गद सरमं केल्द म—
तङ्गजदन्तलुकि बलुकळल्तदे सभेयोल् ।
पोङ्गि शुभकीर्त्ति-मुनिपनो—
ळेङ्गल नुडियल्के वादिगळोन्तेल्देये ॥ ४१ ॥
पो साल्युदु वादि वृथा—
यासं विबुधापहासमनुमनोप—
न्यासं निम्मोनेयं—
वासं नेरपुदे वादिवज्राङ्कुशनोल् ॥ ४२ ॥
गङ्गणन निसिदि ॥ सेनगुणपटरदेव कवारिराम्बोजन मग
दामोज कण्डरिसिद ॥
(बलगमुख)
त्रैविद्ययोगीश्वरमेघचन्द्रस्याभूत्प्रभाचन्द्र-
मुनिस्सुशिष्यः ।
शुम्भद्गुणाम्भोनिधिपूर्णचन्द्रो नितू शदयत्रिदयो विशल्यः ॥४३
त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रसुतपःपीयूषवाराशिजः
सम्पूर्णाक्षयवृत्तनिर्मलतनु पुष्यद्बुधानन्दनः ।
त्रैलोक्यप्रसरद्यशः शुचिरुचिर्यः प्रार्थ्यवेोधामय:

सिद्धान्ताम्बुधिवर्द्धनो विजयतेऽपूर्व्वप्रभाचन्द्रमाः ॥४४॥
संसाराम्भोधिमध्योत्तरणकरणयानरत्नत्रयेशः ।
सम्यग्जैनागमार्थान्वितविमलमतिः श्रीप्रभाचन्द्रयोगी ॥४५॥

सकलजनविनूतं चारुबोधत्रिनेत्रं
सुकरकविनिवासं भारतीनृत्यरङ्गम् ।
प्रकटितनिजकीर्त्तिं दिव्यकान्तामनोज्ञं
सकलगुणगणेन्द्रं श्रीप्रभाचन्द्रदेवं ॥ ४६ ॥

तत्सधर्म्मर् ॥

गणधररं श्रुतदोळ् चा-
रण-रिपियरनमलचरितदोळ् योगिजना-
ग्रणिगळेयेसदं भिकर—
नेंमेयेम्पुदे वीरणन्दिसैद्धान्तिकरोळ् ॥ ४७ ॥

हरिहर-हिरण्यगर्भर—
गुरवागियि गेल्द कामन दीप्ततपो—
भरदिन्दुरिपिदरेले वि—
श्रुतिसदरावीरणन्दिसैद्धान्तिकर ॥ ४८ ॥

यन्मूर्त्तिर्जनता जनस्य नयने कर्प्पूरपूरायते ।
यत्कीर्त्तिं ककुभां बिच कलभरं मल्लोलनान्तायते ॥
... . ।
श्रीमान्नाद्भुविवीरणन्दिमुनिपो सैद्धान्तचक्राधिप. ॥४९॥

वैराग्यश्रीवधूटीललितरतगुणालङ्कृतिर्म्मेघचन्द्र-
त्रैविद्यस्यात्मजातो मदनमदहृता श्रेष्ठवे बलवान्: ।

सैद्धान्तव्यूहचूड़ामणिरनुपमचिन्तामणिर्भूजनानां
योऽभूत्सौजन्यकन्दश्रियमतविमहो **वीरणन्दी** मुनीन्द्रः ॥५०॥

श्रीप्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवर गुड्डि **विष्णुवर्द्धन** भुजबल **वीरगङ्ग विट्टिदेवन** हिरियरसि पट्टमहादेवी ॥

शान्तल-देविय सद्गुण–
वन्देगे सौभाग्यभाग्यवतिगे वचश्री–
कान्तेयुमच्युत [......]
कान्तेयुमेणेयप्पुदुलिद सतियर्दोरेयें ॥ ५१ ॥

शान्तल-देविय वायि ।

दानमनननूतमं कः
केनार्त्थी येन्दु कोट्टु जिननं मनदोळ् ।
ध्यानिसुतं मुडिपिदळिन्
नेनेम्बुदो भाचिकब्बे योन्दुन्नतियम् ॥ ५३ ॥

सकवर्ष १०६८ नेय **क्रोधनसंवत्सरद् आश्विज-सुद्ध-दशमी बृहवार** दन्दु धनुल्लग्नद पूर्व्वाह्नद् भारुघलिगेयप्पागल् श्रीमूलसङ्घद **कोण्डकुन्दान्वयद देशिगगणद** पुस्तकगच्छद श्री **मेघचन्द्र**त्रैविद्यदेवर हिरियशिष्यरप्प श्री **प्रभाचन्द्र** सिद्धान्तदेवरु स्वर्गस्तरादरु ॥

[इस लेख के प्रथम इकतीस पद्य शिलालेख नं० ४७ (१२७) के प्रथम इकतीस पद्यों के समान ही हैं, केवल ४७ वें लेख में पद्य नं० ११ और २५ और इस लेख में पद्य नं० १० अधिक हैं। कुन्दकुन्दाचार्य से प्रारम्भ कर मेघचन्द्र व्रती तक की गुरु-परम्परा का वर्णन करने के

पश्चात् लेख में मेघचन्द्र के गुरुभाई बालचन्द्र मुनिराज का उल्लेख है। तत्पश्चात् शुभकीर्ति आचार्य का उल्लेख है जिनके सम्मुख वाद में बौद्ध, मीमांसकादि कोई भी नहीं ठहर सकता था। इसके पश्चात् लेख में मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव के शिष्य प्रभाचन्द्र और वीरनन्दि का उल्लेख है। प्रभाचन्द्र आगम के अच्छे ज्ञाता और वीरनन्दि भारी सैद्धान्तिक थे। लेख के अन्तिम भाग में विष्णुवर्द्धन-नरेश की पटरानी शान्तलदेवी की धर्मपरायणता का भी उल्लेख है। वे प्रभाचन्द्र की शिष्या थीं। प्रभाचन्द्रदेव का स्वर्गवास शक सं० १०६८ आश्विन सुदि १० बृहस्पतिवार को हुआ। यह लेख उन्हीं का स्मारक है।]

५१ (१४१)

उसी स्थान के द्वितीय मण्डप में प्रथम स्तम्भ पर

(शक सं० १०४१)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
सकल-जन-विनुतं चारु बोध-त्रिनेत्रं
सुकरकविनिवासं भारतीनृत्यरङ्गं ।
प्रकटितनिजकीर्त्तिर्द्दिग्व्यकान्तामनोज्ञं
सकलगुणगणेन्द्रं श्रीप्रभाचन्द्रदेवं ॥ २ ॥

भवर गुरुगेन्तप्पनेन्दडे ॥

स्वस्ति समस्तभुवनजनवन्द्यमानभगवदर्हत्सुरभिगन्धिगन्धोदककणश्यस्तमुक्तावलीकृतोत्तंशहंस सुजनमनःकमलिनीराजहंस महाप्रचण्डदण्डनायक। शरणभयदायक। पतिहित

प्रकारन् । एकाङ्गवीर । सङ्ग्रामराम । साहसभीम । दुनिरुक्त विनयजनबुधजनमनस्सरोवरराजहंसनन्नूनदानाभिनवश्रेयांस । जिनमतानुप्रेक्षाविचक्षण । कृतधर्म्मरक्षण । दयारसभरितहृदय। जिनवचनचन्द्रिकाचकोरनुमप्प श्रीमतु बलदेवदण्डनायकनेनेगर्द ॥

घनरं सुक्षिन पुण्यदोन्दोदविनि भाग्यके पक्कादोडं
चलदिं वेलदिनोन्दिपनि गुणदिनादौदार्य्यदिं धैर्य्यदिं ।
ललनाचित्तहरोपचारविधियि गाभीर्य्यदिं सौर्य्यदिं
बलदेवङ्गे समानमप्परोलरे मत्तन्यदण्डाधिपर । ३ ॥
बलदेवदण्डनायक–
नलङ्घ्यभुजबलपराक्रम मनुचरित
जलनिधिवेष्टितधात्रा–
वलयदोलु समनारो मन्त्रिचूडामणियोलु ४ ।
मा महानुभावनर्द्धाङ्गलक्ष्मियन्तप्पलन्देड
मतिसुरामन्तु नोर्पडे
सितियोल् सौभाग्यवतियनुपमाताव
पतिहितेय गुणवानव
सततं कीर्त्तिपुदु वाधिकलश भुवनजन ५ ।
बलवर्गे सुपुत्र्पुंट्टिद–
ल्लनिनम् पोगर्तं रामचन्द्रमानव ।
लवरिपुर्गुलगलदि
विरिंत ईगदेवनुं गिल्लवन ६ ॥

(पश्चिम मुख)

मवरोलगे ॥

देरेयारी भुवनङ्गलोलु दिटकं केलु सम्यक्त्वदोलु सत्यदोलु
परमश्रोजिनपूजेयोलु विनयदोलु सौजन्यदोलु पेम्पिनोलु ।
परमोत्साहदे मार्प्पदानदेडेयोलु सौचव्रताचारदोलु
निरुतं नोर्प्पडे नागदेवने वलं धन्यंपेरर्द्धन्यरे ॥ ७ ॥

चन्तेनिप नागदेवन
कान्ते मनोरमणसकलगुणगणधरणी—
कान्तेगवधिकं नोर्प्पडं
कोन्तिय देरेयंनिसि नागियक्कं नेगरर्देलु ॥ ८ ॥

चन्तवरिर्व्वर तनयं
मन्ततमभिजनोर्व्वियालगे जसवेसेविनंगं ।
चिन्तितवस्तुवनीयलु
चिन्तामणिकामधेनुवेनिपं वल्ल ॥ ९ ॥

एन्तेन्तु नोर्प्पड गुण—
वन्तं कलिसुचिदयापरं सत्यविदं ।
भ्रान्तेनेनुतं बुधर—
श्रान्तं कीर्त्तिपुदु धात्रियोलु मल्लणनं ॥ १० ॥

श्यातननुजाते भुवन—
ख्यातियनेरे तालिद दानगुणदुमतिथि ।
सीतादेविगवधिकं
भूतलदोलगेचियक्कनेनेमेवदराद ॥ ११ ॥

आजगज्जननि पोडतुट्टिदं ॥

भाविसिपध्वपद्मल—

नोवदे परिदिकि मोहपासद तोडरं ।

देव-गुरु-सन्निपानद-

ला-बिनु बलदेवनमरगतियं पडेदं ॥ १२ ॥

सकवर्षं १०४१नेय सिद्धार्थि[१] संवत्सरद मार्गशिर-शुद्धपाडिव सोमवारदन्दु मोरिङ्गेरेय तीर्थदलु सन्यसनदि-विदि मुडिपिद ॥

आतन जननि नागियक्कनु पचियक्कनु परोक्षविनयके कल्व-प्पुनाडाल् मोम्माजिगेय ह्रलसुहृग्गानेय माडिसि तम्म गुरुगल् प्रभाचन्द्रसिद्धान्त-देवर काल कर्च्चिधारापूर्व्वकं माडिकोट्टर आस्यवंटैगुमं आ कंरेय मूडण देसेयनु सनडुग बेदले ॥

[इस लेख में किसी बल या बलदेव नामक धर्मात्मा पुरुष के संन्यास-विधि से शरीर त्याग करने पर उनकी माता और भगिनी द्वारा उनकी स्मृति में एक पट्टशाला (वाचनालय) स्थापित करने और उसके चलाने के लिए कुछ ज़मीन दान करने का उल्लेख है। बलदेव के वंश का भी वर्णन किया गया है कि वह एक बड़े पराक्रमी पुरुष-एच बड़देव और उनकी धर्मपत्नी का पौत्र और धर्मात्मा नागदेव और उनकी धर्मपत्नी नागियक्क का पुत्र था। उनकी भगिनी का नाम पम्पियक्के था। बलदेव ने शक सं. १०४१ मार्गशिर सुदि १ सोमवार को शरीर त्याग किया। इस के पश्चात् यह दान दिया गया और यह लेख लिखा गया। लेख के द्वितीय पद्य में प्रभाचन्द्रदेव का उल्लेख है।]

१ विकारि।

लेख में यह सम्वत् सिद्धार्थि सम्वत्सर कहा गया है पर मिलान करने से शक सं० १०४१ विकारी और शक सं० १०६१ सिद्धार्थी पाया जाता है। लेख में सम्वत् की भूल है।

५२ (१४२)

उसी मण्डप में द्वितीय स्तम्भ पर

(शक सं० १०४१)

(पूर्व्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्त्यनवरतप्रबलरिपुबलविपसमरावनीमहामहारिसंहारक-रणकारणप्रचण्डदण्डनायकमुखदर्प्पणकर्ण्णजपकुभृत्कुलिश जिन-धर्म्महर्म्यमाणिक्यकलश मलयजमिलितकाश्मीरकालागरुधूपधूम-ध्यामलीकृतजिनार्चनागार । निर्व्विकार मदनमनोहराकार । जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्ग वीरलक्ष्मीभुजङ्गनाहाराभयभैष-ज्यशास्त्रदानविनोद जिनधर्म्मकथाकथनप्रमोदनुमप्प श्रीमद्बल-देवदण्डनायकनेंतेनेंदडे ॥

स्थिरनें वाप्पमराद्रियिन्दवधिकं गम्भीरनें वाप्पु सा-
गरदिन्दग्गलमेन्तु दानियें सुरोर्व्वीजक्के मारण्डमम् ।
सुररराजङ्गे येन्दु कीर्त्तिपुदुकय् कोण्डकरिं सन्ततं
धरेयेल्लंबलदेवमात्यननिलालोकैकविख्यातनें ॥ २ ॥

बलदेव दण्डनायक—
नलदङ्घभुजबलपराक्रमं मनुचरितं ।

जननिधिवेष्टितधात्री—
वलदोलु ममनारो मन्त्रिचूडामणियोल्तु ॥ ३ ॥
पलरुं मुन्निन पुण्यदिन्दोदविनिमाग्यकेरकादोडं
घरादि तेजदिनोल्पिनिं गुणदिनादौदार्यदिंधैर्य्यदिं ।
ललनाचित्तहरोपचारविधियिं गाम्भीर्य्यदिं सौर्य्यदिं
बलदेवङ्गे समानमप्परोमरे मत्तन्यदण्डाधिपरु ॥ ४ ॥
श्री बलदेवङ्गं मृग—
शावेचणेयेनिप वाचिकब्बे गवसिलो—
र्व्वीवन्धु पुट्टिदं गुण—
लोवरनदटनेत्र सिङ्गिमय्यनुदारं ॥ ५ ॥
जिनधर्म्माम्बरतिग्मरोचिसुचरित्रं भव्यवंशोत्तमं
सिष्टिनिधानं मन्त्रिचूडामणि बुधविनुतं गोत्रवंशाम्बरार्कं ।
वनिताचित्तप्रिय निर्म्मलननुपमनत्युत्तमं कूरे कूर्प्प
विनयाम्भोराशि विद्यानिधिगुणनिलयं धात्रियोलिसिङ्गि-
मय्यं ॥ ६ ॥

(पश्चिममुख)

जिनपदभक्तनिष्टजनवत्सलनाश्रितकल्पभूरुहं
मुनिचरणाम्बुजातयुगभृङ्गनुदारननूनदानि म—
त्तिन पुरुषर्गे पोलिपुददार्हरियेम्बिनेगं नेगर्द्दनी—
मनुजनिधाननेन्दु पोगल्तुं धरे पेर्ग्गडे सिङ्गिमय्यन ॥ ७ ॥
एने नेगल्द सिङ्गिमय्यन
वनिते मनोरथन लक्ष्मियेनिपलु रूपिं ।

जनविनुतं सिरिय देविय—
ननुनयदिं पोगल्दुदखिल भूतलदेल्लं ॥ ८ ॥
वचन ॥ आ महानुभावनवसानकालदोल् ॥
परमश्री जिनपादपङ्कजदमं सद्भक्तियिं तालिद् नि—
र्म्मलदिं पञ्चपदङ्गलं नेनेयुतं दुर्म्मोहसन्दोहमं ।
त्वरितं त्यजिसुतं समाधिविधियिं भव्याळिनीभास्करं
निजमं पोर्द्दे सिद्धिमय्यनमरेन्द्रावासम पोद्दिदं ॥ ९ ॥
स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाकल्याणाष्ट महाप्रातिहार्य-चतुस्त्रिंश-
दतिशयविराजमान-भगवदर्हत्परमेश्वर-परमभट्टारक - मुखकमल-
विनिर्गतसदसदादिवस्तुस्वरूपनिरूपणप्रवण - राद्धान्तादितत्त्व-
शास्त्रपारावारपारगपरमतपश्चरणनिरतरुमप्प श्रीमन्मण्डलाचार्य्य
प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुड्डि माणिक्य सिरियब्बेयुं शक वर्ष
१०४१ नेय विकारिसंवत्सरद कार्त्तिक शुद्ध द्वादश सोमवा-
रदन्दु महापूजेयं माडिनिशिधिय निरिसिदर् ॥

[महाप्रचण्ड, नीतिवान् और बलवान् दण्डनायक गङ्गराज और उसकी धर्मपत्नी चामिकब्बे का पुत्र सिद्धिमय हुआ था, सदाचरित और गुणवान् था। उसकी धर्मपत्नी का नाम सिरिय देवी था। सिद्धिमय ने समाधिमरण कर स्वर्गलोक प्राप्त किया। मण्डलाचार्य प्रभाचन्द्र के शिष्य सिरियब्बे और माणिक्य ने सिद्धिमय की स्मृति में शक सं० १०४१ कार्त्तिक सुदि १२ सोमवार को यह निषद्या निर्माण कराई]

[नोट—जैसा कि लेख नं० ४१ के बाद में कहा जा चुका है शक सं० १०४१ विकारी नहीं था जैसा कि इस लेख में भी ऊपर से कहा गया है]

५३ (१४३)

उसी मंडप में तृतीय स्तंभ पर—

(शक सं० १०५०)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥ १॥

श्रीमद् यादववंशमण्डनमणिः क्षोणीशरक्षामणि-
र्लक्ष्मीहारमणिः नरेश्वरशिरःप्रोत्तुङ्गशुम्भन्मणिः।
जीयान्नीतिपथेक्षदर्प्पणमणिः लोकैकचूडामणि
श्श्रीविष्णुर्व्विनयार्च्चितो गुणमणिः सम्यक्त्वचूडामणिः॥२॥

एरेदमनुजङ्गे सुर-भू-
मिरुहं शरणेन्दवङ्गे कुलिशागारं।
परवनितेगनिलतनयं।
धुरदोलु पोणर्दङ्गे मृत्यु विनेयादित्यं॥ ३॥

एने तानु केरे देगुलङ्गलेनितानुं जैनगेहङ्गल-
न्तनेतुं नाकलनूर्गलं प्रजेगलं सन्तोषदि माडिदं।
विनयादित्यनृपालपोय्सलनेन सन्दिर्दी बलिन्द्रङ्गे मे-
लेने पेम्पं पोगल्वन्नेनावनो महागम्भीरनं धीरनं॥ ४॥

इट्टिगेगेन्दगल्द कुलिगलकेरेयादवु कल्लुगं गाण्ड पेर्-
व्वेट्टु धरातलक्के सरियादवु सुण्णद भण्डि सन्द पे-

म्वेट्टिये पल्लमादुवेने माहिसिदं जिनराजगेहमं
नेट्टने पोय्सळनेसनेने चलिद पराक्रमं राजराजनं ॥ ५ ॥

कन्द ॥ आ पोय्सळ भूपङ्गे म-
हीपाळ कुमारनिकरचूडारत्नं ।
श्रीपति-निज-भुज-विजय-म-
हीपति जनियिसिदनरनेरेयङ्गनृप ॥ ६ ॥

वृत्त ॥ विनयादित्यनृपाळनात्मजनिळालोकैककल्पद्रुमं
मनुमार्ग्गं जगदेकवीरनेरेयङ्गोर्व्वीशं शिकला-
तनुं रिपुभूमिपालकमदस्तम्भदंनं विट्टुव-
र्द्धन भूपं नेगल्दं धरावलयदोळ् श्रीराजकण्ठीरवं ॥ ७ ॥

कन्द ॥ आ नेगल्देरेयङ्ग नृपा—
लन सुतनुद्दण्डरिमर्द्दनं सकलधरि—
त्री नायकनेने जनता—
भानुगुनं विष्णुभूपनुदय गेयदं ॥ ८ ॥
अरिनरपतिशिरस्फालन-
करनुद्धतवैरिमण्डलंधरगदवो—
द्धरन निजाज्ञाधीका—
भरणं श्री विष्णु देवनी धरेयव ॥ ९ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं । द्वारावतीपुरवराधीश्वर । यादवकुलाम्बरद्युमणि । सम्यक्त्वचूडा-मणि । मलपरोळ्गण्ड । चलदङ्कराम । वादिकुर्पविरव । वैरिभेदं भैरव । मण्डलिकबेटेकार । गण्डप्रचण्ड । चलदङ्करामा-

निजराज्याभ्युदयैकरक्षणदक्षक । अभिनयनरशासकमनशिक्षक । चक्रगोट्ट धनदावानल । अहितमण्डलिकशासानल । नोलम्बमण्डलिकमण्डलप्रचण्डदोर्दण्ड । प्रत्यरिपुनृपसंहरणकारण । विद्विष्टमण्डलिकमदनिवारणकरण । नोलम्बराडिगोण्ड । प्रतिपक्षनरपालनविनयनिर्मूलिगोण्ड । तर्प्प तप्पुव । जय श्रीकान्तेयनप्पुव । कूरेकूर्प्प सौर्य्यमं नोर्प्प । वीराङ्गनालिङ्गितदक्षिणदोर्दण्ड । नुडिदन्ते गण्ड । अहितमनहृदयशूल । वीराङ्गनालिङ्गित लोल । उद्धताराति कञ्जवनकुञ्जर । सरणागतवज्रपञ्जर । मह्जकीर्त्तिध्वज । सङ्ग्रामविजयध्वज । चेङ्गिरेय मनोभङ्ग । वीरप्रसङ्ग । नरसिङ्गवर्म्मनिर्म्मूलनं । कदपालकालानलं । शानुङ्गलु गण्ड । चतुर्म्मुख गण्ड । चतुरचतुर्म्मुखन् । आहवषण्मुख । सरस्वतीकर्णावतंसन् । उन्नतविष्णुवर्म्म । रिपुहृदयसेल्ल । भीतरंकोल्ल । दानविनोद । चम्पकामोद । चतुस्समयसमुद्धरण । गण्डराभरण । विवेकनारायण । वीरपारायण । साहित्यविद्याधर । समरधुरन्धर । पोय्सलान्वयभानु । कविजनकामधेनु । कलियुगपार्थ । दुष्टर्गेधूर्त्त । सङ्ग्रामराम । साहसभीम । इयवरसराज । कान्तामनोज । मत्तगजभगदत्त । अभिनवचारुदत्त । नीलगिरिसमुद्धरण । गण्डराभरण । कोङ्गरमारि । रिपुकुलतलप्रहारि । तेरेयुरनलेव । कोयतूरतुलिव । हेव्जेरुदिसापट्ट । सङ्ग्रामजत्तलट्ट । पाण्ड्यनंबेङ्कोण्ड । उच्चङ्गिगोण्ड । एकाङ्गवीर । सङ्ग्रामधीर । पोम्बुचनिर्द्धाटण । साविमलेनिर्ल्लोटण । वैरिकालानलन् । अहितदावानल । शत्रुनरपाल-

दिशापट्ट मिग्रनरपालललाटपट्ट । पट्टवनलिव । सुलुवर सेलेव । गोयिन्दवाडिमयङ्करन् । महितवलसङ्कर । चेद्दवतुलिव । सिवगरं पिडिव । रायरायपुरसूरेकार । वैरिभङ्गार । वीरनारायण । सौर्य्यनारायण । श्रीमत्केशवदेवपादाराधक । रिपुमण्डलिकसाधकाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृततनु गिरिदुर्गवनदुर्गजलदुर्गाद्यनेकदुर्गङ्गलनश्रमदि कोण्ड चण्डप्रतापदिं गङ्गवाडितोम्भत्तरु-सासिरमुमं लीळेगुण्डिवर मुण्डिगे माध्यम्माडि । मत्त ॥

वृत्त—एलेयोलद्रुप्परलुद्धवारिगल नाटन्दोसि बेङ्कोण्डुदो—
व्वंलदि देशमनावगं वनगे माण्यं माडिरलु गङ्गम—
ण्डलमेन्दोलेंगे वेग मिक्तु येसने पूण्दिर्प्पिने विष्णु पे—
यसलनिर्द सुखदिन्दे राज्यदोदविन्दं सन्ततोत्साहर्दि॥१०॥
एत्तिद नेत्तनत्तलिदिराद-नृपालकरल्कि बल्कि क—
ण्डिक्त समस्तवस्तुगळनालुवनमंमलेपुण्डु सन्ततं ।
मुत्तलुमालगिप्परेने सुम्निनवर्गमनेकरादव—
र्गोत्तनगं पेगर्सेगेने वर्णिपनावनो विष्णुभूपनं ॥ ११॥

स्वस्ति त्रिभुवनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं बरं सलुत्तमिरं तत्पादपद्मोपजीवि पिरियरसि पट्टमहादेवि सान्तलदेवी ॥

(दक्षिणमुख)

स्वस्त्यनवरतपरमकल्याणाभ्युदयसहस्रफलभोगभागिनि

द्वितीयलक्ष्मीलक्षणमभानेयुं । सकलगुणगणानूनेयुं । अभि-
रूपुभिवीदेवियुं । पतिहितसत्यभावेयुं । विवेकैकदूरसभि-
प्रत्युत्पन्नगाचरपतियुं । मुनिजनविनेयजनविनीतेयुं । चतुस्सम-
समुद्धरणेयुं । मतगुणशीलचारित्रान्तःकरणेयुं । संगी-
विख्यातेयुं । पतिव्रताप्रभावप्रसिद्धसीतेयुं । सकलजनचिन्ता-
चिन्तामणियुं । भव्यकचूडामणियुं । कलुषसबभिन्न-
कारणेयुं । पुण्योपार्ज्जनकरणकारणेयुं । मनोजराजविजयपताकेयुं ।
निजकलाभ्युदयदीपिकेयुं । गीतवाद्यसूत्रधारेयुं । जिनसमयसमु-
दितप्राकारेयुं । जिनधर्मकथाकथनप्रमोदेयुं । आहाराभयभैषज्य-
शास्त्रदानविनोदेयुं । जिनधर्मनिर्म्मलेयुं । भव्यजनवत्सलेयुं ।
जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्गेयुमप्प ॥

कंद ॥ आ नेगर्द त्रिभुवनम—
नो-नयन प्रियं मत्तमत्तीलापक्कि य—
न्द्राननें कामन रतियन्तु
तानेंगे नोणे सरिसमाने शान्तलदेवी ॥ १२ ॥

वृत्त । पुरदोलु त्रिभुवनाकल्कं जिनधर्मोदयदोल सम्यमं
परमानन्ददिनान्तु नित्र त्रिभुवनानन्ददुद्यानिर्त ।
वरदिग्भित्तिनगद्भितसल्लेनिन कीर्तिश्रीयेनुतिर्प्पुरी
धरेयोल् शान्तलदेवियं नरव नरिमन्नपसत्नेवलियर्ं ॥ १३ ॥

कन्नडाव त्रिभुवन—
आमदांसुकान्तिवदनपरिम नेत्रेरिदनंने ग्रा—

स्वस्तदेविय सौभाग्यम—
नेम [illegible] ॥ १४ ॥
शान्तलदेविगे सद्गु[illegible]—
मन्नेगं सौभाग्यभाग्यवतिगं [illegible]—
कान्तेयु[illegible]—
कान्तेयु[illegible] ॥ १५ ॥

वृत्त ॥ गुरुगलु प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर्‌ पेत्ततायि [illegible] माचिकब्बे

[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥ १६ ॥

शकवर्षं १०५० [illegible] शिवगङ्ग [illegible] ।

वृत्त ॥ [illegible] —
[illegible] ।
[illegible] —
[illegible] ॥ १७ ॥
[illegible] [......]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥ १८ ॥

कन्द ॥ अनुपम शान्तल देवियु—
मनुनयदिं वन्दे मारसिङ्गय्यनुमि-
विने जननि-माचिकब्बेयु—
मिनिवरु मोडनोडने मुडिपि स्वर्गतरादरु ॥ १६ ॥

लेखक बोकिमय्य ।

(पश्चिममुख)

अरसि सुरगतियनेयदिद—
लिरलागेनगेन्दु बन्दु बेलुगोलदलु दु—
र्द्धर-सन्यासनदि [न्दं]
परिणते तायि माचिकब्बे तानुं तोरेदलु ॥ २० ॥

वृत्त ॥ अरेमुगुल्दिर्दकण्मलर्गलोदुव पञ्चपदं जिनेन्द्रनं
स्मरियिसुवोजे बन्धुजनमं विडिपुअति सन्यसक्रम
न्दिरलो सेदोन्दुतिङ्गलुपवासदोलिन्निनेमाचिकब्बे तां
सुरगतिगेयूदिदलु सकलभव्यरमन्निधियोलु समाधियिं ॥२१॥

कन्द ॥ आ मारसिङ्ग मय्यन
कामिनिजिनचरणभक्ते गुणसंयुते ब—
ह्रम-पविअने पन्दो—
भूमिजनं पोगजे माचिकब्बेये नेगल्दलु ॥ २२ ॥

जिनपदभक्ते बन्धुजनपूजितेयाश्रितकामधेनुका—
मन मतिगं महासतिगुणगमणि दानविनोदे मन्नतं ।
मुनिजनपादपङ्कजभक्ते जनस्तुत मारसिङ्गम—
य्यन सति माचिकब्बे येने कीर्त्तिगुपुं धरे मेच्चिनिच्चलुं ॥२३॥

जिननाथं सलगाप्पनागे पलदेवं धन्दे पेत्तव्वे म—
द्दनितामेसरे चाचिकब्बे येने सम्मं सिद्धयं सन्दमान्—
सनदिन्दग्गद माचिकब्बे सुर-लोकक्कोदगेन्देन्दुमे—
दिनियेन्लं पोगलुत्तमिप्पुदेने वण्णिप्पण्णनेवण्णिपं ॥ २४॥

कन्द ॥ पेण्डिरमेन्यासनं गोण्डवरंगलगिनितंवग्रदारेम्बिदनं कें-
कोण्डागलुघोरवीरव्रतचरितेयं मेच्चि सन्तोपदिन्दं ।
पाण्डित्यं चित्तदोलु सत्तिरे जिनचरणाम्भोजमं भाविसुत्त
कोण्डाडलुधात्रितन्न गुरगतिवदेवसुलीलेयिं माचिकब्बे ॥२५॥

दानमननूनमं कः
केनार्थी येन्दु कोट्टु जिननं मनदोलु ।
ध्यानिसुतं मुडिपिदलि—
सनेम्बुदो माचिकब्बेयोन्दुन्नतियं ॥२६॥

इन्तु सम्म गुरुगलु प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवरं वर्द्धमानदेवरं रविचन्द्रदेवरं समस्तभव्यजनङ्गल समिधियोलु सन्यसनमं कैकोण्डवर पेल्व समाधिय केलुत्त मुडिपिदलु ॥

पण्डितमरणदिनी भू—
मण्डलदोलु माचिकब्बेयन्तेवोलार्ं—
कोण्डिन्तु नेगल्दलरिगल—
दण्डितमं धीर-वीर-सन्यासनम ॥ २७ ॥

मवर वेरावतारमेन्नेन्दडे ॥

कन्द ॥ जिनधर्म्मनिर्म्मलं भ—
व्य-निधानं गुरुगलाश्रयं मनुचरितं ।

७

मुनिचरण-कमल-भृङ्ग
जन-विनुतं **नागवर्म्म**दण्डाधीशं ॥ २८ ॥

वृत्त ॥ अनुपम-नागवर्म्मनकुलाङ्गने पेम्पिन चन्दिकव्वे स--
ज्जननुते मानिदानिगुणिमिक्पतिव्रते सीलदिन्दे मे--
दिनिसुतेगं मिगिलुपोगळलानरियें गुणदङ्कार्तियं
जिनपदभक्तेयं भुवनसंस्तुतेयं जगदेकदानियं ॥२९॥
अवर्गे सुपुत्रं बुधजन —
निवहक्कार्त्तीव कामधेनु वेनुत्तं ।
भुवनजनं पोगळ्गलु मि—
कवनुदयं गेयूदनुत्तमं **बलदेवं** ॥३०॥

वृत्त ॥ सकलकलाश्रयं गुणगणाभरणं प्रभु पण्डिताश्रयं
सुकविजनस्तुतं जिनपदाब्जभृङ्गननूनदानिलें—
किरूपरमार्थमेम्बेरडुमन्नेरे बल्लनेनुत्ते दण्डना—
यक बलदेवनं पोगल्वुदम्बुधि-वेष्टित-भूरि-भूतलं ॥३१॥
मुनिनिवहक्के भव्यनिकरक्के जिनेश्वर-पूजेगळ्गे मि—
क्कनुपमदानधर्म्मदोदविङ्ग निरन्तरमोन्दे मार्गदिं ।
मनेयोळनाकुलं मडुवेयन्दद पाङ्गिनोळुण्मुदेन्दर्डि
मनुजनिधाननं पोगल्वने वोगल्वं **बलदेव**मात्यनं ॥३२॥
थिरने मेरु-गिरीन्द्रदिन्दे मिगिले गम्भीरने वाप्पु सा-
गरदिन्दग्गल मेन्दु दानियं सुरोऽर्व्वीजक्कमेलु भोगिये ।
सुरराजङ्गे येन्दु कीर्त्तिपुदु कय्कोण्डल्कर्दि सन्तवं
धरेयोळ् श्रीबलदेवमात्यननिशालोकैकविख्यातन ॥३३॥

कन्द ॥ बलदेव-दण्डनायक—

मलङ्घ्य-भुजबल-पराक्रमं मनुचरितं ।

जलनिधिवेष्टितधात्री—

वलदोलु समनारो मन्त्रिचूडामणियोलु ॥३४॥

श्रीमत् चारुकीर्त्तिदेवर गुड्ड लेखकवोकिमय्य बरद विरुदरूवारि-मुखतिलक गङ्गाचारिय तम्म कांवाचारि कण्डरिसिद॥

(उत्तर मुख)

स्वस्त्यनवरतप्रबलरिपुबलविषमसमरावनिमहामहारिसंहार-करणकारण । प्रचण्डदण्डनायकमुखदर्प्पण । कथकमागध-पुण्यपाठककविगमकिवादिवाग्मिजनवादारिद्रसन्तर्प्पण । जिन-समयमहागगनशोभाकरदिवाकर । सकलमुनिजननिरन्तरदान-गुणाश्रयश्रेयांस । सरस्वतीकर्ण्णावतंस । गोत्रपवित्र । पराङ्ग-नापुत्र । बन्धुजनमनोरञ्जन । दुरितप्रभञ्जन । क्रोधलोभानृत-भयमानमदविदूर । गुणचारुदत्तजीमूतवाहनसमानपरोपका-रोदार । पापविदूर । जिनधर्म्मनिर्म्मल । भव्यजनवत्सल । जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्गन । अनुपमगुणगणोत्तुङ्ग । मुनिचरणसरसिरुहभृङ्ग । पण्डितमण्डलीपुण्डरीकवनपतङ्ग । जिनधर्म्मकथाकथनप्रमोदनुं । आहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनो-दनुमप्प श्रीमन् बलदेव दण्डनायकनेने नेगल्द ॥

आ बलदेवङ्गं मृग—

शावेक्षणे पनिप चाचिकब्बेगव रिरो—

र्व्वी-बन्धु पुट्टिदं गुणि—

क्षीधरनदटनेव सिद्धिमय्यनुदारं ॥३५॥

वृत्त ॥ जिनपतिभक्तनिष्टजनवत्सलनाश्रितकल्पभूरुहं
मुनिचरणाम्बुजातयुगभृङ्गनुदारननूनदानि म—
तिन पुरुषार्थं पोजिसुरघादीरियेम्बिनेतं नेगल्दनो-
मनुज निधाननेन्दु पोगल्गुं धरे पेगडे सिद्धिमय्यन ॥३६॥
जिनधर्माम्बरतिग्मरोचि सुचरित्रं भव्यवंशोत्तमं सि-
द्धनिधानं मन्त्रिचिन्तामणि बुधविनुतं गोत्रवंशाम्बरार्क ।
वनिताचित्तप्रियं निर्मलननुपमनत्युत्तमं कूरे कूर्प
विनयाम्भोराशि निशानिधि गुणनिलयं मन्त्रियोळिन्द्रिवारं ॥
॥ ३७ ॥

कन्द ॥ श्रीयादेवि गुणाढ्यि-
यी गुणदोळु दानधर्मचिन्तामणि भू—
देविय कान्ती देविय
देविय सिद्धिमय्यन मगुव ॥ ३८ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नयदवकुकोळगगर्देय होण्टगुमं नाल्वसुगशाळपोन्ननिकि कट्टिसि धारेगिॾे विलसनकट्टगुमं श्रीमद्विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेवरं पेड्डि-कोण्डु सकवर्षं सासिरद नाल्वत्तयदेनेय शोभकृत्संवत्सरद चैत्रशुद्धपाडिवबृहस्पतिवारदन्दु तम्म गुरुगलु श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पोस्तकगच्छद श्रीमन्मेघचन्द्रत्रैविद्यदेवरशिष्यरप्प प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर्गो पादप्रक्षाळनं माडि सर्व्वबाधापरिहार-वागि बिट्टदत्ति ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दिन्तिवदनेय् दे काव पुरुषग्गायुं महाश्रीयुम—
केयिदं कायदे काय्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वाणरा-
सियोलेक्कोटिमुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदो-
न्दयशं माग्गुंमिदेन्दु सारिदपुवी शैलाक्षरं सन्ततं ॥३६॥

श्लोक ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां ।
षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥४०॥

[यह लेख तीन भागों में विभक्त है। आदि से उन्नीसवें पद्य तक इसमें द्वारावती के यादव वंशीय पोय्सळ नरेश विनयादित्य व उनके पुत्र और उत्तराधिकारी एरेयङ्ग व उनके पुत्र और उत्तराधिकारी विष्णु-वर्द्धन का वर्णन है। विष्णुवर्द्धन बड़ा प्रतापी नरेश हुआ। इसने अनेक माण्डलिक राजाओं को जीतकर अपना राज्य-विस्तार बढ़ाया। इसकी पटरानी शान्तलदेवी जैनधर्मावलम्बिनी, धर्मपरायणा और प्रभा-चन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या थी। इसने शक सं० १०५० चैत्र सुदि ५ सोमवार को शिवगङ्गे नामक स्थान पर शरीर त्याग किया। शान्तलदेवी के पिता का नाम मारसिङ्गय्य और माता का नाम माचिकब्बे था। इन्होंने शान्तलदेवी के पश्चात् शरीरत्याग किया।

लेख के दूसरे भाग में, जो पद्य २० से ३४ तक आता है, शान्तल देवी की माता माचिकब्बे का बेल्गोल में आकर एक मास के अनशन व्रत के पश्चात् सन्यास विधि से देहत्याग करने का वर्णन है और पश्चात् उसके कुल का वर्णन है। दण्डाधीश नागवर्म और उनकी भार्या चन्दिकब्बे के पुत्र प्रतापी बलदेव दण्डनायक और उनकी भार्या बाचिकब्बे से ही माचिकब्बे की उत्पत्ति हुई थी। माचिकब्बे ने अपने गुरु प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव, वर्धमानदेव और रविचन्द्रदेव की साक्षी से सन्यास ग्रहण किया था।

लेख के अन्तिम भाग में बलदेव दण्डनायक और उनके पुत्र सिंगिमय्य की प्रशस्ति के पश्चात् शान्तलदेवी द्वारा सवति गन्धवारण नामक जिन मन्दिर निर्माण कराये जाने और उसकी आजीविका अर्थ के लिये विष्णुवर्द्धन नरेश की अनुमति से कुछ भूमि का दान दिये जाने का उल्लेख है। यह दान मूलसंघ, देशिय गण, पुस्तक गच्छ के मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव के शिष्य प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव को दिया गया था।]

[नोट—लेख में शक सं० १०५० विरोधिकृत् कहा गया है। पर ज्योतिष गणना के अनुसार शक सं० १०५० कीलक व सं० १०५१ विरोधिकृत् सिद्ध होता है। आगे का लेख (५४) शक १०५० कीलक संवत्सर का ही है। दान शोभकृत् (शुभकृत्) संवत् में दिया गया था जो विरोधिकृत् से चार वर्ष पूर्व (शक सं० १०४४) में पड़ता है।]

५४ (६७)

पार्श्वनाथ बस्ति में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १०५०)

([illegible])

श्रीमन्नाथकुलेन्दुरिन्द्र-परिषद्वन्द्यागम-श्री-सुधा—
धारा-धौत-जगत्तमोऽपह-महः-पिण्ड-प्रकाण्डं महत् ।
यस्मान्निर्मल-धर्म-वार्द्धि-विपुलश्रीर्वर्द्धमाना सती
भर्तुर्भव्य-चकोर-चन्द्रमवतु श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥१॥

जीयादर्थपुलेन्द्रभूतिविदिताभिख्यो गणी गौतम—
स्वामी सप्तमहर्द्धिभिस्त्रिजगतीमापादयन्पादयोः ।
यद्बोधाम्बुधिमेत्य वीर-हिमवत्कुत्कीलकण्ठाद्बुधा—
म्भोदाता भुवनं पुनाति वचन-स्वच्छन्द-मन्दाकिनी ॥२॥

तीर्थेश-दर्शनभवन्नय-दग्ध-दम्भ-पिरलब्ध-बोध-वपुषश्च-
तर्कवलीन्द्राः ।
निर्भिन्दतां विबुध-वृन्द-शिरोभिवन्द्याह्यग्र्यर्द्धयः कुलिशवत्
कुमताद्रिमुद्राः ॥३॥

वर्ण्यः कथन्नु महिमा भण भद्रबाहो-
र्मोहोरु-मल्ल-मद-मर्दन-वृत्तबाहोः ।
यच्छिष्यताप्तसुकृतेन स चन्द्रगुप्त-
श्शुश्रूष्यतेस्म सुचिरं वन-देवताभिः ॥ ४ ॥

वन्द्योविभुर्भुवि न कैरिह कौण्डकुन्दः
कुन्द-प्रभा-प्रणयि-कीर्त्ति-विभूषिताशः ।
यश्चारु-चारण-कराम्बुजचञ्चरीक-
श्चक्रे श्रुतस्य भरते प्रयतः प्रतिष्ठाम् ॥ ५ ॥
वन्द्योभस्मक-भस्म-सात्कृति-पटुः पद्मावती-देवता-
दत्तोदात्त-पदस्व-मन्त्र-वचन-व्याहूत चन्द्रप्रभः ।
आचार्य्यस्स समन्तभद्रगणभृद्येनेह काले कलौ
जैनं वर्त्म समन्तभद्रमभवद्भद्रं समन्तान्मुहुः ॥ ६ ॥

चूर्णि ॥ यस्यैवंविधा वादारम्भसंरम्भविजृम्भिताभिव्यक्तय-
स्सूक्तयः ॥

वृत्त ॥ पूर्व्वं पाटलिपुत्र-मध्य-नगरे भेरी मया ताडिता
पश्चान्मालव-सिन्धु-ठक्क-विषये काञ्चीपुरे वैदिशे ।
प्राप्तोऽहं करहाटकं बहु-भटं विद्योत्कटं सङ्कटं
वादार्थी विचराम्यहन्नरपते शार्द्दूल-विक्रीडितं ॥ ७ ॥
अवटु-तटमटति झटिति स्फुट-पटु-वाचाटधूर्ज्जटेरपि जिह्वा ।
वादिनि समन्तभद्रे स्थितवति तव सदसि भूप कास्था-
न्येषां ॥ ८ ॥

योऽसौ घाति-मल द्विषद्बल-शिला-स्तम्भावली-खण्डन —
ध्यानासिः पटुरर्हतो भगवतस्सोऽस्य प्रसादीकृतः ।
छात्रस्यापि स सिंहनन्दि-मुनिना नोचेत्कथं वा शिला-
स्तम्भोराज्य-रमागमाध्व-परिघस्तेनासिखण्डो घनः ॥ ९ ॥

वज्रग्रीव-महामुने-र्द्दश-शत-ग्रीवोऽप्यहीन्द्रो यथा—
जातं स्तोतुमलं वचोबलमसौ किं भग्न-वाग्मि-व्रजं ।
योऽसौ शासन-देवता-बहुमतो ह्री-वक्र-वादि-ग्रह—
ग्रीवोऽस्मिन्नथ-शब्द-वाच्यमवदद् मासान्समासेन षट् ॥१०॥

नवस्तोत्रं तत्र प्रसरति कवीन्द्राः कथमपि
प्रणामं वज्रादौ रचयत परन्नन्दिनि मुनौ ।
नवस्तोत्रं येन व्यरचि सकलार्हत्प्रवचन-
प्रपञ्चान्तर्भाव-प्रवण-वर-सन्दर्भ सुभगं ॥ ११ ॥

महिमा स पात्रकेसरिगुरोः परं भवति यस्य भक्त्यासीत्
पद्मावती सहाया त्रिलक्षण-कदर्थनं कर्त्तुं ॥ १२ ॥

सुमति-देवममुं स्तुतयेन वस्सुमति-सप्तकमाप्ततयाकृतं ।
परिहृतापथ-तत्त्व-पथार्त्थिनां सुमति-कोटि-विवर्त्ति भवार्त्ति-
हृत् ॥ १३ ॥

उदेत्य सम्यग्दिशि दक्षिणस्यां कुमारसेनो मुनिरस्तमापत् ।
तत्रैव चित्रं जगदेक-भानोस्तिष्ठत्यसौ तस्य तथा प्रकाशः ॥१४॥

धर्मार्थकामपरिनिर्वृतिचारुचिन्तश्चिन्तामणिःप्रतिनिकेतम-
कारियेन
स स्तूयते सरससौख्यभुजा सुजातश्चिन्तामणिर्मुनिवृषा
न कथं जनेन ॥१५॥

चूडामणिः कवीनां चूडामणि-नाम-सेव्य-काव्य-कविः ।
श्रीवर्द्धदेव एव हि कृतपुण्यः कीर्त्तिमाहर्त्तुं ॥१६॥

चूर्णि ॥ य एवमुपश्लोकितो दण्डिना ॥

जह्नोः कन्यां जटाभिः बभार परमेश्वरः ।
श्रीवर्द्धदेव सन्धत्से जिह्वाग्रेण सरस्वतीं ॥१७॥

पुष्पास्त्रस्य जयो गणस्य चरणम्भूभृच्छिला-पट्टने
पद्भ्यामस्तु महेश्वरस्तदपिन प्राप्तुं तुलामीश्वरः ।
यस्याखण्ड-कलावतोऽष्ट-विलसद्दिक्पाल-मौलि-स्खलन्—
कीर्त्ति स्वस्सरितो महेश्वर इह स्तुत्यस्स कैरस्यान्मुनिः
॥ १८ ॥

सप्तत्यति-महा-वादान् जितवान्यानवाभिवान् ।
ब्रह्मरक्षोऽर्च्चितस्सोऽर्च्यो महेश्वर-मुनीश्वरः ॥ १९॥

तारा येन विनिर्ज्जिता घट-कुटी गूढावतारा समं
बौद्धैर्यो धृत-पीठ-पीडित-कुदृग्देवात्त-सेवाञ्जलिः ।
प्रायश्चित्तमिवाङ्घ्रि-वारिज-रज-स्नानं च यस्याचरत्
दोषाणां सुगतस्स कस्य विषयो देवाकलङ्कः कृती ॥२०॥

चूर्णि ॥ यस्येदमात्मनोऽनन्य-सामान्य-निरवद्य-विद्या-विभवोप-
वर्ण्णनमाकर्ण्यते ॥

राजन्साहसतुङ्ग सन्ति बहवः श्वेतातपत्रा नृपाः
किन्तु त्वत्सदृशा रणे विजयिनस्त्यागोन्नता दुर्लभाः ।
त्वद्वत्सन्ति बुधा न सन्ति कवयो वादीश्वरा वाग्मिनो
नाना-शास्त्र-विचारचातुरधियः काले कलौ मद्विधाः ॥२१॥

नमो मल्लिषेण मलधारि-देवाय ॥

(पूर्वमुख)

राजन्सर्व्वारि-दर्प्प-प्रविदलन-पटुस्त्वं यथात्र प्रसिद्ध—
स्तद्वत्ख्यातोऽहमस्यां भुवि निखिल-मदोत्पाटनः पण्डितानां।
नोचेदेषोऽहमेते तव सदसि सदा सन्ति सन्तो महान्तो
वक्तुं यस्यास्ति शक्तिः स वदतु विदिताशेष-शास्त्रो यदि स्यात्॥
॥ २२ ॥

नाहङ्कार-वशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलं
नैरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यति जने कारुण्य-बुद्ध्या मया।
राज्ञः श्रीहिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदग्धात्मनो
बौद्धौघान्सकलान्विजित्य सुगतः पादेन विस्फोटितः॥२३॥

श्रीपुष्पषेण-मुनिरेव पदम्महिम्नो
देवस्स यस्य समभूत्स भवान्सधर्म्मा।
श्रीविभ्रमस्य भवनन्नु पद्ममेव
पुष्पेषुमित्रमिह यस्य सहस्रधामा॥२४॥

विमलचन्द्र-मुनीन्द्र-गुरोर्ग्गुरु प्रशमिताखिल वादिमदं पदं।
यदि यथावदवैष्यत पण्डितैर्न्ननु तदान्ववदिष्यत वाग्विभोः
॥ २५ ॥

चूर्णिः॥ तथाहि। यस्यायमापादित-परवादि-हृदय-शोकः पत्रा-
लम्बन-श्लोकः॥

पत्रं शत्रु-भयङ्करोरु-भवन-द्वारे सदा सञ्चरन्—
नाना-राज-करीन्द्र-वृन्द-तुरग-व्राताकुले स्थापितम्।
शैवान्पाशुपतांस्तथागतसुतान्कापालिकान्कापिला—

नुदिरयौद्धत-चेतसा **विमलचन्द्रा**शाम्बरेणादरान् ॥२६॥
दुरित-ग्रह-निग्रहाद्भयं यदि भो भूरि-नरेन्द्र-वन्दितम् ।
ननु तेन हि भव्यदेहिनो भजतश्रीमुनिमिन्द्र**नन्दिनम्**
॥ २७ ॥

घट-वाद-घटा-कोटि-कोविदः कोविदां प्रवाक् ।
परवादिमल्ल-देवो देव एव न संशयः ॥२८॥
चूर्णि ॥ येनेयमात्म-नामधेय-निरुक्तिरुक्तानाम पृष्टवन्तं **कृष्ण-राजं** प्रति ॥

गृहीत-पक्षादितरः परस्स्यात्तद्वादिनस्ते परवादिनस्स्युः ।
तेषां हि मल्लः **परवादिमल्ल**स्तन्नाममन्नाम वदन्तिसन्तः
॥ २९ ॥

आचार्यवर्य्यो यति**राय्यदेवो** राद्धान्त-कर्त्ता
ध्रियतां स मूर्ध्नि ।
यस्स्वर्ग-यानोत्सव-सीम्नि कायोत्सर्गस्थितः
कायमुदुत्ससर्ज ॥३०॥

श्रवण-कृत-तृणाऽसौ संयमं ज्ञातु-कामैः
शयन-विहित-वेला-सुप्त-लुप्तावधानः ।
श्रुतिमरभसवृत्योन्मृज्य पिच्छेन शिश्ये
किल मृदु-परिशुत्या दत्त-तत्कीट-वर्त्मा ॥३१॥
विद्यं यश्श्रुत-बिन्दुनावरुरुधे भावं कुशाग्रीयया
बुध्येवाति-महीयसा प्रवचसा बद्धं गणाधीश्वरैः ।
शिष्यान्प्रत्यनुकम्पया कृशमतीनैदं युगीनान्सुगी-

स्वं वाचाच्चैव चन्द्रकीर्त्ति-गणिनं चन्द्राभ-कीर्त्तिं बुधा ॥३२॥

सद्धर्म्म-कर्म्म-प्रकृतिं प्रणाशयन्योग-कर्म्म-प्रकृति-प्रमोक्ष. ।
तथापि कर्म्म-प्रकृतिप्रमामो भट्टारकं दृष्ट-कृतान्त-पारम् ॥ ३३ ॥

कपि स्व-वाच्यस्त-समस्त-विद्यस्त्रैविद्य शब्देऽप्यनुमन्यमान ।
श्रीपालदेव. प्रतिपालनीयस्सतां यतस्तत्त्व-विवेचनी धीः ॥ ३४ ॥

तीर्थं श्रीमतिसागरो गुरुरिला-चक्र चकार स्फुर-
ज्ज्योतिः-पीत-तमर्पयः-प्रविततिः पूतं प्रभूताशयः ।
यस्माद्भूरि-परार्द्धर-पावन-गुण-श्रीवर्द्धमानोल्लग-
द्गोत्रोत्पत्तिरिला-धराधिप-शिरश्शृङ्गारकारिण्यभूत् ॥३५॥

यत्राभियोक्तरि लघुलं घु-धाम-सोम-सौम्याङ्गभूरग च भवत्यपि-भूति-भूमिः ।
विद्या-धनञ्जय-पद विशददधानो जिष्णु.स एव हि महा-मुनिर्हेमसेनः ॥३६॥

चूर्ण्णि ॥ यस्यायमत्रनिपतति-परिषदि निमद-मद्दी-निपात-भीति-दुष्ट-दुर्गर्व्व-गर्व्वसारूढ़-प्रतिवादिलोक. प्रतिज्ञाश्लोक. ॥

तर्क्के व्याकरणे कृत-श्रमतया धीमत्तयाप्युद्धतो
मध्यस्थेषु मनीषिषु क्षितिभृतामग्रे मया स्पर्द्धया ।
यः कश्चित्प्रतिवक्ति तस्य विदुषो वाग्मेव-भङ्गं परं
कुर्व्वेऽवश्यमिति प्रतीहि नृपते हेमसेनं मतं ॥३७॥

हितैषिणां यस्य नृणामुदात्त-वाचा निबद्धा हित-रूप-सिद्धिः ।
वन्द्यो **दयापाल**-मुनिः स वाचा सिद्धस्सताम्मूर्द्धनि यः प्रभावैः ॥ ३८ ॥

यस्य श्री**मतिसागरो** गुरुरसौ चञ्चद्यशश्चन्द्रभूः
श्रीमान्यस्य स **वादिराज**-गणभृत्सब्रह्मचारी विभोः ।
एकोऽतीव कृती स एव हि दयापालव्रती यन्मन—
स्यास्तामन्य-परिग्रह-ग्रह-कथा स्वे विग्रहे विग्रहः ॥३९॥
त्रैलोक्य-दीपिका वाणी द्वाभ्यामेवोदगादिह ।
जिनराजत एकस्मादेकस्मा **द्वादिराजतः** ॥४०॥
आरुह्याम्बरमिन्दु-बिम्ब-रचितौत्सुक्यं सदा यद्यश-
श्छत्रं वाक्चमरीज-राजि-रुचयोऽभ्यर्णं च यत्कर्णयोः ।
सेव्यः सिंहसमर्च्च्य-पीठ-विभवः सर्व्व-प्रवादि-प्रजा-
दत्तोच्चैर्जयकार-सार-महिमा श्री**वादिराजो** विदां ॥४१॥

घूर्णि ॥ यदीय-गुण-गोचरोऽयं वचन-विलास-प्रसरः कवीनां । नमोऽर्हते ॥

(दक्षिणमुख)

श्रीमच्चालुक्य-चक्रेश्वर-जयकटके वाग्वधू-जन्म-भूमौ
निष्काण्डण्डिण्डिमः पर्य्यटति पटु-रटो **वादिराजस्य** जिष्णोः ।
जद्यद्वद्वाद-दर्पो जहिहि गमकता गर्व्व-भूमा जहाहि
व्याहारेर्ष्यो जहीहि स्फुट-मृदु-मधुर-श्रव्य-काव्यावलेपः ॥ ४२ ॥

पाताले व्याल-राजो वसति सुविदितं यस्य जिह्वा-सहस्रं
निर्गन्ता स्वर्गतोऽसौ न भवति धिषणो वज्रभृद्यस्यशिष्यः ।
जीवेतान्तावदेतौ निलय-बल-वशाद्वादिनः केऽत्रनान्ये
गर्व्वं निर्मुच्य सर्व्वं जयिनमिन-सभे वादिराजं नमन्ति
॥ ४३ ॥

वाग्देवीं सुचिरप्रयोग-सुदृढ-प्रेमाणमप्यादरा-
दादत्ते मम पार्श्वतोऽयमधुना श्रीवादिराजो मुनिः ।
भो भो पश्यत पश्यतैव यमिनां किं धर्म्म इत्युच्चकै-
रब्रह्मण्य-पराः पुरातनमुनेर्व्वागवृत्तयः पान्तु वः ॥४४॥
गङ्गावनिश्वर-शिरो-मणि-बद्ध-सन्ध्या-रागोल्लसच्चरण चारु-
नखेन्दु-लक्ष्मीः ।
श्रीशब्द-पूर्व्व-विजयान्त-विनूत-नामा धीमानमानुष-गुणोऽ-
स्ततमः प्रमांशुः ॥४५॥
पूर्व्वं ॥ स्तुतो हि स भगवानेव श्रीवादिराज-देवेन ॥
यद्विद्या-तपसो. प्रशस्तमुभयं श्रीहेमसेने मुनौ
प्रागासीत्सुचिराभियोग-बलतो नीतं परामुन्नतिं ।
प्रायः श्रीविजये तदेतदखिलं तत्पीठिकायां स्थिते
सङ्क्रान्तं कथमन्यथानतिचिराद्विद्येदृगीदृक् तपः ॥४६॥
विद्योदयोऽस्ति न मदोऽस्ति तपोऽस्ति भास्व-
न्नोग्रत्वमस्ति विभुतास्ति न चास्ति मानः ।
यस्याभये कमलभद्र-मुनीश्वरन्तं
यः ख्यातिमापदिह शाम्यदपैर्गुणौघैः ॥४७॥

स्मरण-मात्र-पवित्रतमं मनो भवति यस्य सतामिह तीर्त्थिनां ।
तमतिनिर्म्मलमात्म-विशुद्धये **कमलभद्र**सरोवरमाश्रये
॥ ४८ ॥

सर्व्वाङ्गैर्य्यमिहालिलिङ्ग सुमहाभागं कलौ भारती
भास्वन्तं गुण-रत्न-भूषण-गणैरप्यग्रिमं योगिनां ।
तं सन्तस्तुवतामलङ्कृत-**दयापाला**भिधानं महा-
सूरिं भूरिधियोऽत्र पण्डित-पदं यत्रैव युक्तं स्मृताः ॥४९॥

विजित-मदन-दर्प्पः श्री**दयापाल**देवो
विदित-सकल-शास्त्रो निर्ज्जिताशेषवादी ।
विमलतर-यशोभिव्व्याप्त-दिक्-चक्रवालो
जयति नत-महीभृन्मौलि-रत्नारुणाङ्घ्रिः ॥५०॥

यस्योपास्य पवित्र-पाद-कमल-द्वन्द्वन्नृपः **पोय्सलो**
लक्ष्मीं सन्निधिमानयत्स **विनयादित्यः** कृताज्ञाभुवः ।
कस्तस्यार्हति **शान्तिदेव**-यमिनस्सामर्त्थ्यमित्थं वचे-
त्वाख्यातुं विरलाः खलु स्फुरदुरु-ज्योतिर्दृशा तादृशाः ॥५१॥

स्वामीति **पाण्ड्य**-पृथिवी-पतिना निसृष्ट-
नामाप्त-दृष्टि-विभवेन निज-प्रसादात् ।
धन्यस्स एव मुनिराहवमल्लभूभु—
गास्थायिका-प्रथित-शब्द-**चतुर्म्मुखा**ख्यः ॥५२॥

श्रीमुष्णू र-विदूर-सारसुधा-स्नाने स नाथो गुणे
नाञ्चन्येन महीखिलागुरु-मदःपिण्डरिपोर्मण्डनः ।

आराध्यो गुणसेन-पण्डित-पतिस्स्त्वाध्यकामैर्ज्जना
यत्सूक्ताद-गन्धतोऽपि गलित-ग्लानिं गतिं लम्भिता: ॥५३॥

वन्दे वन्दितमादरादहरहस्स्याद्वाद-विद्या-विदां
स्वान्त-ध्वान्त-वितान-धूनन-विधौ भास्वन्तमन्यं भुवि ।
भक्त्या त्वाजितसेन-मानतिकृतां यत्सन्निधानात्मनः—
पद्मं सद्म भवेद्विकास-विभवस्योन्मुक्त-निद्रा-भरं ॥५४॥

मिथ्या-भाषण-भूषणं परिहरेतौद्धत्य...न्मुञ्चत
स्याद्वादं वदतानमेत विनयाद्वादीभ-कण्ठीरवं ।
नो चेत्तद्गु.. गर्ज्जित-श्रुति-भय-भ्रान्ता स्थ यूयं यत-
स्तूर्णं निग्रह-जीर्ण्णकूप-कुहरे वादि-द्विपाः पातिनः ॥५५॥

गुणाः कुन्द-स्पन्दोडुमर-समरा वागमृत-वाः—
प्लव-प्राय-प्रेयः-प्रसर-सरसा कीर्त्तिरिव सा ।
नरेन्दु-ज्योत्स्नाट्प्रेन्नृप-चय-चकोर-प्रणयिनी
न कासां श्लाघानां पदमजितसेन व्रतिपतिः ॥५६॥

सकल-भुवनपालानम्र-मूर्द्धावबद्ध—
स्फुरित-मुकुट-चूडालीढ-पादारविन्द ।
मदवदखिल-वादीभेन्द्र-कुम्भ-प्रभेदी
गणभृदजितसेनो भाति वादीभसिंहः ॥५७॥

र्पि ॥ यस्य संसार-वैराग्य-वैभवमेवंविधास्स्वयाव स्सूचयन्ति ।
प्राप्तं श्रीजिनशासने त्रिभुवने यद्दुर्ल्लभं प्राणिनां
यत्संसार-समुद्र-मग्न-जनता-हस्तावलम्बायितं ।

यत्रासाः परनिर्म्मपेक्ष-सकल-ज्ञान-श्रियाश्चद्भुता-
स्तस्मादिक गहने कुतो भयवशाः कावात्र देहे रतिः ॥५८॥
माल्यैरर्घ्यं विहितमधुनानन्त-बोधादि रूपं
तत्सम्प्राप्त्यै तदनु समयं यत्नेष्वैर चेतः ।
लग्नान्यस्मिन्सुरपति-मुखे भक्ति-सौख्ये च तृष्णा
तन्वन्त्वार्थैरमलकमधी-शोभितैर्लोककीर्त्तैः ॥५९॥
अज्ञानमारणे सकल-विषय-ज्ञान-रूपं
सदा साम्यं स्वान्तःकरणमपि तत्साधनतया ।
यदी-रागद्वेषैः कलुषितमनाः कोऽपि यतना
कथं साक्षान्ते समयि तनोऽस्यत्र यतते ॥६०॥

(पश्चिममुख)

पूर्वार्द्ध ॥ यथा च विषयाः कविताकान्त-वादिकोला-
हलाः [illegible] शान्तिनाथपदानाम [illegible]
[illegible] ॥

[illegible] [illegible] [illegible] वा [illegible]-
[illegible] [illegible] वैराग्य-[illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] प्रभवति [illegible] ॥६१॥
[illegible] [illegible]-
[illegible] [illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥६२॥

दीक्षा च शिक्षा च यतो यतीनां जैनेन्द्रपक्षाम्बुरुहैकधामात्
कुमारसेनोऽस्तु यशरिणं श्रेयः पयोदाद्दरणं पवित्रं ॥६३॥
जगद्दरिम-घस्मर-स्मार-मदान्ध-गन्ध-द्विप-
द्विधाकरण-केसरी चरण-भूप्य-भूमृच्छिखः ।
द्वि-षड्-गुण-प्रपुल्लपक्षरद-षण्ड-धामोदयो
दयेत मम मल्लिषेण-मलधारिदेवो गुरुः ॥६४॥
वन्दे तं मलधारिणं मुनिपतिं मोह-द्रिपद्-व्याहति-
व्यापार-व्यवसाय-सार-हृदयं सत्सेव्यमोह-प्रियं ।
यत्कायोपचयीभवन्मलमपि प्रध्यक्त-भक्ति-क्रमा-
नम्राकल्प-मनो-मिलन्मल-मपि प्रक्षालनैकक्षमं ॥६५॥
प्रत्युच्छ-तिमिर-च्छटा-जटिल-जन्म-जीर्णाटवी-
दवानल-शुचा-शुचां पृथु-तपः-प्रभाव-त्विषां ।
पदं पद-पयोरुह-भ्रमित-भव्य-भृङ्गावलि-
र्यमेोऽस्त्वमतु मल्लिषेण-मुनिराण्मनो-मन्दिरे ॥६६॥
नैर्मल्याय मलाविलाङ्गमखिल-त्रैलोक्य-राज्यश्रिये
नैष्किञ्चन्यमतुच्छ-तापहृदयेन्यच्छुनाशोऽन्तरः ।
यस्यासौ गुण-रत्न-रोहण-गिरिः श्री मल्लिषेणो गुरु-
र्वन्द्यो येन विचित्र-चारु-चरितै-र्धात्री-पवित्री-कृता ॥६७॥
यन्मिलप्रतिमा क्षमाभिरमते यामन्दया निर्दया-
दक्षेषां यत्र-गमत्वधीः प्रणयिनी यत्रास्पृहा सस्पृहा ।
कामं निर्वृति-कामुकस्त्वयमवाप्यमेरो योगिना-
माचर्य्यय कथमनाम चरितैरश्रीमल्लिषेणो मुनिः ॥६८॥

यः पूज्यः पृथिवीतले यमनिशं सन्तस्तुवन्त्यादरात्
येनानङ्ग-धनु-र्जितं मुनिजना यस्मै नमस्कुर्व्वते।
यस्मादागम-निर्ण्णयोयमभृतां यस्यास्ति जीवेदया
यस्मिन्श्री**मलधारि**णिव्रतिपतौ धर्म्मोऽस्ति तस्मै नमः ॥६६॥
धवल-सरस-तीर्त्थे सैष सन्यास-धन्यां
परिणतिमनुतिष्ठं नन्दिमां निष्ठितात्मा ।
व्यसृजदनिजमङ्गं भङ्गमङ्गोद्भवस्य
प्रथितुमिव समूलं भावयन्भावनाभिः ॥७०॥

चूर्ण्णि ॥ तेन श्रीमद **जितसेन**-पण्डित-देव-दिव्य-श्री-पाद-कमल-मधुकरी-भूत-भावेन महानुभावेन जैनागमप्रसिद्धसल्लेखना-विधि-विमृज्यमान-देहेन समाधि-विधि-विलोकनोचित-करुण-कुटूहल-मिलित-सकल-सङ्घ-सन्तोष-निमित्तमात्मान्तःकरण-परिणति-प्रकाशनाय निरवद्यं पद्यमिदमाशु विरचितं ॥

आराध्यरत्न-त्रयमागमोक्तं विधाय निश्शल्यमशेषजन्तोः
क्षमां च कृत्वा जिनपादमूले देहं परित्यज्य दिवंविशामः ॥७१॥
शाके शून्य-शराम्बरावनिमिते संवत्सरे कीलके
मासेफाल्गुनके तृतीय-दिवसेवारेसितेभास्करे ।
स्वातौ श्वेत-सरोवरे सुरपुरं यातो यतीनां पति-
र्मध्याह्ने दिवसत्रयानशनतः श्री **मल्लिषेणो** मुनिः ॥७२॥

श्रीमन्मलधारि-देवरगुड्डुंविरुद-लेखक-मदनमहेश्वरं **मल्लिनाथं** बरेदं विरुद-रूवारि-मुख-तिलकं गङ्गाचारि कण्डरिसिदं ॥

५५ (६९)

कत्तिले बस्ती के द्वारे से दक्षिण की ओर एक स्तम्भ पर

(लगभग शक सं० १०२२)

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥ २ ॥

श्लोक ॥ श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।
श्री कोण्डकुन्द-नामाभून्मूलसङ्घाग्रणी गणी ॥ ३ ॥
तस्यान्वयेऽजनि ख्याते ..देशिके गणे ।
गुणी देवेन्द्रसैद्धान्त-देवो देवेन्द्र-वन्दितः ॥ ४ ॥

वृत्तिरूपक ॥
जयति चतुर्म्मुख-देवो योगीश्वर-हृदय-वनज-वन-
दिननाथः ।
मदन-मद-कुम्भि-कुम्भस्थल-दलनोल्बण-पटिष्ठ-निष्टुर-
सिंहः ॥ ५ ॥

योन्दोन्दु दिग्विभागदो—
ळेन्दोन्दष्टोपवासदि कार्य्योत्स-
र्गन्दळेने नेगन्दु विङ्कल्—
मन्दवे पाविरि चतुर्म्मुखाख्येयनान्दह ॥ ६ ॥

भवर्गलिगं शिष्यराद-
प्रविमल-गुणरमल-कीर्त्ति-कान्ता-पतिगल् ।
कवि-गमकि-वादि-वाग्मि—
प्रवर-नुतर्च्चतुरसीति-सङ्ख्ययेनुळर् ॥ ७ ॥
भवरोलगे गोपणन्दि —
प्रवर-गुणरदिह-मुद्राघातयश-
र्कविवा पितामहर्त्त—
र्के-वरिष्ठर्व्वकगच्छदोल् पेसर्व्वडेदर् ॥ ८ ॥
जयति भुवि गोपनन्दी जिनमतलसदमृतजलधितुहिनकरः
देशीयगणाग्रगण्यो भव्याम्बुज-षण्ड-चण्डकरः ॥ ९ ॥

वृत्त ॥ तुङ्गयशोभिरामनभिमान-सुवर्ण्ण-धराधरं तपो-
मङ्गल-रुद्रिम-वल्लभनिलावलवन्दितगोपनन्दियां—
वङ्गमसाध्यमप्प पनकालदनिन्द-जिनेन्द्र-धर्म्ममं
गङ्गनृपालरन्दिन विभूतिय रुढियनेय्दे माडिदं ॥ १० ॥
जिनपादाम्भोज-भृङ्गं मदन-मद-हरं कर्म्म-निर्मूलनं वाग्-
वनिता-चित्त-प्रियं वादि-कुल-कुधर-वज्रायुधं चारु-विद्व-
ज्जन-पात्रं भव्य-चिन्तामणि सकल-कला-कोविदं काव्यकर्त्ता-
सननेन्दानन्ददिन्दं पोगले नेगल्दनो गोपणन्दिव्रतीन्द्रं
॥ ११ ॥

मलेयदे शाङ्कर मट्टविनु भौतिक पोक्कि कहङ्कि वागदि-
गोंजनेतलवुड पोद्द वत्ते-रारदे वैप्पवहङ्गडकु वाग्—

अवर सधर्म्मरु ॥

श्रीधाराधिप भोजराज-मुकुट-प्रोताश्म-रश्मि-च्छटा-
च्छाया-कुङ्कुम-पङ्क-लिप्त-चरणाम्भोजात-लक्ष्मीधवः ।
न्यायाब्जाकरमण्डने दिनमणिश्शब्दाब्ज-रोदोमणि-
स्थेयात्पण्डित-पुण्डरीक-तरणिश्रीमान्प्रभाचन्द्रमाः ॥१७॥
श्रीचतुर्म्मुख-देवानां शिष्योऽधृष्यःप्रवादिभिः ।
पण्डितश्रीप्रभाचन्द्रो रुद्रवादि-गजाङ्कुशः ॥ १८ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

बौद्धोर्व्वीधर-शम्बः नैयायिक-कञ्ज-कुञ्ज-विधु बिम्बः ।
श्रीदामनन्दिविबुधः क्षुद्र-महा-वादि-विष्णुभट्टघरट्ट
॥ १९ ॥

तत्सधर्म्मरु ॥

मलधारिमुनीन्द्रोऽसौ गुणचन्द्राभिधानकः ।
बलिपुरे मल्लिकामोद-शान्तीश-चरणार्च्चकः ॥२०॥

तत्सधर्म्मरु ॥

श्रीमाघनन्दि-सिद्धान्त-देवो देशगिरि-शिरः ।
स्याद्वाद-शुद्ध-सिद्धान्त-वेदी वादि-गजाङ्कुशः ॥२१॥
सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वर्द्धन-विधुः साहित्य-विद्यानिधि-
र्बौद्धादि प्रतितर्क-कर्कश-मतिःशब्दागमे भारति ।
सन्मार्गोत्तम-धर्म्म-कर्म्म-निरतश्चन्द्रदृग्-बोधोदयः
स्थेयाच्छ्रीगुणमाघनन्दि-मुनिपश्श्रीचक्रवर्त्ती गिरः ॥२२॥

दुष्टपरवादि-मल्लोत्कृष्टश्रीगोपनन्दि-यतिपतिशिष्यः ॥२७॥

अवर सधर्म्मरु ॥

मलधा [धा] रि हेमचन्द्रो गण्डविमुक्तश्च गौल-मुनिनामा।

श्री गोपनन्दि-यति-पति-शिष्योऽभूच्छुद्ध-दर्शनज्ञानाद्यः॥ ॥ २८॥

कन्द ॥ धारिणियोल् मनसिजसं—

हारिगलं नेनेयलुमपापं किडुगुं।

सूरिगलनमल-गुण-स-

न्धारिगलं गौल-देव-मलधारिगलं ॥ २९ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

श्री मूलसङ्घ गतदोषमेघे देशीगणे सच्चरितादिमद्गुणे।

भारत्युतुच्छे वरवक्रगच्छे जातः सुभावः शुभकीर्त्ति देवः॥ ॥ ३० ॥

आजिरगं कीर्ति-नर्त्तकिगाजिर भूगोलवागे शुभकीर्त्ति बुधं।

राजावलि-पूजितनें राजिसिदनो वक्रगच्छ देशीयगणं ॥ ३१ ॥

अवर सधर्म्मरु ॥

श्री माघनन्दिसिद्धान्तामृत-निधि-जात-मेघचन्द्रस्य

श्रीसोदरस्य भुवन-ख्याताभयचन्द्रिका सुता जाता ॥ ३२ ॥

प्रवर सधर्म्मेरु ॥

कल्याणकीर्त्ति नामाभूद्भव्य-कल्याण-कारकः ।
शाकिन्यादि-ग्रहाणां च निर्घाटन-धुरन्धरः ॥ ३३ ॥

प्रवर सधर्म्मेरु ॥

सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-सूत-सुवचो-लक्ष्मी-ललाटेक्षणः
शब्द-व्याहृति नायिकाम्न(क)चकोरानन्दचन्द्रोदयः ।
साहित्य-प्रमदाकटाक्ष-विशिख-व्यापार-शिक्षागुरुः
स्थेयाद्विश्रुत-बालचन्द्रमुनिपः श्रीचारुचन्द्राधिपः ॥३४॥

श्रीमूलसङ्घ-कमलाकर-राजहंसो
देशीय-सद्गण-गुण-प्रवरावतंसः ।
जीयाज्जिनागम-सुधार्णव-पूर्णचन्द्रः
श्रीचन्द्रनन्द्र-तिलको मुनिबालचन्द्रः ॥३५॥

सिद्धान्ताशिलागमार्थ-निपुण-व्याख्यानसद्वृद्धिवि
शुद्धाध्यात्मक-तत्वनिर्णय-वचो-विन्यासदि प्रौढिसं-
षड्-व्याकरणार्थ-शास्त्र-भरतालङ्कार-साहित्यदि
राद्धान्तोत्तम-बालचन्द्र-मुनिचन्द्राचार्यतां लोके
॥

विभाषा-भरित-स्व-शीतलकर-प्रभासितस्सागर-
प्रोद्यत्सम्यक्कलानतः कुवलयानन्दस्सदामीश्वरः ।
काम-ध्वंसन-भूषितः क्षितितले जातो यथार्थोदय
स्सोऽयं विश्रुत-बालचन्द्र-मुनिपस्सिद्धान्त-च

(उत्तरमुख)

श्रीमूलसङ्घद देशीयगणद वक्रगच्छद कोण्डकुन्दान्वयद परियलिय वड्डदेवर बलिय। देवेन्द्रसिद्धान्तदेवरु। अवर शिष्यरु वृषभनन्द्याचार्य्यरेम्ब चतुर्म्मुखदेवरु। अवर शिष्यरु गोपनन्दि-पण्डितदेवरु। अवर सधर्म्मरु महेन्द्र-चन्द्र-पण्डित-देवरु। देवेन्द्र-सिद्धान्तदेवरु। शुभकीर्त्ति-पण्डित-देवरु। माघनन्दि-सिद्धान्त-देवरु। जिनचन्द्र-पण्डित-देवरु। गुणचन्द्र-मलधारि-देवरु। अवरोलगेमाघनन्दि-सिद्धान्त-देवरशिष्यरु। चिरत्ननन्दि-भट्टारक-देवरु। अवर सधर्म्मरु कल्याणकीर्त्तिभट्टारकदेवरु। मेघचन्द्र-पण्डित-देवरु। बालचन्द्र-सिद्धान्त-देवरु। आ गोपनन्दिपण्डित-देवर शिष्यरु जसकीर्त्ति-पण्डित-देवरु। वासवचन्द्र-पण्डित-देवरु। चन्दननन्दिपण्डितदेवरु। हेमचन्द्र-मलधारि गण्डविमुक्तदेव गौलदेवरु त्रिमुष्टि-देवरु।

[यह लेख कुछ आचार्यों की प्रशस्तिमात्र है। लेख के अन्तिम भाग में उपरिवर्णित आचार्यों के नामों की पुनरावृत्ति है। ये सब आचार्य मूलसंघ देशिय गण और वक्र गच्छ के देवेन्द्र सिद्धान्तदेव के समकालीन शिष्य थे। चतुर्मुखदेव इसलिए कहलाये क्योंकि इन्होंने चारों दिशाओं की ओर अनुक्रम मुख होकर आठ आठ दिन के उपवास किये थे। गोपनन्दि अद्वितीय कवि और नैयायिक थे जिनके सम्मुख कोई वादी नहीं ठहरते थे। प्रभाचन्द्र धारापीश भोजदेव द्वारा सम्मानित हुए थे। माघनन्दि, और जिनचन्द्र भारी कवि, नैयायिक और

वैयाकरण थे। देवेन्द्र बहादुर के आचार्यों के नायक थे। वासवचन्द्र ने अपने वाद-पराक्रम से चालुक्य राजधानी में बालसरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी। यशःकीर्ति सैद्धान्तिक सिंहल द्वीप के नरेश द्वारा सम्मानित हुए थे। त्रिमुष्टि मुनीन्द्र बड़े सैद्धान्तिक थे और तीन मुष्टि अन्न का ही आहार करते थे। मलधारि हेमचन्द्र और शुभकीर्तिदेव बड़े सदाचारी आचार्य थे। कल्याणकीर्ति शाकिनी आदि भूत प्रेतों के भगाने की विद्या में निपुण थे। बालचन्द्र आगम और सिद्धान्त के अच्छे ज्ञाता थे।]

५६ (१३२)
गन्धवारण बस्ति के पूर्व की ओर
(शक सं० १०४५)

त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रसुतपःपीयूषवाराशिजः
सम्पूर्णोक्षयवृत्तनिर्म्मलतनु-पुष्यद्बुधानन्दनः।
त्रैलोक्य प्रसरद्यशश्शुचिरुचिर्य्यप्रोल्लसेदागम:
सिद्धान्ताम्बुधिवर्द्धनो विजयते पूर्व्वः प्रभाचन्द्रमाः ॥ १ ॥
श्रीसोदराम्बुजभवादुदितोऽत्रिरत्रि-
जातेन्दुपुत्र-बुधपुत्र-पुरूरवस्तः।
आयुस्ततश्च नहुषो नहुषाद्ययाति-
स्तस्माद्यदुर्यदुकुले बहवो बभूवुः ॥ २ ॥
तत्रान्तेषु तेषु नृपतिः कश्चित् कदाचित्
करिवद्वने मुनिवरं(स्त्र)-वलः करालं।

शार्दूलकं प्रतिहत पोय्सल इत्यतोऽभू-
त्तस्याभिधा मुनिवरोऽपि चमूरुत्तमः ॥ ३ ॥
ततो द्वारवतीनाथा पोय्सला द्वीपिलाञ्छना ।
जातास्तासामपुरे तेषु विनयादित्यभूपतिः ॥ ४ ॥
स श्रीवृद्धिकरं जगज्जनहितं कृत्वा धरां पालयन्
श्वेतच्छत्रसहस्रपत्रकमले लक्ष्मीं चिरं वासयन् ।
दोर्दण्डे रिपुमण्डलैकपुरे वीरश्रियं नाटयन्
निश्चेपागिलरिपु शिलामरिपुर्भीतः प्रतापोदयः ॥ ५ ॥
श्रीमत्पादपद्मयुगमण्डनमणि कोलाहलस्वामिनि-
अंवगीहारमणि नरेन्द्रशिरःप्रोत्तुङ्ग[illegible]मणिः ।
[illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥
[illegible] ॥ [illegible] —
[illegible] कृतिशाला[illegible] ।
[illegible]
[illegible] विनयादित्य ॥ ७ ॥
[illegible] —
[illegible] ।
[illegible] —
[illegible] विनयादित्यं ॥ ८ ॥
[illegible] —
[illegible] ।

श्रीपतिनिज-भुजविनयम—

द्दीपति जनियिसिदनदटनेरेयङ्गनृपं ॥ ९ ॥

वृत्त ॥ अनुपमकीर्त्ति भूरेनेय माडति नाल्कनेयुग्रशद्दिय्-

देनेयसमुद्रमारेनेय पूगयेल्ल नेपुर्स्येरेयने-

व्टेनेय कुलाद्रियोम्भतनेयुद्दुमवेतहसिय—

त्तेनेय निधानमूर्त्तियेने पोद्दवरारेरयङ्ग देवन ॥ १० ॥

अरिपुरदोल्पगद्धगिलुदन्धगिलेम्बुदरातिभूमिरा-

लरशिरदोलगिल्लरिगरीगरिलेम्बुदु पैरिभूतजे-

रार कदल्लोल् चिमिलिचिमि चिमीचिमिलेम्बुदुकोपवह्निदु-

र्द्धरतरमेन्दोडङ्कदे कादुवरारेरयङ्ग देवन ॥ ११ ॥

कन्द ॥ आ नेगल्द् एरेग नृपालन

सूनु द्दढवैरिमर्द्दनं सकलधरि-

त्री-नायननिर्म्मजनता-

भानुसुत जिष्णु विष्णुवर्द्धननेसेदं ॥ १२ ॥

चदेयं गेयसोडनोडन-

न्तुदितोदितमागे सकलराज्याभ्युदयं ।

मदवदराति-नृपालक-

पदविदलनतमम विष्णुवर्द्धन भूपं ॥१३॥

वृत्त ॥ केलरं किरिसिकि बेरं बिदुर्दुकेलरनाप्तुमसङ्ग्रामदोळ्पुश—

स्दले गोण्डाळेपदिन्दं केलर बळेनलं मेरि मिन्दुम्पकोपं ।

मलेवरयुद्धवृत्तदोळापड्डलिड निजप्राज्यसाम्राज्यम लो-

लुपसदि निष्कण्टकं माडिदमधिकबलं विष्णु जिष्णुप्रतापं ॥१४॥

दुर्व्वारारिधराधरेन्द्रकुलिशं श्रीविष्णुभूपालना-
देर्व्वद्रिलु सेडेदोडि पोगि भयदिन्दावन्दनीवन्दनेन्द् ।
उर्व्वीपालर कण्गे लोकमनितुं तद्रूपमागिर्प्पिनं
मर्व्वं विष्णुमयं जगत्तेनिपिदें प्रत्यक्षमागिर्दुदो ॥१५॥

वचन ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं द्वारावती-
पुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मल-
परोल्गण्डाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृतनुं । मत्तं चलगे।
तलकाडु नीलगिरि कोङ्गु नङ्गलि कोलालं तेरेयूरु कोय-
तूरु कोङ्गलिय् उच्चङ्गि तलेयूरु पोम्बुर्च्चयन्धासुरवीर
पलेयरट्टग येन्दियु मोदलागनेक दुर्गं श्रयङ्गलनममदि कोण्डु
चण्ड-प्रतापदि गङ्गावाडि तोम्भत्तरु सासिरमुमनुण्डिगे माण्ड
माडिसुत्तदि राज्यं गेय्युत्तमिर्द श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभु-
वनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन पोय्-
सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क-
तारं बर सलुत्तमिरे ॥

कन्द ॥ आ नेगर्द विष्णुनृपन म—
नो नयनप्रियं चपालनीलालकि च-
न्द्रानने कामन रतियन्तु ।
तानेम्ब नाम नरि नमाने शान्तल देवि ॥ १६ ॥

वृत्त ॥ आगल मारनिङ्ग न मनानयनप्रियं माधिवल्लेर-
न्तागद्कीर्त्ति वेनेसोगमनम्भवे विष्णुवर्द्धनङ्ग-
माद विनयरुभयनम्कभिरज्वितंरारे लक्षिमन-

ल्लयमं माडिसि देवता पूजेगर्षिसमुदायक्काहारदानक्क कल्कणिनाड मोट्टेनविलेयं तम्म गुरुगल् श्रीमूलसङ्घद देसियगणद पुस्तकगच्छद श्रीमन्**मेघचन्द्र** त्रैविद्यदेवर शिष्यर् **प्रभाचन्द्र** सिद्धान्तदेवर्गे पादप्रच्चालनं माडि सर्व्वबाधापरिहारवागि बिट्ट दत्ति ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दिन्तिदनेयूदे कावपुरुषर्गायुं महाश्रीयु म-
केयिदं कायदे काय्व पापिगे कुरुच्चेत्रोर्व्विंयोल् बाणरा-
सियोलेकोटिमुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदो-
न्दयसं साग्गुंमिदेन्दु सारिदपुवी शैलाचरंसन्तवं ॥ २० ॥

श्लोक ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां ।
षष्टिर्व्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रमिः ॥ २१ ॥

एल्लसनकट्टव केरेयागि कट्टिसि सवतिगन्धहस्तिवसदिगे सरुगिगे देवियरु जिनालयक्के बिट्टरु ॥ श्रीमत् पिरियरसि पट्टमहादेवि **शान्तलदेवियरु** तावु माडिसिद सवतिगन्धवारणवसदिगे श्रीम**द्विष्णुवर्द्धन** पोय्सल देवर बेडिकोण्डु गङ्गसमुद्रद केलगण नडुवयलयवत्तु कोलग गर्द्दे तोटवं श्रीमत्**प्रभाचन्द्र**सिद्धान्तदेवर कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकं माडि बिट्टदत्ति इदनलिदवं **गङ्गेय** तडियोले हदिनेण्टु कोटि कविलेयं कोन्द महापातक ॥ मङ्गलमहा श्री श्री ॥

(दक्षिण पार्श्वपर) श्रीमत्प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यरु **महेन्द्रकीर्त्ति** देवरु मुन्नरहदिमूरु कप्पिन हालविगेय **शान्तलदेविय** बसदिगे माडिसि कोट्टरु मङ्गलमहा श्री श्री ।

[यह लेख शान्तलदेवी के दान का स्मारक है। लेख में यादवकुल की उत्पत्ति ब्रह्मा और चन्द्र से बतलाई है। इस कुल में 'सल' नामक एक राजा हुआ। एक बार वन में किसी साधु ने एक व्याघ्र की ओर संकेत कर इस राजा से कहा 'पोय्सल' (हे सल, इसे मारो)। तभी से इस राजा का नाम पोय्सल पड़ गया और उसने सिंह का चिह्न अपने मुकुट पर धारण किया। तब से इस वंश का नाम पोय्सल पड़ गया। लेख में इस वंश के *विनयादित्य, एरेयङ्ग और विष्णुवर्द्धन* नरेशों के प्रताप का वर्णन है। विष्णुवर्द्धन की पटरानी शान्तलदेवी, जो *पातिव्रत, धर्मपरायणता और भक्ति में रुक्मिणी, सत्यभामा, सीता* जैसी देवियों के समान थी, ने सवति गन्धवारणबस्ति निर्माण कराकर अभिषेक के लिए एक तालाब बनवाया और उसके साथ एक ग्राम का दान मन्दिर के लिए प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव को कर दिया।]

[नोट—लेख की ठीक तारीख 'सासिरद नल्वत्तयदनेय' है, परन्तु खोदनेवाले की भूल से जब 'नल्वत्त' छूट गया और 'सासिरदयदनेय' खुद गया तब उसने 'सासिरद, के 'द' को ४० में बदलकर जितना अच्छा उससे हो सका उसे शुद्ध कर दिया। यद्यपि पढ़ते समय इससे ठीक अर्थ निकल आता है परन्तु देखने में यह बड़ा विचित्र मालूम होता है।]

५७ (१३२)

गन्धवारण वस्ति के उत्तर की ओर स्तम्भ पर।

(शक सं० ९०४)

(उत्तर मुख)

संसारवनमध्येऽस्मिन्नूर्जुद्रान् जनद्रुमान् ।
श्रालोक्यालोक्य सद्वृत्तान्छिनत्ति यमतक्षकः ॥ १ ॥

लयमं माडिसि देवता पूजेगर्षिसमुदायकाहारदानक कल्कबिनाड मोट्टेनविलेयं वम्म गुरुगल् श्रीमूलसङ्घद देसियगणद पुस्तकगच्छद श्रीमन्**मेघचन्द्र** त्रैविद्यदेवर शिष्यर् **प्रभाचन्द्र** सिद्धान्त देवर्गे पादप्रचालनं माडि सर्व्वबाधापरिहारवागि बिट्ट दत्ति ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दिन्तिदनेय्दे कावपुरुषर्गायुं महाश्रीयु मकेयिदं कायदे काय्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोल् वाणरासियोलेकोटिमुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदोन्दयसं सार्गुमिदेन्दु सारिदपुवी शैलाचरंसन्ततं ॥ २० ॥

श्लोक ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां ।
षष्टिर्व्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रमिः ॥ २१ ॥

एल्लसनकट्टव केरेयागि कट्टिसि सवतिगन्धहस्तिबसदिगे सरुगिगे देवियरु जिनालयक्के बिट्टरु ॥ श्रीमत् पिरियरसि पट्टमहादेवि **शान्तलदेवियरु** वावु माडिसिद सवतिगन्धवारणद बसदिगे श्रीम**द्विष्णुवर्द्धन** पोय्सल देवर बेडिकोण्डु **गङ्ग**समुद्रद केलगण नड़ुवयलयवत्तु कोलग गर्द्दे वोटवं श्रीमत्**प्रभाचन्द्र**सिद्धान्तदेवर कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकं माडि बिट्टदत्ति इदनलिदवं **गङ्गेय** तडियालं हदिनेण्टु कोटि कविलेयं कोन्द महापातक ॥ मङ्गलमहा श्री श्री ॥

(दक्षिण पार्श्वपर) श्रीमत्प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यरु **महेन्द्रकीर्त्ति** देवरु मुन्नूरहदिमूरु कम्बिन होलविगेय **शान्तलदेविय** बसदिगे माडिसि कोट्टरु मङ्गलमहा श्री श्री ।

[यह लेख शान्तलदेवी के दान का स्मारक है । लेख में पोय्सलकुल की उत्पत्ति यदु और चन्द्र से बतलाई है । इस कुल में 'सळ' नामक एक राजा हुआ । एक बार वन में किसी साधु ने एक व्याघ्र की ओर संकेत कर इस राजा से कहा 'पोय्सळ' (हे सळ, इसे मारो) । तभी से इस राजा का नाम पोय्सळ पड़ गया और उसने सिंह का चिह्न अपने मुकुट पर धारण किया । तब से इस वंश का नाम पोय्सळ पड़ गया । लेख में इस वंश के विनयादित्य, एरेयङ्ग और विष्णुवर्द्धन नरेशों के प्रताप का वर्णन है । विष्णुवर्द्धन की पटरानी शान्तलदेवी, जो पातिव्रत, धर्मपरायणता और भक्ति में रुक्मिणी, सत्यभामा, सीता जैसी देवियों के समान थी, ने सवति गन्धवारणबस्ति निर्माण कराकर अभिषेक के लिए एक तालाब बनवाया और उसके साथ एक ग्राम का दान मन्दिर के लिए प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव को कर दिया ।]

[नोट—लेख की ठीक तारीख़ 'सासिरद नल्वत्तयदनेय' है, परन्तु खोदनेवाले की भूल से जब 'नल्वत्त' छूट गया और 'सासिरदयदनेय' खुद गया तब उसने 'सासिरद, के 'द' को ४० में बदलकर जितना अच्छा उससे हो सका उसे शुद्ध कर दिया । यद्यपि पढ़ते समय इससे ठीक अर्थ निकल आता है परन्तु देखने में यह बड़ा विचित्र मालूम होता है ।]

५७ (१३३)

गन्धवारण वस्ति के उत्तर की ओर स्तम्भ पर ।

(शक सं० ९०४)

(उत्तर मुख)

संसारवनमध्येऽस्मिन्नृजून्वक्रान् जनन्द्रुमान् ।
आलोक्यालोक्य सद्वृत्तान्छिनत्ति यमतक्षकः ॥ १ ॥

श्रीराजरकृष्णराजेन्द्रन मगन मगं सत्यशौचद्वयाल-
ङ्कारं श्रीगङ्गगाङ्गेयन मगन मगं वीरलक्ष्मीविलासा-
गारं श्रीराजचूडामणियलियनिर्दे पेम्पो पेल्लेन्दलम्पि
भूरिदमाचक्रमुंवण्णिसे सले नेगल्दं रट्टकन्दर्प्पदेवं ॥ २ ॥
परभूमीश्वरभीकरंकरनिशातोग्रासि शत्रुचिती-
श्वरविध्वंसपरं पराक्रमगुणाटोपं विपक्षावनी—
श्वरपक्षक्षयकारणं रणजयोद्योगं द्विपन्मेदिनी-
श्वरसंहारहविर्भुजं भुजबलं श्रीराजमार्त्तण्डन ॥३॥
इरियल्कण्मुवरीयलाररेवर् पुण्डीवरारानुमा-
न्तिरियल्कन्मरदाव गण्डगुणमावौदार्य्य मेन्दरकदा-
न्तिरिवण्मुं पिरिदीव पेम्पुमेसेदोप्पिल्दप्पुवार्व्वण्णिसल्
नेरेवर्व्वीरद चागदुन्नतिकेयं श्री राजमार्त्तण्डन ॥४॥
किडद जसक्के ताने गुरियादचलं नेरेदर्थिगर्त्थमं ।
कुडुव चलं तोदल्नुडियदिर्प्प चलं परवेण्णोलोतोदं-
बडद चलं शरणगे वरेकाव चलं परसैन्यमं पेर-
ङ्गि डे गुडदट्टि कोल्व चलमाल्द चलं चलदङ्कारनं ॥५॥
इरु पेरदेननि पोगलुतिल्दपुदीवनेगल्ते फलरभू-
मिरुहदिनगलं नुडि सुराचलदिन्दचलं पराक्रमं ।
खरकरतेजदि मिसिदु चागम्र नन्निय वीरदन्दमी-
दोरेतेने वण्णिसलनेरेवराल्वं चलदङ्कारन ॥ ६ ॥
भोगसुग मधुदुल्लुदने पेल्वपेनेन्दुमतर्क्यविक्रमं
मृगपति गर्व्वदिल्लं यव सन्द गभीरते वार्द्धिगव्वदि-

ङ्गंगळजगत्प्रसिद्धिगॆळ्दे.........महोन्नति-न्वे...ग......
..................मंन्रमोक्षवानरिवें................॥७॥

(पूर्वमुख)

दुरितलोककल्पवल्लवेम्बुदु वैरिनरेन्द्रकुम्भिकु-
म्भस्थल-पाटन-प्रवण-केसरियेम्बुदु कामिनीजना-
ररुळहारमेम्बुदु महाकविचित्तसरोरुहाकरा-
वलिविद्वसनेम्बुदु समस्तमहीजनमिन्द्रराजनं ॥ ८ ॥
पुसिवुदे वक्कु कोट्टलिपि कोल्वुदे मन्तणमन्यनारिगा-
टिसुवुदे चित्तमीयदुदे विग्रहमाळ्पनेंददे कुत्तुव-
न्विसुवुदे कल्त कलिपयेंने मत्तवरं पेसगोण्डदेन्तु पो-
लिसुवुदो पेळिमीगळिन राजवनूरजरोलिन्द्रराजनं ॥ ६ ॥
निखिलविनमन्नरेश्वर-
मुखाब्जनेत्रोत्पलाळिकाळेलिशिली-
मुखनिकर-दिनेसेवुदु पदनख-
कमलाकरविलासमहितर जवन ॥ १० ॥
मसिसि पिरिदीवंताद-
लं नुडियन्तोह्दुं मायनळरिन्वमिदे-
नुन्नविवडेंदुदो चागद
नन्निय धीरद नेगल्तें चलदग्गलिया ॥ ११ ॥
शरदमृतकिरणरुचियिं
चराचरव्याप्तियिं जगज्जननुतियि
करमेसेदिल्लपुदेनी-

श्वरमूर्त्तियें कीर्त्ति कीर्त्तिनारायणन ॥ १२ ॥
नुडिवर्धीरमनोन्दुगण्डु सेडेवर्चागकेमुयुवाम्परी-
वड़े पलाञ्चुवरामे सैाचिगलेमेन्दिर्प्परखोयरोल्
गडयं नन्निगे वीगुवर्नुडिवोदल् दोसके पकादेदं
बडगण्डर् कलिकालदोल् कलिगलोल् गण्डं वरं गण्डरे॥१३॥

(दक्षिणमुख)

श्रीगें विजयके विद्देगे
चागकदटिङ्ग जसके पेम्पिङ्गि निव—
र्कागरमिदेन्दु कन्दुक-
दागमदोले नेगल्गुमल्ते बीरर बोर ॥ १४ ॥
श्रोलगं दक्षिण सुकरदुष्करमं पोरगण सुकरदुष्करभेदमं
श्रोलगे वामद विषममनछिय विषम दुष्करम तिन्नदर पोरग-
ग्गलिके येनिपति विषममनदरतिविषम दुष्करमेम्ब दुष्कर्म
पल्लेयोलोर्व्वने चारिसल्वल्लंनाल्कुप्रकरणमुमनिन्द्रिराजं
॥ १५ ॥

चारिसे नाल्कु प्रकरण-
चारणे मूनूर मूवत्तेण्टेनिसिदवा-
चारणेगल्लनमदिं
चारिसुगुं कोटि तेरदिनेन्नेयेडेङ्ग ॥ १६ ॥
बलसुवेरव सुलिवगल्विन्तप्प चारणदीपमछदे पोट्टव-
ट्टलेगे समनागेगिरिगेय कोल्सुट्टि मिगलुं नेललुमयमीयदिन्दो-

न्दसविर्यांल्वरे पोरगेळगेवदोळं पलदोळं कडुगलुपिन्ने
मर्प्पे

वलयन्दप्पदे चारिसुवोजेयं रट्टकन्दर्प्पनन्वाव बल्लं ॥१७॥
मेळसिन निलिरिदु गिरिगेय-
नळदोर्गेद्दोळोळोळगे पोरगघे मेळेवो—
रपळवडे चारिप बहलिके-
यळविदुकेवलमे कीर्त्तिनारायणन ॥ १८ ॥
गिरिगे मेळसिन्दं किरिदक काळ्ाल्तु नाल्वरलळविग-
किरिदुमक—

तुरगं बेद्दंदि पिरिदक वलयमुं भूवलयदिनस पिरिदुमके।
गिरिगे कोल्वलि वलयमिन्तिनितुमं बगेवोड्ड करमरि-
दिन्तिवरोल्-

इरदं पलेण्डुवलयं चारिसदक्रं भोगमिक्वनळनिन्द्रराजं
॥ १९ ॥

कडुपुगलुद वलंगव
बेडङ्ग गळ बेरे भङ्गिगळ छलिगळिदें।
कडुजाणेने पदिकयूवर-
मडरपुळ्ळेने पिदमेळेरु मेळेववेडङ्ग ॥ २० ॥
नेगल्द मण्डलमाले त्रिमण्डल पामकमण्डलमर्द्धचन्द्रमार्ग्ग
बगेवोडरिदप्प सर्व्वतोभद्रमुदवलं चक्रव्यूहं चलमेगलं।
पोगलिसल्वक पेरवु दुष्करदेळेपङ्गळनश्रमदिनेळेयोल्

जगदोळेलेववेडेङ्गनोर्व्वने वल्ल...न्वारालं मान्वरमे ॥ २१ ॥

(पश्चिम मुख)

उद्वल मेलेवरेम्बुदे-
बिद मुन्नळि कडुपिनोल्वनु विघदि-
न्दुदवनमेलेदु मुरिगुं ।
बिदमेनल्वलल पोरगनेळेवदेङ्ग ॥ २२ ॥

एरकमल्लदे पोळ्वदागेरगि देरेकोण्डे कोल्व तेरनल्लदे
नेरेयें वरले तकदियळि बीसुवल्लिये बीसलरिदेविभ ।
परियनादिट्टे मुरिवळि कडुपिनोल् मुरिदयिळियिय विनवय-
भेरेये कल्पदे बीररबीरने गिडेगला-भरणने नोडि फळा ॥ २३ ॥

भासुरनुं फूकुवनुं
बीसुवनुं गवये नेगल्द तकदियोळेनु-
त्तामदेयु कुङ्करेयुं
बिसन्देयुविदमेळेगुमेलेववेडेङ्ग ॥२४॥

परगलरियदे जिण्डुकम्मगुल्दुंवरबवमरियदेवप्पंपिन्दुं
तेरननरियदे भङ्गमनिक्कियुग्मूदेगळदें कट्टाडियुं ।
मुरियं पोयिसिदनुरेयं कोन्दु धरेगे तगगें यिरनेनिसदे
नेरेयं कडुआपनेनिसरके वरकुंमे गेडेगलाभरवन कळरमं
॥ २५ ॥

कालान कयुगळ मुरगद
कालाळ विधिनुल्लोताळि बप्पिमुनेवेगुं ।

[illegible] आमोद
[illegible] ॥६८॥
[illegible] प्रकाशनिपात
कालम्।
[illegible] वित्तराहृवी-
[illegible]
[illegible] ॥६०॥

[इस लेख में [illegible] इन्द्रराज (तृतीय) के पौत्र इन्द्रराज की मृत्यु का उल्लेख है। इन्द्रराज [illegible] का [illegible] और राज- [illegible] 'कलिनोलगण्ड' 'वीर बीर' आदि इन्द्रराज की प्रशंसा पूर्वक उपाधियाँ थीं। [illegible] इन्द्रराज के एक गेंद के खेल में [illegible] का [illegible] है। पर अनेक शब्दों का अर्थ अज्ञात होने के कारण इन पद्यों का पूरा-पूरा भाव स्पष्ट नहीं हो सका है। सम्भवतः यह 'पोलो' के [illegible] है। क्योंकि इन पद्यों में गेंद, घोड़ों और खेल के [illegible] का उल्लेख है। इन्द्रराज की मृत्यु शक सं० ९०४ चैत्र सुदि ८ सोमवार को हुई।]

५८ (११४)

तेरिन बस्ति के पश्चिम की ओर एक स्तम्भ पर

(लगभग शक सं० ९०४)

[illegible] गुप्त)

............वीर बेल्लविग्गु......इन्द्रं पोगलियेम्बेने...

गिय...दिसिमो...ळदो...नु...मे...गदेन ...ञ्र... वेमु...
पोविसुवेल्वेयुरि... गोडि... नगिमुगुवेग्र... बपेद...केरे
मावन-गन्ध-हस्तियं ॥

श्रदिरदिदिर्चिनिन्दरि...नेने पायिसि वज्र मिण्डमुं
कुदुरेय येम्बियुं पेरसि बील्वदु मेयिदिरे...देदु काळ्गुरि–
गोले ताने.......................................

(पूर्व मुख)

साधिसि पोग... ..निरदे............दिव.........
वेरिव.........न्वलिय......ल्दरि...लय.........ल्दन्ववको
......पेनकेल.........बोलगदोल्ताये.........उनदा......
यविट्टनेवे......म्रलिपि......य..................ण्डलु–

चलिदु निजाधिपं बेससिदेर्व्वेसनं कुसिदिर्म्मेकेल्दुवा-
ल्वलिपननव्यवशिवननोर्व्वेसकल्कुव जोळगल्लरं
पलियेदे पिळ्ळदोल्पलेयुतिर्प्पुदु मावन गन्धहस्तियं ॥
परबलवेयूदि कयदुवेडेयाडुव ताग्रदोलळि बीरमं
परवधु बट्टेलातरेडेयाडुववाग्रदोलळि सौचमं ।
परिकिसि सन्दरिळ्ळ पेरेरोार्व्वरुवेन्नलिदण्मु सौचमे-
म्बरदरेल............................ ....॥

(दक्षिण मुख)

..............................वागेदि-
ट्टिगरन...वुद्' दोरेगे बर्कुमे मावनगन्धहस्तियं ॥
श्रोडनेय नायकर्कुदिदु तागुमे...मल्व बकदोड्डुपु-

एवट्टुविलविरद्दु राजु अखण्डदुविदविनं नृद्दु वीरम-
चाङ्किविमयामें कीन्त्विदु नरदेवरालिपनेंडु पावनि-
तुडिदविसगवर मार्गुडेद्दलि भावगान्धदलिसं ॥
चूडामणिगळ राजपुत्रा-
र्डिदमाणिड अप्पनाय नन्दे संपद वि-
जय . .. .

(पश्चिममुख)

.. ..

.. अखण्ड कद पादपति विदाग्गुदविदवल्लवने
यवेअगन्द पिटु ते वीविनवीरवीरेवे प्रचण्डभुजदण्डंमावलगन्ध-
दन्ति चाविजमविनुतं मीनंगुटुं गण्डनाडववीण्ड वांपिय-
भानुसंवत्सरमधिकापादपखुल दसमीदिनदोन्मुड-
चरणमूवंदाञुमुनपरिवामदं पिट्टनिन्दमोवकोगद ॥

[यह लेख एक मालव .... नायक वीर बोधा की मृत्यु का स्मारक है। युद्ध में अद्वितीय वीरता के कारण इसे एक राजा राज-चूडामणि मार्गडेमल्ल ने अपनी सेना का नायक बनाया था। विजयभानु संवत्सर की कार्तिक वदि १० को इस वीर का स्वर्गवास हुआ। यह लेख बहुत घिस गया है इससे पूरा पूरा नहीं पढ़ा गया। शक सं० ६०४ विजयभानु संवत्सर था। लेख की लिखावट से भी यह समय ठीक सिद्ध होता है।]

५६ (७३)

शासन वस्ति के सामने एक शिला पर।

(शक सं० १०३९)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥
नमो वीतरागाय नमस्सिद्धेभ्यः ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द-महामण्डलेश्वरं द्वारवती-पुरवराधीश्वरं यादव-कुलाम्बर-द्यु-मणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलपरोलुगण्डाद्यनेकनामावली-समालङ्कृतरप्प श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबल-वीर-गङ्ग-विष्णुवर्द्धन-होय्सल-देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ जनताधारनुदारनन्यवनितादूरं वधूरसुन्दरी-
घन-वृत्त-स्तन-हारनुग्र-रणधीरं मारनेनेन्दवं ।
जनकं मारनेने माकणब्बे विबुध-प्रख्यात-धर्म-प्रयु-
क्त-निकामास्त-चरित्रे तायेनलिदेनेध् महाधन्यनो ॥ ३ ॥

कन्द ॥ विश्रुतमलं बुध-जन-मित्रं त्रिभकुलपवित्रनेथं जगदोलु ।
पात्रं रिपु-कुल-कन्द-खनित्रं कौण्डिन्य-गोत्रनमलचरित्रं ॥४॥
मनुचरितनेनिपगङ्गन

मनेयोलु मुनिजन समूहमुं बुधजनमुं ।
जिनपूजने जिनवन्दने ।
जिनमहिमेगलावकालमुं सोभिसुगुं ॥ ५ ॥
उत्तम-गुण-ततिवनिता—
वृत्तियनोलकोण्डुदेन्दु जगमेल्लम् क—
र्ग्गेत्तुविनममल-गुण-स-
म्पत्तिगे जगदोलगं पोच्चिकब्बेये नोन्तलु ॥ ६ ॥
अन्तेनिसिद एचिराजन पोचिकब्बेय पुत्रनखिलवी-
र्य्यंकरपरमदेवपरमचरित्राकर्ण्णनादीर्ण्ण-विपुल-पुलक-परिकलित
वारबाणनुवसम-समर-रम-रसिक-रिपुनृपकलापावलेप-लोप लो-
लुप-कृपाणनुवाहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-विनोदनुं सकललोक-
शोकापनोदनुं ।
वृत्त ॥ वत्संवत्सभूतो हल हलभृदयमं तथा चक्रिण-
श्शक्तिश्शक्तिधरस्य गाण्डिवधनुर्गाण्डीवकोदण्डिनः ।
यस्तद्वद्वितनोति विष्णुनृपतेत्कार्य्यं कथं मादृशै
र्गंङ्गो गङ्ग-तरङ्ग-रञ्जितयशो-राशिस्स-वर्ण्यो भवेत् ॥ ७ ॥
इन्तेनिप श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं द्रोहघरट्टं गङ्गराजं
चालुक्य-चक्रवर्ति-त्रिभुवनमल्ल-पेर्म्माडिदेवन दलंपमिन्वे-
र्स्सामन्तर्व्वरुमुकण्णेगाल-पोडिनलु विट्टिरे ॥
कन्द ॥ वेगं बाहबम हाहब
बगेयं बनगिरलुबरपेनुल मवह्लं ।
पुगुव कटकिगरनलिरं

पुगिसिदुदु भुजासि गङ्ग-दण्डाधिपन ॥ ८ ॥

वचन ॥ एम्बिनमवस्कन्दकेलियिन्द मनियद सामन्तरुम भङ्गिसिदवीय-वस्तुवाहन-समूहमं निजस्वामिगे वन्दु कोट्टु निजभुजावष्टम्भक्के मेच्चिमेच्चिदेवेदि कोळ्ळिमेने ॥

कन्द ॥ परम-प्रसादम पडे—
दु राज्यमं धनमनेनुमं बेडदन —
स्वरमागे बेडिकोण्डं
परमननिदनर्हदर्च्चनाश्रित-चित्तं ॥ ९ ॥

मन्तु बेडिकोण्डु—

वृत्त ॥ पसरिसे कीर्त्तनंजननि पोचलदेवियरर्थिवट्टु माडिसिद जिनालयक्कमोसेदात्म-मनोरमे लच्चिमदेवि माडिसिद जिनायलक्कमिदु पूजन योजितमेन्दु कोट्टु सन्तोसमनन्तमाम्पनेने गङ्गचमूपनिदेनुदारनो ॥ १० ॥

मकर ॥ श्रादियागिर्पुदार्हत-समयक्के मूलसङ्घ कोण्डकुन्दान्वयं

वाडु बेडदं बलियपुदलिय देसिगगणद पुस्तकगच्छद।
बोधविभवद कुक्कुटासन मलधारि-देवर शिष्यरेनिप पेम्पि-
द्विदर्मसेदिर्प्प शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डु गङ्गचमूपति ॥
गङ्गवाडिय बसदिगळनितावनितानेयदे पोसयिसिदं
गङ्गवाडिय गोम्मटदेवर्गं सुत्तालयमनेयदे माडिसिदं।
गङ्गवाडिय तिगुळरं बेङ्कोण्डु वीरगङ्गं निमिर्च्चिदे कोट्टं
गङ्गराजना मुन्निन गङ्गरायङ्गं नूर्मडियन्यनल्लं ॥ ११ ॥

एचिदनेल्लिगल्लि बेलेबीडने माडिदनेल्लिगल्लि कण्
पचिदुदेल्लिगल्लि मनमावेडेयेयदिदुदेल्लिगल्लि स-
म्पत्तिन जैनगेहमने माडिसे देशदोळेल्लिगल्लिगे-
सेत्तलुमावगं पल्लेय मालकंबोलादुदु गङ्गराजनि ॥ १३ ॥
जिनधर्म्माग्रिणियत्ति मब्बरसियं लोकं गुणंगोल्वुदे-
कंने गोदावरि निन्द कारणदिनीगलु गङ्गदण्डाधिना-
थनुमं कावेरि पेर्च्चि मुत्ति पिरिदुं नीरोत्तियुं मुट्टिवि-
ल्लेने सम्यक्तद पेम्पनिनेरेये बण्णिप्पण्णने बण्णिपं ॥१४॥

इन्तेनिप दण्डनायक गङ्गराजं मकवर्ष १०३६ नेय हेमल-
म्बि संवत्सरद फाल्गुण शुद्ध ५ सोमवार दन्दु तम्म गुरुगलु
शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेवर कालं कर्च्चि परमनं कोट्टर् ॥ दण्डनायक
एचिराजनुं तनगभिवृद्धियागे मलिसिदं । परमन सीमान्तरं
मूडलु सल्लयद कल्ल इलवे गडि । तेङ्कलु कडिद कुम्मरि होर-
गागि । इडुवलु बेक्कनोलगगेरेय माविनकेरेय गद्देयोलगागि ।
बेलुगोलक्के होद बट्टे गडि । बडगलु सेरे । नेरिल-केरेय
मूडण कोडिथि तेङ्कण होमगेरेय-च्चुगट्टादुदेल्लं । माडिसगेरेय
बडगण कोडियिन्दं मूड होद नीरडकेयिन्दं । अयकनकट्ट ।
साइबल्लदिन्द । तेङ्कलादुदेल्लविनितुं परमक्के सीमेयागि बिट्ट
दत्ति ॥ ईधर्म्ममं प्रतिपालि-सिदर्गो महापुण्यमक्कुं ॥
वृत्तं ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेयूदे काव-पुरुषगर्गायुं महाश्रीयुम
क्कंयिदं कायदे काम्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोल् वाणरा-

सियोव्वेल्कोटि मुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाळ्यरं कोन्दुदे-
न्दयसं सार्गुमिदेन्दु सारिदपु वीरीलाचर्रं सन्ततं ॥ १५ ॥

श्लोक ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेद्वसुन्धरां ।
षष्टिर्व्वर्ष सहस्राणि विष्ठायां जायते क्रमिः ॥ १६ ॥
बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यानि यानि यथा धर्म्मं तानि तानि तथा फलं ॥ १७ ॥
बिरुद-रूवारि-मुखतिलकं वर्द्धमानाचारि खण्डरिसिदं ॥

[यह लेख एक दान का स्मारक है। मार और माकियब्बे के पुत्र एचिराज हुए। एचिराज और पोचिकब्बे के पुत्र महाप्रतापी गङ्ग-राज हुए। ये होय्सल नरेश विष्णुवर्द्धन के महादण्डनायक थे। इन्होंने तिगुळों (तैलङ्गों) को परास्त कर गङ्गवाडि देश को वश किया तथा चालुक्य-नरेश त्रिभुवनमल्ल पेर्माडिदेव की सेना को जीतकर अपने भारी पराक्रम का परिचय दिया। उनकी स्वामि-भक्ति तथा विजय-शीलता से प्रसन्न होकर विष्णुवर्द्धन नरेश ने उन्हें पारितोषिक मांगने को कहा। उन्होंने 'परम' नामक ग्राम मांगा। इस ग्राम को पाकर उन्होंने उसे अपनी माता पोचल देवी तथा अपनी भार्या लक्ष्मीदेवी द्वारा निर्मापित जिन-मन्दिरों की आजीविका के हेतु अर्पण कर दिया। यह लेख इसी दान का स्मारक है। गङ्गराज जैसे पराक्रमी थे वैसे धर्मिष्ठ भी थे। इस दान के अतिरिक्त इन्होंने गङ्गवाडि परगने के समस्त जिन-मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया, गोम्मट स्वामी का परकोटा बनवाया तथा अनेक स्थलों पर नये-नये जिन-मन्दिर निर्माण कराये। लेख में कहा गया है कि इन कृत्यों से वया गङ्गराज गङ्गराय (चामुण्ड राय-गोम्मट स्वामी के प्रतिष्ठाकारक) की अपेक्षा सौ गुने अधिक धन्य

नहीं कहे जा सके ? लेख में ग्राम ग्राम की सीमा दी हुई है जिससे
विदित होता है कि यह ग्राम श्रवण बेल्गोळ के समीप ही ईशान दिशा
में था। उक्त दान शक संवत् १०४५, फाल्गुण सुदि ५ सोमवार को
दिया गया था। महाराज कुन्दकुन्दान्वय देशीगण पुस्तक गच्छ के
कुकुटासन मलधारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्त देव के शिष्य थे।
दान की रक्षा के हेतु लेख में कहा गया है कि जो कोई इस दान-द्रव्य
में हस्तक्षेप करेगा वह कुरुक्षेत्र व बनारस में सात करोड़ ऋषियों,
कपिल गौओं व वेदज्ञ पण्डितों के घात का पापी होगा।]

९० (१५८)

बाहुबलि बस्ति के पूर्व की ओर प्रथम पीरगल् पर

(लगभग शक सं० ८६२)

श्रीगाम्रयवेनें तेज-
कागरवेने नेगल्द गङ्गवज्रन शेङ्क
व्योगायूपनंम्बरवरा-
व्योगेय (बोयिग) मार्पेडेंगारपदलपनल बपट ॥ १ ॥
रक्षसमणिय कैराोवेयगङ्गन काळेगदाल्तल मार्ह जिरादिस
काळेगकिडे रक्षसमणिय कलिनिधि तम बलमु मार्व्वेंजगुतलनें पोगले।
धोडने काळग बयिसिद पोळयिळर्प्पेरपिङ्गिं माव्वेंळं
बिड़े कडिकम्दा नृङ्ग किडें तम बल पोरगाणदक्षि व-
न्दडिगेतदरन्दें बळियाजें पायिसि भूळमंडम पदल्
बडिसि पोगल्वेयं पडेदु दान्तुदु बोगिगनान्तानिबट ॥२॥
भदिरि...लिळ बहंगल कैराविंयगङ्गन मारदेळम

बेदरुविनं तेरल्चि पलरुं तुलिलाग्गलनिक्कि तन्न बी-
रद...ल्देल्येयं परबलं पोगल्लवडिकं...मागि बि-
ल्ददटिनलुर्केयं मेरेदु सावुदु बोयिगनन्तिलाप्रदोल् ॥३॥
नट्ट-सरल्गलिन्दिदक (फन्वयको) यिकिडि केय्दुबेडिरो-
ल्लिट्ट निसान्तहेतुगलिनादमगुर्व्विसिबट्टु बीलुत्ते-
त्वोट्टने नोन्दु बील्वेडेये(ल् नय्य) गोण्डु विमान म...लं
मुट्टलुमित्तरिछ्र गल बोयिगनं दिविजेन्द्र-कान्तेय... ॥४॥

[यह एक वीरगल है। इसमें उल्लेख है कि गङ्गवज्र (नरेश) अपर नाम रक्कसमणि के बोयिग नाम के एक वीर योद्धा ने 'बद्देग' और 'कोयेय गङ्ग' के विरुद्ध युद्ध करते हुए अपने प्राण विसर्जित किये। युद्ध में इसने ऐसी वीरता दिखाई कि जिसकी प्रशंसा उसके विपक्षियों ने भी की]

६१ (१३९)

उसी स्थान के द्वितीय वीरगल् पर

(लगभग शक सं० ८७२)

श्री-युवतिगे निज-विजय-
श्री-युवतिये सवतियेनिसे रण-मूर्ख-नृपा-
प्रायदोलायद मेयू-गलि
वायिकनेम्ब नेगल्तेयं प्रकटिसिदन् ॥१॥
श्री-दयितन वायिकन म-
नो-दयितेगे अभदाल्ञेसेद आयव्यगे वाम् ..

मादर्शनयपेंहल्
मादुपरं दोयिसम्मनेम्बर् पेसरिं ॥२॥
मवरोव-पुट्टिदोळरिविन
तवरेने धर्मदहरुन्तियंने नेगल्दरन्मु-
भुवनक्के सायियब्बिगम्
अवनिजेगं धोरेयेनल्के पेण्डिरुमोळर ॥३॥
घोरन वनयं विवुधो-
दारं परंगेढद श्रीक-विद्याधरनन्त्
आ-रमणिगे पवियेने पेरर्
आदमनामविष पेण्पिनोळ् पोळिपुदे ॥४॥
श्रावक-धर्म्मदाळ् दोरेयेनल् पेररिद्दने सन्द रेवति-
श्रावकि ताने सच्छनिकेपोळ् जनकात्मजे ताने रूपिनाळ्-
देवकि ताने पेण्पिनोळरुन्धति ताने जिनेन्द्र-भक्ति-यद्-
भावदे सायियब्बे जिन-शासन-देवते ताने काणिरे ॥५॥
उदयविद्याधरनाप सायिब्बेन्न

(उसी पाषाण के शिखर पर)

···रियिसिदरि······आ मा ·····द जन······न्दे सुप...
...रदि········ जि···प ··मु··· ··वनि····· न प···मुदिद-
गिदन्दराणि पविवानिवगानादंनेदल्कि मुनोळ् काहि वज्ञि··· ··
विस्तवरन जननि सायिब्बे कण्ड ·····विररदे केन्मार जि···
माळामद·······करिद···जिनेन्नुमदे मुडियिदे···हागि···पुदेदु

नुव गदल् बगियुरल्लि सत्तल् ······वेत्त······यव्वे सायब्बेन्दु पेण्डतिये······वोत्तणनलोगल्लो पलरुं वोलगिद रायद चल मसुव वलगि गन्दिनिप्पण्डतियिन् ।

[यह भी एक वीरगल है जिसमें पराक्रमी और प्रसिद्ध बाविक और जावय्ये की पुत्री 'सावियब्बे' का परिचय है। सावियब्बे का पति 'धोर' का पुत्र 'लोक विद्याधर' था। यह स्त्री रेवती, देवकी, सीता, अरुन्धती आदि सदृश रूपवती, पतिव्रता और धर्मप्रिया थी। वह पक्की श्राविका थी। जिन भगवान् में उसकी शासन देवता के सदृश भक्ति थी। उसने 'बगियुर' नामक स्थान पर अपने प्राण विसर्जित किये]

[नोट—लेख का अन्तिम भाग जिसमें इस वीराङ्गना के प्राण-त्याग का वर्णन है, बहुत घिस गया है इससे स्पष्ट नहीं है। ऐसा कुछ विदित होता है कि यह सती स्त्री अपने पति के साथ युद्ध में गई थी और वहां लड़ते-लड़ते इसने वीरगति पाई। लेख के ऊपर जो चित्र खुदा है उसमें यह स्त्री घोड़े पर सवार हुई हाथ में तलवार लिये हुए एक हाथी पर सवार वीर का सामना करती हुई चित्रित की गई है। हाथी पर चढ़ा हुआ पुरुष इस पर वार करता हुआ दिखाया गया है। 'साविब्बे' सावियब्बे का संक्षेप रूप है]

६२ (१३१)

गन्धवारण वस्ति में शान्तीश्वर की मूर्त्ति के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० १०४४)

प्रभाचन्द्र-मुनीन्द्रस्य पद-पङ्कजषट्पदा ।

शान्तला शान्ति-जैनेन्द्र-प्रतिबिम्बमकारयत् ॥१॥

(सिंहपीठ पर)

उद्यद्वक्त्र-युगं दर्पोल्लसत्लसत् मदविभ्रमं भ्रूयुगं
काठिण्यं कुचयोर्नितम्ब-फलके धत्तेऽतिमात्र-क्रमम् ।
दोषानेव गुणीकरोषि सुभगे सौभाग्य-भाग्यं तव
व्यक्तं शान्तल-देवि वक्तुमवनौ शक्नोति को वा
कविः ॥२॥

राजते राज-सिंहीव पार्श्वे विष्णु-महीभृतः ।
विख्याता शान्तलाख्या सा जिनागारमकारयत् ॥३॥

[नोट—गन्धवारण बस्ति का निर्माण शान्तल देवी ने शक सं० १०४४ विरोधिकृत् संवत्सर में अपनी मृत्यु से पूर्व कराया था। देखो लेख नं० ५६ (१४१)]

६१ (१२०)

एरडु कट्टे बस्ति में आदीश्वर की मूर्त्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०४०)

शुभचन्द्र-मुनीन्द्रस्य सिद्धान्त सिन्धु-नन्दिनः ।
पद-पद्म-युगं लक्ष्मीर्लक्ष्मीरिव विराजते ॥१॥

या दीता पतिदेवताव्रतविधौ जान्हवी रेवतिर्वा पुन-
र्या वाचा वचनं जिनार्च्चनविधौ या चोद्भवे कवस्
कार्ये नीतिवधू रणे जय-वधूर्व्वा प्रकृतेनापतेः

सा लक्ष्मीर्व्वसति गुणैक-वसति र्व्यातीवनप्रूवनान् ॥ २ ॥
श्रीमूलसङ्घद देसिग गणद पुस्तकान्वय ॥

६४ (७०)

कत्तले बस्ति की ऊपर की मञ्जिल में आदीश्वर की मूर्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०४०)

भद्रमस्तु श्रीमूलसङ्घद देसिकगणद श्रीशुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डं दण्डनायक-ग(ङ्ग)ग्यनु तम्म तायि पोचब्बेगे माडिसिदो बसदि मङ्गलं ॥

[दण्डनायक गङ्गराज्य (या गङ्गमय्य) शुभचन्द्रसिद्धान्तदेव के शिष्य, ने यह बस्ती अपनी माता पोचब्बे के लिए निर्माण कराई। (आगे का लेख देखो।)]

६५ (७४)

शासन बस्ति में आदीश्वर की मूर्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०४०)

आचार्यश्शुभचन्द्रदेवविदितः सिद्धान्तरत्नाकर-
स्तस्याभूद् बुधमित्रनामगणिनी माता च पोचाम्बिका।
[illegible]
[illegible] ॥ १ ॥

९६ (१२०)

चामुण्डराय वस्ति में नेमीश्वर की मूर्त्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०६०)

गङ्गसेनापतेस्सूनुः चामुण्डो भारतीभवः ।
त्रैलोक्यरञ्जनं जैनचैत्यालयमचीकरत् ॥ १ ॥
बुधबन्धुरसतां बन्धुरेचणः कमलाभवः ।
बोप्पणापरनामाढ्यचैत्यालयमचीकरत् ॥ २ ॥

९७ (१२१)

ऊपर की मञ्जिल में पार्श्वनाथ की मूर्त्ति के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० ९९९)

जिन गृहमं पेळ्गोळदोळ्
जनमेल्लं पोगळे मन्त्रि-चामुण्डन न-
न्दननोळ्पि माडिसिदं
जिन-देवणनजितसेन-मुनिवर गुड्डं ॥ १ ॥

[चामुण्ड के पुत्र और अजितसेन मुनि के शिष्य जिनदेवन ने बेलगोल में जिन मन्दिर निर्माण कराया ।]

६८ (१५७)

काञ्चिन दोणे के एक स्तम्भ पर

(शक सं० १०५८)

(उत्तर मुख)

श्रीमत्-परम-गम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥-

स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्नरप्प श्रीमत् **त्रिभुवनमल्ल** चलद-ङ्कराव **होय्सल-सेट्टियरु** बय्यावलेय युण्डिगेय **दम्मिसेट्टिय** मग **मल्लि-सेट्टिगे** चलदङ्कराव-होय्सलसेट्टिय् एन्दु पेसरकोट्टरिन्तु **सकवर्ष १०५८ सौम्यसंवत्सरद** माघ-मासद शुक्ल-पक्षद सङ्क्रमणदन्दु तन्नवसानमनरिदु तन्न बन्धुगलं त्रिडिसि समचित्तदोलु सुडिपि स्वर्गस्थनादं ॥

(पश्चिम मुख)

भावन सति एन्तप्पलेन्दडे ॥

तुरवम्मरसग सुगवेग सुपुत्रि स्वस्ति श्रीजिन-गन्धोदक-पवित्री - कृतोत्तमाङ्गे युरुमाहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोदेयरप्प **चट्टिकब्बे** तन्न पुरुष **चलदङ्कराव होय्सल** सेट्टिगं वनगं तन्न मग **बूचणङ्ग** परोक्ष-विनेयमागि माडिसिद निसिधिगे ॥

[त्रिभुवनमल्ल चलदङ्करावहोय्सलसेट्टि ने दम्मिसेट्टि के पुत्र मल्लिसेट्टि को चलदङ्करावहोय्सलसेट्टि की उपाधि प्रदान की। मल्लिसेट्टि 'बय्यावले' के एक राज्यकर्मचारी (युण्डिगेय) थे। इनकी पत्नी जैनधर्म-परायणा चट्टिकब्बे थीं जिसके पिता और माता के नाम

क्रमशः गुरवम्मरस और सुग्गब्बे थे। इसी साध्वी स्त्री ने अपने पति की यह निषद्या निर्माण कराई।]

[नोट—अरघावले सम्भवतः बम्बई प्रान्त के कलादि जिलान्तर्गत आधुनिक 'ऐहोळे' का ही प्राचीन नाम है। लेख में शक १०२१ सौम्य संवत्सर का उल्लेख है। पर ज्योतिष-गणना के अनुसार शक १०२१ पिङ्गल संवत्सर था और सौम्य संवत्सर उससे आठ वर्ष पूर्व शक सं० १०२१ में था। अतएव लेख का ठीक समय शक सं०१०२१ ही प्रतीत होता है]

६८ (१५८)

काञ्चिन दोणे के प्रवेशद्वार के निकट पड़े हुए एक टूटे पाषाण पर*

(लगभग शक सं० १०८२)

(प्रथम मुख)

....

....................ध्यावृत्तविच्छिदये।

...क...कलिकल्मषपलनुदिनं श्रीबालचन्द्रंमुनि
पश्याम श्रुत-रत्न-रोहणधरं धन्यास्तु नान्ये वयं ॥१॥

प्रचुर-कलान्वितरकुटिलरचबलसुंद-पद-युत-
दोषापचय-प्रकाशरेंनबालचन्द्र देवप्रभावमेनचरियें॥२॥

श्री बालचन्द्र ....

---

* यह पाषाण अब नहीं मिलता।

(द्वितीय मुख)

.........भद्रमप्प त्रिलो......वरविदितपूर्त्त निल-कीर्त्ति-चिल-समुचितचरितो य...र-धृव...धुविनु......यित्वाई भुजविम्बचितमणि ....कर स्वं चिरादिमु......सम... ......गतिभिस्स......चत्रियरुद्र-श्रीकवि......नघ......... श्रीवर्द्ध...

(तृतीय मुख)

....रानो वभा......चित्रवनूभूताम......यतेवरा...। सकल......वन्ध पादारविन्दं स...ममूर्त्ति सर्व्वसत्वा...वक्र-दुरित-राशिभव्यद......नुविजित - मकरकेतु.........र्तिम्र-तीन्द्रं। भानो... ..सुविक...चक्रा......रो तत्पद् भव......

[यह लेख बहुत टूटा हुआ है। इसमें बालचन्द्र मुनि की कीर्ति वर्णित रही है। द्वितीय पद्य पम्परामायण (आश्वास १ पद्य ८) में भी पाया जाता है।]

७० (१५५)

ब्रह्मदेव मन्दिर के निकट पड़े हुए एक टूटे पाषाण पर

(लगभग शक सं० १०८२)

......दा...न्वयद हुन...य वलिय श्रीगुणचन्द्रसिद्धान्त-देवरमशिष्यरु श्रीनयकीर्त्तिसिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्री-

दामणन्दित्रैविद्य-देवर्ं भानुकीर्त्तिसिद्धान्तदेवरुं श्री प्रभा-
चन्द्रदेवरु ॥

परमागमवारिधि (हिम-
कर)र्म राद्धान्तचक्रि नयकीर्त्तियमी-
श्वरशिष्यन..... ळाधिन
पवित्रचारित्र मा(माघ)नन्द्र मुनीन्द्रं ॥ १ ॥
बाळचं . ...

[यह लेख अधूरा ही रह गया है। इस (आगे) लेखों के [illegible] सिद्धान्तदेव के प्रमुख शिष्य नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवर्ती के [illegible] दाम नन्दि त्रैविद्य देव, भानुकीर्ति सिद्धान्तदेव और [illegible] माघ-नन्दि के नाम लिखे हुए। [illegible] की प्रशंसा कर [illegible] है यह [illegible] के अन्त में भी पाया जाता है देखो शिलालेख नं० [illegible]]

४१ (१६६)

भद्रबाहु गुफा के भीतर पश्चिम की ओर

चट्टान पर० (नागरी अक्षरों में)

(लगभग शक सं० १०२९)

श्रीभद्रबाहु स्वामिय पादमं जिनचन्द्र प्रणमतां।

* यह लेख अब नहीं मिलता।

७२ (१६७)

भद्रबाहु गुफा के बाहर पश्चिम की ओर चट्टान पर

(शक सं० १७३१)

शालिवाहन शकाब्दाः १७३१ नेय शुक्लनामसंवत्सरद भाद्रपद ब ४ बुधवारदलि । कुन्दकुन्दान्व्य (न्वय) देसिगणद चारु। शिष्यराद अजितकीर्त्ति-देवर प्रधर शिष्यर शान्ति-कीर्त्ति देवर शिष्यराद अजितकीर्त्तिदेवरु मासोपवासदिं सम्पूर्णं माडि ई गरियल्लि देवगतरादरु ।

[कुन्दकुन्दान्वय देशीगण के चारु (कीर्ति पण्डितदेव) के शिष्य अजितकीर्ति देव के शिष्य शान्तिकीर्ति देव के शिष्य अजितकीर्ति देव ने एक मास के उपवास के पश्चात् शक सं० १७३१ भाद्रपद वदि ४ बुधवार को स्वर्गगति प्राप्त की ।

७३ (१७०)

भद्रबाहु गुफा के मार्ग पर चरणचिह्न के पास चट्टान पर

(लगभग शक सं० ११३४)

श्रीमा ईश्वर म यारमरद् मलवार केतरु मकुल [illegible]

[इस लेख में [illegible] 'मलवार केतरु मकुल' के [illegible]
[illegible]

पर बाण चढ़ाये। लेख में संवत्सर का नाम ईश्वर दिया हुआ है। शक ११३६ ईश्वर संवत्सर था]

७४ (१६५)

प्राकार के बाहर दक्षिण भागस्थ तालाब के उत्तर की ओर चट्टान पर

(सम्भवतः शक सं० ११६८)

स्वस्ति श्रीपराभवसंवत्सरद मार्ग्गसिर बहुल अष्टमी शुक्रवारदन्दु मलेयाल पम्पाडि-नायक हिरिय-बेट्टदि चिक्कबेट्टक्केरेव ॥

['मलेयाळ पम्पाडि नायक' ने विन्ध्यगिरि से चन्द्रगिरि का निशाना लगाया। लेख में पराभव संवत्सर का उल्लेख है। शक ११६८ पराभव संवत्सर था]

७२ (१६७)

भद्रबाहु गुफा के बाहर पश्चिम की ओर चट्टान पर

(शक स० १७३१)

शालिवाहन शकाब्दा: १७३१ नेय शुक्लनामसंवत्सरद भाद्रपद व ४ बुधवारदल्लि । कुन्दकुन्दान्य (न्वय) देसिगणद श्री चारु। शिष्यराद अजितकीर्त्ति-देवरु अवर शिष्यरु शान्ति-कीर्त्ति देवर शिष्यराद अजितकीर्त्तिदेवरु मासोपवासवं सम्पूर्ण माडि ई गतियल्लि देवगतरादरु ।

[कुन्दकुन्दान्वय देशीगण के चारु (कीर्ति पण्डितदेव) के शिष्य अजितकीर्तिदेव के शिष्य शान्तकीर्ति देव के शिष्य अजितकीर्ति देव ने एक मास के उपवास के पश्चात् शक सं० १७३१ भाद्रपद वदि ४ बुधवार को स्वर्गगति प्राप्त की।]

७३ (१७०)

भद्रबाहु गुफा के मार्ग पर चरणचिह्न के पास चट्टान पर

(सम्भवत: शक स० ११३७)

स्वस्ति श्री ईश्वर संवत्सरद मलयाल कोरयु-सब्बुरु इल्लिदं एव गदेय हदुगण कुणियिमेय मूडणदिग्गे

[इस स्थान पर खड़े होकर 'मलयाल कोरयु सब्बुर' ने चार' भूमि के पश्चिम की ओर इमली के वृक्ष के समीप की तीन दिशाओं

पर बाण चढ़ाये। लेख में संवत्सर का नाम ईश्वर दिया हुआ है। शक ११२६ ईश्वर संवत्सर था]

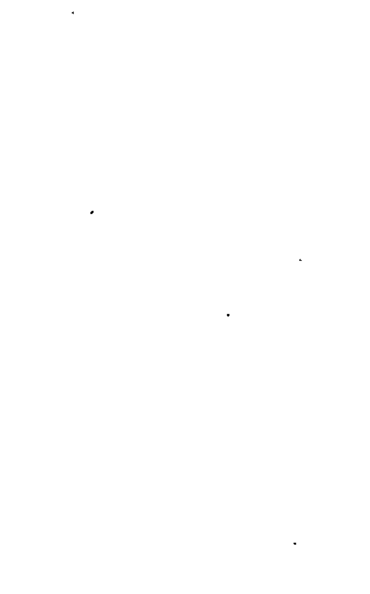
७४ (१६५)

प्राकार के बाहर दक्षिण भागस्थ तालाब के उत्तर की ओर चट्टान पर

(सम्भवतः शक सं० ११६८)

स्वस्ति श्रीपराभवसंवत्सरद मार्ग्गसिर बहुल अष्टमी शुक्रवारदन्दु मलेपाल मण्डलि-नायक हिरियबेट्टदि चिक्कबेट्टक्केच्च ॥

['मलपाल मण्डलि नायक' ने विन्ध्यगिरि से चन्द्रगिरि का निशाना लगाया। लेख में पराभव संवत्सर का उल्लेख है। शक ११६८ पराभव संवत्सर था]



विन्ध्यगिरि पर्वत पर के शिलालेख

७५ (१७९-१८०)

गोम्मटेश्वर की विशालमूर्त्ति के वामचरण के पास

नागरी अक्षरोंमें

श्री चावुण्डे-राजें करवियले।

(लगभग शक सं० ९५०)

श्रीगङ्गराजे सुत्ताले करवियलें।

(लगभग शक सं० १०३९)

[चामुण्डराज ने (मूर्ति) प्रतिष्ठित कराई। गङ्गराज ने परकोटा निर्माण कराया।]

७६ (१७५,१७६,१७७)

दक्षिणचरण के पास

(पूर्वद हले कन्नड़ अक्षरों में) श्रीचामुण्डराजं माडिसिदं।
(अन्य और वट्टेलुत्तु,, ,,) श्रीचामुण्डराजन् शेय्वित्तान्।
(कन्नड़ अक्षरों में) श्रीगङ्गराज सुत्तालयवं माडिसिदं।

[तात्पर्य पूर्वोक्त और समय भी पूर्वानुसार]

३७ (१८४)

पद्मासन पर

(लगभग शक सं० १०७२)

स्वस्ति समस्तदैत्यदिविजाधिप-किन्नर-पन्नगानम-
न्मस्तक-रत्ननिर्गत-गभस्तिशवावृत-पाद.....।
प्रास्त-समस्त-मस्तक-तमः-पटलं जिनधर्म्मशासनम्
विस्तरमार्गनिलके धरे-वारुधि-सूर्य्यशशाङ्कउळ्ळिनं ॥ १ ॥

[जैनशासन सदा जयवन्त हो।]

३८ (१८२)

वाम हस्त की ओर कमीठे पर

(लगभग शक सं० ११२२)

श्रीनयकीर्त्तिसिद्धान्तचक्रवर्त्तिगळ गुड्ड श्रीवसविसेट्टियरु सुत्तालयद भित्तिय माडिसि चव्वीसतीर्थंकरं माडिसिदर भक्त श्री वसविसेट्टियर सुपुत्ररु नम्बिदेवसेट्टि वोकिसेट्टि जिन्निसेट्टि बाहुबलि-सेट्टि तम्मदय माडिसिद तीर्थंकर मुन्दण जालान्दरवं माडिसिदरु ॥

[नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्ति के शिष्य वसविसेट्टि ने परकोटे की दीवाल बनवाई और चौबीस तीर्थंकरों को प्रतिष्ठित कराया व उनके पुत्र नम्बिदेव सेट्टि, वोकिसेट्टि, जिन्निसेट्टि और बाहुबलि सेट्टि ने तीर्थंकरों के सम्मुख जालीदार वातायन बनवाया।]

७६ (१८३)

उपर्युक्त लेख के नीचे जहाँ से मूर्ति के अभिषेक के लिए व्यवहार में लाया हुआ जल बाहर निकलता है

(लगभग शक सं० ११२२)

श्रीजलित सरोवर

८० (१७८)

दक्षिण हस्त की ओर बमीठे पर

(लगभग शक सं० १०८०)

श्रीमन्महामण्डलेश्वर प्रतापहोय्सल नारसिंहदेवर कैयलु महाप्रधान हिरियभण्डारि हुल्लमय्य गोम्मटदेवर पारिश्वदेवर चतुर्व्विंशतितीर्त्थकर अष्टविधार्च्चनगं रिषियराहारदानकं सवणेरं बिडिसि कोट्ट दत्ति ।

[महाप्रधान हुल्लमय्य ने अपने स्वामी होय्सल नरेश नारसिंहदेव से सवणेरु (नामक ग्राम पारितोषक में) पाकर इसे गोम्मट स्वामी की अष्टविध पूजन और ऋषि मुनि आदि के आहार के हेतु अर्पण कर दिया]

८१ (१८६)

तीर्थंकर सुत्तालय में

(सम्भवतः शक सं० ११४३)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज-परमेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सर्वज्ञ-चूडामणि मगरराज्यनिर्म्मूलनं चोलराज्य-प्रतिष्ठाचार्य्यं श्री-मत्प्रतापचक्रवर्त्ति दोय्सल-श्रीवीरनारसिंहदेवरस पृथ्वीराज्यं गेय्युत्तिरलु तत्पादपद्मोपजीविगुं श्रीमन्नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्रीमदध्यात्मबालचन्द्रदेवर गुड्ड स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्ननुं जिनगन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गनुं सद्धर्म्म-कथाप्रसङ्गनुं चतुर्व्विधदानविनोदनुमप्प पदुमसेट्टिय मग गोम्मटसेट्टि खरसंवत्सरद पुष्य शुद्ध उत्तरायण-सङ्क्रान्ति पाडिदिव बृहवारदन्दु श्रीगोम्मटदेवर चव्वीसतीर्थंकर अष्ट-विधार्च्चनेगे अक्षयभण्डारवागि कोट्ट गद्याण ॥ १२ ॥

[होय्सल नरेश नारसिंह के राज्य में पदुमसेट्टि के पुत्र व अध्यात्मि बालचन्द्रदेव के शिष्य गोम्मट सेट्टि ने गोम्मटेश्वर की पूजार्चन के लिए १२ 'गद्याण' का दान दिया।]

[नोट—दान 'खर' संवत्सर की उक्त तिथि को दिया गया था। शक सं० ११२३ खर संवत्सर था।]

८२ (२५३)

ब्रह्मदेव मण्डप में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १३४४)

(दक्षिण मुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
श्रीबुक्करायस्य बभूव मन्त्री श्रीवैचदण्डेश्वरनामधेयः ।
नीतिर्यदीया निखिलाभिनम्या निश्शेषयामास विपक्ष-
लोकम् ॥ २ ॥

दानं चेतकथयामि लुब्धपदवीं गाहेत सन्तानको
वैदग्धिं यदि मा बृहस्पतिरुपा कुत्रापि सेलीयते ।
चान्ति चेदनपायिनीं जडतया स्पृश्यत सर्व्वं सहा
स्तोत्रं वैचपदण्डनेतुरवनौ शक्यं कवीनां कथं ॥ ३ ॥
तस्मादजायन्त जगज्जयन्तः पुत्रास्त्रयो भूषितचारुशीलाः ।
यैर्भूपितोऽजायत मध्यलोको रत्नैस्त्रिभिर्जैन इवापवर्गः ॥ ४ ॥
इरुगपदण्डनाथमथ बुक्कणमप्यनुजौ
स्वमहिमसम्पदाविरचयन् सुतरां प्रथितौ ।
प्रतिभटकामिनीपृथुपयोधरहारहरो
महितगुणोऽभवद् जगति मङ्गपदण्डपतिः ॥ ५ ॥
दाक्षिण्यप्रथमास्पदं सुचरितस्यैकाश्रयस्सत्कथा-
गाधारस्सतत वदान्यपदवीमभ्यारजङ्घालकः ।
धर्म्मोपक्रतरः क्षमाकुलगृह सौजन्यसङ्केतभू
कीर्त्तिं मङ्गपदण्डपोऽयमतनोऽजैनागमानुव्रतः ॥ ६ ॥
जानकीत्यभवदस्य गेहिनी चारुशीलगुणभूषणोज्वला ।
जानकीव रघुवृत्त-मध्यमा राघवस्य रमणीयतेजसः ॥ ७ ॥
श्रान्तां तयोरस्तमितारिवर्गौ पुत्रौ पवित्रीकृतधर्म्ममार्गौ ।
जायानभूत्तत्र जगद्विजेता भव्याग्रणी र्व्वैचपदण्डनाथः ॥ ८ ॥

इरुगपदण्डाधिपतिस्तस्यावरजस्समस्तगुणशाली ।
यस्य यशश्चन्द्रिकया मीलन्ति दिवाप्यरातिमुखपद्माः ॥ ९॥

वृत्त ॥

ब्रह्मन् भाललिपि प्रमार्ज्जय न चेद् ब्रह्मत्वहानिर्भवे-
दन्यां कल्पय कालराजनगरीं तद्वैरिपृथ्वीभृतां ।
वेताल व्रज वर्द्धयोदरवति पानाय नव्यासृजां
युद्धायोद्धतशात्रवैर् इरुगपक्ष्मापः प्रकोपोऽभवत् ॥ १० ॥
यात्रायां ध्वजिनीपतेरिरुगपक्ष्मापस्य धाटीघटद्-
घोटोघोरखुरप्रहारतविभिः प्रोद्धूतधूलिव्रजैः ।
रुद्धे भानुकरेऽगमद्रिपुकराम्भोजं च संकोचनम्

(पश्चिम मुख)

प्रापत्कीर्त्तिकुमुद्वती विकसनं दीप्तः प्रतापानलः ॥ ११ ॥
यात्रायामिरुगेश्वरेण महसा शून्यारिसौधाङ्गण-
प्रोद्दाम द्रुमकान्तकान्तशकले गच्छद्वनेभाधिपः ।
दृत्वा स्वप्रतिमां प्रतिद्विपमिति छिन्नैकदन्तस्तदा
प्राहि प्राहि गजाननेति बहुधा वेतालवृन्दैस्स्तुतः ॥ १२ ॥
को धाता लिखितं ललाटफलके वर्म प्रमाष्टुं क्षमो
वार्त्ता धूर्त्तवचोमयीमिति वयं वार्त्तामि मन्यामहे ।
यद् धाट्यामिरुगेन्द्रदण्डनृपतेः सञ्जातमात्रे श्रियो
निरक्षोऽप्यधिकश्रियापदि रिपुस्सश्रीरसश्रीकृतः ॥ १३ ॥
यद् धाटीरिरुगेन्द्रदण्डनृपतेर्व्विभ्रत्यनन्वापुरं
शेषाधीशफणागणे निवमिता सस्वाङ्गनावासरा ।

शाकालिङ्गमसान्द्रगन्धबहुलप्रोद्यत्सुरोमावलिः
श्रीदर्पा दसनामभासवगुणान् श्रातुं श्रुतार्थैः कवी ॥ १४ ॥

आदारमप्यदभवार्ज्जवमैत्रयं च

शौचं च तस्य सममावपतनिरवदानम् ।

हिमानृताव्यवनिताव्यसने स चौर्य्यं

मूर्च्छा च देशयतोऽस्य बभूव दूरे ॥ १५ ॥

दाने चास्य गुणात्र एव करुणा दीनेषु दृष्टिर्जिने
भक्तिर्धर्म्मपथे जिनेन्द्रपदसामाचर्म्मनेषु श्रुती ।
जिह्वा सद्गुणकीर्त्तनेषु वपुषस्सौख्यं च सद्वन्दने
प्रायं तवगणाश्रयौरभरं सर्व्वं च तत्संवने ॥ १६ ॥

यिहगपदप्पनाययदामा धवले भुवने
मलिनिमसंस्तवः परमधीरदशा चिकुरे ।
वहति च तस्य बाहुपरिघे धरणीवलयं
परमितवीरराजम-कथापि च तत्कृपयोः ॥ १७ ॥

कर्ण्णैर्न्विस्मृतकुण्डलैरविरलकासड्डैः स्खलल्लाटस्थलै-
दाक्षीर्ण्णैरलकैः पर्याधरतटैरस्पृष्टमुक्तागुणैः ।
बिम्बोष्ठैरपि वैरिराजसुदृशामुत्रागोज्झितै-
र्यस्य स्फारतरं प्रतापममकृद् व्याकुर्व्वते सर्व्वतः ॥ १८ ॥

पूर्वमुख)

यत्कीर्त्तिभिस्सुरधुनीपरिलङ्घिनीभि-

र्धौत चिराय निजबिम्बगतं कलङ्कं ।

स्वच्छात्मप्रकस्तुहिनदीधितिरङ्गनाना-
मव्याजमाननरुचि कवलीकरोति ॥ १९ ॥

यत्पादाब्जरजःकणा प्रसुवते भक्त्या नतानां भुवं
यत्कारुण्यकटाक्षकान्तिलहरी प्रक्षालयत्याशय ।
मोहाहङ्कृरणं चिखोति विमला यद्वैखरीमैाखरी
वन्द्यः कस्य न माननीयमहिमा श्रीपरिडताय्यों यतिः
॥ २० ॥

मन्दारद्रुममञ्जरीमधुभरीमञ्जुस्फुरन्माधुरी-
प्रौढाहङ्कृतिरूढिपाटवपरीपाटी कृकाटी भटः ।
नृत्यद्दुर्दकपर्दगर्त्तविलुठत्स्वर्लोककल्लोलिनी-
सख्यापी खलु परिडतार्य्ययमिनो व्याख्यानकोलाहलः
॥ २१ ॥

कारुण्यप्रथमावतारसरणिरशान्तेर्न्निशान्तं स्थिरं
वैदुष्यस्य तप.फलं सुजनवासीभाग्यभाग्योदयः ।
कन्दर्पद्विरदेन्द्रपञ्चरदनः काव्यामृतानां खनि-
र्ज्जैनाध्याम्बरभास्करश्श्रुतमुनिर्ज्जागर्त्ति नम्रार्च्चितेन् ॥ २२ ॥

युक्त्यागमाम्र्णवविलोडनमन्दराद्रि-
रध्यात्मागमाम्बुरुहकाननपाजसूर्यः ।
शुद्धाशयः प्रतिदिनं परमागमेन
सवर्द्धते श्रुतमुनिर्य्यतिसार्व्वभैामः ॥ २३ ॥

वत्सान्वितौ वेणुगुंल अगदमलतीर्थं
श्रीमानसाविरुगपाड्य दण्डनाथः ।

श्रीगुम्मटेश्वरमनवनतांगद्दंता-
ममांबाकमं येलुगुलाच्यमदपधीरः ॥ २४ ॥
शुभकृति वत्सरे जयति कार्त्तिकमासि तिथौ ।
सुरपवनस्य पुष्टिगुपत्रगुरि शीतकरौ ॥२५॥
गङ्गुरवर्न स्वनिर्मितनवीनतटाकयुतम् ।
नवितकुञ्जावलीरचितशर्करं मुदितः ॥२६ ॥
दुरितपदण्डाधीरस्सिमित्रवशःकमलमडैनपंत्रं ।
आचन्द्रतारकमिदं येलुगुलतीर्थं प्रकाशतामतुल ॥२७ ॥
दानपालनयोर्मध्ये दानाच्छ्रेयोनुपालनं ।
दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युतं पदं ॥२८॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमिः ॥२९॥
मङ्गल महा श्री श्री श्री श्री ॥

८३ (१४६)*

नं० ८२ के पश्चिम की ओर मण्डप में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १६२१)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥१॥

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय शालिवाहनशकवर्ष १६२१ नेसलुव प्रमाथि संवत्सरद कार्त्तिक ब १३ गुरुवारदल्लु श्रीमत् महाराजाधिराज राजपरमेश्वर कर्णाटकराज्याभिषवस

* लेख के नीचे का नोट देखो ।

परितृप्त परमाह्लाद परममङ्गलीभूत षड्दर्शनसंरक्षणविचक्षणोपाय विद्वद्गरिष्ठदुष्टदुष्प्रजनमदविभञ्जन महिसूर धराधिनाथरप्प दोडकृष्णराजवडेयरैयनवरु ॥ मत्तं ॥

वृत्त ॥ जनताधारनुदारसत्यसदयं सत्कीर्त्तिकान्ताजयं
विनयं धर्म्मसदाश्रयं सुखचयं तेजः प्रतापोदयं ।
जननाथं वरकृष्णभूवरलमत्प्रख्यातचन्द्रोदयं
घनपुण्यान्वितचत्रियाग्र पडेदं सद्धर्म्मसम्पत्तियं ॥२॥

कन्द ॥ श्रीमद्बेल्गुलदचलदि
सोमार्क्कर जरिव देवगोमटजिनपन ।
श्रीमुखवयलोकिसलोड-
नामोदवु पुट्टि हरुषभाजननुसुदं ॥३॥

वचन ॥ पार्थिवकुलपवित्रनुं कृष्णराजपुङ्गवनुं बेलुगुलद जिनधर्म्मके बिट्टन्थ ग्रामाधिग्रामभूमिगल् । श्राहंनहल्लियुं । होसहल्लियुं । जिननाथपुरं । बस्तियमाममुं । राचनहल्लियुं । बम्मनहल्लियु । जिननहल्लियुं । कोप्पलुगल् बेलुगुलनबेलुगुलममतं । सप्तसमुद्रमुद्रितन्नेत्र सप्तपरमस्थानाधिपतियप्प गोम्मटस्वामियवर पूजोत्सवङ्गल पुण्यसमृद्धिसम्प्राप्तवनिमित्तवाँगियुं । अरनाळ्रमित्र–गाधिपूर्व्वकं सर्व्वमान्यवागि दयपालिसियु मत्तं ।

कन्द ॥ धिगर्दरालङ्कल्या-
धिप भागदोलिर्प्प षमङ्गलगिनिलिगे ।

सुगुणिगु कवालेमामव
जगदेरयनु कृष्णराजयोत्तर नित्तं ॥४॥

इन्ती बेलुगुळधर्म्मेगु
मन्तरिसदे चन्द्रसूर्य्यरुळ्ळन्नेवरं ।
सन्तसदिन्देम्मय भू-
कान्तन रक्षिसलि धर्म्मवृद्धिय बेडेयं ॥५॥

यी धर्म्मवं परिपालिसिदवर् धर्म्मार्त्थकाममोक्षङ्गळं पडेदवि
पडेयुवर् ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दी जिनधर्म्मवं नडेयिपर्गायुं महाभागु-
मक्केयिदं कायद नीचपापिगे कुरुक्षेत्रादियोळु वाराण-
शियोळकोटि मुनीन्द्रर कपिलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदा-
ग्रहमक्के सार्गुमिदेन्दु कृष्णनृपरीशाशासनं ओमिसळू ॥

इतिमङ्गलं भवतु ॥ श्री श्री श्री ॥

[मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर ने गोम्मटेश्वर भगवान के दर्शन किये और हर्ष से पुलकित होकर बेल्गोल में जैन धर्म के प्रभावनार्थ सदा के लिए कुछ ग्रामों का दान किया। इन ग्रामों में बेल्गुल भी है]

[नोट—लेख में शक सं० १६६१ सोमकृत् का उल्लेख है। पर शक १६६१ न तो सोमकृत् ही था और न उस समय कृष्णराज ओडेयर का ही राज्य था। लेख का ठीक समय शक सं० १६५६ है जो सोमकृत् था और तब कृष्णराज ओडेयर् का राज्य था।]

८४ (२५०)

उसी स्तम्भ की दूसरी बाजू पर

(शक सं० १५५६)

श्री शालिवाहन शकवर्ष १५५६ नेय भावसंवत्सरद आषाढ़-शु-१२ स्थिरवार सव्रयोगदलु श्रीमन्महाराजाधिराज राजपरमेश्वर मैसूरपट्टनाधीश्वर षड्दरुशन-धर्म्मस्थापनाचार्य्यराद चामराजवाडेयरु मय्यनवरु वेलुगुलद स्थानदरर चेन्नु ययुदिन मवनु प्रागिरलागि प्राचामराजवाडेयरु-मय्यनवरु योचेत्रव मडवहिडिदन्वावरु होसवोचज केरूपप्पन मग चन्नयन वेलुगुलद पायिसेट्टियर मक्कलु चिक्कण्न चिगपायसेट्टि यिवरु मुन्ताद मडवहिडिदन्वावर करसि निम्म मडविन मालवनु तीरिसेनु यप्रलागि चन्नण्न चिक्कण्न चिगपायिसेट्टि मुद्दण्न अज्जण्णन पदुमण्णन मग पण्डण्न पदुमरसय्य दोड्डण्न पश्चवायककिगल मग बम्मप्प बोम्मण्णकि विजेयण्न गुम्मण्न चारुकीर्त्ति नागप्प येडदय्य बोम्मिसेट्टि होगडिय रायण्न परियण्नगौड वीरसेट्टि वीरण्न वीरय्य इवरु मुन्ताद समस्तरु तम्म तन्देवायिगलिगे पुण्यंगलियेन्दु गोम्मटस्वामिय सन्निधियल्लि तम्म गुरु चारुकीर्त्तिपण्डितदेवर मुन्दे धाराद्त्तवागि यी-मडविन पत्रमालवनु यी-मडव कोट्टु स्थानदरिगे यी-दर्भकद गौडुगलु यी-मालवनु धारापूर्वकवागि कोट्टु यी बिट्टन्त पत्रमालवनु यावनादरु अनुपिदर काशिरामेश्वरदल्लि

साहसकपिलेयनु आमराजनु कोन्द पापके होगुवरु येन्दु बरेद शिलाशासन ॥ श्री श्री ॥

[बेल्गुल मन्दिर की ज़मीन आदि बहुत दिनों से रहन थी। उक्त तिथि को महाराज आमराज बोप्पेश्वर ने चेवव आदि रहनदारों को बुलाकर कहा कि तुम मन्दिरों की भूमि को मुक्त कर दो, हम तुम्हारा रुपया देते हैं। इस पर रहनदारों ने अपने पूर्वजों के पुण्य-निमित्त बिना कुछ लिये ही श्रीगोम्मटस्वामी और अपने गुरु चारुकीर्ति पण्डित देव की साक्षी में मन्दिरों की भूमि रहन से मुक्त कर दी और यह शिलालेख लिखाया।

८५ (२३४)

गोम्मटेश्वर-द्वार की बाईं ओर एक पाषाण पर

(लगभग शक सं० ११०२)

श्रीगोम्मटजिननं नर-
नागामर-दितिज खचर-पति-पूजितनं।
योगाग्निहतस्मरनं
योगिध्येयननमेयनं स्तुतियिसुवें ॥१॥

क्रमदि मेल्वोणदरिद क्रमदे माव विट्टु तन्निट्टु च-
क्रमदुं निःप्रभमागे सिग्गनोलकोण्डात्मावज्ञोल्पु गे-
ल्दुमहीराज्यमनित्तु पोगि तपदि कर्म्मारि विध्वंसिया-
द महात्मं पुरुसूनुबाहुबलिवोल् मत्तारो मानोन्नतर् ॥२॥
भुजबलयाहुबाहुबलिकेवलिरूपसमानपञ्चवि-

शक्ति-समुपेत-पञ्चशतचापसमुन्नतियुक्तमप्प तत्-
प्रतिकृतियं मनोमुददे माडिसिदं भरतं जितास्खिल-
चितिपचक्रि पौदनपुरान्तिकदोल् पुरुदेवनन्दनं ॥३॥
चिरकालं सले तज्जिनान्तिकधरित्रीदेशदोल्लोकभी-
करणं कुक्कुटसर्प्पसङ्कुलमसङ्ख्यं पुट्टे दल् कुक्कुटे-
श्वर-नामन्तदधारिगादुदु बलिकं प्राकृतर्गादितगो-
चरमन्तामदि मन्त्रतन्त्रनियतर्काण्वर्गाडिन्नुं पलर् ॥४॥
केलबक्कप्पुदु देवदुन्दुभिरवं मातेनो दिव्यार्च्चना-
जालं काणलुमप्पुदाजिनन पादोद्यन्नखप्रस्फुर-
ल्लीलादर्प्पणमं निरीचिसिदवर्काण्बर्भ्भजातीत ज-
न्मालम्बाकृतियं महातिशयमादेवज्जिनाबिम्बदं ॥५॥
जनदि तज्जिनबिम्बातिशयमं ता केल्दु नोल्पस्ति चे-
तनेयोल् पुट्टिरे पोगलुद्यमिसे दूरं दुर्ग्गमं तत्पुरा-
वनियेन्दार्य्यजनं प्रबोधिसिदोडन्तादन्दु तद्देवक-
ल्पनेयिं माडिपेनेन्दु माडिसिदनिन्तीदेवनं गोमटं ॥६॥
श्रुतमुं दर्शनशुद्धियुं विभवमुं सद्वृत्तमुं दानमुं
धृतियुं नम्मोन्ने मन्द गङ्गकुलचन्द्रं राचमल्लं जग-
न्नुतनाभूमिपनद्वितीयविभवं चामुण्डराय मनु-
प्रतिमं गोम्मटनन्त माडिसिदनिन्ती देवनं यत्नदिं ॥७॥
अतिनुङ्गाकृतियागदागददरोल्सौन्दर्य्यमौन्नत्यमुं
नुतसौन्दर्य्यमुमागे मत्ततिशयंतानागदौन्नत्यमुं ।
नुतसौन्दर्य्यमुमूर्जितातिशयमुं तन्नल्लि निन्दिर्द्दुवें

क्षितिमम्युपमं गेोम्मटेश्वरजिनश्रीरूपमात्मोपमं ॥८॥
प्रतिबिंबं बरेयल् मयं नेरेयं नोडल् नाकलोकाधिपं
स्तुतिगेय्यल् फणिनायकं नेरेयनेन्दन्दन्यरारार्पुरिं ।
प्रतिबिंबं बरेयल् समन्तु तवे नोडल् वण्णिसल् निस्समा-
कृतियंदक्षिणकुक्कुटेशवपुवं माश्चर्यसौन्दर्यमं ॥९॥
मरेदुं पारदु मेले पक्षिनिवहं कक्षद्वयोद्देशदोल्
मिरुगुत्तं पोरदाणुगुं सुरभिकाश्मीरारुणच्छायमी-
तेरदाश्चर्यमनीव्रलोकद जनं तानेंदु कण्डिर्दुदा-
मेरेवर्त्तुंटने गोम्मटेश्वरजिनश्री मूर्त्तियं कीर्त्ति सल् ॥१०॥
नेलनट्टानागलोकं वलमवनि दिशाभित्ति भित्तिव्रजं ख-
स्तलमार्गं मुखवं मेगण सुरर विमानोत्करं कूटजालं ।
विलसत् ताराैघमन्तर्व्वितमळिवितानं समन्तागे नित्यं
निलयं श्रोगोम्मटेशङ्गे निमिरदुदु जिनाच्चावलोकं त्रिलोक
॥ ११ ॥

मनुपमरूपने स्मरनुदमने निर्ज्जितचाक सत्तुदा-
रने नेरे गेल्दुमित्तनखिळोर्व्वियनत्यभिमानियं तपस्-
स्थलुमेरवर्कप्रचित्तवेयोग्निर्दपुदेम्बननूनबोधने
विनिहतकर्म्मबन्धनने बाहुबलीशनिदेनुदात्तनो ॥ १२ ॥
मभिमानस्थिरभावमं नमगे माल्करपुदुवमानोन्नतं
शुभसौभाग्यमनङ्गज भुजबळावष्टम्भमं चक्रव-
र्त्तिभुजादर्प्पविभेदि बाहुबलि तृष्णाच्छेदमं मुक्तरा-
ज्यभरं मुक्तियनाप्तनिर्व्वृतिपदं श्रीगोम्मटेशं जिनं ॥१३॥

स्फुरदुरुतिमिवक्रान्तियिं परिसरत्सौरभ्यादिन्दं दिशो-
त्करमं मुट्टिसुत्तुं नमेरुसुमनोवर्षं स्फुटं गोम्मटे-
श्वरदेवोत्तमचारुदिव्यशिरदोल् देवर्कलिन्दादुदं
धरेयेल्लं नेरे कन्डुदामहिमेयादेवङ्गुदाश्चर्यमे ॥ १४ ॥
पनगाव्वीचिरालागदार्त्तनगं कालरूमेन्ववोलास्वे पे-
ल्वनितावालकवृद्धगोपवतियुं कण्डल्करिन्दास्विनं ।
दिनवोन्दावगमुद्घदिव्यकुसुमासारं मद्दीलोकवो-
धनमन्तोपदमाय्तु गोम्मटजिनाधीशोत्तमाङ्गामदोल् ॥१५॥
मिरुगुव तारकप्रकरमोपरमेश्वरपादसेवेगे-
न्दरपुदे भक्तियिन्दमेने निर्म्मलिनं घनपुष्पवृष्टि ब-
न्देरगिदुदश्रदि धरेगदश्रतराङ्गु वहर्षकोटि कण्-
देरेदिरे सन्द वेल्गुलद गोम्मटनाथन पादपद्मदोल् ॥१६॥
भरतननादिचक्रधरनं भुजयुद्धदे गेल्द कालदोल्
दुरितमहारियं तविसि केवलबोधमनाल्द कालदोल् ।
सुरवति मुन्ने माडिदुदु पूमलेयीदोरेयक्कुमेम्बिनं
सुरिदुदु पुष्पवृष्टि विभुबाहुबलीशन मेले लीलेयि ॥१७॥
केम्मगिदेके नाव पलवन्दद नन्दिद विन्दिगर्क्कल
नों मरुलागि देवरिवरेन्दवरं मतिगेट्टु निन्नने-
कम्म तोलल्चिदप्पे भवकाननदोल् परमात्मरूपनं
गोम्मटदेवनं नेनेय नोगुवे जाति जरादिदुःखमं ॥१८॥
सम्मदवागलाग कोलेयुं पुसियुं कलवुं पराङ्गना-
सम्मतियुं परिग्रहद काङ्क्षेयुमेम्बिवरिन्दमादोडे-

न्दुं मनुजङ्गिरन्नेय पत्तेय कंडेनुतुं महाकवडोल
गोम्मटदेवनिर्द्द सलें साङवबोलेसेदिर्द्दनीश्रिमें ॥ १६ ॥
एम्बुमनीरमन्वनुमनिन्दुमुमं नेविल्लुमम्बुमं
कम्मनतायबूधमने माडि विमुद्र वपकें पुण्दु नि-
न्दिम्मिगिळपुदें पडेवुदेन्दविमुग्धपरस्पनादमुं
गोम्मटदेवनिन्नकिविरगेवदे निम्नवोळारा निःकृपर ॥२०॥
एम्मनिर्द्दकं नीं चिमुदेयेन्देलेयुं लतिकाङ्गियर्कळुं
बम्मलङ्गिन्दे वन्दु विगियपिदर्रम्बिनमङ्गदछि पु-
लुं मुरिदोत्ति वल्ल लतिकालियुमोप्पे तपोमियोगदोळ
गोम्मटदेवनिर्दिरवहीन्द्रसुरेन्द्रमुनीन्द्रवन्दितं ॥ २१ ॥
तम्मननेपोद्रमनुजरेछ्रलमेय्दे तपके नीनुमि-
न्तम्म तपके वोडाडंनगोसिरियोप्पदु पेडेनुत्त म-
एनं मनमिल्दुमङ्गमियेयुं बगेगोल्लदे दीचेगोण्डे नीं
गोम्मटदेव निन्न तरिसन्दलगार्य्यजनके गोम्मटं ॥ २२ ॥
निम्मडियेम्न धात्रियोलगिर्द्दपुदेविदु देव धात्रि तां
निम्मदुमेन्नदुं पंगेवोडलद्दु बेग्दु हृष्टिबोधवी-
र्य्य महितात्मधर्म्ममभवोक्तियोलेम्म निजात्मनेतितिथि
गोम्मटदेव नीं मनद मानकपायमनेय्दे तूल्दिदै ॥ २३ ॥
तम्मतवस्विगलो कुवपस्थिति वेल्दवलाङ्गसङ्गवं
वम्म शरीरमारें नेगलन्यतरापरशास्त्रवृत्तकं ।
कम्मरियोजनन्दमे वलं स्वपराघयसौख्यहेतुवं
गोम्मटदेव नीं तपमनान्तुपदेशकनादुदोप्पदे ॥ २४ ॥

नीं मनमं निजात्मनोळिरूम्पिवमागिडे मोहनीयमु-
ल्यम्मयिदोडि योज्ञे घनघातिरलं बज्रटकप्रबोधसौ-
ख्यं महिमान्वितं नेगळे वर्त्तिसि सत्तमघातिघातदिं
गोम्मटदेवमुक्तिपदमं पडेदे निरपायसौख्यमं ॥ २५ ॥
कम्मिदरल्व काड पोसपुगल्लिनर्च्चिसि पादपद्ममं
सम्मदर्दिन्दे नोडि भवदाकृतियं पवणाण्डु पल्लपा-
ङ्गि मनमोन्दु कीर्त्तिपवरें कृतकृत्यरो शक्रनन्ददिं
गोम्मटदेव निम्मनरिदर्च्चिसुतिर्प्पवरें कृतार्थरो ॥ २६ ॥
कुसुमास्त्रं काममाम्राय्यद महिमेयनान्तिर्दीडं मुभे ताळ्दू
रसुधा साम्राज्यगुर्क्कं भरतकरविमुक्तं रथाङ्गास्त्रमुर्वा-
शु-नमन्नत्नृपरारंणमनेन्तरिरोडं चिहूवं मुक्तिसाम्रा-
ज्यसुखात्यं शीघ्रदें बाहुबलि त नेदनेम्मसरेने-दामाण्यद ॥२७॥
मनदि नुडिदि मनुधि-
न्देनसु सुम्भेरिदपमनलरिपेनेम्बी-
मनदिन्दमादेवु **गोम्मट-**
जिनने स्तुतियिसिदनिन्तु सुजनाेत्तंस ॥ २८ ॥
सुजनक्केल्लर तनगा-
रजननुननमण पुदानि यैापर्द ।
सुजनाभननिर्णं
सुजनर्तुनममम्व पुर्दानन्दनिधि ॥ २९ ॥
ईजिननुडिगाननं
आजिनगाम्नदरें गिनिम्मिमद जि-

नहीं आता। यदि बड़ी भी हुई और सौन्दर्य भी हुआ तो उसमें दैवी प्रभाव का अभाव हो सकता है। पर यहां इन, तीनों के मिश्रण से गोम्मटेश्वर की छटा अपूर्व हो गई है।' कवि ने एक दैवी घटना का उल्लेख किया है कि एक समय सारे दिन भगवान् की मूर्त्ति पर आकाश से 'नमेरु' पुष्पों की वर्षा हुई जिसे सभी ने देखा। कभी कोई पक्षी मूर्त्ति के ऊपर होकर नहीं उड़ता। भगवान् की भुजाओं के अधोभाग से नित्य सुगन्ध और केशर के समान रक्त ज्योति की आभा निकलती रहती है।

बाहुबलि स्वामी ने किस प्रकार राज्य को त्याग कठिन तपस्या स्वीकार की, कैसा घोर तप किया, कर्म शत्रुओं को कैसा दमन किया आदि विषयों का वर्णन बड़ा ही चित्तग्राही है।

लेख की कविता बड़े ऊँचे दर्जे की है। यह कवड़ कविराज बोप्पण पण्डित अपर नाम 'सुजनोत्तंस' की रचना है। इसे उन्होंने नयकीर्ति के शिष्य बालचन्द्र मुनि के शिष्य कणमस्य देवन के आग्रह से रचा।]

८६ (२३५)

उसी पाषाण के पश्चिम मुख पर

(लगभग शक सं० ११०७)

स्वस्ति श्री बेळुगुळतीर्थद गोम्मटेश्वर सुत्तालयदोळु बहु-व्यवहारि सोमदेव बसदियहित वाळु माडिसिद चतुर्विंश-तितीर्थंकर अष्टविधार्चनेग सोमदेव नकरङ्गळु बिट्टबिङ्-न्निवागि कोट्ट गद्दे नेमियहट्टि बसदियिन्द ग ४ गद्दे मसदेर चिक्कनादिय ग २ दुम्मियहट्टि ग ४ चिट्टवाद्द बोप्पवाद्द एवळिवाडि

प ३ उयमसेट्टि चिदियमसेट्टि प ४ मद्ददेव सेट्टि रट्टे सेट्टि प २ पारिससेट्टि बमविसेट्टि रावि सेट्टि प ४ मारगूलिसेट्टि होय्सल-सेट्टि प २ नन्दिदेवसेट्टि प ५ चोकिसेट्टि प ५ जिमिसेट्टि प ५ बाहुबलिसेट्टि प ५ पट्टणसामि बाड्डिसेट्टि मालिसेट्टि प ३ मद्ददेव-सेट्टि गोविसेट्टि प २ बम्मिसेट्टि सूकिसेट्टि प २ माराण्डिसेट्टि मद्ददेवसेट्टि प २ चैविसेट्टि मारिसेट्टि प २ सोविसेट्टि दुद्दिसेट्टि प २ ह्यारवसेट्टि हरदिसेट्टि प २ बम्माण्डि प २ सान्तेय प १ कूवैय्य प २ मानयिसेट्टि कूचिसेट्टि बमविसेट्टि प ३ चट्टिसेट्टि बसविसेट्टि प १ मल्लिसेट्टि प १ मद्ददेव बयिर प २ बम्मेय मसण प २ कालेय गाडेय प २ गबुडुमामि मदवनिगसेट्टि प २ मालि-सेट्टि पारिमसेट्टि प २ होय्सिसेट्टि चोकिसेट्टि प २ गङ्गिसेट्टि ब्राय्वसेट्टि देविसेट्टि (प) २ माल्लिसेट्टि दम्मिसेट्टि प २ मारि-सेट्टि ब्राय्वमसेट्टि प २ मारञ्च हरियण कालेय प २ मारगौ-ण्डनहल्लिय गुम्मञ्ज बैरय प १ माकिसेट्टि बूचिसेट्टि प १ एचि-सेट्टि प १ ब्रह्मदेय मद्ददेवसेट्टि पारिस्ससेट्टि प १ निडिय माच्चिसेट्टि प १...

[मोसले के बड्ड व्यवहारि बसवसेट्टि द्वारा प्रतिष्ठापित चतुर्विंशति तीर्थंकरों की अष्टविधपूजन के लिए मोसले के महाजनों ने एक मासिक चन्दा देने का संकल्प किया।]

८७ (२३६)

उसी पाषाण के पूर्व मुख पर

(लगभग शक सं० ११०७)

श्रीबसविसेट्टियर तीर्थंकर अष्टविधार्च्चनेगे मोसलेय नकर वरिस निर्वन्धियागि चवुण्डेय जकण्ण किरिय-चवुण्डेय प २ महदेवसेट्टि कम्बिसेट्टि प १ उयमसेट्टि पारिससेट्टि प १ बोकिसेट्टि बूकिसेट्टि प १ माचिसेट्टि होन्निसेट्टि सुग्गि सेट्टि प १ सूकिसेट्टि प १ रामिसेट्टि हाविसेट्टि (प) १ मच्चिसेट्टि बसविसेट्टि प १ मल्लिसेट्टि गुड्डिसेट्टि चिकमल्लिसेट्टि(प)२ मसणिसेट्टि माचिसेट्टि अम्माण्डिसेट्टि प २ अलियमारिसेट्टि सुंदिसेट्टि प २ करिकिसेट्टि चिकमादि प २ करिय बम्मिसेट्टि मारिसेट्टि प १ मल्लिसेट्टि आयिविसेट्टि कालिसेट्टि प २ मणिगार माचिसेट्टि सेट्टियण प १ तेरणिय चैण्डेय हेग्गडे बसवण्ण चन्देय रामेय हुल्लेय जकण प २ मालगौण्ड सेट्टियण माचय मारेय चिकण गोल्लेय प १ मादि-गौण्ड गौण्डेय माचेय बम्मेय होन्नेय जकगौण्ड प १

[तात्पर्य पूर्वोक्तानुसार ही है]

८८ (२३७)

पूर्वोक्त लेख के नीचे

(संभवतः शक सं० १११८)

नल संवत्सरद उत्तरायण-सङ्क्रान्तियन्दु श्रीमन्महापसायितं विजयण्णनवरलिय चिकमदुकण्ण श्रीगोम्मटदेवर

नित्यार्च्चनेगे २० बाविग हुविङ्ग श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यर चन्द्र-प्रभदेवर कैयलु मारुगोण्डु गङ्गसमुद्रदलु गद्दे स १ बेद्दलु कं २०० नूरनुं कोण्डु कोट्ट दत्ति मङ्गलमहाश्री ।

[उक्त तिथि को महाप्रसादित विजयण्ण के दामाद विरूक मसुकण्ण ने गङ्गसमुद्र की कुछ भूमि महामण्डलाचार्य चन्द्रप्रभदेव से खरीदकर गोम्मटदेव की प्रतिदिन की पूजन के हेतु बीस पुष्प मालाओं के लिए अर्पण की ।]

[नोट—लेख में नल संवत्सर का उल्लेख है । शक सं० १११८ नल था]

८९ (२३८)

पूर्वोक्त लेख के नीचे

(सम्भवतः शक सं० ११२०)

कालयुक्तिसंवत्सरद कार्त्तिक सु १ आ श्रीगोम्मटदेवर पर्व्वनेगे हुविन पडिगे श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यर हिरियनयकीर्त्तिदेवर शिष्यर चन्द्रप्रभदेवर कयलु मगङिवर कबि सेट्टिय सोमेयनु गद्दे पडवलतीय गद्दे को १० गङ्गसमुद्रदलि कोम्म गलि को १० सार्व्वदलु सुङ्गंय कल्पगेगे गद्याण श्रोन्दुदीन बेदलु अकलुन सीमे ।

[उक्त तिथि को कविसेट्टि के (पुत्र) सोमेय ने उक्त भूमि का दान गोम्मटदेव की पुष्प-पूजन के हेतु हिरियनयकीर्त्ति देव के शिष्य महामण्डलाचार्य चन्द्रप्रभदेव को कर दिया ।]

[नोट—लेख में कालयुक्त संवत्सर का उल्लेख है । शक सं० ११२० कालयुक्त था ।]

भुवने वण्णिसे गोवि-
न्दवाडियं बेडिदं जिनार्च्चनं लब्धं ॥१२॥
गोम्मटमंते मुनिसमुदा-
यं मनवोलमेवि मेचि बिचलिसुत्तुं ।
गोम्मटदेवर पूजेग-
दं मुददि विट्टनल्ते धीरोदात्तं ॥१३॥

मकर ॥ श्रादियागिर्प्पुदादर्दवसमयके मूलसङ्घं कौण्डकुन्दान्वयं
बादु वेळदं बळेयिपुदल्लिय देसिगगणद पुस्तकगच्छद ।
बोधविभवद कुक्कुटासनमलधारि देवर शिष्यरेनिप पेम्पि-
ङ्गादमेसेदिर्प्प शुभचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुड्डं गङ्गचमूपति ॥ १४ ॥

गङ्गवाडिय बसदिगळेनितोळवनितुमं बालेय्दे पोसयिसिदं
गङ्गवाडिय गोम्मटदेवर्गं सुत्तालयमनेय्दे माडिसिदं ।
गङ्गवाडिय तिगुळरं बेङ्कोण्डु वीरगङ्गङ्गे निमिर्चि कोट्ट
गङ्गराजनामुन्निन गङ्गर रायङ्गं नूर्म्मडि धन्यनल्ते ॥ १५ ॥

धर्म्मस्यैव बलात्स्त्रोको जयत्यखिलविद्विषः ।
भारोपयतु तत्रैव सर्व्वोऽपि गुणमुत्तम ॥१६॥

श्रीमज्जैनवचोब्धिवर्द्धनविधुः साहित्यविद्यानिधि-
स्सर्प्पद्दर्पकहस्तिमस्तकलुठत्प्रोत्कण्ठकण्ठीरवः ।
स श्रीमान् गुणचन्द्रदेवतनयस्सौजन्यजन्यावनि-
र्रञ्ज्यात् श्रीनयकीर्त्तिदेवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः ॥१७॥

छवदिग्जैत्रविदं धरित्रे **नरसिंहचोणिपं** कण्डु स-
न्मतियिं **गोम्मटपार्श्वनाथजिनरं** मत्तोचतुर्व्विंशति-
प्रतिमागेहमनिन्नितर्कों विनुतं प्रोत्साहदिं चिट्टन-
प्रतिमल्लं सवणेरबेकफगोरेयुमं कल्पान्तरं सल्विनं ॥१८॥

नरसिंहहिमाद्रितदुद्धतकलशाहदकहुल्लकरजिह्विकेया-
नतधारागङ्गाम्बुनि **नयकीर्त्ति**मुनीशपादसरसीमध्ये ॥१९॥

सलनालीतेगे मुभवेन्तु कुसुमास्त्रं पुट्टिदों विष्णुगं
ललितश्रीवधुविक्वन्ते **नरसिंह**चोणिपालङ्गवे-
चलदेवीवधुगं परार्थचरितं पुण्याधिकं पुट्टिदों
यत्नवद्वैरिकुलान्तकं जयभुजं **बल्लालभूपालकं** ॥२०॥

चिरकालं रिपुगलगसाध्यमेनिसिर्द्दुच्चङ्गियं मुत्ति
दुर्धरतेजोनिधि धूलिगोटेयनं कोण्डाकामदेवावनी-
श्वरनं सन्दोडेपत्रिवीश्वरननाभण्डारमं कोयरं
तुरगमातमुमं समन्दु पिडिदं **बल्लालभूपालकं** ॥२१॥

स्वस्ति श्रीमन्**नयकीर्ति** सिद्धान्तचक्रवर्तिगल गुड्डं श्रीमन्म-
हाप्रधानं सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि हुल्लमय्यङ्गल श्रीमत्प्रताप
चक्रवर्ति **वीरबल्लालदेवर** करयलु गोम्मटदेवर पार्श्वदेवर
चतुर्व्विंशति तीर्थंकरर अष्टविधार्च्चनेगे रिवियराहारदानक्कं
बेढिकोण्डु सवणेरबेक्कनगोरेय बिट दत्ति ॥

परमागमवारिधिहिम-
किरणं राद्धान्तचक्रिनयकीर्तियमी-

भरशिष्यनभळनिजचित्-
परिचितनध्यात्मिबालचन्द्रमुनीन्द्रं ॥ २२ ॥
कन्तुकुलान्तकालयमनूर्ज्जितशासनमं निशिधिका-
सन्ततियं तटाक सरसीकुलमं नयकीर्त्ति देवसै-
द्धान्तिकरोल्परोक्षविनयङ्गलनीवेरदिन्द मात्परा-
रिन्विरे नोन्वरारेनिसिदं नयकीर्त्तिनिशाविभागदोल् ॥२३॥

[यह लेख आदि से आठवें पद्य तक लेख नं० ५१ (७१) के पूर्वभाग के समान ही है। केवल इसमें तीसरा पद्य अधिक है। इस लेख में भी विष्णु नरेश के महादण्डनायक गङ्गराज के पराक्रम का अच्छा वर्णन है। उन्होंने तळकाडु पर घेरा डालनेवाले चोळ सामन्त अदियम नरसिंह वर्मा, दामोदर व तिगुळदाम को भारी पराजय दी। इस पर विष्णुवर्द्धन ने प्रसन्न होकर उनसे पारितोषक मांगने को कहा। उन्होंने गोम्मटेश्वर की पूजन निमित्त 'गोविन्द वाडि' का दान मांगा। इसे नरेश ने सहर्ष स्वीकार किया।

गङ्गराज कुन्दकुन्दान्वय के कुक्कुटासन मळधारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य थे। उनके तिगुळों को हराकर गङ्गवाडि की रक्षा करने, गङ्गवाडि के गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाने व अनेक जैन बस्तियों का जीर्णोद्धार कराने का लेख नं० ४५ के सदृश यहाँ भी उल्लेख है और यहाँ भी वे चामुण्डरायसे सौगुणे अधिक धन्य कहे गये हैं।

पद्य १७ और १८ में गुणचन्द्र देव के तनय नयकीर्ति देव का उल्लेख करके कहा गया है कि नरसिंह नरेश ने दिग्विजय से लौटते हुए गोम्मटेश्वर के दर्शन किये और सदा के लिए पूजनार्थ तीन ग्रामों का दान दिया। इसके पश्चात् नारसिंह नरेश और एचळ देवी से उत्पन्न होनेवाले पंगाळ नृप का कामदेव और चोडेय राजाओं को जीतने, उच्छ्रि

का क़िला विजय करने तथा अपने प्रधान कोषाध्यक्ष, नयकीर्ति देव के शिष्य 'हुल्लप' द्वारा उक्त तीनों ग्रामों के दान को पूरा करने का उल्लेख है।

अन्त में नयकीर्ति देव के शिष्य अध्यात्मि बालचन्द्र के अपने गुरु के स्मारक अनेक शासन रचने व तालाब आदि निर्माण करवाने का उल्लेख है।]

[नोट—पद्य १७ से ऐसा विदित होता है कि उसके लिखे जाने के समय नयकीर्ति जीवित थे। किन्तु अन्तिम पद्य से स्पष्ट होता है कि उनके लिखे जाने के समय नयकीर्ति का स्वर्गवास हो चुका था। सम्भव है कि लेख का पूर्व भाग (पद्य २१ तक) नयकीर्ति के जीवन-काल में ही लिखा गया हो और शेष भाग पीछे से जोड़ा गया हो।]

८१ (२४१)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक सं० ११००)

स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्नरप्प श्रीबेलुगुलतीर्थद समस्त माणिक्य नखरङ्गलु श्रीगोम्मटदेवर पारिश्वदेवरिगे वर्षनिबन्धि-यागि हूविनपडिगे जातिहवलके तालेगे वा १ करिदके वोस १ यिद आचन्द्रार्कतारं वरं सलिसुवरु ॥ मङ्गल महा श्री श्री ॥

[बेल्गुल के समस्त जौहरियों ने गोम्मट देव और पार्श्वदेव की पुष्प-पूजन के लिए अपने माणिक्यों पर उक्त वार्षिक चन्दा देने का संकल्प किया।]

---

८२ (२४२)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक सं० ११००)

स्वस्ति श्री वेलुगुलतीर्थद गुमिसेट्टिय दसैय चिक्कैयेय केतय्य बोप्पन मरिसेट्टिय मग हासण्न लोकयसहवियेय मगलु सोमौवे मंखमेलद समस्तनखरङ्गलु गोम्मटदेवर हुविन पडगं गड्डसमुद्र हिन्दे गद्दे स १ मागोम्मटपुरद भूमियोलगे मोन्दुहोल सेरल्ले गुलयबेय्य समुदायङ्गल करयलु मारुगोण्डु मा (म) लेगारने माचन्द्रार्क्कतारंबरं सलुवन्तागि बरदुकोट्ट शासन ॥

[बेलुगुल के गुमिसेट्टि आदि समस्त व्यापारियों ने गड्डसमुद्र और गोम्मटपुर की कुछ भूमि खरीद कर उसे गोम्मटदेव की पूजा के निमित्त पुष्प देने के लिये एक माली को सदा के लिए प्रदान कर दी।]

८३ (२४३)

उसी पाषाण की दूसरी बाजू पर

(सम्भवतः शक सं० ११८७)

स्वस्ति श्रीभावसंवत्सरद भाद्रपद शुक्रवारदन्दु श्री गोम्मटदेवरिगेयु तीर्थदकरिगेयु हूविन पडिगे चन्द्रिसेट्टिय मग चन्द्रकीर्त्ति भट्टारकदेवर गुड्ड कल्लय्यनु अक्षयभण्डारवागि कोट्ट ग १ प २३ यि-मरियादेयलु कुन्ददे ६ वासिग-तुव्वनि-कुवक मङ्गलमहा श्री श्री ॥

[चेन्निसेट्टि के पुत्र व चन्द्रकीर्ति भट्टारक देव के शिष्य कल्लम ने कम से कम ६ पुष्प मालाएँ नित्य चढ़ाये जाने के हेतु उक्त तिथि को उक्त दान दिया।]

[नोट—लेख में भाव संवत्सर का उल्लेख है शक सं० ११६० भाव संवत्सर था।]

९४ (२४४)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(सम्भवत: शक सं० ११६७)

स्वस्ति श्रीभावस‌ंवत्सरद पुष्य सुद्ध ५ मि (बृ) श्रीगोम्मट-देवर नित्याभिषेकक्के श्रीप्रभाचन्द्रभट्टारकदेवर गुड्ड बारकनूर मेधाविसेट्टिगे परोक्षविनेयक्के अक्षयभण्डारक्के कोट्ट गद्याण नाल्कु यदोन्निड्डे अमृतपडिगे आचन्द्रार्क नित्यपाडि ३ य मान हाल नडसुवदु यि-धर्म्मव माणिक-नकरङ्गलुं एलयिगलुं आर्वेर मङ्गलमहा श्री श्री ॥

[प्रभाचन्द्र भट्टारक देव के शिष्य बारकनूर के मेधावि सेट्टि की स्मृति में गोम्मट देव के अभिषेकार्थ ३ 'मान' दुग्ध प्रति दिवस देने के लिए उक्त तिथि को ४ 'गद्याण' का दान दिया गया।]

[नोट—लेख में भाव संवत्सर का उल्लेख होने से समय उपर्युक्त।]

९५ (२४५)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक सं० ११८७)

हलसूर सोयिसेटिय मग कंतिसेटियरु गोम्मट-देवरिगे

नित्यपडि मूडमान हाखनु अभिषेककके कोट्ट ग ३ वक होन्न पडिने हाल नडयिसुवरु माडिकलवर नडेयिसुवरु आचन्द्रार्क-तुल्लनक मङ्गलमहा श्री ॥

[गोम्मट देव के क्षिराभिषेक के हेतु सोमि सेटि के पुत्र हळसूर-निवासी केति सेटि ने १ 'मान' दूध के लिए ३ ग का दान दिया जिसके ब्याज से दूध लिया जावे ।]

८६ (२४६)

उसी पाषाण की दायीं बाजू पर

(शक सं० ११८६)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

श्रीमत्प्रतापचक्रवर्त्ति होय्सळ श्रीवीरनारसिंहदेवरसरु श्रीमद्राजधानिदोरसमुद्रदलु सुखसङ्कथा विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरं शकवरुष ११८६ नेय श्रीमुखसंवत्सरद श्रावण सु १५ आदिवारदलु श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरु नयकीर्त्तिदेवर शिष्यरु चन्द्रप्रभदेवर कय्यलु होन्नचगेरेय मादय्यन मग सम्मुदेवनु सङ्किसेट्टियर मग बोम्मण्ण खगप्पसेट्टियर मक्कलु दोरय बसुवय्यनवरु श्रीगोम्मटदेवर अमृतपडिगे मत्तियकेरेय नट्टकल सीमामर्य्यादेयोलगाद गद्दे सुखाशयद चतुर्व्विंशतितीर्थकर अमृतपडिगे कोट्ट मोदलेरिय गद्दे सलगे बेन्दु-सहित सर्व्वबाधापरिहारवागि धारापूर्व्वकं माडिकोण्डु आचन्द्रार्कतारं बरं सल्वन्दागि कोट्ट दत्ति । मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[होय्सल नरेश श्री वीर नारसिंह के समय में उक्त तिथि को होन्नगेरे के मादय्य के पुत्र सम्बुदेव ने महामण्डलाचार्य नयकीर्ति देव के शिष्य चन्द्रप्रभदेव से मालिव केरे की उक्त भूमि खरीदकर उसे गोम्मट देव और चतुर्विंशति तीर्थंकर के पुष्प-पूजन के लिये प्रदान कर दी।]

८७ (२४७)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(सम्भवतः शक सं० ११८७)

स्वस्ति श्रीभावसंवत्सरद भाद्रपद सुद्ध ५ आदिवार
दलु श्रीगोम्मटदेवर नित्याभिषेकक्के अमृतपडिगे श्रीप्रभाचन्द्र-
भट्टारकदेवरगुड्ड गेरसप्पेय गोविन्दसेट्टिय मग आदियण्न
अक्षयभण्डारवागि इरिसिद गद्याण नाल्कु तिङ्गतिङ्गे होङ्गे
हाग बड्डि आचन्द्रियन्ति नित्याभिषेकक्के बडवल हाल नडसुवरु ई-धर्म्म-
क्के मारिकयन्कर एलम बोडेयक । आचन्द्रार्कतारं बरं सलव-
न्तागि नडसुवरु । मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[उक्त तिथि को गेरसप्पे के गोविन्द सेट्टि के पुत्र व प्रभाचन्द्र भट्टारक देव के शिष्य आदियण्ण ने गोम्मटदेव के नित्याभिषेक के लिये ४ गद्याण का दान किया। इस रकम के एक 'होन' पर एक 'हाग' मासिक ब्याज की दर से एक 'बल्ल' दुग्ध प्रति दिन दिया जाना चाहिए।]

९८ (२२३)

अष्टदिक्पालक मण्डप में एक स्तम्भ पर

(शक सं० १७४८)

(पूर्व मुख)

श्री स्वस्ति श्रीविजयाभ्युदय शालिवाहन शक वरुष १७४८ ने सन्द वर्त्तमानक्के सलुव व्ययनामसंवत्सरद फाल्गुण ब ५ भानुवारदल्लु काश्यपगोत्रे ऋहनियसूत्रे वृषभप्रवरे प्रथमानु-योगशाखायां श्रीचावुण्डराज वशस्थराद बिलिकेरे अनन्त-राजे अरसिनवर प्रपौत्र सोटदेवराजे अरसिनवर पौत्र मत्यमङ्गलद चतुर्थ-अरसिनवर पुत्र श्रीमन्महिसूरपुरवराधीश श्रीकृष्णराज-वडेयरवर सम्मुखदल्लि भारिगाटु कन्दाचार सबारकचेरि—

(उत्तर मुख)

यिलाखे भक्षि देवराजे अरसिनवरु श्रीगोमटेश्वरस्वामियवर मस्तकाभिषेकपूजोत्सवदिवस स्वर्गस्थराद्दके श्रीमठदिन्द वर्षप्रति वर्षदल्लु श्रीगोमटेश्वरस्वामिय वरिगे पादपूजे मुन्वाद सेवार्थ नडेयुवदागि यिवर पुत्राद पुट्टदेवराजे अरसिनवरु १०० वरह दाकिरुव पुदुवट्टिन संबेगे भद्रं भूयाज्जिनशासनं । श्री ।

[काश्यप गोत्र, ऋहनिय सूत्र, वृषभ प्रवर और प्रथमानुयोग शाखा में चावुण्डराज के वंशज, बिलिकेरे अनन्तराजे अरसु के प्रपौत्र, सोटदेवराजे अरसु के पौत्र व सत्यमङ्गल के चतुर्थ अरसु के पुत्र, मैसूर नरेश श्री कृष्णराज वडेयर के प्रधान अङ्गरक्षक (भक्षि) देवराजे अरसु की मृत्यु गोम्मटेश्वर के मस्तकाभिषेक के दिवस हुई। अतएव उनके

पुत्र मुद्द देवराज अरसु ने गोम्मट स्वामी की वार्षिक पाद पूजा के लिए एक तिथि को १०० 'वरह' का दान किया।]

८८ (२२४)

उसी मण्डप में एक द्वितीय स्तम्भ के पश्चिम मुख पर

(शक सं० १४५६).

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं॥ १॥

शकवर्ष साविरद १४५६ तनेय विजय संवत्सरद माघ शुद्ध ५ मलु गेरसोप्पेय चतुर्मुखसेट्टिय सागवियोम्मयन मगरुम्भरयनु तन्न सेत्र महबागिरल्लागि चतुर्मुखसेट्टिय मक्कु त्रिविधि कोट्टु एकके बोन्दु तण्डक्के आहारदान त्यागद महन मुन्दुरिन तोट बोन्दु पडि मक्कि मत्तेपुञ्ज इदनु आचन्द्रार्कस्थायियागि नाबु नडसि बहेनु मङ्गलम श्री श्री श्री श्री श्री॥

[गेरसोप्पा के चतुर्मुख सेट्टि ने मेरी भूमि दान से पुष्ट कर दी है इसलिए मैं मल्लिदेवम्म का पुत्र कल्लिमरस सदैव निम्नलिखित दान का पालन करूँगा—एक संघ (तण्ड) को आहार, आगन्तुक संघ के भोजन के बाद (की देख-रेख) व भवन पूजा के लिए एक 'पोंह' तण्डुल।]

१०० (२२५)

उसी स्तम्भ के दक्षिण मुख पर

(शक सं० १४५९)

स्वस्तिश्रीवत्सरदलु गेरसोप्पेय चौडिसेट्टिरिगे दोड्डदेवप्पगल मग चिक्कणनु कोट्ट धर्म्मसाधन नमगे मनुमत्य बरलागि नीवु नवगे परिहरिसि कोट्टदक्के १ खण्डके आहार दानवनु आचन्द्रार्कस्थायि यागि नडसि बहेवु मङ्गलमहा श्री श्री श्री श्री श्री ॥

[दोड देवप्प के पुत्र चिक्कण ने यह 'धर्म साधन' चौडि सेट्टि को दिया कि 'आपने हमारे कष्ट का परिहार किया है इसके उपलक्ष्य में मैं सदैव एक संघ (खण्ड) को आहार दूँगा ।]

१०१ (२२६)

नं० १०० के नीचे

(शक सं० १४५९)

स्वस्तिश्रीवत्सरदलु गेरसोप्पेय चावुडिसेट्टिरिगे कविगल मग बोम्मणनु कोट्ट धर्मसाधन नमगे मनुपत्य बरलागि नीवु नवगे परिहरिसि कोट्ट इके वर्ष १ के आरविङ्गलु पर्यन्त १ खण्डके आहारदानवनु आचन्द्रार्कस्थायियागि नडसि बहेवु मङ्गलमहा श्री श्री श्री श्री ॥

['कवि, के पुत्र बोम्मण ने चावुडि सेट्टि को यह 'धर्म-साधन' दिया कि 'आपने हमारी आपद् का परिहार किया है इसके उपलक्ष्य में मैं सदैव वर्ष में छह मास एक संघ (खण्ड) को आहार दूँगा' ।]

१०२ (२२७)

उसी स्तम्भ के पूर्व मुख पर

(शक सं० १४५६)

इ मोदल...वत्संवत्सरदल्लु गेरसोप्पेय चवुडिसट्टिरिगं हूविन चेभय्यनु कोट धर्मसाधनद सम्बन्ध नन्न चेत्रवु मद्द हाकिरलागि नीवु माचेत्रवनु बिडिसि कों................ ॥

[चेनय्य माली (हूविन) ने चवुडि सेट्टि को यह 'धर्म-साधन' दिया कि 'आपने मेरी जमीन रहन से मुक्त की है इसलिए मैं··· ।]

१०३ (२२८)

उसी मण्डप में तृतीय स्तम्भ के पूर्व मुख पर

(शक सं० १४३२)

सकवरुप१४३२ डनेय शुक्लसंवत्सरद वैशाख् प० १०लु मण्डलेश्वरकुलो ्द्भ चङ्गाल्वमहदेवमहीपालन प्रधानसिरोमणि केशव-नाथ-वर-पुत्र कुल-पवित्रं जिनधर्म्मसद्दायप्रतिपालकरप्प बोम्मणमन्त्रिमहोदररप्प सम्यक्त्वचूडामणि चेन्नबोम्मरसन नञ्जरायपट्टणद श्रावकभव्यजनङ्गल गोम्मटमहाय श्री गुम्मटस्वामिय बद्धिवाबन जीर्णोद्धारव माडिसिदरु श्री ॥

[मण्डलेश्वर कुलोत्पन्न चङ्गाल्व महदेव महीपाल के प्रधान मन्त्री, केशवनाथ के पुत्र, बोम्मण मन्त्री के भ्राता चन्न बोम्मरस व नञ्जराय पट्टण के श्रावकों ने गोम्मट स्वामी के 'बद्धिवाड' (? ऊपर की मञ्जिल) का जीर्णोद्धार कराया ।]

१०४ (१८५)

गोम्मटेश्वर के दक्षिण की ओर कूष्माण्डिनी के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० ११००)

श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्रीबाल-चन्द्रदेवर गुड्ड केतिसेट्टिय मग बम्मिसेट्टि माडिसिद यक्षदेवते॥

[नयकीर्ति सिद्धान्त चक्रवर्ति के शिष्य बालचन्द्र देव के शिष्य बम्मि सेट्टि, केटि सेट्टि के पुत्र, ने यह यक्ष देवता प्रतिष्ठित कराया ।]

१०५ (२५४)

सिद्धरबस्ती में उत्तर की ओर एक स्तम्भपर

(शक सं० १३२०)

(पश्चिम मुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
श्रीनाभेयोऽजितःशम्भव-नमिविमलास्सुव्रतानन्तधर्म्मा-
श्चन्द्राङ्कश्शान्तिकुन्थू ससुमतिसुविधिश्शीतलो वासुपूज्यः ।
मल्लिश्श्रेयस्सुपार्श्वौ जलजरुचिररोनन्दनः पार्श्वनेमी
श्रीवीरश्चेति देवा भुवि ददतु चतुर्व्विंशतिर्म्मङ्गलानि ॥ २ ॥
वीरो विशिष्टां विनताय रातीमितित्रैलोकैरभिवर्ण्यते यः
निरस्तकर्म्मा निखिलार्त्थवेदी
पायादसौ पश्चिमतीर्थनाथः ॥३॥

वस्याभवन् सदसि वीरजिनस्य सिद्ध-
सप्तर्द्धयो गणधराः किल रुद्रसङ्ख्याः ।
ये धारयन्ति शुभदर्शनबोधवृत्तं
मिथ्यात्रयादपि गणान् विनिवर्त्त्य विश्वान् ॥४॥
इन्द्राग्निभूतीमपि वायुभूतिरकम्पनो मौर्य्यसुध-
र्म्मपुत्राः ।
मैत्रेयमौण्ड्यौपुनरन्धवेलः प्रभासकश्चेति वदीय-
संज्ञाः ॥५॥
पूर्व्वज्ञानिह वादिनोऽवधिजुषो धीपर्य्ययज्ञानिनः
सेवे वैक्रियकांश्च शिक्षकयतीन्कैवल्यभाजोऽप्यमून् ।
इत्यन्यम्युनिधित्रयोत्तरनिशानाथास्तिकायैश्शतै
रुद्रोनैकशवाचलैरपि मितान्सप्तैव नित्यं गणान् ॥६॥
सिद्धिं गते वीरजिनेऽनुबद्ध-केवल्यभिख्यास्त्रय एव जाताः ।
श्रीगौतमस्तौ च सुधर्म्मजम्बू यैः केवली वै तदिहानु-
बद्धं ॥७॥
जानन्ति विष्णुरपराजितनन्दिमित्रौ
गोवर्द्धनेन गुरुणा सह भद्रबाहुः ।
ये पञ्चकेवलिवदप्यखिलं श्रुतेन
शुद्धा ततोऽस्तु मम धीः श्रुतकेवलिभ्यः ॥८॥
विद्यानुवादपठने स्वयमागताभि-
र्व्विद्याभिरात्मपरिवादमवादभिमाः ।

पूर्व्वाणि ये दशपूर्व्वण्यपि धारयन्ति

शास्त्राण्यभिन्नदशपूर्व्वधरान् समस्तान् ॥९॥

तेषु प्रियः प्रोष्ठिल गङ्गदेवौ

जयस्सुधर्म्मा विजयो विशाखः ।

श्रीबुद्धिलोऽन्यौ धृतिषेणनागौ

सिद्धार्थकक्षत्रियनामभाजः ॥१०॥

नक्षत्रपाण्ड्‌ जयपालकंसा-

चार्य्यावपि श्रीद्रुमषेणकश्च ।

एकादशाङ्गीधरणेन रूढा ये पञ्च तेऽस्मी हृदि मे वसन्तु ॥११॥

आचार-संज्ञाङ्ग-धृतोऽभवंस्ते

लोहस्सुभद्रो जयपूर्व्वभद्रः ।

यशो यशोबाहुरमी हि मूल-

स्तम्भा जिनेन्द्रागमसद्गृहस्य ॥ १२ ॥

श्रीमान्कुम्भो विनीतो

हलधरवसुदेवाचला मेरुधीरः

सर्व्वज्ञ सर्व्वगुप्तौ

महिधर-धनपालौमहावीरवीरौ।

इत्याद्यनेक सूरिष्वथ सुपदमुपेतेषु दीव्यत्तपस्या-

शास्त्राधारेषु पुण्यादजनि सजगतां

कोण्डकुन्दो यतीन्द्रः ॥ १३ ॥

रजोभिरस्पृष्टतमत्वमन्तर्बाह्ये ऽपि संव्यञ्जयितुं यतीशः ।

रजः पदं भूमितलं विहाय चचार मन्ये चतुरङ्गुलं सः ॥१४॥
श्रीमानुमास्वातिरयं यतीश-
स्तत्त्वार्थसूत्रं प्रकटीचकार।
यन्मुक्तिमार्गाचरणोद्यतानां पाथेयमर्घ्यं भवति प्रजानाम् ॥१५॥
तस्यैव शिष्योऽजनि गृद्धपिच्छद्वितीयसंज्ञस्य बलाक-
पिच्छः।
यत्सूक्तिरत्नानि भवन्ति लोके
मुक्त्यङ्गनामोहनमण्डनानि ॥ १६ ॥
समन्तभद्रस्य चिराय जीयाद्वादीभवज्राङ्कुशसूक्तिजालः।
यस्य प्रभावात्सकलावनीयं वन्ध्यास दुर्वादुकवा-
र्त्तयापि ॥ १७ ॥

स्यात्कार-मुद्रित-समस्त-पदार्थ-पूर्णं
त्रैलोक्य-हर्म्यमखिलं स खलु व्यनक्ति।
दुर्व्वादुकोक्तितमसा पिहितान्तरालं
सामन्तभद्र-वचन-स्फुट-रत्नदीपः ॥ १८ ॥

तस्यैव शिष्यश्शिवकोटिसूरिस्तपो लतालम्बनदेहयष्टिः।
संसार-वाराकर-पोतमेतत्तत्वार्थसूत्रं तदलञ्चकार ॥ १९ ॥
प्राग्भ्यधायि गुरुणा किल देवनन्दी
बुद्ध्या पुनर्व्विपुलया स जिनेन्द्रबुद्धिः।
श्रीपूज्यपाद इति चैव बुधैः प्रचख्ये
यत्पूजितः पदयुगे वनदेवताभिः ॥ २० ॥
भट्टाकलङ्कोऽकृत सौगतादिदुर्व्वाक्यपङ्कैस्सकलङ्कभूतं।

जगत्स्वनामेव विधातुमुच्चैः सार्थं समन्ताद्कलङ्कमेव ॥२१॥

जीयाज्जगत्यां जिनसेनसूरिर्यस्योपदेशोज्ज्वलदर्पणेन ।
व्यक्तीकृतं सर्व्वमिदं विनेयाः पुण्यं पुराणं पुरुषा
विदन्ति ॥ २२ ॥

विनय-भरण-पात्रं भव्यतांकैकमित्र
विबुधनुतचरित्रं तद्गुणेन्द्रात्मपुत्रं ।
विहितभुवनभद्रं वीतमोहान्धनिद्रं
विनमत गुणभद्रं तीर्णविद्यासमुद्रं ॥ २३ ॥

मद्व्यञ्जनस्वरनभस्तनु लक्षणाङ्ग-
च्छिन्नाङ्ग-भौम-शकुनाङ्ग-निमित्तकैर्यः ।
कालत्रयेऽपि सुखदुःखजयाजयादि
तत्साक्षिवत्पुनरवैति समस्तमेव ॥२४ ॥

यः पुष्पदन्तेन च भूतबल्याख्येनापि शिष्य-द्वितयेन रेजे ।
फलप्रदानाय जगज्जनानां प्राप्तोऽङ्कुराभ्यामिव कल्पभूजः॥२५॥

अर्हद्बलि स्सङ्घचतुर्व्विधं स श्रीकोण्डकुन्दान्वयमूलसङ्घं ।
कालस्वभावादिह जायमानद्वेषेतराल्पीकरणाय चक्रे ॥२६॥

[illegible] विपरीत-रूपे खिन्ने विसङ्घे वितनोतु भेदं ।
[illegible] यत्वं

रजः पदं भूमितलं विहाय चचार मन्ये चतुरङ्गुलं सः ॥१४॥
श्रीमानुमास्वातिरयं यतीश-
स्तत्त्वार्थसूत्रं प्रकटीचकार।
यन्मुक्तिमार्गाचरणोद्यतानां पाथेयमर्घ्यं भवति प्रजानां॥१५॥
तस्यैव शिष्योऽजनि गृद्ध्रपिञ्छ-द्वितीयसंज्ञस्य बलाक-
पिञ्छः।
यत्सूक्तिरत्नानि भवन्ति लोके
मुक्त्यङ्गनामोहनमण्डनानि ॥ १६ ॥
समन्तभद्रस्स चिराय जीयाद्वादीभवज्राङ्कुशसूक्तिजालः।
यस्य प्रभावात्सकलावनीयं वन्ध्यास दुर्व्वादुकवा
र्त्तयापि ॥ १७ ॥

स्यात्कार-मुद्रित-समस्त-पदार्थ-पूर्ण्णं
त्रैलोक्य-हर्म्म्यमखिलं स खलु व्यनक्ति।
दुर्व्वादुकोक्तितमसा पिहितान्तरालं
सामन्तभद्र-वचन-स्फुट-रत्नदीपः ॥ १८ ॥

तस्यैव शिष्यश्शिवकोटिसूरिस्तपोलतालम्बनदेहयष्टिः।
संसार-वाराकर-पोतमेतत्तत्त्वार्थसूत्रं तदलञ्चकार ॥ १९ ॥
प्रागभ्यधायि गुरुणा किल देवनन्दी
बुद्ध्या पुनर्व्विपुलया स जिनेन्द्रबुद्धिः।
श्रीपूज्यपाद इति चैष बुधैः प्रचख्ये
यत्पूजितः पदयुगे वनदेवताभिः ॥ २० ॥
भट्टाकलङ्कोऽकृत सौगतादिदुर्व्वाक्यपङ्कैस्सकलङ्कभूतं।

जगत्त्वनामेव विधातुमुच्चैः सार्थं समन्तादफलद्रुमेव ॥२१॥

जीयाज्जगत्यां जिनसेनसूरिर्यस्योपदेशोज्ज्वलदर्प्पणेन ।
व्यक्तीकृतं सर्व्वमिदं विनेयाः पुण्यं पुराणं पुरुषा
विदन्ति ॥ २२ ॥

विनय-भरण-पात्रं भव्यलोकैकमित्रं
विबुधनुतचरित्रं तद्गणेन्द्रात्मपुत्रं ।
विदितभुवनभद्रं वीतमोहारिनिद्रं
जिनमत गुणभद्रं शीर्णविद्यासमुद्रं ॥ २३ ॥

सद्व्यञ्जनस्वरनभश्चतु लक्षणाङ्ग-
च्छिन्नाङ्ग-भौम-शकुनाङ्ग-निमित्तकैर्यः ।
कालत्रयेऽपि सुखदुःखजयाजयाद्यं
तत्साक्षिवत्पुनरवैति समस्तमेव ॥२४॥

यः पुष्पदन्तेन च भूतबल्याख्येनापि शिष्य-द्वितयेन रेजे ।
फलप्रदानाय जगज्जनानां प्राप्तोऽङ्कुराभ्यामिव कल्पभूजः ॥२५॥
अर्हद्बलिस्सङ्घचतुर्व्विधं स श्रीकोण्डकुन्दान्वयमूलसङ्घं ।
कालस्वभावादिह जायमानद्वेषेतराल्पीकरणाय चक्रे ॥२६॥

सिताम्बरादौ विपरीत-रूपे खिले विसङ्घे वितनोतु भेदं :
तत्सेननन्दि-त्रिदिवेश-सिंहसङ्घेषु यस्तं मनुते
कुदृक्सः ॥२७॥

सङ्घेषु तत्र गणगच्छ बलि-त्रयेण
जाकाय चतुर्षि भिदाजुषि नन्दिसङ्घ

देशीगणे धृतगुणेऽन्वितपुस्तकाच्छ-
गच्छेऽङ्गुलेश्वरवलिर्ज्जयति प्रभूता ॥२८॥
तत्रासन्नाग-देवोदय-रवि जिन - मेघ - प्रभा-बाल-
चन्द्रा
देवश्री-भानुचन्द्रश्रुतनय गुणधर्म्मादयः कीर्त्तिदेवाः।
देव-श्रीचन्द्र-धर्म्मेन्द्र-कुल-गुण-तपो भूषणास्सूर-
योऽन्ये
विद्या दामेन्द्रपद्मामरवसु-गुण-माणिक्यनन्द्या
ह्याश्च ॥२९॥

(उत्तर मुख)

विहितदुरितभङ्गा भिन्नवादीभशृङ्गा
वितत-विविध-मङ्गाः विश्वविद्याब्जभृङ्गाः ।
विजितमदनजङ्गावेशदूरोज्झिताङ्गा
विशदचरणतुङ्गा विश्रुतास्तेऽस्तसङ्गाः ॥३०॥
जीयान्नृनेमिचन्द्रः कुवलयकमल कुवकोदीक्षगोत्रो
नित्योचन्द्रांशुबाधाविरचनकुशलप्रभाहतमनापः ।
चन्द्रस्येव प्रवृत्तामृत-वचन-कथा नीयते यस्य शान्ति
धर्म्मस्याजन्य नेतृत्वमभिमतपदं यस्य नेमी रथस्य ॥३१॥
श्रीमाघनन्दीत्रिवुधो भव्यानन्दपदैर्गतानुनातमनाम ।
ममुक्षमरत्नवरानिर्ज्जरत्न न येन पातान्वमिनन्दितानि ॥३२॥
गुरु यस्य पूत-वादिसिंह गुरुप्रवादीभ मंथनाते ।

मघोदितोऽभूभिजपादसेवाप्रमोदितोऽभयचन्द्रदेवः
॥ ३३ ॥

जयति जिततमोऽरिस्त्यक्तदोषानुषङ्गः
पदमखिलकलानांपात्र-मम्भोरुहायाः ।
अनुगतजयपक्षश्चाप्तमित्रानुकूल्य-
स्सततमभयचन्द्रस्सत्सभारत्नदीपः ॥३४॥

तदीयतनुजश्श्रुतमुनिर्गणिपदेशस्तपोभरनियन्त्रिततनुस्सु-
तजिनेशः ।
ततोऽजनि जिनेन्द्रवचनाम्तविषयाश्रततयशमा भूत-
समस्तवसुधाशः ॥३५॥

भव-विपिनकृशानुर्भव्यपङ्केजभानु-
स्त विततनमसेतु स्सम्पदे कामधेनुः ।
भुविदुरिततमोऽरिश्रीत्यसन्तापवारि-
श्श्रुतमुनिवरसूरिश्शुद्धशीलोऽस्तनारिः ॥३६॥

चण्डोदण्डत्रिदण्डं परम-सुख-पदं पापबीजं परागो-
बारागारोरुकार-त्रिविधमधिकृता गौरवं गारवं च ॥
तुल्यंभल्लोन-शल्य-त्रयमतुलवपुश्शर्ममर्म्मच्छिदं दो-
भावोन्मपि त्रिदोषं श्रुतमुनिमुनिपो निर्म्मुमोचैक एव ॥३७॥

प्रशिष्यभगछेन्द्रमहमा भुवितदीये प्रवर्द्धयति पूर्णकलइन्दु-
रिवयस्सम ।
अनादिनिधनादि-परमागम-पयोधिमभूदभिनवश्रुतमुनि-
र्गणिपदे सः ॥३८॥

मार्गे दुर्गे निसर्गात्प्रविभटकटुजल्पेन वादेन वापि
श्रव्ये काव्येऽतिनव्ये मृदुमधुरपदैः शर्म्मदैर्नर्म्मदैश्च ।
मन्त्रे तन्त्रेऽपि यन्त्रे नुतसकलकलायां च शब्दार्णवे वा
को वान्यः कोविदोऽस्ति श्रुतमुनिमुनिवद्विश्व-विद्या-
विनोदः ॥३९॥

शब्दे श्री **पूज्यपादः** सकल-विमत-जित्तर्कतन्त्रेपुदेवः
सिद्धान्ते सत्यरूपे जिन-विनिगदिते **गौतमः कोण्डकुन्दः** ।
अध्यात्मे **वर्द्धमानो** मनसिज-मथने वारिमुग्दुःखवन्हा-
वित्येवं कीर्त्तिपात्रं **श्रुतमुनिवदभूद्भूत्रये** कोऽत्र कश्चित्
॥४०॥

श्रद्धां शुद्धां प्रवृद्धां दधतमधिकृतां जैनमार्गे सुसर्गे
सिद्धिं बुद्धेर्म्महर्द्धेर्बुध-वर-निवहैरद्भुतामर्त्यमानां ।
मित्रं चित्रं चरित्रं भवचय-भयदं भव्यनव्याम्बुजाना-
मर्घ्येनोद्ध्यूनमेनं **श्रुतमुनि**-मुनिपं चन्द्रमाराधयध्वं ॥४१॥
श्रीमानितोऽस्याभयचन्द्रसूरेस्तस्यानुजात [श्रु]तकीर्त्ति-
देवः ।
प्रभूज्जिनेन्द्रादितलक्षणानामापूर्णवक्षो ठव-धाक-गृत्तः ॥४२॥
विदित-सकलवेदे वीत-चेतो-विषादे
विजित-निखिल-वादे विश्वविद्याविनोदे ।
विनतपरिवमोदे विस्फुरद्वित-प्रसादे
विनुत-जिनप-पादे विश्वरत्नं प्रवेदे ॥४३॥
स श्रीमांश्चतनूज्ञवरनु गविपदं सन्न्यपाचचाहकीर्त्तिः

कीर्त्याकीर्णत्रिलोक्या मुहुरयति विधुः कार्श्यमद्याप्यमुष्य:।

(तृतीय मुख)

यस्योपन्यास-वन्य-द्विप-पटु-घटयोत्पाटितारवाद्ववाद:
पद्मागमाद्यमिश्राऽवलवलकथयोऽप्युदितमाऽऽदिपद्या : ॥४४॥
चारुश्रीचारुकीर्त्तिः पदनतवसुधाधीश्वरोऽधीश्वरोऽयं
गर्व्वं कुर्व्वन्त्वमुर्व्वीश्वर-सदसि महावादिनो वादवन्ध्यं ।
चक्रे दिग्मोहदम्भस्थलसवधा: साधिताशेषसाध्यां
द्वैताद्वैताद्यविद्याव्यपगमविलसद्विश्वविद्याविनोदः ॥४५॥
बल्लाल-क्षोणिपालं बलित-चलित-वक्ष वाजिभिर्व्वं जिताजि
रोगावेगाद्रुतासु स्थितिमपि सहसोऽल्लाघतामानिनाय ।
ख्यातीयैव स्वयं योऽप्रतिमविदभयसूरिं लब्धावारयत्त-
प्रिसर्गमार्गप-शास्त्राम्बुनिधिमभयसूरिं परं सिंहणार्य्यं
॥४६॥

शिष्यो गुणाध शिष्टी-करण-निपुण सूत्रस्य तस्योपदेष्टु-
शिष्य पीयूष-निष्यन्दन पटु वचन पण्डित स्वपिस्ताप ।
सूरिस्सुरा विनयाम्बुरुहविकसने सर्व्वदिव्याधिधाम
धामानस्यात्कृताल्या येश्रुतमुनिनगर तत्र धर्म्मानिवृद्ध्यै ॥४७॥
परिमलाप्रपदराजो भुवनजिनमिने गुम्मट कर्म्मदाम
सत्या प्राप्या च मुक्त्याल-सुर-नगर स्थापयत्स्वमठो ।
तद्द्वत्ताल-प्रयासंस्थल-स्तु-जिन-बिम्बानि सान्याति चान्यः
कृत्वा मे श्रीशरणसी त्रिभुवन-विलसत्कीर्ति-चकोर चक्रे ॥४८॥
ख्याते नवपालमर्त्येऽश्वतरमतुलं पण्डितार्यप्रसूरेगु

श्रीमानेषोऽर्क्ककीर्त्तिर्न्नृप इव विलसत्सत्सालसोपानकार्यः।
चित्रं शीर्षेऽभिषिच्य त्रिभुवनतिलकं तं पुनस्सप्तवारान्
पङ्कोन्मुक्तं विधायाखिलजगदुरुपुण्यैस्तथालङ्चकार ॥४६॥
किंवा चोराभिषेकादुदनिजयशसो निर्म्मलाच्छङ्कराट्रीन्
गोत्राद्रीन्स्फाटिकाँ च चितिममरगजान्दिग्गजानेष घोरः।
चीरोदान्सप्तसिन्धूनुदरिजलधरान्शारदान्नागलोकं
शेषाकीर्श्ण विदोर्श्णामृतकलशमपि स्वर्व्वितेने न विद्मः ॥५०॥
मेरौ जन्माभिषेकं सुरपतिरिव वत्तयैवात्र शैले
देवस्यादर्शयन्नो परमखिलजनस्यैष सूरिर्व्विधाय।
सन्मार्ग्गं चाधुनैनं पिहितमपि चिरं वामदृग्वाक्तमोभि-
श्भिरशो तानि पूर्व्वं पुरुरिव पुनरत्राकलङ्कोऽपनीय ॥५१॥
रे रे काणाद कांथं शरणमथिवस क्षुद्रनिद्रानिवासं
मैमांसेच्छामतुच्छां त्यज निजपटुवादेषु कृच्छ्रासुगच्छ।
बौद्धाबुद्धे विमुग्धोऽस्यपसर सहसा साङ्ख्यमार्ग्गं
सम्ख्यं

श्रीमान्मथ्नाति वादीन्द्रगजमभयसूरिः परं वादिसिंहः ॥५२॥
ऐश्वर्यं वहतश्च शाश्वतमुखे धत्तश्च सर्व्वज्ञतां
विभ्राते च गिरीशतां शिववधा श्रीचारुकीर्त्तीश्वरौ।
तत्रायं जिनमागसावजिनमाश्रोमानयं मार्ग्गये
हेमाद्रि समधत्त मार्ग्गममुमत्रेमा स हेमाचले ॥५३॥
स्फूर्ज्जद्दुर्ज्जदि-भाव-लोपन-शिखि-ज्वालावलीढस्य तं
हं हो मन्मथजीरनौत्वमिरभूद्देवा पुरा शैलजा।

सर्व्वज्ञोत्तमचारुकीर्त्ति सुमुनेस्सम्यक्तपो-वह्निना
निर्द्दग्धस्य चरित्रचण्डमरुतोद्धूतस्य का ते गतिः ॥५४॥
पितामहपरिष्वङ्गसङ्गदैन:प्रशान्तयं ।
चारुकीर्त्ति वचोगङ्गालिङ्गिताङ्गी सरस्वती ॥५५॥
श्रास्यं वाग्गीनिवास्यं हृदयमुरुदयं स्वं चरित्रं पवित्रं
देहं शान्त्यैकगेहं सकलसुजनवागण्यमुद्भूत-पुण्यं ।
भव्या भव्या गुणालिर्न्निखिलसुखवदैश्वर्यस्य सोऽयं जगत्यां
भव्याह्लादप्रसादो जयतु चिरमयं चारुकीर्त्तिव्रतीन्द्रः ॥५६॥
मूढं प्रौढं दरिद्रं धनपतिमधमं मानवं मानवन्तं
दुष्टं शिष्टं च दुःखान्वितमपि सुचिरं दुर्मदं धर्मशीलं ।
कुर्व्वन् सामन्तभद्रं चरितमनुसरन्नत्र सामन्तभद्रं ।
(चतुर्थमुख)
सन्वन् श्रीचारुकीर्त्तिर्ज्जगति विजयते चन्द्रिका-चारु-
कीर्त्तिः ॥५७॥
रे रे चार्व्वाक गर्व्वं परिहर विहराग्निं पुरैव प्रमुञ्च
साङ्ख्याख्यक्षयंय-राजत्परिकर-निकराज्ञातपट्टोऽसि
भट्ट ।
पूर्ण्णं काणाद तूर्ण्णं त्यज निजमनिशं मानमापन्निदाने
हिंसन्तुंबोऽभिपंत्यां प्रजतियदपराम्वादिनःशिंहणार्यः
॥५८॥
तत्पण्डिताक्र प्रमुखौ तरिव्रादिनाथौ
सम्यक्त्व-बोध-चरणामलरत्ननिधी,

मग बोम्मण्णनोलगाद गौडुगल समचदलि देवरिगे पादपूजेय माडि क्रयवागि कोण्डु कोट्टु असाधारणवदन्त कीर्त्तियनू पुण्यवनू उपार्ज्जिसि कोण्डनु मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[कर्नाट देश की गङ्गवती नामक नगरी में माणिक्यदेव और उनकी भार्या वाचायि रहते थे। इनके मायण्ण नामक पुत्र हुआ जो चन्द्रकीर्ति का शिष्य था। मायण्ण ने उक्त तिथि को बेलुल के गङ्गसमुद्र नामक सरोवर की दो खण्डुग भूमि खरीद कर उसे गोम्मट स्वामी के अष्टविध पूजन के लिये बेलुगुल के कई पुरुषों के समक्ष दान की।]

१०७ (२५६)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(लगभग शक सं० ११०२)

शीलदि चन्द्रमौलिविभुवाचलदेवि निजोदयकान्तया-
लोलमृगाचि बेलुगुलद गुम्मटनाथन पादद-
र्च्चालिगे बेड बेक्कन शीमेयनित्तुदारवीरब-
ल्लाल-नृपालकनुर्व्वियुमब्धियुमुल्लिनमेय्दे मन्निन ॥ १॥

अन्तु धारापूर्व्वकवं माडिकोटन्त ग्रामसीमे। मूड होसैन-हल्लि तेङ्कु यक्किहल्लि देवरहल्लि पडुव चोलेनहल्लि हाडोनहल्लि

(पूर्व मुख के नीचे)

बडग मञ्चेनहल्लिय बिट्टु कोट ग्रामी आचन्द्रार्कस्थायियागि सलुगे मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[चन्द्रमौलि की पत्नी आचल देवी की प्रार्थना पर वीरबल्लाल नृप ने 'बेक्क' नामक ग्राम का दान गोम्मटनाथ के पूजन के हेतु किया। अंत में ग्राम की सीमा दी हुई है।

नोट—पाचल देवी के अन्य अनेक दानों का उल्लेख शक सं० ११०१ के लेख नं० १२४ (३२७) में है। अतएव प्रस्तुत लेख का समय भी शक सं० ११०१ के लगभग होना चाहिये। पर आश्चर्य यह है कि यह लेख इससे बहुत पीछे के दो लेखों (नं० १०५ और १०१) के नीचे खुदा हुआ है। लिपि भी इसकी इतनी पुरानी प्रतीत नहीं होती। सम्भव है कि किसी आधार पर लेख पीछे से ही लिखा गया हो।

१०८ (२५८)

सिद्धरबस्ती में दक्षिण ओर एक स्तम्भ पर

(शक सं० १३५५)

(प्रथममुख)

श्री जयत्यजय्यमाहात्म्यं विशासितकुशासनं ।
शासनं जैनमुद्भासि मुक्तिलक्ष्म्यैकशासनं ॥ १ ॥
अपरिमितसुखमनल्पावगममयं प्रहतघनदुरितमङ्गं ।
निखिलावलोकविभवं प्रसरतु हृदये परं ज्योतिः ॥ २ ॥
वर्द्धमानखिलजगदुत्तजं ज्ञानानयान्तर्गतं
सत्याकारसुधाभिषिक्तजगन्निःशूकाकाव्यकूपाश्रित ।
आरोप्य श्रुतयानपात्रममृतद्वीपं नयन्त परा-
नेते तीर्थंकृतो महोदयदया मध्यमवाप्यामरतां ॥ ३ ॥
तत्रान्वयम् त्रिभुवनप्रभुरिद्धवृत्तिः
श्रीवर्द्धमानमुनिरन्तिमतीर्थनाथः ।
यद्दर्दीप्तिरपि गणभृद्धिताखिलानां
पूर्वोत्तराभितवन्वान् विरादापकार ॥ ४ ॥

तस्याभवच्चरमचिज्जगदीश्वरस्य
यो योऽन्त्यराज्यपदसंश्रयतः प्रभूतः ।
श्रीगौतमोगणपतिर्भगवान्वरिष्ठः
श्रेष्ठै रनुष्ठितनुतिर्मुनिभिस्स जीयात् ॥ ५ ॥

तदन्वये शुद्धिमति प्रतीते समग्रशीलामलरत्नजाले ।
अभूद्यतीन्द्रो भुवि भद्रबाहुः पयःपयोधाविव पूर्ण्ण-
चन्द्रः ॥ ६ ॥

भद्रबाहुरग्रिमः समग्रबुद्धिसम्पदा
शुद्धसिद्धशासनं सुशब्द-बन्ध-सुन्दरं ।
इद्धवृत्तसिद्धिरत्र बद्धकर्म्मभित्तपो-
वृद्धिवर्द्धितप्रकीर्त्ति रुद्दधे महर्द्धिकः ॥ ७ ॥

यो भद्रबाहुः श्रुतकेवलीनां मुनीश्वराणामिह पश्चिमोऽपि ।
अपश्चिमोऽभूद्विदुषां विनेता सर्व्वश्रुतार्थप्रतिपादनेन ॥ ८ ॥

तदीय-शिष्योऽजनि चन्द्रगुप्तः समग्रशीलानतदेववृद्धः ।
विवेश यत्तीव्रतपःप्रभाव-प्रभूत-कीर्त्तिर्भुवनान्तराणि ॥ ९ ॥

तदीयवंशाकरतः प्रसिद्धादभूददोषा यतिरत्नमाला ।
बभौ यदन्तर्म्मणिवन्मुनीन्द्रस्स कुण्डकुन्दोदित-चण्ड-
दण्डः ॥ १० ॥

अभूदुमास्वातिमुनिः पवित्रे वंशे तदीये सकलार्थवेदी ।
सूत्रीकृतं येन जिनप्रणीतं शास्त्रार्थजातं मुनिपुङ्गवेन ॥११॥
स प्राणिसंरक्षणसावधानो बभार योगी किल गृद्धपक्षान् ।

तदा प्रभृत्येव बुधा यमाहुराचार्यशब्दोत्तरगृद्ध-
पिञ्छं ॥ १२ ॥

तस्मादभूद्योगिकुलप्रदीपो **बलाकपिञ्छः** स तपो-
महर्द्धिः ।

यदङ्गसंस्पर्शनमात्रतोऽपि वायुर्विषादीनमृतीचकार ॥ १३ ॥

समन्तभद्रोऽजनि भद्रमूर्त्तिस्ततः प्रणेता जिनशासनस्य ।

यदीयवाग्वज्रकठोरपातश्चूर्णीचकार प्रतिवादिशैलान् ॥१४॥

श्री **पूज्यपादो** धृतधर्मराज्यस्ततः सुराधीश्वर-पूज्य-
पादः ।

यदीयवैदुष्यगुणानिदानीं वदन्ति शास्त्राणि तदुद्धृतानि ॥१५॥

धृतविश्वबुद्धिरयमत्र योगिभिः

कृतकृत्यभावमनुबिभ्रदुच्चकैः ।

जिनवद्बभूव यदनङ्गचापहृत्

स **जिनेन्द्रबुद्धि**रिति साधुवर्णितः ॥ १६ ॥

श्रीपूज्यपादमुनिरप्रतिमौषधर्द्धि-

र्जीयाद्विदेहजिनदर्शनपूतगात्रः ।

यत्पादधौतजलसंस्पर्शप्रभावा-

त्कालायसं किल तदा कनकीचकार ॥ १७ ॥

ततः परं शास्त्रविदां मुनीना-

मग्रेसरोऽभूदकलङ्कसूरिः ।

मिथ्यान्धकारस्थगिताखिलार्थाः

प्रकाशिता यस्य वचोमयूखैः ॥ १८ ॥

तस्मिन्गते स्वर्ग्गभुवं महर्षौ दिवःपतीन्नर्त्तुमिव प्रकृष्टान् ।
तदन्वयोद्भूतमुनीश्वराणां बभूवुरित्थं भुवि सङ्घभेदाः ॥१९॥

स योगिसङ्घश्चतुरः प्रभेदानासाद्य भूयानविरुद्धवृत्तान् ।
बभावयं श्रीभगवान्जिनेन्द्रश्चतुर्म्मुखानीव मिथस्समानि ॥२०॥

देव-नन्दि-सिंह-सेन-सङ्घभेदवर्त्तिनां
देशभेदतः प्रबोधभाजि देवयोगिनां ।
वृत्ततस्समस्ततोऽविरुद्धधर्म्मसेविनां
मध्यतः प्रसिद्ध एष **नन्दिसङ्घ** इत्यभूत् ॥ २१ ॥

नन्दिसङ्घे स**देशीय**गणे गच्छे च **पुस्तके** ।
इंगुलेशबलिर्ज्जीयान्मङ्गलीकृतभूतलः ॥ २२ ॥

तत्र सर्व्वशरीरिरक्षाकृतमतिर्व्विजितेन्द्रिय-
स्सिद्धशासनवर्द्धनप्रतिलब्धकीर्त्तिकलापकः ।
विश्रुत-**श्रुतकीर्त्ति**-भट्टारकयतिस्समजायत
प्रस्फुरद्वचनामृतांशुविनाशिताखिलहृत्तमाः ॥ २३ ॥

कृत्वा विनेयान्कृतकृत्यवृत्तीन्निधाय तेषु श्रुतभारमुच्चैः ।
स्वदेहभारं च भुवि प्रशान्तस्समाधिभेदेन दिवं स भेजे ॥२४॥

(द्वितीयमुख)

गते गगनवाससि त्रिदिवमत्र यस्योच्छ्रिता
न वृत्तगुणसंहतिर्व्वनिति केवलं तद्यशः ।
अमन्दमदमन्मथप्रणमदुग्रचापोच्चल-
त्प्रतापहतिकृत्तपञ्चशरणभेदलब्धं भुवि ॥ २५ ॥

श्रीचारुकीर्त्तिमुनिरप्रतिमप्रभाव-
स्तस्मादभूमिजयशोधवलीकृताशः ।
यस्याभवत्तपसि निष्ठुरतापशान्ति-
श्चित्ते गुणे च गुरुता कृशता शरीरे ॥ २६ ॥
यत्पादपङ्कजभिर्व्वेल्लितापद्मो
वर्णयामास सारस्य भुवनं ।
गुणिनाम्नायिक च प्रकृष्टाय-
श्शब्दविद्याम्बुधेर्द्धि चन्द्रमाः ॥ २७ ॥
यस्य योगीशिनः पादयोस्सर्व्वदा
मङ्गलीभिन्दिरा पश्यतश्चाङ्घ्रिषु ।
चिन्तयत्याश्रवत्कृपणता सम्पीत
नान्यथा लीक्षता किं भवेत्ततः ॥ २८ ॥
भवी शरीरा भवताऽपि वाता कस प्रशान्तिं विततान तर्वां ।
बल्लालराजोत्थितरोगशान्तिरासीदिति कीर्तिरेतु
मेघजेन ॥ २९ ॥
मुनिर्भनीषा-बलता विचारित समाधिमेवं समवाप्य सत्तम ।
विहाय देहं विविधापदां पदं विवेश दिव्यं वपुरिद्ध-
वैभवं ॥ ३० ॥
अस्यमायाति सति मन्कृतिनि पर्य-
न्ति नानविन्दतदा पण्डितयति-
स्तोम: सन्तुसिद्धयात्मस्तोमपिहितं
सर्वज्ञमुनिरिव सकलमिहपादाेय ॥ ३१ ॥

विबुधजनपालकं कुबुध-मत-दारकं ।
विजितसकलेन्द्रियं भजत तमलं बुधाः ॥ ३२ ॥

धवल-सरोवर-नगर-जिनास्पदमसदृशमाकृतवदुरु-
तपोमदः ॥ ३३ ॥

यत्पादद्वयमेव भूपतितितिश्चक्रे शिरोभूषणं
यद्वाक्यामृतमेव कोविदकुलं पीत्वा जिजीवानिशं ।
यत्कीर्त्या विमलं बभूव भुवने रत्नाकरेणावृतं
यद्विद्या विदधीपकार भुवने शास्त्रार्थजातं महत् ॥ ३४ ॥

कृत्वा तपस्तीव्रमनल्पमेधास्सम्पाद्य पुण्यान्यनुपप्लुतानि ।
तेषां फलस्यानुभवाय बद्धचेता इवाप त्रिदिवं स योगी ॥३५॥

तस्मिन्जाते भुवि **सिद्धान्तयोगी**
प्रोद्यद्वाचा वर्द्धयन् सिद्धशास्त्रं ।
शुद्धे ध्याने द्वादशात्मा कवीन्द्रै-
र्वैदुष्यश्रीमुष्मिभृद्यन्त्ररैः ॥ ३६ ॥

दुर्वादिमुखं शास्त्रजातं विवेकी वाचानेकान्तार्थसम्पूर्णया यः ।
इन्द्रोऽपन्या मेघजालंयथा भूभृद्भिर्भूभृत्संहतिं वा
बिभेद ॥ ३७ ॥

यद्गुरुशम्भुजनतावनिपालमौलि-
रत्नांशुरञ्जितपदं विबुधः भवानां ।
तद्गुण वक्तु न बृहस्पतिरप्यलम्
नो वीक्ष्यते न च वक्त न च भाष्यमिदं ॥ ३८ ॥

प्रविश्य शास्त्राम्बुधिमेष धीरो जग्राह पूर्व्वं सकलार्थरत्नं ।
परेऽसमर्थास्तदनुप्रवेशादेकैकमेवात्र न सर्व्वमापुः ॥३९॥

सम्पाद्य शिष्यान्स मुनिः प्रसिद्धा-
    नध्यापयामास कुशाग्रबुद्धीन् ।
जगत्पवित्रीकरणाय धर्म-
    प्रवर्त्तनायाखिल सेविदं च ॥ ४० ॥

कृत्वा भक्तिं ते गुरोस्सर्व्वशास्त्रं
    नीत्वा वत्सं कामधेनुं पयो वा ।
स्वीकृत्याददैस्तपिवन्तोऽतितुष्टा
    शक्तिं स्वयं व्यापयामासुरिद्धां ॥ ४१ ॥

तदीयशिष्येषु विदांवरेषु गुणैरनेकैश्च समुज्ज्वलेषु ।
रराज शैलेषु समुन्नतेषु च रत्नकूटैरिव मन्दराद्रिः ॥ ४२ ॥

कुलेन शीलेन गुणेन सत्या शास्त्रेण रूपेण च यावद एव ।
विचार्य तं सूरिपदं स नीत्वा कृतार्थयन् स्वं
    सद्यश्चकार ॥ ४३ ॥

अथैकदा विन्ध्यदिदृक्षयेना स्थिति समाश्रित्य निजः पुराऽस्य ।
सामर्थ्य चाखिलं स्वाप्यं समर्थे तपश्चरित्वापि समाव-
    र्त्तयत ॥ ४४ ॥

विचार्य चैवं हृदय गद्यापद्यैर्विदयामास विनयवान्परः ।
मुनिः समाहूय महामहत्तेने स्वपुत्रमिव कृतकृत्य-
    मात्मनः ॥ ४५ ॥

(तृतीयमुख)

मदन्वयादेष समागतोऽयं गणी गुणानां पदमस्य रक्षा।
त्वयाङ्ग मद्भक्तियतामितीष्टं समर्प्पयामास गणी गणं
स्वं ॥ ४६ ॥

गुरुविरहसमुद्यद्दुःखदूनं तदीयं
मुखमगुरुवचोभिस्स प्रसन्नीचकार ।
सपदि निमलिताब्द-श्लिष्ट-पांसु-प्रताने
किमधियमति योऽपिन्मन्दफूत्कारवातैः ॥ ४७ ॥

कृतितविहितवृत्तस्त्वस्वगुप्तिप्रवृत्तो
जितकुमतविशेषश् शोषिताशेषदोषः ।
जितरतिपति-मल्लक्षत्र-विद्या प्रभुत्व-
म्मुकृतफल-विधेयं सोऽगमद्दिव्यभूयं ॥ ४८ ॥

गतेऽत्र तत्सूरिपदाश्रयोऽयं
मुनीश्वरस्सन्नुमथर्द्धयसराम् ।
गुर्व्वश्च शास्त्रैश्चरितैरनिन्दितैः
प्रचिन्तयन्तद्गुरुपादपङ्कजम् ॥ ४९ ॥

प्रकृत्य कृत्यं कृतसद्गुरुणां विहाय चाकृत्यमनल्पबुद्धिः ।
प्रवर्द्धयन धर्म्ममनिन्दितं तद्गुरूपदेशान नकतीधकार ॥५०॥

श्रमणपदवर्यं मुनिश्चिमिमतागिभरगुरुत्वान
श्रमन्द-मदन्म श्चरकुमत-वादिशोभादतान ।
श्रमश्रमरनूनिमद श्रमितमारिविशोषतत्
तरङ्ग-नतिरिश्रम-मदस-चातुरोनिर्नुदि ॥ ५१ ॥

का त्वं कामिनि कथ्यतां श्रुतमुनेः कीर्त्तिः किमागम्यते
ब्रह्मन् मत्प्रियसन्निधो भुवि बुधैस्सम्मृग्यते सर्व्वतः ।
नेन्द्रः किं स च गोत्रभिद् धनपतिः किं नास्त्यसौ किन्नरः
शेषः कुत्रगतस्स च द्विरसना रुद्रः पशूनां पतिः ॥ ५२ ॥

वाग्देवताहृदय-रञ्जन-मण्डनानि
मन्दार-पुष्प-मकरन्द-रसोपमानि ।
आनन्दिताखिल-जनान्यमृतं वमन्ति
कर्णेषु यस्य वचनानि कवीश्वरस्य ॥ ५३ ॥

समन्तभद्रोऽप्यसमन्तभद्रः
श्री-पूज्यपादोऽपि न पूज्यपादः ।
मयूरपिञ्छोऽप्यमयूरपिञ्छ-
श्चित्रं विरुद्धोऽप्यविरुद्ध एषः ॥ ५४ ॥

एवं जिनेन्द्रोदितधर्म्मभृङ्गैः प्रभावयन्त मुनि वंश-दीपिने ।
भद्रयवृत्या कलिना प्रयुक्त बबाध नानलमकाप
पुनवन् ॥ ५५ ॥

यथा ग्ल प्राप्य महानुभावं समय पश्चात्कवशीकरोति ।
तथा शर्म्मत्सारमनुप्रविश्य वपुर्व्वबाधे प्रतिबद्धवीर्यः ॥५६॥
बह्वान्यभूवन् सङ्गतानि यस्य न च प्रदान्यकृत कृत्य भाजः ।
प्रकम्पमापत्तुपरिङ्रोगाक्ष चित्तमाबध्यकमात्पुर्व्वं ॥ ५७ ॥
स मोक्ष-मार्गं कथितं धीरा गुरुं च धर्म्मं हृदय प्रशान्त
गमावयं तद्विपरीतकारिण्यसिव प्रसर्पत्यविदद्गुरुं मै. ५८

भङ्गेषु तस्मिन् प्रविजृम्भमाणे
 निश्चित्य योगी तदसाध्यरूपतां ।
ततस्समागत्य निजाग्रजस्य
 प्रणम्य पादाववदत् कृताञ्जलिः ॥ ५९ ॥
देव **पण्डितेन्द्र** योगिराज धर्म्मवत्सल
 त्वत्पद-प्रसादतस्समस्तमर्जितं मया ।
सयशः श्रुतं व्रतं तपश्च पुण्यमक्षयं
 किं ममात्र वर्त्तित-क्रियस्य कल्प-काङ्क्षिणः ॥ ६० ॥
देहतो विनाश्र कष्टमस्ति किं जगत्त्रये
 तस्य रोग-पीडितस्य वाच्यता न शब्दतः ।
देय एव योगतो वपु-र्निर्मर्ज्जन-क्रम-
 स्साधु-वर्ग-सर्व-कृत्य वेदिना विदांवर ॥ ६१ ॥
विज्ञाप्य कार्य्यं मुनिरित्यमर्थ्यं
 मुहुर्म्मुहुर्व्वारयतो गणीशात् ।
स्वीकृत्य सल्लेखनमात्मनीने
 समाधिना भावयति स्म भाव्यं ॥ ६२ ॥
उद्यद्-विरत्-तिमि-तिमिङ्गिल-नक्र-चक्र-
 प्रोत्तुङ्ग-मृत्युमृति-भीम-तरङ्ग-राजि ।
संसार-वक्त्र-पयोनिधि-मध्य-मग्नं
 त्रिभाद्यसुभिं शमयं पतितस्य जन्तुः ॥ ६३ ॥
इद मनु पदङ्कज गगन-गामिना केवल
 न देवमनुवासरं निहित-देह-भारामपि ।

अतोऽस्य मुनयः परं विनमनाय बद्धादरा
यतन्त इह सन्ततं कठिन-काय-तापादिभिः ॥ ६४ ॥
अयं विषयगह्वरो विषमरोगदोषास्पद
स्पृहाजनिजुषामहो बहुभवेषु सम्भावितम् ।
अतः खलु विवेकिनस्तमपहाय सर्वं सदा
विशन्ति परमक्षयं विविध-कर्म-दा-युक्तिम ॥ ६५ ॥

(चतुर्थ वृत्त)

शरीर-दुःख-शिखि-सन्ततिसन्तप्तयष्टि
शीताशनपान-तपातप-ताप सदा ।
स्रक्-चन्दनादि-विषयामिष-लोभ-लिप्त
को वास्य शुचि सम्भवति प्रबुद्ध ॥ ६६ ॥
यत्तु स्वाधीनमस्य गृहिण किं
पारस्यापारमुक्तिमृद्धरा च किं स्यात् ।
पुत्रादीनां शत्रु-कार्यं किमर्थं
स्पृष्टैरेवं स्वार्थता प्रादुरासीत् । ६७ ॥
इह हि भवेऽस्मिन् बहु-दुःख-सीम-
मिव वयमाधेन-रोग-दाहा ।
स्वसूत्राचारमपांशुशाला
दर्शनमूलस्य विपत्फला हि ॥ ६८ ॥
सर्वं तथा प्राक्तन-जन्म-पुण्यात्
शुक्तस्य सद्गणात्मपूर्वपुंडे ।

मदाश्रयः श्रीजिन-धर्म्मसेवा
ततो विना मा च परः कृती कः ॥ ६९ ॥

इत्थं विभाव्य सकलं भुवन-स्वरूपं
योगी विनश्वरमिति प्रशमं दधानः ।
अर्द्धनिमीलितदृगस्खलितान्तरङ्गः
पश्यन् स्वरूपमिति सोऽवहितः समाधौ ॥ ७० ॥

हृदय-कमल-मध्ये सैद्धमाधाय रूपं
प्रसरदमृतकल्पैर्म्मूलमन्त्रैः प्रसिञ्चन् ।
मुनि-परिषदुदीर्णै-स्तोत्र-घोषैस्सहैव
श्रुतमुनिरयमङ्गं स्वं विहाय प्रशान्तः ॥ ७१ ॥

अगमदमृतकल्पं कल्पमल्पीकृतैना
विगलितपरिमोहस्तत्र भोगाङ्गकेषु ।
विनमदमर-कान्तानन्द बाष्पाम्बु-धारा-
पतन-द्रुत-रजोऽन्तर्द्धाम-सोपानरम्यं ॥ ७२ ॥

यतौ याते तस्मिन् जगदजनि शून्यं जनिभृतां
मनो-मोह-ध्वान्त गत-शशमपूर्वप्रतिहतं ।
व्यशीर्य्युग्रश्लोका नयन-जल-धुमां विरचयन्
वियोग किं कुर्य्यादिह न महतां दुस्सहतरः ॥ ७३ ॥

यादा यस्य महामुनरपि न कैर्मूर्च्छितामिन्दुना
दृष्टं मम विहांवस्य हृदयं अपाङ्ग करुणानर्घ ।
सोऽयं श्रीमुनि-भानुमान विधि-वशादस्तं प्रयातो महान्
नूनं वह्निविमर इन्ति नाशा इत्तुं यतन्ते बुधाः ॥ ७४ ॥

यत्र प्रयान्ति परलोकमनिन्द्यवृत्ता-
स्स्थानस्य तस्य परिपूजनमेव नवा ।
इत्या अवेदिति कृताकृतपुण्यराशिं
स्थेयादिदं श्रुतमुनेर्मुचिरं निवद्धा ॥ ५५ ॥
द्रयु-शर-शिखि-विधु मित-शक-
परिधावि शरद्विलीयमाषाढे
सित-नवमि-विधु-दिनोदयजुषि
सविशाखे प्रतिष्ठितपमिह ॥ ५६ ॥
विलीन-सकल-क्रिय विमल-रागमत्युर्जित
विशुद्धि-समसुता-विरहित विपुलाशय ।
समाह्न-मनस-पावन विजित-नाक-नाथ यमिन
महाय-हृदयस्थिता भवतु धाम दिव्य महत ॥ ५७ ॥
प्रबन्ध-ध्वनि-[illegible] ।
मद्दराज-[illegible] ॥ ५८ ॥

(नोट—[illegible])

१०८ (२८१)

स्याद्वादमतिदेवस्तम्भ पर

(लगभग शक सं० २५०)

(उत्तर मुख)

[illegible]
[illegible] ।

मग्न-चत्र-कुलाकरापल-भव-श्री-हार-वक्षोमणिः
मग्न-चत्र-कुलाभिपण्डपवनश्रायुधराजोऽजनि ॥ १ ॥
कल्पान्त-क्षुभिताब्धि-भीषण-बलं पातालमल्लानुजम्
जेतुं वज्जिवलदेवमुद्यतभुजस्येन्द्र-क्षितीन्द्राज्ञया ।
पत्युः श्रीजगदेकवीर नृपतेर्जैत्र-द्विपस्याग्रतो
धावद्दन्तिनि यत्र भग्नमहितानीकं मृगानीकवत् ॥ २ ॥
अस्मिन् दन्तिनि दन्त-वज्र-दलित-द्विट्-कुम्भि-कुम्भोपले
वीरोत्तंस-पुरानिषादिनि रिपु-व्याघ्राङ्कुशे च त्वयि ।
स्यात् कोनाम न गोचरः प्रतिनृपो मद्बाण-तूणान्तर-
मागमयति मेरलम्यराजागमरे यः रक्षायितः स्वामिना ॥ ३ ॥
स्थात धार-पयोधिरस्तु परिधिरथास्तु त्रिकूटस्पुरी
लङ्कास्तु प्रति नायकोऽस्तु च सुराराति[illegible]पि क्षम ।
त [illegible] जगदेकवीर-नृपते [illegible]
निर्व्यूढ रणसिङ्ग-पार्थिव-रणे येनाजितं [illegible] ॥ ४ ॥
[illegible] नृपि[illegible] यत्र कण्ठमहोत्कण्ठया
[illegible] निरु[illegible] निरस्त[illegible]-धाराम्बरा ॥
[illegible] रणरङ्गसिङ्ग-[illegible] [illegible]
[illegible]-कलितं [illegible] वि[illegible] ॥ ५ ॥
[illegible] नृ[illegible] गङ्गा[illegible]
[illegible] गङ्ग-[illegible] ।
[illegible] [illegible] ब्रह्म[illegible]
[illegible] गङ्गराज [illegible] ॥ ६ ॥

[नोट—केवल यही एक लेख है जिसमें चामुण्डराय मंत्री का स्वतन्त्र और विस्तृत रूप से वर्णन पाया जाता है। दुर्भाग्यवश यह लेख का एक खण्ड मात्र है। ज्ञात होता है कि अपना एक पूरा या लेख नं० ११० (२८२) खिलाने के लिये इसके कण्ठान इस महत्त्वपूर्ण लेख की तीन बाजू घिसवा डाली है। यदि यह लेख पूरा मिल जाता तो सम्भव है कि इससे चामुण्डराय और नेमिचन्द्र मुनि के सम्बन्ध की अनेक बातें विदित हो जातीं जिनके विषय में अब केवल अनेक अनुमान ही लगाये जाते हैं।

११० (२८८)

उसी स्तम्भ पर

(लगभग शक सं० ११६४)

(दक्षिणमुख)

श्री-गोम्मट-जिन-पादद प्रासाद कल्मषं पञ्चने माडिसिदं ।
धीगम्भीरगुणाढ्यं भोग-पुरन्दरनिर हेमांडे कणपं ॥

[गम्भीर बुद्धि और गुणवान् हेमाडे कणप ने गोम्मट जिन के सम्मुख त्यागद स्तम्भ के लिये यह देवता निर्माण कराया।]

१११ (१०४)

अखण्ड बागिलु के पूर्व की ओर चट्टान पर

(शक सं० ११९५)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ लाञ्छनं
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन शासनं ॥ १ ॥

श्रीमूल-संघ-पयःपयोधिवर्द्धन-सुधाकर-राद्धान्त-
कमल-कलिका-कलाप-विकसन-दिवाकर... वनवा... सकीर्त्ति-

देवरु तच्छिष्याः [illegible]......[illegible] [illegible] कीर्त्ति [illegible] तच्छिष्याः [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तच्छिष्याः [illegible]... [illegible] ...[illegible]... [illegible]......... ..[illegible] . [illegible] ... [illegible] [illegible] ...[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

१११ (४०४)

इसी चट्टान पर

([illegible])

[illegible] कीर्त्ति [illegible]

[illegible] ।

११२ (४०५)

इसी चट्टान पर

([illegible])

[illegible]

[illegible]

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलाचार्य्यादि-प्रशस्तय-विराजित-चिह्नालङ्कृतरुं विसम्वादवबोधितरुं सकल-विमल-केवल-ज्ञान-नेत्र-त्रयरुं अनन्त-ज्ञान-दर्शन-वीर्य्य-सुखात्मकरुं विदितात्म-मद्धर्म्मोद्धारकरुं एकत्व-भावना-भावितात्मरुं उभ-नय-पमरर्थिसयरुं त्रिदण्ड-रहितरुं त्रिशल्य-निराकृतरुं चतु-कषा-विनाशकरुं चतुर्व्विधपुपसर्ग्गगिरिकन्दरादि-धैर्य-समन्वितरुं पञ्च-दम-प्रमाद-विनाश-कर्त्तुगलुं पञ्चाचार-वीर्य्याचार-प्रवीणरुं सद्गुदरशनद भेदाभेदिगलुं मदु-कर्म्म नाशरुं सप्तनयनिरतरुं अष्टाङ्ग-निमित्त कुशलरुं अष्ट-विध-ज्ञानाचार-सम्पन्नरुं नव-विध-ब्रह्मचरिय-विनिर्म्मुक्तरुं दश-धर्म्म-शर्म्म-शान्तरु मेकादशश्रावकाचारवुपदेशप्रधाचार-चारित्ररुं द्वादशतप-निरतरुं द्वादशाङ्ग-श्रुतप्रविधान सुधाकररुं त्रयोदशाचार-शील-गुण-धैर्य्यमं सम्पन्नरु एम्बत-नाल्कु-लक्ष जीव-भेद-मार्ग्गणरुं सर्व्व-जीव-दया-पररुं श्रीमत्कोण्डकुन्दान्वय-गगन-मार्त्तण्डरु विदितोतण्ड-कुम्भमाण्डरुं देशिगण-गजेन्द्र-सिन्धूरमदधारावभासुररुं श्री-महादेशि-गण-पुस्तक गच्छ कोण्ड-कुन्दान्वय श्रीमत् त्रिभुवनराज-गुरु-श्रीभानुचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगलुं श्री-सोमचन्द्र-सिद्धान्त चक्रवर्त्तिगलुं चतुर्म्मुखभट्टारकदेवरुं श्रीसिहनन्दिभट्टाचार्य्यरुं श्री शान्तिभट्टारकाचार्य्यरुं श्री-शान्तिकीर्त्ति...र...भट्टारकदेवरुं... श्रीकनकचन्द्रमल-धारिदेवरुं श्री नेमिचन्द्र मलधारिदेवरुं चतुसङ्घश्रीसकल-गण-पाधारण......ड-देवधामरुं कलियुग-गणधर-पञ्चासव

मुनीन्द्ररुं प्रवर शिष्यरु गौरश्रीकन्तियरु सोमश्रीकन्तियरु ...नश्रीकन्तियरु देवश्रीकन्तियरु कनक-श्रीकन्तियर शिष्य...यिप्पसु-एण्डुवण्ड-शिष्यरु वेरसु हेवळम्बि संवत्सरद फाल्गुणसु ८ त्रि श्री गोम्मटदेवर तीर्थनन्द......पञ्च कल्याण ....

[इस लेख में कुन्दकुन्दान्वय, देशी गण, पुस्तकगच्छ के महाप्रभावी आचार्यों—त्रिभुवनराजगुरु भानुचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्त्ति, सोमचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्त्ति, चतुर्मुख भट्टारकदेव, सिंहनन्दि भट्टाचार्य, शान्ति भट्टारकाचार्य, शान्तिकीर्त्ति भट्टारकदेव, कनकचन्द्र मलधारिदेव, और नेमिचन्द्र मलधारिदेव—के उल्लेख के पश्चात् कहा गया है कि इन सब आचार्यों व अनेक गणों और संघों के आचार्य, वळिगुण के गणधर पचास मुनीन्द्र, व उनकी शिष्याओं गौरश्री, सोमश्री, देवश्री, कनकश्री व शिष्यों के भट्टाइस संघों ने उक्त तिथि को एकत्रित होकर पञ्चकल्याणोत्सव मनाया।]

नोट—लेख में संवत्सर का नाम हेवळम्बि दिया हुआ है जिससे सम्भवतः हेमलम्ब का तात्पर्य है। शक सं० १०८१ हेमलम्ब था।]

११४ (२६८)

एक शिला पर जो उस चट्टान के सामने खड़ी है

(सम्भवतः शक सं० १२३८)

स्वस्ति श्रीमूलसङ्घदेशीगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दान्वय श्रीत्रैविद्य-देवर शिष्यरु पद्मणन्दिदेवरु नल-संवत्सरद चैत्र-सु-१ सोमवारदन्दु नाक-श्रीमनमरोजिनीराजमराळरादरु मङ्गलमहाश्री ॥

[उक्त तिथि को त्रैविद्यदेव के शिष्य पद्मनन्दिदेव ने समाधिमरण किया।]

[नोट—लेख में नल संवत्सर का उल्लेख है। शक सं० १२१८ नल था]

११५ (२६७)

अखण्डबागिलु की शिला पर

(लगभग शक सं० १०८२)

स्वस्ति श्रीमन्महाप्रधान भव्य-जन-निधानं सेनेयङ्कार रण-रङ्ग-धीर श्रीमन्मरियाने-दण्डनाथानुजं दानभानुजनेनिसिद भरतमय्य-दण्डनायकनी-भरतबाहुबलिकेवलिगल प्रतिमेग-लुमनी - बसदिगलुमावीर्थ-द्वार-पद्म-शोभातर्य माडिसिदनी-रङ्गद हप्पलिगेयुमनीमहासोपानपङ्क्तियुमं रचिसिदं श्रीगोम्मटदेवर सुत्तलु रङ्गम हप्पलिगेयं विगियिसिदनन्तुमन्न इयुमी-गङ्गवाडिना-ढोलब्बिगलिसिगेल्लि नोर्प्पडं।

कन्द ॥ प्रकट-यशो-विभुवेण्ड-

सु कसे-वमदिगङ्गनोसेदु जीर्णोद्धार-

प्रकरमनिन्नूरनलीं-

किक-धृति माडिसिदनेसेयं भरत-चमूपं ॥ १ ॥

भरत-चमूपतिसुते सु-

स्थिरं शान्तल-देवि बूचिराजाङ्गने

वङ्गरतनेयमरि......

...नो सद्दु बरयिसिदनिद ॥ २ ॥

[मरियाने दण्डनाथ के लघु भ्राता महामंत्री भरतमय्य दण्डनायक ने ये भरत और बाहुबलि केवलि की मूर्तियाँ व ये बसदियाँ इस तीर्थ-

स्थान के द्वार की शोभा के लिये निर्माण कराई। उन्होंने रङ्गशाला की हप्पलिगे (कटघर ?) व महासोपान व गोम्मटदेव की रङ्गशाला की हप्पलिगे भी निर्माण कराये, तथा गङ्गवाडिभट में अम्मी नवीन बस्तियाँ बनवाईं और दो सौ बस्तियों का जीर्णोद्धार कराया। भरत चमूपति की सुता शान्तल देवी·······ने यह लेख लिखवाया।]

११६ (३१२)

बोदेगल बस्ति के पश्चिम की ओर चट्टान पर

(शक सं० १६०२)

श्रीमतु शालिवाहन शकवरुष १६०२ सिद्धार्त्थि-संवत्सरद माघ-बहुल १० यल्लु मुनिगुन्दद सीमेय देश-कुलकरणियर मकलुवाङ्क होन्नप्पय्यन अनुज वेङ्कप्पैय्यन पुत्र सिद्दप्पैन अनुज नागप्पैय्यन पुण्यस्त्रीयराद बनदाम्विकेयरु बन्दु दरुशनवादरु भद्रं भूयात् श्री ॥ श्रु तसागर-वर्णिगल समेत यिदे तिथियल्लि माडिगूर गिडगप्प नागप्पन पुत्र दानप्पसेट्टर पुण्य-स्त्री नागवन मैदुन भिट्टप्पनु दरुशनवादरु ॥

[उक्त तिथि को श्रुतसागर गणी के साथ उक्त व्यक्तियों ने तीर्थ वंदना की।]

११७ (२५६)

कञ्चि गुब्बि बागिलु के दक्षिण की ओर चट्टान पर

(सम्भवत: शक सं० १५३१)

श्री सौम्यस वत्सरदोलु विभवद स्राश्वयज व ७ मियाल ता श्रोसोमनाथपुरवेनिसिद कोङ्गनाडिङ्गदं मनादिय प्रामं ॥

मा-मामदलु श्रीमत्पण्डित देवर शिष्यरु काश्यप-गोत्रद द्विज-कुल-सम्पन्नरु सेनबोव मायण्णनवरु मवर मदवलिगे मह्देविगल प्रिय-पुत्र हिरियण्णनु श्री गुम्मटनाथ-स्वामिगल दिव्य-श्री-पदवनु दरुशनवागि परमजिनेश्वर-भक्तरु वर-गुणिगलु मुक्ति-पथवं पडदरु ॥ श्री

[कश्यपगोत्रीय ब्राह्मण और पण्डित देव के शिष्य सेनबोव मायण्ण के पुत्र जिनभक्त हिरियण्ण ने उक्त तिथि को वनादि ग्राम बेल्गुल की यात्रा की (?) और उसकी पत्नी महादेवी ने गोम्मटनाथ स्वामी के चरणारविन्द की वन्दना कर मुक्ति-मार्ग प्राप्त किया ।]

[नोट—लेख में सौम्य संवत्सर का उल्लेख है। शक सं० १२३१ सौम्य था]

११८ (३१२)

चौवीस तीर्थंकर बस्ति में

(शक सं० १५७०)

(नागरी लिपि)

श्रीं नम सिद्धेभ्य: गोमट-स्वामी: आदीश्वर: मुल्ल-नाईक: चोवीस तीर्थंकरं कि परतीमा: चारुकीरती पण्डित: धरमचन्द्र भल्लातकार बपदसा: सके १५७० सर्वधारी-नाम-संवत्सर वैशाख वदी २ सुकुरवार देहराङ्गी पवी स्यहे .... मेरवाणु: वघेरवाल: जीनासा: धीवा सा का पुत्र. सदावनसा: व भावूसा: व लामाभाका पुत्र: ताकामा मनासा. फगुअपूरं सावसा भासया...... वद...भोपव......रसे राव......

११९ (२०७)

अखण्ड बागिलु को जाने वाले मार्ग के पश्चिम की ओर चट्टान पर

(विक्रम सं० १५१८)

(नागरी लिपि)

संवत् १५१८ वर्षे वैशाख-सुदि ७ सोमे श्री काष्ठा-संघे नन्दितटगच्छे...श्री-राजकीर्त्तिः । तत्पट्टे भ श्री लक्ष्मीसेनस्तत्पट्टे भ श्री इन्द्रभूषणस्तत्पट्टे योगु बघेरवाल ज्ञातौ बोरखण्ड्य-गोत्रे-पुत्र सं भा धनाई तथा पुत्र स रत्नाकर पुजनाई तथा पुत्र सं .... पद्माई स-परिवार गोमट-स्वामि चा यात्रा......सफल

१२० (३१८)

पहाड़ी पर चढ़ने के मार्ग के पूर्व की ओर चट्टान पर

(लगभग शक सं० ११४०)

मारकंरेय वीर वीरपल्लव-रायन मक केदेसब्बर-नायकं बेल्गुगोल प्प...येश बेज्जवडिगर बेटके ॥

१२१ (३२१)

ब्रह्मदेव मण्डप के पीछे चट्टान पर

(सम्भवतः शक सं० १६०१)

सिद्धार्थि स । कार्त्तिक सुद्ध २ रलु । श्री-ब्रह्म-देवर मटपवन्नु हिरिसालि गिरिगौडना तम्म रङ्गैयन से वे ॥

१२३ (३७५)

चेन्नण्णन के कुञ्ज में एक चट्टान पर

(लगभग शक सं० १५६५)

पुट्टसामि-सट्टर श्री-**देवीरम्मन** मग **चेन्नण्णन** मण्टप आदि-तीर्त्तद कोलविदु हालु-गोलनोविदु अमुर्त-गोलनोविदु **गङ्गे** नदियो। **तुङ्गबद्रियो**विदु मङ्गला गौरेयो विदु **वृन्द-वनवो**विदु सङ्गार-तोटवो। अयि अयिया अयि अयियं वले तीर्त्त वले तीर्त्त जया जया जया जय॥

[यह पुट्टसामि और देवीरम्म के पुत्र चण्णण का मण्डप और आदितीर्थ है। यह दुग्धकुण्ड है या कि अमृतकुण्ड ? यह गङ्गा नदी है या तुङ्गभद्रा या मङ्गलगौरी ? यह वृन्दावन है कि विहारो-पवन ? ओहो! क्या ही उत्तम तीर्थ है ?]

श्रवण बेल्गोल नगर में के शिलालेख

१२४ (३२७)

अक्कन बस्ति में द्वार के समीप एक पाषाण पर

(शक सं० ११०३)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥ १ ॥
भद्रम्भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघ-नाशिने ।
कुतीर्थ-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभेद-घन-भानवे ॥ २ ॥
स्वस्ति श्री-जन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्व्वानलोद्दाम-तेजं
विस्तारान्तःकृतोर्व्वी-तलममलयशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं ।
वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्वावलम्बं गभीरं
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि निभमेसगुं होय्सलोर्व्वीश-
वंशं ॥ ३ ॥
यदरोलु कौस्तुभदोन्दनर्घ्य-गुणमं देवेभदुद्दाम-स-
त्वदगुर्व्वं हिमरश्मियुज्वल-कला-सम्पत्तियं पारिजा-
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं ताल्दि तानल्दे पु-
ट्टिदनुद्दंजित-वीर-वैरि-विनयादित्यावनीपालकं ॥ ४ ॥
कं ॥ विनयं बुधरं रक्षिसे
घन-तेजं वैरि-बलमनलरिसे नेगल्दं ।

विनयादित्य-नृपालक-
नतुगल-नामार्थंनमल कीर्त्ति-समर्थं ॥ ५ ॥
मा-विनयादित्यन वधु
भावोद्भव-मन्त्र-देवता-सन्निभं मद्-
भाव-गुण-भवनमखिल क-
ला-विलासितं केलेयब्बरसियेम्बलु पेसरिं ॥ ६ ॥
मादम्पतिगं तनूभव-
नादं यक्षिगं सुराधिपतिगं मुन्नि-
न्तादं जयन्तनन्ते वि-
पाद-विदूरान्तरङ्गनेरेयङ्ग-नृपं ॥ ७ ॥
मातं चालुक्य-भूपालन बलद भुजा-दण्डमुद्दण्ड-भूप-
व्रात-प्रोत्तुङ्ग-भूभृद्-विदलन-कुलिशं वन्दि-सस्यौघ-मेघं ।
श्वेताम्भोजात-देव-द्विरदन-शरदभ्रेन्दु-कुन्दावदात-
ख्यात-प्रोद्यद्यशश्श्री-धवलितभुवनं धीरनेकाङ्गवीरं ॥ ८ ॥
एरेयनेलेगेनिसि नेगल्दं
एरेयङ्ग नृपाल-तिलकनङ्गने चलुवि-
ङ्गेरेवट्टु शील-गुणदि
नेरदेचलदेवियन्तु नोन्तरमोलरे ॥ ९ ॥
एने नेगल्दवरिर्व्वर्ग्ग
तनूभवर्न्नेगल्दरल्ते बल्लाल वि-
ष्णु-नृपालकनुदयादि-
त्यनेम्ब पेसरिन्दमखिल-वसुधा-तलदोल् ॥ १० ॥

भवरोल् मध्यमनागिर्पु भुवनदोलु पूर्व्वापराम्भोधिये-
ल्दुविनं कूडे निमिर्च्चुवोन्दु-निज-बाहा-विक्रम-क्रीडेयु-
द्भवदिन्दुत्तमनादनुत्तम-गुण-श्रीकं-धामं धरा-
धव-चूडामणि यादवाब्ज-दिनपं श्रीविष्णुभूपालक
॥ ११ ॥

एळेगंसेव कैयतूत्तत-
तलवनपुरमन्ते रायरायपुरं ब-
ल्वल बलेद विष्णु-तेजो-
ज्वलनदे येन्दवु बलिष्ठ-रिपु दुर्गङ्गल् ॥ १२ ॥

इनितं दुर्गम-वैरि-दुर्ग-चयमं कोण्डं निजाक्षेपदि-
न्दिनिबर्भूपरनाजियोल् तविसिदं तत्प्रश्न-सद्भावदि-
न्दिनिबर्गानवरिगेन्तनुद्घ-पदम कारुण्यदिन्देन्दुवा-
ननितं लेकदे पेल्वोडब्ज-भवनुं विभ्रान्तनप्पं बलं ॥१३॥

कं ॥ लक्ष्मीदेवि खगाधिप-
लचमङ्केसेदिर्द विष्णुगेन्तन्ते वलं ।
लक्ष्मा-देवि-लसन्मृग-
लक्ष्मानने विष्णुगमसतियेने नेगल्दल् ॥ १४ ॥

भवर्गो मनोजनन्ते सुदती-जन-चित्तमनीलकोलल्केसा-
ल्दवयव-शोभेयिन्दनुवेम्बभिधानमनानदङ्गना-
निवहमनेळ्चु सुरवनदमानदे योररनेळ्चु युद्धदोल् ।
ववितुबोनादनात्म-भवनप्रतिमं नरसिंह-भूभुजं ॥१५॥

पडे-माते' वन्दु कण्ठङ्गमूव-जलधि तां गर्व्वादिं गण्डवात'
तुडिवावङ्ग' ननेम्वै प्रलय-समयदोल् मेरेयं मीरिवर्प'
कडलन्नं कालनन्नं मुलिद कुलिकनन्नं युगान्ताग्नियन्नं
सिडिलन्नं सिंहदन्नं पुरदरनुरिगण्णन्ननी नारसिंहं
॥ १६ ॥

तदर्द्धाङ्ग-लक्ष्मि ॥

मृदु-पदेयेचलदेवी —
सुदतिये नरसिंह-नृपतिगनुपमसौख्य-
प्रदे पट्ट-महादेवी-
पदविगे सले योग्येयागि धरेयोल् नेगल्दल् ॥ १७॥

वृत्त ॥ ललना-लोलेगे मुन्नवेन्तु कुसुमास्त्र' पुट्टिदों विष्णुगं
ललित-श्री-वधु-विन्नवन्ते नरसिंहचोविपालङ्गवे-
चल-देवी-वधुगं परार्थ-चरित' पुण्याधिकं पुट्टिदों
बलवद्वैरि-कुलान्तकं जय-भुजं बल्लाल-भूपालकं ॥१८॥

रिपु-भूपालेभ-सिंहं रिपु-नृप-नलिनानीक-राका-शशाङ्कं
रिपु-राजन्यौघ-मेघ-प्रकर-निरसनोद्भूत-वात-प्रपातं ।
रिपु-धात्रीशाद्रि-वज्रं रिपु-नृपति-समस्तोम-विध्वंसनार्क
रिपु-पृथ्वीपालकालानलनुदयिसिदं वीर-बल्लाल-देवं॥१६॥

गत-लीलं लालनालम्बित-वहल-भयोग्र-ज्वरं-गूर्ज्जरं स-
न्धृत-शूलं गौलनुच्चैःकर-धृत-विलसत्पल्लवं पल्लवं प्रो-
ज्झित-चेलं चोलनादं कदन-वदन-दोलु भेरियं पोय्सेपीरा-
हित-भूभृज्जाल-कालानलनतुल-बलं वीर-बल्लाल-देवं ।२०।

भरदिन्द तंत्र दोर्गर्व्वदिनोडेयरस कादु काद्लकयं पू-
ण्डिरे बल्लाल-चितीशं नडद्दु बलसिरियुमुत्तेसेना गजेन्द्रो-
त्करदन्ताघात-सञ्चूर्णितशिखरदोलुन्दुङ्गियेोल्सिलिकिदंभा-
सुर-कान्ता-देश-कोश-प्रज-जनक-दुर्गधान्वितं पाण्ड्यभूपं
॥ २१ ॥

चिरकाल रिपुगलामाप्यमेनिसिर्द दुर्ग्गमुत्तिदु-
द्धर-तेजो-निधि धूलि-गोटेयने कोण्डाकाम-देवावनी-
श्वरन मन्दोडेय चितीश्वरननाभण्डारमं ख्रोयर
तुरग-व्रातमुमं समन्तु पिडिदं बल्लाल-भूपालकं ॥२२॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं द्वार-
वतीपुरवराधीश्वरं तुलुवबल-जलधि-वडवानलं दायाद-दावानलं
पाण्ड्य-कुल-कमलवेदण्ड गण्ड-भेरुण्ड मण्डलिक-बेण्टेकार
चेोल-कटक-सूरेकार। सङ्ग्राम-भीम। कलि-काल-काम। सकल-
वन्दि-वृन्द-सन्तर्प्पण-समग्र-वितरणविनोद। वासन्तिका देवी-
लब्ध-वर प्रसाद । यादव-कुलाम्बर-द्युमणि । मण्डलिक-
मकुट-चूडामणि कदन-प्रचण्ड मलपरोलुगण्ड शनिवारसिद्धि
गिरि-दुर्ग्ग-मल्ल नामादि-प्रशस्ति-सहितं श्रीमत्त्रिभुवन-मल्ल
तलकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-नोळम्बवाडि-बनवसे-हानुङ्गल-गोण्ड-
भुज-बल-वीर-गङ्ग-प्रताप-होय्सल वीर-बल्लाल देवरंपृथ्वी-
मण्डलमं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालन-पूर्व्वकं सुखसङ्कथा-विनो-
ददिं राज्यंगेय्युत्तिरे।
तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥

जनकं शिष्टेष्ट-चिन्तामणि जननि जगत्ख्यातेयक्कब्बेयेन्द-
न्दिनिसं श्री-चन्द्रमौलि-प्रभुगं समने कालेय-मन्त्रीश वर्गं
॥ २३ ॥

पति-भक्तं वर-मन्त्र-शक्ति-युतनिन्द्राङ्गं नु भास्वद्-बृह-
स्पति-मन्त्रीश्वरनादनन्ते विलसद्बल्लाल-देवावनी-
पतिगी-विश्रुत-चन्द्रमौलि-विबुधेशं मन्त्रियादं समु-
न्नत-तेजो-निलयं विरोधि-सचिवोन्मत्तेभ-पञ्चाननं ॥ २४ ॥

वर-तर्काम्बुज-भास्करं भरत-शास्त्राम्भोधिचन्द्रं समु-
द्धुर-साहित्य-लतालवालनेसेदं नाना-कला-कोविदं ।
स्थिर-मन्त्रं द्विज-वंश-शोभितनशेषस्तुत्यनुद्यद्यशं
परेयोळ् विश्रुत-चन्द्रमौलि-सचिवं सौजन्य-जन्माश्रयं
॥ २५ ॥

तदर्धाङ्ग-लक्ष्मि ॥

घन-वाग्रा-वद्रवोर्मि-भासिते मुख-व्याकोश-पङ्केज-म-
ण्डने दृग्मीन-विलासे नाभिविवरावर्त्ताद्रि लावण्य-पा-
वन-वास्मन्भृते चन्द्रमौलिरधुवी श्री आचियकं जग-
ज्जन-सत्तुत्ये कलङ्क-दूर गुणं गङ्गा-रेयि वानद्यते ॥ २६ ॥

स्वस्त्यनवरत-विनमदमर-मौलि-माला-मिलित-चरण-नलिन-
युगल-भगवदर्हत्परमेश्वर-स्नाव-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्ग युं पर

स्थिंपानून-दान-गरुगुङ्गे दुमण्ण श्रीमत् हिरिय-हेग्गडे-विसापरल-
देयिपन्नबेन्नंदाहं ॥

परकीर्त-पर्वतिताद्धा—

द्रोहं मावबाडि-नाव विनूत ।

परम-श्रावकनमल

पहाडियंताती-श्रियेपनायक विभुवेधंदं ॥ २७ ॥

भावन सुलिन सीवाम्बुज-

सीताप्त-घनरस्पंबर-पिपदपरवी-

धीत-धरात-गरिवा-वि-

नीतनं चन्दवेगपवेयरीरुण्टं ॥ २८ ॥

वत्तुव ॥

जिन-पति-पद-सरसीरुह-

विनमद्भृङ्गं ममल-सज्जनानङ्गं ।

विनय-निधि-विरथ-धात्रियोल्

अनुपमनी वम्म-देव हेग्गडे नेगल्दं ॥ २९ ॥

वत्सरादार ॥ गत-दुरितनमल-चरितं

वितरण-सन्तर्पिताखिलार्थि-प्रकरं ।

क्षितियोल्-धायेय-नायक-

नति-धीर कल्प-वृक्षरं नेले बन्दं ॥ ३० ॥

वत्सरादरि ॥

सरसिरुह-वदनं घन-कुचे

हरिणाक्षि मदोत्क-कोकिल-स्वने मदन-

त्करि-पति-गमने तनूदरि
धरेयोल् फालब्बे रूपिनागरमादल् ॥ ३१ ॥

तत्सहोदरि ॥

धरेयोल् रूढिय मासवाडियरसं हेम्माडि-देवं गुणा-
करना-भूपन चित्त-वल्लभे समस्तसौभाग्ये गङ्गानिया-
कर-ताराचल-तार-हार-शरदम्भोदस्फुरत्कीर्त्ति-भा-
सुरेयप्पाचल-देवि विश्व-भुवन-प्रख्यातियं ताल्दिदल् ॥
॥ ३२ ॥

तत्सहोदरं ॥

वर-विद्वज्जन-कल्प-भूजनमलाम्भोरासि-गम्भीरनु-
द्धुर-दर्प्प-प्रतिनायक-प्रकर-तीव्र-ध्वान्त-सङ्घात-सं-
हरणार्क्कं शरदभ्रशुभ्रविलसत्कीर्त्यङ्गनानाथनं
धरेयोल् सोवण-नायकं नेगल्दनुयद्धैर्य-शौर्य्याकरं ॥
॥ ३३ ॥

कं ॥ गिरिसुतेगे जह्नुकन्नेगं
धरणी-सुतेगत्तिमब्बेगनुपम-गुण-दोल् ।
दोरेयेनलिन्तीसकलो-
र्व्वरेयोल् बाचब्बे शीलवति सति नेगल्दल् ॥३४॥

तत्पुत्रं ॥

परसैन्याहि-विहङ्गनुर्ज्जितयशस्सङ्गं जिनेन्द्रांघ्रि-प-
द्म-रजो-भृङ्गनुदार-तुङ्गनेसेदं वर्न्नोप्पुवीसद्गुणो-

त्करदि देशिय-दण्डनायकनिन्ताभिष्टार्थसन्दायकं
धरेयोल् चम्मेय-नायकंनिरिलदोनानाथसन्त्रायकं ॥३५॥

तद्वनिते ॥

शवपत्रेचयं मल्लिसेट्टि-विभुगं निरशेष-चारित्र-भा-
सितेगी माचवे-सेट्टिकब्बेगवनूनात्मीय-सौन्दर्य-नि-
र्जित-चित्तोद्भवकान्तेयुद्भविसिदल् देवव्वे सत्कान्ते ता-
र-तुषारांशु-प्रमघरो-धवलिताशा-चक्रेयीधात्रियोल् ॥
॥ ३६ ॥

चम्मेय-नायकननुजं ॥

मार मदनाकारं
हार-क्षीराब्धि-विशद-कीर्त्याधारं ।
धीरं धरेयोल् नेगल्दं
दूरीकृत-सकल-दुरित-विमलाचारं ॥ ३७ ॥

तदनुजे ॥

हरिणी-लोचने पद्मजाननं घनश्रोणिस्तनाभोग-भा-
सुरं बिम्बाधरे कोकिल-स्वने सुगन्ध-श्वासे चञ्चत्तनू-
दरि-भृङ्गावलि-नीलकेशे कल-हंसीयानेयी कम्बुक-
न्धरेयप्पाचलदेवि-कन्तु-मवियं सौन्दर्य्य दिन्देत्रिपल् ॥
॥ ३८ ॥

तदनुजे ॥

इन्दु-मुखि मृग-विलोचने
मन्दर-गिरि-धैर्य्ये तुङ्ग-कुच-युगे धन्यो-

वृन्द-शिखि-केश-विलसित

चेन्दव्वे विनुतेयादलखिनोर्व्वियोल् ॥ ३६ ॥

वद्दनुजं ॥

हार-हरहास-हिम-रुचि–

तारगिरि-स्फटिक-शङ्ख-शुभ्राम्बुरुह–

चोर-सुर-सिन्धु-शारद–

नीरद-भासुर-यशोऽभिरामं **कामं** ॥ ४० ॥

सिरिगं विष्णुगवेन्तु मुन्नवसमाख्यं पुट्टिदों शम्भुगं

गिरिसम्भवेगवेन्तु षड्वदननादं पुत्रनन्तीगली–

धरणी-विश्रुत-चन्द्रमौलि-विभुगं श्रीया**चियक्क**ङ्गवु–

द्धुर-तेजंगुणि **सोमनु**द्भविसिदं निस्सीम पुण्योदयं ॥४१॥

वर-लक्ष्मी-प्रिय-वल्लभं विजयकान्ताकर्ण्णपूरं विभा-

सुर-वाणी-हृदयाधिपं तुहिन-हार-चीर-वाराशि-पा–

ण्डुरकीर्त्तिप्रसरानुदम-दुर्द्धर-तुरङ्गारूढ-रेवन्तनु–

द्धुर-कान्ता-कमनीयकामनेसेदं श्री **सोमनी** धात्रियोल्

॥ ४२ ॥

परमाराध्यननन्त सौख्य-निलयं श्री-मज्जिनाधीश्वरं

गुरु-सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति **नयकीर्त्ति**-ख्यात-योगीश्वरं ।

धरणी-विश्रुत-चन्द्र**मौलि**-सचिवं हृत्कान्तनंदन्दडा-

धिरियीया**चलदेवि**गिन्दु विशदोद्यत्कीर्त्तिगी धात्रियोल्॥४३॥

भरदिं **बेलुगोल**-तीर्थ-दोल् जिन-पति-श्री-पार्श्व-देवोद्धम-

न्दिरमं माडिसिदल् विनूत **नयकीर्त्ति**ख्यात-योगीन्द्रभा-

सुर-शिष्योत्तम-बालचन्द्र-मुनि-पादाम्भोजिनीमत्त सु-
 [illegible] कीर्ति [illegible] ४४

सद्गुरुद्वय श्रीसूक्तम दिग्विधाश पुण्यमाला [illegible]-
कुन्दान्वयदेवाः ॥

कं ॥ विदित-गुणचन्द्र-सिद्धा-
 न्त-देव-मुनाथ-वंदि [illegible]-
सिद्ध नयकीर्त्ति-सिद्धा-
 न्त-देवनेसेद मुनीन्द्र [illegible] ॥ ४५ ॥

[illegible]-धीशान्त-पदादि-वर्धन-शास्त्राधिपं [illegible]-
 र-हवि-धार्मिक-कीर्ति [illegible] दुर्द-
[illegible]
 [illegible]-नयकीर्त्ति देव-मुनि [illegible] ४६
तनिद्युत्यर ॥

[illegible]-भानुकीर्त्ति मुनिवर्य-माघमाघचन्द्र [illegible]-
 [illegible] माघनन्दि मुनि [illegible] नन्दि [illegible]
[illegible]
 [illegible] ॥
॥ ४७ ॥

[illegible] भानु-[illegible]-नयकीर्त्ति [illegible]-
 सुर-पादाम्बुरुहानम-मधुकर [illegible]-
[illegible]
 [illegible] बालचन्द्र-मुनि [illegible]

गौरि वपङ्गलं नेगल्दु तां नेरेदल् गड **चन्द्रमौलियोल्**
नारियगिन्नदे-सोवगु पेल्पलवुं भवदोल् निरन्तरं।
सार-वपङ्गलं पडेदु तां नेरेदं गड **चन्द्रमौलिनं-**
भीरेयेनिप्प तन्ननेनिपाचलदेवोल् सोवगिङ्गे नेन्तरार् ॥४९॥
· **शकवर्षद** मायिरद नूर नाल्केनेय **प्लव-संवत्सरद**
पौष्य-बहुल-तदिगेशुक्रवारदुत्तरायण संक्रान्तियन्दु ॥
वृ ॥ शीतद्यि **चन्द्रमौलि**-विभुवाचल-देवि-निजोद्ध-कान्तेवा-
त्रोल-मृगाक्षि-माडिसिद **बेल्गोल-तीर्थद** पार्श्वदेवर-
र्च्चातिगे येंदे **बम्मेयनहल्लियनित्तनुदारि-वीर-ब-**
ल्लालनृपालकन्धरेयुमल्पियुमुल्लिननेब्दे सल्लिने ॥५०॥
वदवनिपनिल दत्तिय-
नदनाचलो **बालचन्द्र**-मुनि-राजश्री-
पद-युगमं पूजिसि पतु-
दधिवर निमिरे कीर्त्ति जिनपतिगित्तल् ॥ ५१ ॥
मन्तु धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्ट तद्ग्राम-सीमे। मूड केलवरेय
हल्लं। अल्लि नेड्ड मेट्टे। अल्लि तेड्ड हिरिय-हेद्दारि। अल्लि तेड्ड
गाडव-मर। अल्लितेड्ड मेलियमलोल्वे। अल्लि तेड्डलद्दवहा-
होल्वे। अल्लि तेड्ड नागर-कट्टकद हेद्दारि। अल्लि पडुव केरे
न्तहिय हल्लं। अल्लि पडुव मर-नेल्लिय गुण्डु। अल्लि पडुव
मेट्टे। अल्लि पडुव पिरियरेय कल्लासि। अल्लि पडुवल् कहर
कोड। अल्लि पडुव कल्लुलि। अल्लि पडुव बडिद-दारियोल्वे।
अल्लि बडगणेवियि दारि। अल्लि बडग देवजन केरेय

ताय्वळ । भळि घटन हुग्गिवेय गुण्डु । भळि बदगखालद गुण्डु । भळि मूडलोब्बे । भळि मूड नहू-गुण्डु । भळि मूडल-त्तेयलियनगुड़े । भळि मूडखालद-मर । भळि मूडल् केम्बरय दत्तर्म सीमे कूडित्तु ॥स्वस्ति श्री ॥ श्री-फरगद फेलियगन तम्म वाचवन कैयि मार कोण्डु येक्कन कोलकेरय घावगट्टम् विट्टदर सीमे । मूड सागर । तेङ्कु सागर । पडुव हुल्लगट्टू । घडग नट्ट कल्लु । हिरिय अक्किय्व्वेय करेय तोट । फेलङ्करे । गङ्ग-समुद्रद कोलेरिय तोट । बसदिय मुन्दण अङ्गडि इप्पत्तु ॥ नानादेसियुं नाडुं नगरमुं देवरष्ट-विधार्च्चनेगे बिट्टाय हवसद हेरिङ्गे बल्ल १ अडकेय हेरिङ्गे हाग १ मेळसिन हेरिङ्गे हाग १ अरिसिनद हेरिङ्गे हाग १ हत्तिय मळवेगे हागे १ सीरेय मळवेगे होङ्गे बीम १ एलेय हेरिङ्गे अडकनूरु ॥

दानं वा पालनं वात्र दानाच्छ्रेयोऽनुपालनं ।

दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युतं पदं ॥ ५२ ॥

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ ५३ ॥

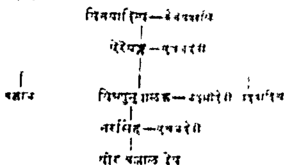
स्व दत्तां पर-दत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां ।

षष्टिर्व्वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमिः ॥ ५४ ॥

मङ्गळमहा श्री श्री श्री ॥

[इस लेख में चन्द्रमौलि मंत्री की भार्या आचलदेवी (अपर नाम आचियक्क) द्वारा निर्माण कराये हुए जिन मन्दिर (अक्कन बस्ति) को चन्द्रमौलि की प्रार्थना से होय्सल नरेश वीर बल्लाल द्वारा बम्मेयन-हल्लि नामक ग्राम का दान दिये जाने का उल्लेख है । प्रथम के चारुय

पद्यों में होय्सल वंश के नरेशों का वर्णन है। जिनकी वंशावली इस प्रकार दी है—

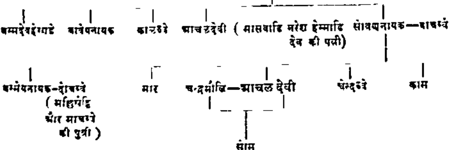


विष्णुवर्धन की कीर्ति में कहा गया है उन्होंने कई युद्ध जीते और अपने शत्रुओं के प्रचण्ड दुर्ग जैसे कि कोयतूर, तलवनपुर व रायरायपुर जला डाले।

वीर बल्लाल देव की युद्ध-दुन्दुभी बजते ही लाल-नरेश की शान्ति भङ्ग हो गई, गुर्जर-नरेश को अतिसार हो गया, गौड़-नरेश का युद्ध हट गया, मालव-नरेश शरणाञ्जलि लेकर खड़े हो गये, और चोल-नरेश के पद स्खलित हो गये। पोड़ेयरस-नरेश ने अभिमान में आकर युद्ध करने की ठानी, पर बल्लाल-नरेश ने उच्छङ्गि दुर्ग के शिखरों को चूर्ण कर डाला और पाण्ड्य-नरेश को उसकी अङ्गनाओं-सहित कैद कर लिया।

पद्य बाइस से आगे इन्हीं द्वारवती के यादव यशी नरेश त्रिभुवन-मल्ल वीर बल्लाल देव का परिचय है। लेख में इनकी अनेक प्रताप-सूचक पदवियों तथा इनके तलकाडु, कोंगु, नङ्गलि, नोलम्बवाडि, बनवसे और हानुंगल की विजय का उल्लेख है। शम्भुदेव और अक्कब्बे के पुत्र चन्द्र-मौलि इन्हीं त्रिभुवन मल्ल वीरबल्लालदेव के मंत्री थे।

पद्य सत्ताइस से चालीस तक आचल देवी के वंश का वर्णन है जो इस प्रकार है—


चन्द्रमौलि की भार्या आचलदेवी की वंशावली
(मासवाडिनाडु के श्रावक) शिवेयनायक—चन्दव्वे
बम्मदेवहेग्गडे
काळव्वे
आचलदेवी (मासवाडि नरेश हेम्मादि देव की पत्नी)
मार
चन्द्रमौलि—आचलदेवी
सोम
काम

चाचल देवी नयकीर्ति के शिष्य बालचन्द्र की शिष्या थी। नयकीर्ति सिद्धान्तदेव मूलसंघ, देशियगण, पुस्तक गच्छ, कुन्दकुन्दान्वय के गुणचन्द्रसिद्धान्तदेव के शिष्य (सुत) थे। नयकीर्ति के शिष्यों में भानुकीर्ति, प्रभाचन्द्र, माघनन्दि, पद्मनन्दि और नेमिचन्द्र थे।]

१२५ (३२८)

अक्कन बस्ति के प्रधान प्रवेश-द्वार के सामने की दक्षिणी दीवाल पर

(शक सं० १३६८)

क्षयाह्वय-कु-वत्सरे द्विवय-युक्त-वैशाखके
महो-तनय-वारके युत-वलक्ष-पक्षेतरे।
प्रताप-निधि-देवराट् प्रलयमाप हन्तासमो
चतुर्दश-दिने कथं पितृपतेनिवार्या गतिः॥

१२६ (३२६)

उसी दीवाल के पूर्व कोण पर

(शक स० १३२६)

सारण-संवत्सरद भाद्र-पद-बहुल - दशमिय् सो-मवारदन्दु हरिहररायनु स्वर्गस्थनादनु॥

१२७ (३३०)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(शक सं० १३६८)

क्षयाख्य-शक-वत्सरे-द्विवय-युक्त-वैशाख के
महीतन [य]- वारके यु..... .. ..

१२८ (३३३)

नगर जिनालय के बाहर

(? शक सं० ११२८)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भय-लोभ-द्वय-दूरं मदन-घोर-ध्वान्त-तीव्रांशुं
नय-निक्षेप-युत-प्रमाण-परिनिर्णीतार्थ-सन्दोहनं ।
नयनानन्दन-शान्त कान्त तनुवं सिद्धान्तचक्रेशनं
नयकीर्त्ति व्रति-राजनं नेनेदोडं पापोत्करं पिङ्गुगुं ॥ २ ॥
अवर शिष्यरु ॥

श्री-दामनन्दि त्रैविद्य-देवरु श्री-भानुकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवरु बालचन्द्र-देवरु प्रभाचन्द्र-देवरु माघणन्दि-भट्टारक-देवरु मन्त्रवादि-पद्मणन्दि-देवरु नेमिचन्द्र-पण्डित-देवरु इन्तिवर शिष्यरु नयकीर्त्ति-देवरु ॥

धरेयोल् खण्डलि-मूलभद्र-विलसद्-वंशोद्भवर्सत्य-शौ-
चरुदर् [?]सद्-पराक्रमान्वितरनेकाम्भोधि वेला-पुरा-
न्तर-नाना व्यवहार-जात-कुशलर् विख्यात-नल-त्रया-
भरणर् ग्वेल्गुल-तीर्थ-वासि-नगरङ्गल् स्थिरं शाश्वदरु॥
॥ ३ ॥

श्रीगोम्मटपुरद समस्त-नगरङ्गलं श्रीमत्-प्रताप-चक्रवर्त्ति वीरबल्लाल-देवर कुमार सोमेश्वर-देवर प्रधाने हिरिय-

माणिक्य-भण्डारि-**रामदेव**-नायकर मन्त्रिगियल्लु श्रीमन्नय-**कीर्ति**-देवरु कोट्ट शासनपत्यलेय-क्रमवेन्तेन्दडे गोम्मट-पुरद मनेदेरे **अक्षय-संवत्सर** मोदलागि आचन्द्रार्क्क-तारं बरं सलुवन्तागि इणवोन्दर मोदलिङ्गे एन्दुइणवं तेत्तु सुखविप्परु तेलिगर गाणवोलगागि अरमनेय न्यायवन्यायमल्लनय एनु बन्दडं आस्थलदाचार्य्यरु तावे तेत्तु निर्व्वयिसुवरु आवनान्न कारण कथेयिन्न ई-शासन-मर्य्यादेयं मीरिदवरु धर्म्म-स्खलन केडिसिदवरु ई-वीर्थद नखरङ्गलोलगे आव्वरिव्वरु ग्रामिणिगलागि आचार्य्यरिगे कौटिल्य-बुद्धियं कलिसि वोन्दक्रोन्द नेनदु तालसाटवं माडि हाग वेलेयनलिहि वेडिकोल्लियेन्दु आचार्य्यरिगे मनंगोट्टडे अवरु समय-द्रोहरु राजद्रोहरु वणञ्जिग-पगेयरु नेत्त-गयरु कोलेकवर्त्तेगोडेयरु इदनरिदु नखरङ्गलु उपेक्षिसिदरादडं ई-धर्म्मव नम्वरङ्गले केडिसिदवरलल्लदे आचार्य्यरं दुर्ज्जनरं केडिसिदवरल्लन नखरङ्गल अनुमतविल्लदे आव्वरिव्वरु ग्रामिणिगलु आचार्य्यर मनेयनके अरमनेयनके होकडे समय-द्रोहरु मान्य-मन्नणेय पूर्व्व-मर्य्यादे नडसुवरु ई-मर्य्यादेयं किडिसिदवरु गङ्गे-तडिय कविलेयं ब्राह्मणं कोन्द पापद होहरु।

स्व-दत्तां पर दत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां।
षष्टिर्व्वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते क्रमिः ॥ ४ ॥

[नयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्ति के शिष्य दामनन्दि, भानुकीर्त्ति, बालचन्द्र, प्रभाचन्द्र, माघनन्दि, पद्मनन्दि और नेमिचन्द्र हुए। इनके शिष्य नयकीर्त्तिदेव हुए। नयकीर्त्तिदेव ने वीरबल्लालदेव के कुमार

सोमेश्वरदेव के मंत्री रामदेव नायक के समक्ष बल्गोळ नगर के व्यापारियों को यह शासन दिया कि वे सदैव के लिये आठ 'हण' का टैक्स दिया करेंगे जिसका एक 'हण' ब्याज आ सकता है। इसके अतिरिक्त वे और कोई टैक्स नहीं देवेंगे। यदि राज्य की ओर से कोई न्याय, अन्याय व अप्रमय टैक्स लगाये जावेंगे तो स्वयं बल्गोळ के आचार्य ही उसका प्रबन्ध करेंगे। यदि कोई व्यापारी आचार्य को छल-कपट दिखावेंगे तो वे धर्म के और राज्य के द्रोही ठहरेंगे। व्यापारियों को अपने अधिकार पूर्ववत् ही रहेंगे। ये व्यापारी खंडलि और मूलभद्र के वंशज जैनधर्मावलम्बी थे।]

[नोट—श्रवण बेल्गोळ पर पूरा अधिकार जैनाचार्य का ही था। वहां के टैक्स आदि का भी वे ही प्रबन्ध करते थे।]

१२८ (३३४)

नगर जिनालय में दक्षिण की ओर

(शक सं० १२०५)

स्वस्ति श्री-मूलसङ्घ-देसिगगण-बलात्कार-ग.........

.... शास्त्रसारास्य शास्त्रकृत ॥ १ ॥

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ २ ॥

नमः कुमुदचन्द्राय विद्या-विशद-मूर्त्तये ।

यस्य वाक्-चन्द्रिका भव्य-कुमुदानन्द-नन्दिनी ॥ ३ ॥

नमो नम्रजनानन्द-स्यन्दिने माघनन्दिने ।

जगत्प्रसिद्ध-सिद्धान्त-वेदिने चित्प्रमोदिने ॥ ४ ॥

स्वस्ति श्री जन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्व्वानलोद्दामतेजं
विस्तारान्तःकृतोर्व्वी-तलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं।
वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्वावलम्बं गभीरं
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगुं होय्सलोर्व्वीश-वंशं
॥ ५ ॥

स्वस्ति श्री-जयाभ्युदयं **सकवर्ष १२०५** नेय **चित्रभानु संवत्सर श्रावण सु १० बृहन्दु** स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महा-मण्डलाचार्य्यरुमाचार्य्य-वर्य्यरुंश्री-मूल-सङ्घदइङ्गलेश्वर **देशिय**-गणाग्रगण्यरुम् राज-गुरु-गलुमप्प **नेमिचन्द्र**-पण्डित-देवर शिष्यरु **बालचन्द्र**-देवरु श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरुमाचार्य्य वर्य्यरुं होय्सल-राय-राज-गुरुगलुमप्प श्री-**माघनन्दि**-सैद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल प्रिय-गुड्डुगलुमप्प श्री-बेलुगुल-तीर्त्थद बलात्कार-गणाग्रगण्यरुमगण्यपुण्यरुमप्प समस्त-माणिक्य-नगरङ्गलु **नखर**-जिनालयद आदि-देवर अमृत-पडिगे **राचेयनहल्लिय** होलवेरेगो-लगाद **एडवङ्गरेय** केलगे पूर्व्वदत्ति मोदलेरिय तोटमुं अमृत-पडिय गद्दे... आरर भूमिय सेरुवेगे आ-**बालचन्द्र**-देवर कय्यलु समस्त-माणिक्य-नगरङ्गलु बिडिसि कोण्ड वलय-शासनद क्रमवेन्तें-न्दडे **राचेयन-हल्लिय मल्लिकार्जुन**-देवर देव-दानद गद्दे होर-गागि आ-गद्देयि मूडलु नट्ट कल्लु। अल्लिं तेन्क हामरे गल्लु। अल्लि तेङ्क **गिडिगनालद** गुण्डुगलिं मूडण किरु-कट्टद गद्दे। नीरोत्तोलगाद चतुस्सीमे। आ-किरु-कट्टद पडुवण कोडियलु हुट्टु गुण्डिनलि बरद मुकोडे हसुगे नेट्ट अल्लि तेङ्क हिरिय येट्टद

लप्पल्ल हामरें-गल्लु। भाग्ग मूडय देवलङ्ग रेय तङ्गय कोडिय गुण्डि-नलि वरद मुकोडे हसुबे नेट्ट भा-केरे-नीरोतिर्ने सीमे। भाकेरेय बडगण-कोडिय गुण्डि-नन्लि वरद मुकोडे हसुबे नेट्ट इन्तोकेरेयुं किड-कटे बोलगाद चतुस्सीमेय गद्दे ॥

[इस लेख में कुमुदचन्द्र और माघनन्दि को नमस्कार के पश्चात् होय्सल वंश की कीर्त्ति का उल्लेख है और फिर कहा गया है कि शक तिथि को इंगलेश्वर, देशिय गण, मूलसंघ के नेमिचन्द्र पण्डितदेव के शिष्य बालचन्द्रदेव और बेल्गोल के समस्त जौहरियों (माणिक्य नगरङ्गळ) ने नगर जिनालय के आदिदेव की पूजन के हेतु कुछ भूमि का दान दिया। यह भूमि उन्होंने बालचन्द्रदेव से खरीद की थी। ये जौहरी होय्सलवंश के राजगुरु महामण्डलाचार्य माघनन्दि के शिष्य थे। लेख के प्रथम पद्य में शास्त्रसार नामक किसी शास्त्र के कर्त्ता का उल्लेख रहा है। यह पद्य घिस जाने से आचार्य का नाम नहीं पढ़ा गया]

१३० (३३५)

नगर जिनालय में उत्तर की ओर

(शक सं० ११९८)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
स्वस्ति-श्रीजन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्व्वानलोद्दामतेजं
विस्तारान्तःकृतोर्व्वीतलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं ।
वस्तु-व्राताद्भव-स्थानकमतिशय-सत्वावलम्बं गभीरं
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भो-निधि-निभमेसगुं होय्सलोर्व्वीश-वंशं
॥ २ ॥

भद्रोल् कौस्तुभदोन्दनर्ग्घ्यगुणमं देवेभदुद्दाम-स-
त्वदगुर्व्वं हिम-रश्मियुज्वल-कला-सम्पत्तियं पारिजा-
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं तात्दि तानत्वे पु—
ट्टिदनुद्वेजित-वीर-वैरि-**विनयादित्या**वनी-पालकं ॥ ३ ॥

क ॥ **विनयादित्य**-नृपालन
तनु-भवनेरेयङ्ग-भूभुजं तत्तनयं ।
विनुतं **विष्णु**-नृपालं
जनपति तदपत्यनेसेदनी**नरसिंहं** ॥४ ॥

वत्तुत्रं ॥

गव-लील लालनालम्वित-बहल-भयोम-ज्वरं गूर्ज्जरं स-
न्धृत-शूलं गौलनुच्चैः-कर-धृत-विलसत्पल्लवं पल्लवं प्रो-
ज्झित चेलं चोलनादं कदन-वदनदोल् भेरियं पोय्से वीरा-
हित-भूभृज्जाल-कालानलनतुलबलं **वीर-बल्लाल-देवं**
॥ ५ ॥

चिरकालं रिपु-गलसाध्यमेनिसिर्द्दुच्चङ्गियं मुत्ति दु-
र्द्धर-तेजो-निधि-धूलिगोटेयने कोण्डाकाम-देवावनी-
श्वरनं सन्दोडेय चितीश्वरननाभण्डारमं स्रोयरं
तुरग-व्रातमुमं समन्तु पिडिदं **बल्लाल-भूपालकं** ॥६॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महा मण्डलेश्वर **द्वारवती**-
पुरवराधीश्वर । **तुलुव**-बल-जलधि वडवानल । दायाद-
दावानल । **पाण्ड्य** कुल-कमल-वेदण्ड । गण्ड-भेरुण्ड ।
मण्डलिक - बेटेकार । **चोल** कटक-सूरेकार । सङ्ग्राम-भीम ।

कलि-काल-काम । सकल-वन्दि-बृन्द-सन्तर्पण-समग्र-वितरण विनोद । वासन्तिका-देवी-लब्ध-वर-प्रसाद । यादव-कुलाम्बर-द्युमणि । मण्डलिक-मकुट-चूडामणि कदन-प्रचण्ड मलपरोल्-गण्ड नामादिप्रशस्ति-सहितं श्रीमत्—त्रिभुवनमल्ल-तलकाडु कोङ्गु-नङ्गलि नोणम्बवादि-बनवसे हानुङ्गल् लोक्किगुण्डि-कुम्मट-एरम्बरगेयोलगाद समस्त-देशद नानादुर्ग्गङ्गलं लीला-मात्रदि साध्यं माडिकोण्ड भुज-बल-वीर गङ्ग-प्रताप-चक्रवर्त्ति होय्सल वीर-बल्लाल-देवर् समस्त-मही मण्डलमं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालन-पूर्व्वक सुखसङ्कथाविनोददि राज्यं गेय्युत्तिरं । तदीय-करतल-कलित-कराल-करवाल-धारा-दलन-निम्नप्लोकृत-चतुर्पयोधि-परिखा-परीत-पृथुल-पृथ्वी-तलान्तर्व्वर्त्तियुं श्रीमद्-वृषभ-मुकुटेश्वर-जिनाधिनाथ पद-कुशेशयाश्रङ्कृतमुं श्रीमत्कमठ-पार्श्व देवादि-नाना-जिनवरागार-मण्डितमुमप्प श्रीमद् बेल्गोल-तीर्त्थद श्रीमन्महा-मण्डलाचार्य्यरे न्तप्परेन्दडे ॥

भय-लोभ-द्वय-दूरनं मदन-घोर-ध्वान्त-तीव्रांशुवं
नय-निक्षेप-युत-प्रमाण-परि-निर्णीतार्त्थ-सन्दोहनं ।
नयनानन्दन-शान्त-कान्त-तनुवं सिद्धान्त-चक्रेशनं
नयकीर्त्ति-व्रति-राजनं नेनेदोडं पापोत्करं पिङ्गुगु ॥ ७ ॥

तच्छिष्यर् श्री-दामनन्दि-त्रैविद्य-देवरुं । श्री भानुकीर्त्तिसिद्धान्त देवरुं। श्री बालचन्द्र-देवरुं । श्री-प्रभाचन्द्र देवरुं । श्री माघनन्दि-भट्टारक-देवरुं । श्री मन्त्रवादि-पद्म-

नन्दि-देवरु । श्री नेमिचन्द्र-पण्डित देवरु । श्री-मूल-सङ्घ देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद श्री कोण्ड-कुन्दान्वय-भूषणरु श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यर् श्रीमन्नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळ गुरु ॥

चितिवलदोल् राजिसिदं
धृत-सत्यं नेगल्द नागदेवामात्यं ।
प्रतिपालित-जिन-चैत्यं-
कृत-कृत्यं बोम्मदेव-सचिवापत्यं ॥ ८ ॥

वृत्तिनिते ॥

सुरदि पट्टण-स्वामियेम्ब पेसरं तालिर्द्द लक्ष्मी-समा-
स्पदनप्प-गुणि-मल्लि-सेट्टि-विभुगं श्रीकोत्तमानार-ना-
म्बरेगं-साचेये सेट्टिकब्बेगमनूनोत्साहमं तालिर पु-
ट्टिद चन्द्रव्वे रमाम-गण्ये भुवन-प्रख्यातियं तालिदळ् ॥ ९ ॥

नेनुत ॥

परमानन्ददिनेन्तु नाकपतिगे पौलोमियं पुट्टिदां
वर-सौन्दर्य-जयन्तनन्ते तुहिन-क्षीराब्धि-कर्प्पूर-भा-
सुर-कीर्त्तिप्रिय-नागदेव-विभुगं चन्द्रव्वेगं पुट्टिदां
स्थिरनीं-पट्टण-स्वामि-[illegible]-विभुनं श्रीमल्लिनाथं ॥ १० ॥
[illegible] [illegible]-बम्मदेव-विभुग जोगव्वेगं [illegible]
[illegible]-मल्लि-[illegible]
[illegible]-कामलदेविगं [illegible]
[illegible]-चन्द्रनो नारीगरवनेदोर् श्रीनागदेवोत्तमं ॥ ११ ॥

कारिते वीरबल्लाल-पत्तन-स्वामिनामुना ।
नागेन पार्श्वदेवाग्रे नृत्त-रङ्गाश्म-कुट्टिमे ॥ १२ ॥

श्रीमन्नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगलो परोक्ष-विनयार्त्थ-वागिमुडिसमुमं निषिधियुमं श्रीमत्कमठ-पार्श्व-देवर बसदिय मुन्दण कल्लु-कट्टम नृत्य-रङ्गमुमं माडिसिद तदनन्तर ॥

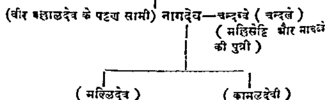
श्री-नगर-जिनालयमं
श्री-निधयमनमल-गुण-गणम्माडिसिदं ।
श्रीनागदेवसचिवं
श्री-नयकीर्त्ति-प्रतीश-पद-युग-भक्तं ॥ १३ ॥

तज्जिनालय-प्रतिपालकरप्प नगरङ्गल् ॥

धरेयोल् खण्डलि-मूलभद्र-विलसद्-वंशोद्भवर्स्सत्य-शौचरत्र स्सिंह-पराक्रमाब्धितरनेकाम्भोधि-वेला-पुरान्तर-नाना-व्यवहार-जाल-कुशलर् विख्यात-रत्न-त्रयाभरणर् बेल्गोल-तीर्थ-वासि-नगरङ्गल् रुढियं तालिददर् ॥ १४ ॥

सकवर्ष ११९८ नेय राक्षससंवत्सरद जेष्ठ सु १ बृहवार दन्दु नगर-जिनालयके बडवलगेरेय मोदलेरिय तोटमुं यारुसलगे-गद्देयुं उडुकर-मनेय मुन्दण केरेय केलगण बेद्दले कोलग १० नगर-जिनालयद बडगण केति-सेट्टिय केरि आ-नेडूर परडु मने आ-अङ्गडि सेदेयकि गाण परडु मनेगे इग भन्दु ऊरिङ्गे मसविय इग मूरु ॥

[इस लेख में नयकीर्त्ति के शिष्य नागदेव मंत्री-द्वारा नगर जिनालय तथा कमठपार्श्वदेव बस्ति के सम्मुख शिलाकुट्टम और रंगशाला बनवाने व नगर जिनालय को कुछ भूमि का दान दिये जाने का उल्लेख है। आदि में लेख नं० १२४ के समान होय्सल वंश का परिचय है। वीरबल्लाल देव के प्रताप का वर्णन कुछ अंश छोड़कर अक्षरशः वही है। इसके पश्चात् नयकीर्त्तिदेव और उनके शिष्यों दामनन्दि, मलुकीर्त्ति, बालचन्द्र, प्रभाचन्द्र, माघनन्दि, पद्मनन्दि और नेमिचन्द्र का उल्लेख है। नागदेव के वंश का परिचय इस प्रकार है—



खंडलि और मूलभद्र के वंशज व्यापारियों का भी उल्लेख है। वे ही व्यापारी जिनालय के रक्षक थे।]

१३१ (३३६)

नगर जिनालय के भीतरी द्वार के उत्तर में

(शक सं० १२०१ तथा १२१०)

स्वस्ति श्रीमतु-शक-वर्ष १२०३ नेय प्रमाथि-संवत्सरद मार्गशिर-सु (१०) यू दन्दु श्रीबेलुगुल-तीर्थद समस्त नखरङ्गलिगे नखर-जिनालयद पूजाकारिगलु श्रोवम्यट्टु धरसिद

मासनद बमबेन्बेन्दबं । नगर-जिनालयद आदि-देवर देव दानद गद्दे बेद्दलु एळि उळदलु बेळदकालदलु देवर अष्टविधार्च्चने अमृत-पडि-सहित श्रीकार्य्यवनु नकरङ्गळु नियामिसि कोट्ट पडियनु कुन्ददे नडसुवेवु आ-देव-दानद गद्दे बेद्दलनु आधि-क्रय दाळेयवे गुप्तं एम्म वंशवादियागि अकलु मक्कलु दप्पदे आह माडिदवं राजद्रोहि समयद्रोहिगळेन्दु बोडम्बट्टु बरसिद-शासन इन्तप्पुदक्के साक्षि बेळ्ग श्री-गोम्मटनाथ ॥ श्री बेलुगुळ तीर्त्थद नकर-जिनालयद आदिदेवर नित्याभिषेकक्के श्री-हुलिगेरेय सोवण्ण बस-भण्डार-वागि कोट्ट गद्याणं अयिदु-होन्निक्के हालु म १॥

सर्व्वधारि संवत्सरद द्वितीय-भाद्रपद-सु ५ ब्रि। श्री-बेलुगुळ-तीर्त्थद जिननाथ-पुरद समस्त-माणिक्य-नगरङ्गळु तम्मोळोडम्बट्टु बरसिद शासनद क्रमवेन्तेन्दोडे। नगर-जिनालयद श्री-आदिदेवर जीर्ण्णोद्धारवुपकरण श्री कार्य्यक्केवू धारापूर्व्वक माडि आचन्द्रार्क्कतारं बर सल्लुवन्तागि आ-येरडु-पट्टणद समस्त-नकरङ्गळू स्वदेशि-परदेशियिन्दं बन्दन्तह दवण गद्याण-नूरक्के गद्याणं वोन्दरोपादिय दवण आदिदेवरिगे सल्लुवन्तागि कोट्ट शासन यिदरोळगे विरहित-गुत्तवनाव माडिदडनवन सन्तान निस्सन्तान अव देव-द्रोहि राज-द्रोहि समय-द्रोहिगळेन्दु वोडम्बट्टु बरसिद समस्तनकरङ्गळोप्प श्री-गोम्मट ॥

[यह लेख तीन भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में उल्लेख है कि उक्त तिथि को नगर जिनालय के पुजारियों ने बेल्गोल के व्यापारियों

को यह लिखा-पढ़ी कर दी कि जब तक मंदिर की देव-दान भूमि में धान्य पैदा होता है तब तक वे सदैव विधि अनुसार मंदिर की पूजा करेंगे।

दूसरे भाग में उल्लेख है कि नगर जिनालय के आदि देव के बिंबाभिषेक के लिये हुलिगेरे के सोवण्ण ने पांच गद्याण का दान दिया जिसके ब्याज से प्रति दिन एक 'बल' दुग्ध लिया जावे।

तीसरे भाग में उक्त तिथि को बेल्गोल के समस्त जौहरियों के एकत्रित होकर नगर जिनालय के जीर्णोद्धार तथा बर्तनों आदि के लिये रकम जोड़ने का उल्लेख है। उन्होंने सौ गद्याण की आमदनी पर एक गद्याण देने की प्रतिज्ञा की। जो कोई इसमें कपट करे वह निपुत्री तब देव, धर्म और राज का द्रोही होवे।]

[नोट—लेख के प्रथम भाग में शक सं० १२०३ प्रमाथिसंवत्सर का उल्लेख है। पर गणनानुसार शक सं० १२०३ वृष तथा शक सं० १२०१ प्रमाथी सिद्ध होते हैं। लेख के तृतीय भाग में सर्वधारि संवत्सर का उल्लेख होने से वह शक सं० १२१० का सिद्ध होता है।]

१३२ (३४१)

मंगायि बस्ति के प्रवेश मार्ग के बायीं ओर

(लगभग शक सं० १२४७)

स्वस्ति श्री-मूलसङ्घ देशिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमदभिनव-चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्य्यर शिष्यरु सम्यक्त्वाद्यनेक-गुण-गणाभरण-भूषित राय-पात्र-चूडामणि बेलुगुलद मङ्गायि माडिसिद त्रिभुवनचूडामणियेम्ब चैत्यालयक्के मङ्गळमहा श्री श्री श्री ॥

सोऽयं श्री-गोम्मटेशस्त्रिभुवन-सरसी-रञ्जने राजहंसो
भव्य:...व-भानुर्व्वेल्गुलुल-नगरी साधु जंजीयतीर ॥ २ ॥
नन्दन-संवत्सरद पुष्य-शु ३ लू गेरसोप्पेय हिरिय-
श्राय्यगल शिष्यरु गुम्मटण्णगलु गुम्मटनाथन सन्निधि-
यल्लि बन्दु चिक-बेट्टदलिह्न चिक-बस्तिय कल्ल-कटिसि जीर्णोद्धारि
बडग-बागिल्ल बस्ति मूरु मङ्गायि-बस्ति वोन्दु ङ्गागे पञ्चिदु-बस्ति
जीर्णोद्धार वोन्दु वण्डक्के भ्रहारदान ।

[गुम्मटेश की प्रशस्ति के पश्चात् लेख में उल्लेख है कि उक्त तिथि को गेरसोप्पे के हिरिय- श्रार्य के शिष्य गुम्मटण्ण ने यहाँ आकर चिक बस्ति के शिला कुट्टम का, उत्तर द्वार की तीन बस्तियों का तथा मंगायि बस्ति का—कुल पांच बस्तियों का—जीर्णोद्धार कराया ।]

[नोट—लेख में नन्दन संवत्सर का उल्लेख है। शक सं० १३३४ नंदन था ।]

१३५ (३४३)

उपर्युक्त लेख के नीचे

(सम्भवतः शक सं० १३४१)

विकारि-संवत्सरद श्रावण शु १ गेरसोप्पेय श्रीमति
श्रव्वेगलु समस्तरु-गोष्टिय कोट्टु ग ४ ॥

[उक्त तिथि को गेरसोप्पे की श्रीमती श्रव्वे और समस्त गोष्ठी ने चार गद्याण का दान दिया ।]

[नोट—लेख में विकारी संवत्सर का उल्लेख । शक सं० १३४१ विकारी था ।]

१३६ (३४४)

भण्डारि बस्ति में पूर्व की ओर प्रथम स्तम्भ पर

(शक सं० १२९०)

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं ॥

पाषण्ड-सागर-महा-वडवामुखाग्नि-
श्रीरङ्गराजचरणाम्बुज-मूल-दासः ।
श्री-विष्णु-लोक-मणि-मण्डपमार्गदायी
रामानुजो विजयते यति-राज-राजः ॥१॥

शक वर्ष १२९० नेय कीलक-संवत्सरद भाद्रपद-शु १० बृ० स्वस्ति श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं अरिराय-विभाड भाषेगे तप्पुव रायर गण्ड श्री वीरबुक्क-रायनु पृथ्वी-राज्यव माडुव कालदल्लि जैनरिगू भक्तरिगू संवाद-वादल्लि आनेयगोन्दि होस-पट्टण पेनुगुण्डे कल्लेहद-पट्टण वोळगाद समस्त-नाड भव्य-जनङ्गळु आ-बुक्क-रायङ्गे भक्तरु माडुव अन्यायङ्गळन् बिन्नहं माडलागि कोविल्-तिरुमले-पेरुमाळ-कोविल्-तिरुनारायणपुरमुख्यवाद सकलाचार्यरु सकल-समयिगळु सकल-सात्विकरु मोष्टिकरु तिरुपणि-तिरुविडि-तण्णीरवर नाल्वत्तेन्टु-जनङ्गळु सावन्त-बोवकळु तिरुकुल जाम्बवकुल-वोळगाद हदिनेण्टु-नाड श्रीवैष्णवर्कळ्नु महारायनु वैष्णव दर्शनक्कं-ऊ जैन-दर्शनक्क-ऊ भेदविल्लवेन्दु रायनु वैष्णवर कैयल्लु जैनर कै-विडिदु कोट्टु ई-जैन-दर्शनक्के पूर्व्वमरियादे

यलु पञ्चमहावाद्यङ्गलू कलशवु सलुवुदु जैनदर्शनक्कं भक्तर देसे
यिन्द हानि-वृद्धियादरू वैष्णव-हानि-वृद्धियागि पालिसुवरु
यी-मर्य्यादेयलु यल्ला-राज्य-दोळगुल्लन्तह बस्तिगळिगे
श्री-वैष्णवरु शासनव नट्टु पालिसुवरु चन्द्रार्क्क-स्थायियागि
वैष्णव-समयो जैन-दर्शनव रक्षिसिकोण्डु बहेड वैष्णवरू
जैनरू वोन्दुभेदवागि काणलागदु श्री तिरुमलेय तात
य्यङ्गलु समस्त-राज्यद भव्य-जनङ्गल अनुमतदिन्द बेलुगुलद
तिर्थदल्लि वैष्णव-अङ्गरक्षेगोसुक समस्त-राज्यदोलगुल्लन्तह
जैनर बागिलुगट्टलेयागि मने-मनेगे वर्षक्के १ हण कोट्टु आ-य-
त्तिद हेविनिङ्गे देवर अङ्ग-रक्षेगेयिप्पत्तालनूमन्तविट्टु मिक्क
होविङ्गे जीर्ण्णे-जिनालयङ्गलिगे सोधेयनिक्कुदु यी-मरियार्देयलु
चन्द्रार्क्करुळन्नं तप्पलीयदे वर्षे-वर्षक्के कोट्ट कीर्ति यनू पुण्य-
वनू उपार्जिसिकोम्बुदु यी-माडिद कट्टलेयनु आवनोब्बनु मीरि-
दवनु राज-द्रोहिसङ्घ-सम्दायक्कद्रोहि तपस्वियागलि मानि-
गियागलि यी-धर्म्मव केड सिदरादडे गङ्गेय तडियछि कपि-
लेयनु ब्राह्मणननू कोन्द पापदल्लि होहरु ॥

श्लोक ॥ स्वदत्तं परदत्तं वा यो हरेति वसुन्धरां ।
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते क्रमि ॥२॥

(पीछे से जोड़ा हुआ)

कल्लेहद हव्विं-सेट्टिय सुपुत्र बुसुवि-सेट्टि बुक्क-रायरिगे
बिन्नहंमाडि तिरुमलेय-तातय्यङ्गल विजय-गैसि तरन्दु जीर्णोद्धार

व आर्हमिहरु श्रीमयतमवरु कूडि बुसुवि-सेट्टियरिगे सङ्घनायक पट्ट कट्टिदरु ॥

[वीर बुक्कराय के राज्य-काल में जैनियों और वैष्णवों में झगड़ा हो गया। तब जैनियों में से आनेयगोंदि आदि नाडुओं ने बुक्कराय से प्रार्थना की। राजा ने जैनियों और वैष्णवों के हाथ से हाथ मिला दिये और कहा कि जैन और वैष्णव दर्शनों में कोई भेद नहीं है। जैन दर्शन को पूर्ववत् ही पंच महा वाद्य और कलश का अधिकार है। यदि जैन दर्शन को हानि या वृद्धि हुई तो वैष्णवों को इसे अपनी ही हानि या वृद्धि समझना चाहिये। श्रीवैष्णवों को इस विषय के शासन समस्त राज्य की बस्तियों में लगा देना चाहिये। जैन और वैष्णव एक हैं, वे कभी दो न समझे जावें।

श्रवण बेल्गोल में वैष्णव अङ्गरक्षकों की नियुक्ति के लिये राज्य भर में जैनियों से प्रत्येक घर के द्वार पीछे प्रतिवर्ष जो एक 'हण' लिया जाता है उसमें से तिरुमल के तातय्य, देव की रक्षा के लिये, बीस रक्षक नियुक्त करेंगे और शेष द्रव्य जैन मन्दिरों के जीर्णोद्धार व पुताई आदि में खर्च किया जायगा। यह नियम प्रति वर्ष जब तक सूर्य चन्द्र हैं तब तक रहेगा। जो कोई इसका उल्लंघन करे वह राज्य का, संघ का और समुदाय का द्रोही ठहरेगा। यदि कोई तपस्वी व ग्रामाधिकारी इस धर्म में प्रतिघात करेगा तो वह गंगातट पर एक कपिल गौ और ब्राह्मण की हत्या का भागी होगा।

(पीछे से जोड़ा हुआ)

कल्लेह के हरिविसेट्टि के पुत्र बुसुवि सेट्टि ने बुक्कराय को प्रार्थनापत्र देकर तिरुमले के तातय्य को बुलवाया और इस शासन का जीर्णोद्धार कराया। दोनों मतों ने मिलकर बुसुवि सेट्टि को संघनायक का पद प्रदान किया।]

१३७ (३४५)

उसी स्थान में द्वितीय स्तम्भ पर

(लगभग शक सं० १०८०)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

भद्रमस्तु जिन-शासनाय ॥

स्वस्ति-श्री-जन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्व्वानलोद्दाम-तेजं
विस्तारान्तःकृतोर्व्वीतलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं ।
वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्वावलम्बं गभीरं
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगुं **होय्सलोर्व्वीश**-वंशं
॥ २ ॥

अदरोलु कौस्तुभदोन्दनर्घ्यं-गुणम देवेभदुद्दाम-स-
त्वदगुर्व्वं हिम-रश्मियुज्वल-कला-सम्पत्तियं पारिजा-
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं तालिद तानस्ते पु-
ट्टिदनुद्वेजित-वीर-वैरि-**विनयादित्या**वनीपालकं ॥ ३ ॥

क ॥ विनयं बुधर रञ्जिसे
घन-तेजं वैरि-नलमनलुलिसे नेगल्दं ।
विनयादित्य-नृपालक-
ननुगत-नामार्थनमल-कीर्त्ति-समर्थं ॥ ४ ॥

आ-**विनयादित्य**न वधु
भावोद्भव-मन्त्र-देवता-सन्निभे स-

[illegible]-भवन[illegible]-
[illegible]-वि[illegible]ते-[illegible] [illegible] ॥ ५ ॥
[illegible] तनुभव-
नाद [illegible] [illegible] मुख-
[illegible] [illegible] वि-
पाद-वि[illegible] [illegible] ॥ ६ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ७ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ८ ॥
[illegible]
[illegible] वि-
[illegible]
[illegible] ॥ ९ ॥
वृत्त ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कन्द ॥ एल्लेगेसेव कोयतूर्त-
त्तलवन-पुरमन्ते रायरायपुरंव-
ल्लव वलंद विष्णुतेजो-
ज्वलनदे वेन्दुवु वलिष्ठ-रिपु-दुर्गङ्गल् ॥ ११ ॥
वृत्त ॥ इनितं दुर्गम-वैरि-दुर्गचयमं कोण्डं निजाचोरदि-
न्दिनिवर्त्तभूपरनाजियोल्तविसिदं वन्नव-मङ्गावदि-
न्दिनिवर्गानवर्गित्तनुदय-पदमं कारुण्यदिन्दिन्दु वा-
ननितं लोकदे पेल्वोडव्ज-भवनुं विश्रान्तनप्पंवलं ॥ १२ ॥
कन्द ॥ लक्ष्मी-देवि-खगाधिप-
लक्ष्मङ्गे-सेदिर्द विष्णुगेन्तन्ते वलं
लक्ष्मा-देवि-लसन्मृग-
लक्ष्मानने विष्णुगम-सवियेने नेगल्दल् ॥ १३ ॥
अवर्गे मनोजनन्ते सुदती-जन-चित्तमनीलकोलदके मा-
ल्ववयव शोभेयिन्दतनुवेम्बभिधानमनानदङ्गना-
निवहमनेच्चु मुरवनगमानदे वीररनेच्चु युद्धदोल्
तविसुवोनादनात्म-भवनप्रतिमं नरसिंह-भूभुजं ॥ १४ ॥
पडे मातें वन्दु कण्डङ्गसृत-जलधि वां गर्व्वेदि गण्ड-वातं
नुडिवातङ्गेन्ननेम्बै प्रलय-समय-दोल् मेरेयं मीरिदर्प्पा-
कडलन्न कालनन्नं मुलिद-कुलिकनन्नं युगान्वाग्नियन्नं
सिडिलन्नं निद्दसं पुर-हर-मुरिगण्णन्ननी नारसिंहं ॥१५॥
रिपु-सर्प्पदर्प्प-दावानल-पदल-सिखा-जाल-कालाम्बुवाहं
रिपु-भूपोग्रप्रदोप-प्रकर-पटुतर-स्फार-झञ्झा-समीरं ।

श्रवण बेल्गोल नगर में के शिलालेख

जिन-सत्पुण्य-पुराण-संभवसदि सन्तोषमं ताल्दि भ-
व्यनुतं निच्चलुमिन्तै पोल्तुगलेवं श्रीहुल्ल-दण्डाधिपं ॥२४॥

कन्द ॥ निप्पटमे जीर्ण्णमादुद-
नुप्पट्टाख्वन महा-जिनेन्द्रालयमं ।
निप्पोसतु माडिदं कर-
मोप्पिरे हुल्लं मनस्वि बङ्कापुरदोळ् ॥ २५ ॥
मणमणिय ॥

वृत्त ॥ कलिवनमुं विटल्वमुमनुल्लवनादियोळोर्व्वनुर्व्वियोळ्
कलिविटनेन्बनावन जिनालयमं नेरे जीर्ण्णमादुदं ।
कलि सल दानदोळ् परम-सौख्य-रमारतियोळ् विटं विनि-
रपल्लवे निसिदं हुल्लनदर्नेत्तिसिदं रजवाद्रि-तुङ्गमं ॥ २६ ॥
प्रियदिन्दं हुल्ल-सेनापति कोपण-महा-तीर्त्थदोळ् धात्रियुं वा-
र्द्धियुमुल्लन्नं चतुर्व्विंशति-जिन-मुनि-सङ्घके निश्चिन्तमाग-
क्षय-दानं सल्व पार्ङ्गि बहु-कनक-मना-चेत्र-जर्गित्तु सद्वृ-
त्तियनिन्नीलोकमेल्लम्पोगळे बिडिसिदं पुण्य-पुञ्जैकधामं ॥
॥ २७ ॥
अकेल्लङ्गेरेयादि-तीर्त्थमदुसुमं गङ्गरि निर्म्मितं
लोक-प्रस्तुतमाग्यु काल-बसदि नामावशेषं बलि-
वा-कल्प-स्थिरमागे माडिसिदनो-भासत्रिनागारमं
श्री-कान्तं बलदिन्दमंश्रे कलसं श्री-हुल्ल-दण्डाधिपं ॥ २८॥
कन्द ॥ पञ्च-महा-वसतिगलं
पञ्च-सुकल्याण-शब्दमं हुल्ल-चमू-

धरेयं गेल्दिद्दं तिण्पुल्लनतुद्दधियनेनेम्ब गुण्पुल्लने म-
न्दरमं माकोल्वि पेम्पुव्वननमर-महोजातमं मिक्क बेकं-
सरमप्पार्पुल्लनेपुल्लननेसेव जिनेन्द्राङ्घ्रि-पङ्केज-पूजो-
त्करदोळ् सल्पोग्दलम्पुल्लननुकरिसल् मत्र्यनार्पोसमंर्ते ॥
सुमनस्सन्तति-सेवितं गुरु-वचो-निर्दिष्ट-नीति-क्रमं
ममदाराति-बल-प्रभेदन-करं श्री-जैन-पूजा-समा-
ज-महोत्साह-परं पुरन्दरन पेम्पं तालिद भण्डारि-हु-
ल्लमरण्डाधिपनिर्दपे महियोलुद्दैभव-भाजितं ॥ २० ॥
गलतं प्राणि-वधं [illegible] [illegible]
[illegible] कोन्दुरं [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] हुल्लनं ॥ २१ ॥
[illegible] [illegible] रायमल्ल-नृ-
[illegible] रायने [illegible] [illegible] विष्णु-नृ-
[illegible] [illegible] नृसिंह-देव-नृ-
[illegible] हुल्लने [illegible] ॥ २२ ॥
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] कुप्पटूदा-
[illegible] देवरं [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] ॥ २३ ॥
[illegible]
[illegible]

जिन-पदपुण्य-पुराण मेनिसवदि सन्तोषमं ताल्दि म-
च्यनुपं निच्चलुमिन्ते पोल्गुगलेंबं नाडुल्ल-दण्डाधिपं ॥ ६४॥

कन्द ॥ निच्चटमे जीर्णमागुद-
नुच्चट्टायतन महा-जिनेन्द्रालयम ।
निच्चोसनु माडिद कर-
मोप्पिर हुल्लं मनोज्ञ मङ्गपुरदोलू ॥ ६५ ॥

मत्तमल्लिय ॥

वृत्त ॥ कालिदनगुं बिटत्वनुमनु-सवनादिया नाख्यं-गुर्व्विवालू
कलिबिटनम्बनालन जिनालयम नव जीर्णमागुदं ।
कलि लल दानदोलू परम पौरुष-रमार्गिपालू विदं विल-
यपलवे निधिदं हुल्लनदनोलिद नभाडि-पुङ्गम ॥ ६६ ॥
प्रियदिन्दं हुल्ल-प्रजापति पोतपत्न-महा-तीर्थदोलू पाविपु बा-
लिंपुलुजाल पतुर्व्विंशति-जिन-मुनि-नहुके नित्य-नमाप-
षय-दाने पालु पाळ्दे बहु-कनक मना-धेय-आरिंतु सङ्गु-
लियनि-तोताकमाक्षपंगवं बिडिसिदं पुण्य पुञ्जैकधाम ॥
॥ ६७ ॥

माक-नक्केयोदि-तीर्थमदुगुन गङ्गद लिखित
लाक-माङ्गमाद्ङ्ग काञ्च-पदिं नाभावदरंपं दाळ-
का-कल्प-लिपमाग माडिसिद-तीर्थ-जिनालयं
मो-काल्व चलदि-दमञ्च कश्रुवं हुल्ल-दण्डाधिप ॥ ६८ ॥

कन्द ॥ पञ्च-महा-कल्याणद
पञ्च-मुकल्याद-पाञ्चाव हुल्ल-चमू-

पं चतुरं माडिसिदं
काञ्चन-नग-धैर्य्यनेसेव केल्लङ्गेरेयोल् ॥ २६ ॥

कन्द ॥ हुल्ल-चमूपन गुण-गण-
मुल्लनितुमनारा नेरेये पोगलल्लनेरेवर्
बल्लदोलल्लेदुदधिय जल-
मुल्लनितुमनारा पवणिमल्ल नेरेवन्नर् ॥ ३० ॥

संश्रित-सद्गुणं सकल-भव्य-नुतं जिन-भासितार्थ-नि-
स्संशय बुद्धि-हुल्ल-पृतना-पति कैरव-कुन्द-हंस-शु-
भ्रांशु-यशं जगन्नुतदोलो-वर-बेल्गुल तीर्थदोल् चतु-
र्व्विंशति तीर्थकृन्निलयमं नेरे माडिसिदं दलिन्दिदं ॥३१॥

कन्द ॥ गोम्मटपुर-भूषणमिदु
गोम्मटमाय्तेने समस्त-परिकर-सहितं ।
मम्मददि हुल्ल-चमू-
पं माडिसिदं जिनोत्तमालयमनिदं ॥ ३२ ॥

वृत्त ॥ परिसूत्रं नृत्य-गेहं प्रविपुल-विलसत्पत्त-देशस्थ-शैल-
स्थिर-जैनावास-युग्मं विविध-सुविध-पत्रोल्लसद्-भाव-रूपा-
कर-राजद्वार-हर्म्यं बेरसतुल-चतुर्व्विंश-तीर्थेशगेहं
परिपूर्णं पुण्य-पुञ्ज-प्रतिममेसेदुदीयन्ददि हुल्लनिन्दं ॥३३॥

स्वस्ति श्री-मूल-सङ्घद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद कोण्ड-
कुन्दान्वय-भूषणरप्प श्री-गुणचन्द्रसिद्धान्त-देवर शिष्यरप्प
श्री-नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवरेन्तप्परेन्दोडे ॥

वृत्त ॥ नय-मोह-हृदय-मुहूर्तदे मदन-मोहन्धान्त-नीहारांशुव
नय निर्धूत-युक्त-प्रमाण-परिनिर्णीतार्थ-सन्दोहदे ।
नयनान-न्दन-शान्त-कान्त-तनुवं सिद्धान्त-चक्रेशनं
नयकीर्त्ति-व्रतिराजनं नेनेदोडं पापाकरं पिङ्गुगु ॥३४॥
कृत-दिग्जैत्रविधं बलद नरसिंह-क्षितिप कण्डु स-
न्मतियिं गोम्मट-पार्श्वनाथजिनर मन्नायतुं-विंशति-
प्रतिमागेहमनित्रितर्कें विनत प्रासादक्कें विट्ट-
प्रतिमल्लं सवणेरुवं नभय कल्पा-न्तं वर्त्त-पेनो ॥ ३५ ॥
बक्कें नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळ महामण्डलाचार्य-
रत्नाचार्यरमोडि ॥

वृत्त ॥ तदर्दावभिजन नारसिंह-नृपन तां पडद नहुग्गुत-
भोगवती जैन-गृहक मादिदनमळ दुङ्ग दण्डाधिप ।
भुवन-प्रस्तुतनप्पुविर्पे सवणेरुवन्नरिवागु
रविशु चन्द्रगुरुदेवाक्षयमुं शिवनाते नयन्नने ॥ ३६ ॥
पाम-नाराय-उन्नत मुक्त-नेवाल सन-न-न्हक्केन
वीम कराळवर आदि लहु हिरियतवाय पातु दिन्न नहुव
करेय कालिय कोळ-वयलु आदि लहु बरदोळ करनपुगु आ-
बाति हिरियरेय बल्लिय लहुवा बसदि पुटिल तप्पद ब्बत्त-
वाद पिरियसिय सवणेर पडव पाद दिडिय दृष्टिसे व-वेरद-
काळ भालि दडुवह हिरियरेय बल्ल बावदिय हडुकत बेत्त
करेय लेदुड-कोटिय सवरेय बल बोळक्केल तारदु हब ब ब
बनकहद वाद-न अवहुवा हिरियकरेय ताट्टल बीळे तडुवद

देसेयोळ् जन्नवुरक्कं सवणेरिङ्गं सागरमर्य्यादे जन्नवूर सवणेर केरेयेरिय नडुवण हिरिय हुणिसे सीमे बडगणदेसेयोळ् कोळ्ळि कोट्ट अदर मूडण वीरज्जन केरे आ-केरेयोळगे सवणेर बेट्टुगन हळ्ळिय नडुवे वसुरिय दोणे अल्लिं मूडलागज्जन कुम्मरि अल्लिं-मूड चिल्लुदरे सीमे ॥

ई-स्थळदिन्दाद द्रव्यमनिल्लियाचार्य्यरी-स्थानद वसदिगळ खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्कं देवता-पूजेगं रङ्गभोगक्कं वसदिगे बंद केय्व प्रजेगं ऋषि-समुदायदाहार-दानक्कं सलिसुवुदु ॥

इदनावं निज-कालदोळ् सु-विधियिं पालिप्प लोकोत्तमं
विदितं निर्म्मल-पुण्य-कीर्त्तियुगमं तां ताल्दुगुं मत्तमि-
न्तिदनावं किडिपोन्दु केट्ट-धर्मयं तन्दाळनाल्दुं गभीर
दुरन्तो······························ ॥ ३७ ॥

[इस लेख में होयसल वंशी नारसिंह नरेश के मन्त्री हुल्लराज द्वारा गुणचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य नयकीर्ति सिद्धान्तदेव को सवणेरु ग्राम दान करने का उल्लेख है । प्रारम्भ में होयसल वंश का वही वर्णन है जो लेख नं० १२४ में पाया जाता है । हुल्ल वाजिवंशी यक्षराज और लोकाम्बिके के पुत्र थे । वे बड़े ही जिनभक्त थे । 'यदि पूछा जाय कि जैन धर्म के सच्चे पोषक कौन हुए तो इसका उत्तर यही है कि प्रारम्भ में राचमल्ल नरेश के मन्त्री राय (चामुण्डराय) हुए, उसके पश्चात् विष्णु नरेश के मन्त्री गङ्गण (गङ्गराज) हुए और अब नारसिंहदेव के मन्त्री हुल्ल हैं ।' हुल्ल मन्त्री के गुरु कुक्कुटासन मलधारिदेव थे । मन्त्री जी को जैनमन्दिरों का निर्माण व जीर्णोद्धार कराने, जैनपुराण सुनने तथा जैन साधुओं को आहारादि दान देने की बड़ी रुचि थी । उन्होंने बंकापुर के भारी और प्राचीन दो मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया,

[illegible]पाया में जिनदास के लिये 'वसदि' का प्रबन्ध किया, [illegible] द्वारा स्थापित प्राचीन 'पंचकूट' में एक विशाल जिन मन्दिर व अन्य पांच जिन मन्दिर निर्माण कराये व पोम्बुर्च में परकोटा, [illegible] व [illegible] ग्रामों सहित चतुर्विंशति तीर्थंकर मन्दिर निर्माण कराया। [illegible] ग्राम का दान भारसिंह देव के विजययात्रा से लौटने पर इस मन्दिर की रक्षा के हेतु किया गया था।]

१६७ (१४६)

उसी पाषाण की दायीं बाजू पर

(लगभग शक सं० १०८०)

श्रीमत्पार्श्वदेवं
भू—महितं [illegible] राजं न-
ह्यामिनि-पद्मावतिगे
[illegible] ॥ १ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] पद्मल-देवि [illegible]
[illegible] ॥ २ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] पद्मावती-
[illegible] ॥ ३ ॥

वरगेन्द्र-चोर-नीराकर-रजत-गिरिश्री-सित-च्छत्र-गङ्गा-
हर-हासैरावतेभ-स्फटिक-वृपभ-शुभ्राभ्र-नीहार-हारा-
मर-राज-श्वेत-पङ्केरुह-हलधर-वाक्छङ्खहंसेन्दु-कुन्दो-
त्कर-चश्वत्कीर्त्ति-कान्तं बुध-जन-विनुतं भानुकीर्त्ति-
व्रतीन्द्रं ॥ ४ ॥

श्री नयकीर्ति-मुनीश्वर-
सूनु श्री भानुकीर्त्ति-यति-पतिगित्तं ।
भूनुतनप्पाहुल्लप-
सेनापति धारेयेरदु सवणेरुर ॥ ५ ॥

[इस लेख में हुल्लराज मन्त्री की धर्मपत्नी पद्मावती (पद्मलदेवी) की प्रशंसा के पश्चात् उल्लेख है कि हुल्लराज ने नयकीर्ति मुनि के शिष्य (सूनु) भानुकीर्त्ति को धारापूर्वक सवणेरु ग्राम का दान दिया ।]

१३७ (३४७)

उसी पाषाण की बायीं बाजू पर

(शक सं० १२००)

स्वस्ति श्री-जयाभ्युदयश्च-शक-वरुषं १२०० नेय बहु-धान्य-संवत्सरद चैत्र-सु १ सु भण्डारियप्पन मधरिय श्री-देवरवल्लभ-देवरिगे नित्याभिषेकके अक्षय-भण्डारवागि श्रीमनु महा-मण्डलाचारियरु उदयचन्द्र-देवर शिष्यरु मुनि-चन्द्र-देवरु गर ग ५ कं हाग मान २ श्रीमनु चन्द्रप्रभ-देवर

निरवद्य-प्रथा-नमन्नर्पमदारनिशार्द्धिनारकाकान्त: ।
मात्रात्ममरच्छवान्ता जयति चिरं भूप-मकुट-मणिरैयन्नः ॥
॥ ८ ॥

अपि च ॥ शारदमृत-द्युति-कीर्त्तिर्मनसिजमूर्त्ति-
र्व्विराधिकुरुकपिकेतुः ।
कलि-काल-जलधि-सेतु-
र्ज्जयति चिर छत्र-मौलि-मणिरैयन्नः ॥ ९ ॥

अपि च ॥ जयलक्ष्मीकृतसङ्गः छन-रिपु-भङ्गः प्रभूत-गुण-तुङ्ग ।
भूरि-प्रताप-रङ्गा जयति चिरं नृप-किरीट-मणिरैयन्नः ॥१०॥

अपि च ॥ लक्ष्मीप्रेमनिधिर्विदग्ध-जनता चातुर्य्यवर्य्य-विधि-
र्व्वीरश्री-नलिनी-विकास-मिहिरो गाम्भीर्य्य-रत्नाकर ।
कीर्त्ति-श्री-प्रतिका-वसन्त-समयश्री-स्वयंश्लक्ष्मीमय-
स्सर्व्वामानैरैयन्न-प्रभुनृपति श्री कैर्त्ति सेवन्तीव ॥ ११ ॥

अपि च ॥ करशाकात्यरैयन्ननरइपतेर्ल्लिर्व्वक्षमक्रान्ते
स्तोतुं मालव-मण्डलेश्वरपुरीं धारामधाराम् छलान् ।
दो:कण्डूल-कराल घोरकटके द्राक् काश्मिरीकं ब्बयान
निर्द्दीनाहवचक्रगोइमकरोद् भङ्गं कलिङ्गस्य च ॥ १२ ॥

कान्ता सस्य लतान्तचापललना लावण्यपुण्याहवैः
सौभाग्यस्य च विधविस्मदहृनपोशापरिशा-सुत: ।
पुत्रोत्पत्तिसत्कृतासु सकलाखण्डोजयोनेध्वंधू-
रार्तिदेवल-नानपुण्यवलिता राज्ञी महाकामसी ॥ १३ ॥

१३८ (३४६)

भण्डारिबस्ति में पश्चिम की ओर

(शक सं० १०८१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थ-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभेद-घन-भानवे ॥ २ ॥
स्वस्तिहोयसलवंशाय यदुमूलाय यद्गुरुः ।
क्षत्र-मौक्तिकसन्तानर पृथ्वीनायक-मण्डने ॥ ३ ॥
श्रीधर्म्माभ्युदयाब्जषण्डतरणिस्सम्यक्त्वचूडामणि-
र्भातिश्रीमरणिर्प्रतापधरणिर्दानार्थि-चिन्तामणिः ।
वंशो यादवनाम्नि मौक्तिक-मणिर्व्वार्त्ता जगन्मण्डनः
श्रीराज्याधिप कौस्तुभोऽत्र विनयादित्यावनीपालकः ॥४॥
अपि च ॥ श्री-कान्ता-कमनीय-केलि-कमलेऽाद्वारारसुनिर्यद्यशः-
स्सर्न्निध-निविडान्धकार-हरणाद् भूयद् प्रतापान्वयात् ।
दिक्चक्राक्रमणाद्विषत्-कुवलय-प्रध्वंसनाद्भूतले
ख्यातोऽप्यर्थनिजाख्ययैव विनयादित्यावनीपालकः ॥५॥
धात्रा निर्मितकौतुक-सारभूतेर्यदोर्गुणा यस्य त्रिविक्रमस्य ।
यस्य प्रिया केलियनामदेवी मनात राज्य-प्रकृतिर्ब्बभूव ॥६॥
तयोरभूदुन्नत-भूरि-कीर्त्ति-र्वेत्ता क्षमाकान्त-शिखामणिः ।
तन्नन्दन एरेयङ्गभूपाल प्रतापनुन्नारिरेयङ्गनृपः ॥ ७ ॥

[illegible] नगर में क [illegible]

[illegible] ।
[illegible] स्पृहः ॥

अपि च ॥ [illegible]
॥ ८ ॥
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] स्पृहः ॥ ९ ॥

अपि च ॥ [illegible] ।
[illegible] स्पृहः ॥ १० ॥

अपि च ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥

अपि च ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १२ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥

अपि च ॥ कुन्तल-कदली-कान्ता पृथु-कुच-कुम्भा मदालसा भाति मरा।
स्मर-समरसज्जविजयमतङ्गोद्भवचारु-मूर्त्तिरेचलदेवी ॥ ॥ १४ ॥

अपि च ॥ शचीव शक्रंजनकात्मजेव रामं गिरीन्द्रस्य सुतेव शम्भुं।
पद्मेव विष्णुं मदयत्यजस्रं सानङ्गलक्ष्मीरेरेयङ्ग भूपं ॥१५॥
कौसल्यया दशरथो भुवि रामचन्द्रं
श्रीदेवकीवनितया वसुदेवभूपः ।
श्र्यं शचीप्रमदयेव जयन्तमिन्द्रो
विष्णुं तया स नृपतिर्ज्जनयांबभूव ॥१६॥
उदयति विष्णौ तस्मिन्ननेशदरिचक्र-कुलमिलाधिपचन्द्रे।
अधिकतर-श्रियमभजत्कुवलय - कुलमश्वदमलधर्म्माम्भोधिः॥ ॥ १७ ॥

अपि च ॥ निर्द्दलितकोयतूरो भस्मीकृतकोङ्ग-रायरायपुरः ।
घट्टित-घट्ट-कवाटः कम्पितकाञ्चीपुरस्सविष्णुनृपालः॥१८॥

अपि च ॥ अतुल-निज-बल-पदातित-धूलीकृतदुरितद्रिनरपतिदुर्गः।
वनवासितवनवासो विष्णुनृपस्तरलितोरु-वल्लूरः ॥१९॥

अपि च ॥ निज-सेना-रद-धूलीकर्दमित-मलप्रहारिणीवारिः ।
कलपाल-शोणिताम्बु-निशातीकृत-निजकरासिरवनिप-
विष्णुः॥२०॥

अपि च ॥ नरसिंह-वर्म्म-भूभुज-महस्रभुज-भूजपरशुरामोऽपि ।
चित्रं विष्णुनृपालश्शरवकृत्योऽप्याजिनिहित-शत्रु-चत्रः॥२१॥

उदियम-पृथुशौर्य्यमराहुरपेङ्गिरि-गिरीन्द्र-हवि-पवि-
दण्डः

तलवनपुरलक्ष्मीं पुनरहरज्जयमिव रिपोस्स विष्णु-नृपः
॥२२॥

अपि च ॥ चक्रिप्रेषित-मालवेश्वरजगद्देवादिसैन्यार्णवं
घूर्णन्तं महमापितत्करतलेनाहत्य मृत्यु-प्रभुः ।
प्राक् पश्चादसिनामहीदिह महीं वल्कुप्पवेण्यावधि-
र्मांविष्णुर्व्भुजदण्डचूर्णितनितान्तोत्तुङ्गतुङ्गाचलः ॥ २३ ॥

अपि च ॥ दृप्यङ्कोल-चाणी-पति-मृगमृगारातिरत्तुङ्गः
कदम्ब-चोणीश-चितिरुह-कुलच्छेद-परशुः ।
निज-व्यापारैक-प्रकटितलसच्छौर्य्यमहिमा
स विष्णुः पृथ्वीशो न भवति वचोगोचरगुणः ॥२४॥

माचाम्बिकाभो-व्र्विपदपगमे विश्वलोकस्य नाम्ना
लक्ष्मीदेवी विशदयशसा दिग्धदिक्चक्रभित्तिः ।
दृप्यद्वैरि-चितिप-दितिजव्रात-विध्वंस-विष्णोः
विष्णोस्तस्य प्रणय-वसुधासीत्सुधानिर्म्मिताङ्गी ॥ २५ ॥

ब्रह्माण्ड-भाण्ड-भरितामलकीर्त्ति-लक्ष्मी-
कान्तस्तयोरजनि भूनुरजातशत्रुः ।
पृथ्वीश-पाण्डु-पृथयोरिव पुष्पचापो
दैत्य-द्विषत् कमलयोरिव नारसिंहः ॥ २६ ॥

अपि च ॥ गर्व्वं बर्व्वर मुञ्च काञ्चन-चय पोलालु राणीकुरु
चेमं भिचय चेर चोरगुणां दूरेण विद्रावय ।

स्वं गौडेति नृसिंह-भूरि-नृपतेर्म्मध्ये मदस्सर्व्वदा
दुर्व्वारस्सरति ध्वनिः परिजनानिर्व्वात-निर्घोष-जित् ॥२७॥

अपि च ॥ शौर्यं नैव हरेः परत्र तरणेरन्यत्र तेजस्वितां
दानित्वं करिणः परत्र रथिनामन्यत्र कीर्त्तिं रदात् ।
राज्यं चन्द्रमसःपरत्र विषमाक्षत्वं च पुष्पायुधा—
दन्यत्रान्य-जने मनाक् च सहते श्रीनारसिंहो नृपः ॥२८॥

अपि च ॥ स भुज-बल-वीर-गङ्ग-प्रताप-होयसलापर-नामा ।
पालयति चतुस्समयं मर्य्यादामम्बुनिधिरिवावि प्रीत्या
॥२९॥

चागल-देवी-रमणो यादव-कुल-कमल-विमल-मार्त्तण्ड-श्रीः॥
छित्वा दृप्त-विरोधि-वंश-गहनं दिग्जैत्र-यात्रा-विधा-
वारुह्योदय-भूधरं रविरिवाद्रि दीप-वर्त्ति-श्रिया ।
नत्वा दक्षिण-कुकुटेश्वर-जिन-श्री-पाद-युग्मं निधिं
राज्यस्याभ्युदयाय कल्पितमिदं स्वग्यात्मभण्डारिणा ॥ ३० ।

सर्व्वाधिकारिणा कार्य्य-विधौ योगन्धरायणा-
दपि दक्षेण नीतिज्ञगुरुणा च गुरोरपि ॥ ३१ ॥

लोकाम्बिकातनूजेन जक्कि-राजस्य सूनुना ।
ज्यायसा लोक-रक्षैक-न्नदमथामरर्यारपि ॥ ३२ ॥

मलधारि-स्वामि-पद-प्रथित-मुदा वाजि-वंश-गगनांशुमता ।
हिम-रुचिना गङ्ग-मही-निखिल-जिनागार-दान-तोयधि-विभवै
॥ ३३ ॥

दूरी-कृत-कलि-स्यूत-नृ-कलङ्केन भूयसा ।
चरित्र-पयसा कीर्ति-धवलीकृत-दिशालिना ॥ ३४ ॥
त्रिशक्ति-शक्ति-निर्भिन्न-मदवद्वैरिणा ।
हुल्लपेन जगन्नूत-मन्त्रि-माणिक्य-मौलिना ॥ ३५ ॥
चतुर्विंशति-जिनेन्द्र-श्री-निलयं मन्नयाचलं ।
सद्धर्म-चन्दनोद्भूतौ दृष्ट्वा निर्म्मापितं ततः ॥ ३६ ॥
द्वितीयं यस्य सम्यक्त्व-चूडामणि-गुणाख्यया ।
भव्य-चूडामणिनाम तस्मै प्रीत्या ददातत: ॥ ३७ ॥
दानार्थं भव्य-चूडामणि-जिन-वसतौ वासिनां सन्मुनीनां
भोगार्थं चानुजीर्णोद्धरणमिद जिनेन्द्राष्टविध्यर्चनार्थं ।
श्री-पार्श्व-स्वामिनां च त्रिजगदधिपतेः फुल्लदेशस्य पत्युः
पुण्यश्री-कन्यकाया विवहन-विषयं शुद्रिकामर्पयन्वा ॥३८॥

एकाशीत्युत्तर-सहस्र-शक-वर्षेषु गतेषु प्रमादि-संवत्सरस्य पुष्य-मास शुद्ध शुक्रवारस्त्रयोदश्यामुत्त-रायणसङ्क्रान्तौ श्री-मूल-संघदेशियगणपुस्तकगच्छसम्बन्धिने विधाय ॥

नरसिंह-दिमाद्रिवदुर्भिव-कलश-दद-क-हुल्ल-कर-जिह्नितं य नव-धारा गङ्गाम्बुनि सचतुर्विंशतिजिनेश-पादसरसीमम्बु सवर्णेदमदाद्भूपतिरगणित-मणि-कणनं-नृपति-शिवि-खव प

प्रमुदित-कुबेरविभवविद्युदाहृत-सिंहविक्रमो नरसिंहः

अतःपरं ग्राम-सीमाभिधास्यते ॥ तत्र पूर्व्वस्यां दिशि सुवणेर-वेक्कन यडेय सीमे करडियरे अल्लि तेङ्क हिरियोब्बेयि पोगलु विम्बिसेट्टियकेरेय कोडिय किरुवयलु ॥ अल्लि तेङ्क बरदालकेरेय अच्चुगट्ट मेरेयागि हिरियोब्बेय बसुरिय तेङ्कण केम्परेय हुणिसे ॥ दक्षिणस्यां दिशि चिनतिय सवणेर यडेय एरेय दिब्बेय हुणिसेय कोल हिरियाल । अल्लि हडुवलु हिरियोब्बेय सेड्ड मोगडिय हडुवण बल्लेयकेरेय तेङ्कणकोडिय बल्लरिय बन॥ अल्लिन्दत्त तरिहलिय कलियमनकट्ट वाय्कल्ल जन्नवुरद हिरिय केरेय वाय्कल्ल सीमे ॥ पश्चिमायां दिशि जन्नवुरक्कं सवणेरिङ्गं मागरमरियादे जन्नवूर सवणेर केरेयेरिय नडुवण हिरियहुणिसे सीमे ॥ उत्तरस्यां दिशि कल्किन कोलु अदर मूडण बीरजन केय्याकेरेयालगे सवणेर बेडुगनहल्लिय नडुवे बसुरिय दोणे। अलिन मूडणालजन कुम्मरि अल्लिन मूड चिक्कदरे सीमे ॥

सामान्योऽयं धर्म्म-सेतुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः
सर्व्वानेतान् भाविनःपार्त्थिवेन्द्रान् भूयो भूयो याचते
रामचन्द्रः ॥ ४० ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टि वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमिः ॥ ४१ ॥
न विषं विषमित्याहुर्ब्रह्म-स्वं विषमुच्यते ।
विषमेकाकिनं हन्ति ब्रह्म-स्वं पुत्र-पौत्रकं ॥ ४२ ॥
शरज्ज्योत्स्ना-जश्री वपुषि धृतभास्वन्दनरसा
दिशाधीशश्रीणां स्फुरदुरु दुकूलैकवसने ।

त्रिलोकप्रासाद-प्रकटित-सुधा-धाम-विशदं
यशो यस्य श्रीमान् स जयति चिरं हुल्लप-विभुः ॥ ४३ ॥
अस्तु स्वस्ति चिराय हुल्ल भवते श्रीजैन-चूडामणे
भव्य-व्यूह-सरोज-षण्ड-तरणे गाम्भीर्य-वाराम्निधे ।
भास्वद्विश्व-कलानिधे जिन-नुत-वाराब्धि-पूर्णेन्दवे
र्स्वीयत्कीर्ति-सिताम्बुजोदरलसद्वारासि-वार्ध्वेन्दवे ॥४४॥
श्री गोम्मट-पुरद विप्पेयुद्दद्धि अडकेय हरिद्गे २००
हसुम्बेगे अरवत्तु वप्पु हे ......गे बिसिगे १ हसुम्बे गोफल ५
मेलसु हेरिद्गेवष्ठ १ हसुम्बेग मान १ मरिपत्रायदद्धि गल्लेय......
......रेग हाग १ मंल्ले २०० गायदेर इनितुम तम्म सुद्गदधि
कारदन्दु चतुर्विंशति-तीर्थकरपू ....प्रधान सर्व्वा-
धिकारि हिरिय-भण्डारि हुल्लय्यङ्गलु हेगडे लपकय्यङ्गलं
हेगडे-म......... .....हारसस नारसिंह-देवनकय्य धेहि-
कोण्डु विट्टरु ॥ इप्पत्त-नाल्वर मनेदेर प .... वी
नुडिदुदे सद्रायि तम पेल्दन्ददोलार्ण्नहदोहदे मार्गमेन्दहे
नडेदु... ... ...
शशिविन्दम्बरमब्बदि तिलि-गोलं नेपङ्ग लिन्दानने
पोगमावि वनभिन्दनि त्रिदिवमासे... ... ...
... ...कीर्ति-देव-मुनिपि सिद्धान्त-चक्रेश-नि-
न्देसेगुं श्रीजिन-धर्म्ममन्दडे वलिवक्केवण्णिपं वण्णिपं ॥४५॥
......................वी सव्या चमू-नायकः ॥ श्री हुल्ल
रसवयेहमेवमददादाव...............द भानय.........

......क्त्या मुदा धारापूर्व्वकमुर्व्वरा-स्तुति-भू...........म
............श्री श्री

भव्याम्भोरुह-भास्करस्सुरसरित्प्रोद्धारवु ....
......क...... .....निः पुरात्थर्य-रत्नाकरः ।
सिद्धान्ताम्बुधि-वर्द्धनामृतकरः कन्दर्प्पदोर्ज्जाशनि-
स्सोऽयं विश्रुत-भानुकीर्त्ति-मुनि.........वं भूवत्रे ॥४८॥

[इस लेख में भी होय्सलवंशी नारसिंह देव के वंश-परिचय के पश्चात् उनका चतुर्विंशति मन्दिर की वन्दना करने तथा हुल्ल द्वारा सवणेरु ग्राम का दान करने का उल्लेख है। इस लेख में हुल्ल के लघु भ्राता लक्ष्मण का व अमर का भी नाम आया है। नारसिंह देव ने उक्त बस्ती का नाम भव्यचूड़ामणि रक्खा। हुल्लराज की उपाधि सम्यक्त्व चूड़ामणि थी। लेख का अन्तिम भाग बहुत घिस गया है। इसमें हुल्लय्य हेग्गडे, सोवण्ण आदि द्वारा नारसिंह देव से पार्श्वनाथ देकर गोम्मटपुर के कुछ टैक्सों का दान चतुर्विंशति तीर्थंकर बस्ति के लिये करने का उल्लेख है। अन्त में भानुकीर्त्ति मुनि का भी उल्लेख है।]

१३८ (३५१)

मठ के उत्तर की गोशाला में

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
स्वस्ति श्री-वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।
श्री-कोण्डकुन्दनामाभून्मूलसंघाग्रणी गणी ॥ २ ॥

तस्यान्वयेऽजनि ख्याते विख्याते देशिके गणे ।
गुणी देवेन्द्र-सिद्धान्त-देवो देवेन्द्र-वन्दितः ॥ ३ ॥

अवर सन्तानदोल् ॥

वृत्त ॥ पर-वादि-क्षितिभृन्निशात-कुलिशं श्री-मूल-सङ्घाब्जषट् —
चरणं पुस्तक-गच्छ देशिग-गण प्रख्यात-यागीश्वरा—
भरणं मन्मथ-भञ्जनं जगदोळाद ख्यातनाद दिवा-
करणन्दि-व्रतिपं जिनागम सुधाम्भोराशि-ताराधिपं ॥ ४ ॥

मन्तेनलिन्तेनल्करियनंददे जगत्त्रय-नन्दरप्पपे-
म्पं वडेदिर्देरम्बुदने पल्लेनदल्लदे संयमं चरि-
त्रं तपमेम्बिवज्जनगलिन्तु दिवाकरनन्दि-देव-सि-
द्धान्तिगलं न्दवन्दु रसनाळियातानदनेन्तु वण्णिपें ॥ ५ ॥

वरशिष्यरप्प ॥

नेरेयें तनुत्रमिकिरने।लिर्द मलन्तिने मेय्यनागमेंबु
दुरिसुवुदिल्ल निद्दे वर मगुलनिमुदुदिल्ल पानिकं ।
किर तेरेयम्बुदिल्लुग्रुन्नुदिल्ल मलबुबुदिल्लहीन्द्रनुं
नेरेवने बण्णिसल्गुण-गणाबलियं मलधारि-देवरं ॥ ६ ॥

अवरशिष्यर् ॥

वृत्त ॥ कन्तुमदापहर्संकख-जीव-दयापर-जैन-मार्ग-रा-
द्धान्त-पयोधिगत्त विषय-व्रतमाळुद-कर्म्म-भञ्जन-
सर्न्दन-भव्य-पद्म-दिनकरननरं शुभचन्द्र-देव-सि-
द्धान्त-मुनीन्द्ररं पोगल्तुदम्बुधि-वेष्टित-भूरि-भूतळं ॥ ७ ॥

......क्त्या मुदा धारापूर्व्वकमुर्व्वरा-स्तुति-भृ............म्म
............श्री श्री

भव्याम्भोरुह-भास्कररसुरसरिन्नोहारवु ....
......कु...... .....निः पुरात्थ्यं-रत्नाकरः।

सिद्धान्ताम्बुधि-वर्द्धनामृतकरः कन्दर्प्पशैलाशनि-
स्सोऽयं विश्रुत-भानुकीर्त्ति-मुनि.........वं भूतले॥४६॥

[इस लेख में भी होयसलवंशी नारसिंह देव के वंश-परिचय के पश्चात् उनका चतुर्विंशति मन्दिर की वन्दना करने तथा हुल्ल द्वारा सवणेरु ग्राम का दान करने का उल्लेख है। इस लेख में हुल्ल के लघु भ्राता लक्ष्मण व अमर का भी नाम आया है। नारसिंह देव ने उक्त बस्ती का नाम भव्यचूड़ामणि रक्खा। हुल्लराज की उपाधि सम्यक्त्व चूड़ामणि थी। लेख का अन्तिम भाग बहुत घिस गया है। इसमें हुल्लय्य हेग्गड़े, सोवय्य आदि द्वारा नारसिंह देव को प्रार्थनापत्र देकर गोम्मटपुर के कुछ टेक्सों का दान चतुर्विंशति तीर्थंकर बस्ति के लिये कराने का उल्लेख है। अन्त में भानुकीर्त्ति मुनि का भी उल्लेख है।]

१३८ (३५१)

मठ के उत्तर की गोशाला में

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं॥ १॥
स्वस्ति श्री-वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने।
श्री-कोण्डकुन्दनामाभूच्चतुरङ्गुलचारणः॥ २॥

......क्त्या मुदा धारापूर्व्वकमुर्व्वरा-स्तुति-भृ............म
............श्री श्री

भव्याम्भोरुह-भास्कररसुरसरिन्नोद्दारवु ....
......कु...... .....नि: पुरात्थ्य-रत्नाकर: ।

सिद्धान्ताम्बुधि-वर्द्धनामृतकर: कन्दर्प्पशैलाशनि-
स्त्वोऽयं विश्रुत-भानुकीर्त्ति-मुनि.........व भूतले ॥४६॥

[इस लेख में भी होय्सळवंशी नारसिंह देव के वंश-परिचय के पश्चात् उनका चतुर्विंशति मन्दिर की वन्दना करने तथा हुल्ल द्वारा सवणेरु ग्राम का दान करने का उल्लेख है। इस लेख में हुल्ल के लघु भ्राता लक्ष्मण का व ग्रमर का भी नाम पाया है। नारसिंह देव ने उक्त बस्ती का नाम भव्यचूड़ामणि रक्खा। हुल्लराज की उपाधि सम्यक्त्व चूड़ामणि थी। लेख का अन्तिम भाग बहुत घिस गया है। इसमें हुल्लरस हेगड़े, खोक्कय आदि द्वारा नारसिंह देव को प्रार्थनापत्र देकर गोम्मटपुर के कुछ देसी का दान चतुर्विंशति तीर्थंकर बस्ति के लिये कराने का उल्लेख है। अन्त में भानुकीर्त्ति मुनि का भी उल्लेख है।]

१३८ (३५१)

मठ के उत्तर की गोशाला में

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
स्वस्ति श्री-वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।
श्री-कोण्डकुन्दनामाभूच्चमुलकुलाग्रयः ॥ २ ॥

......क्त्या मुदा धारापूर्व्वकमुर्व्वरा-स्तुति-भृ............म
............श्री श्री

भव्याम्भोरुह-भास्करस्सुरस रित्रोहारवु ....
......कृ...... .....नि: पुरातर्थ्य-रत्नाकर: ।

सिद्धान्ताम्बुधि-वर्द्धनामृतकर: कन्दर्प्पशैलाशनि-
स्सोऽयं विश्रुत-भानुकीर्त्ति-मुनि.........तं भूवले ॥४६॥

[इस लेख में भी होय्सलवंशी नारसिंह देव के वंश-परिचय के पश्चात् उनका चतुर्विंशति मन्दिर की वन्दना करने तथा हुल्ल द्वारा सवणेरु ग्राम का दान करने का उल्लेख है। इस लेख में हुल्ल के लघु भ्राता लक्ष्मण का व अमर का भी नाम आया है। नारसिंह देव ने उक्त बस्ती का नाम भव्यचूडामणि रक्खा। हुल्लराज की उपाधि सम्यक्त्व चूडामणि थी। लेख का अन्तिम भाग बहुत घिस गया है। इसमें हुल्लय्य हेग्गडे, बोकय्य आदि द्वारा नारसिंह देव के प्रार्थनापत्र देकर गोम्मटपुर के कुछ टेक्सों का दान चतुर्विंशति तीर्थंकर बस्ति के लिये कराने का उल्लेख है। अन्त में भानुकीर्त्ति मुनि का भी उल्लेख है।]

१३८ (३५१)

मठ के उत्तर की गोशाला में

(शक स० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
स्वस्ति श्री-वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।
श्री-कोण्डकुन्दनामाभूच्चतुरङ्गुलचारण: ॥ २ ॥

......क्त्या मुदा धारापूर्व्वकमुर्व्वरा-स्तुति-भृ..........म
...........श्री श्री
भव्याम्भोरुह-भास्करस्सुरस रित्रोद्धारवु ....
......कु...... .....निः पुरातर्ध्य-रत्नाकरः ।

सिद्धान्ताम्बुधि-वर्द्धनामृतकरः कन्दर्प्पशैलाशनि-
स्सोऽयं विश्रुत-भानुकीर्त्ति-मुनि........तं भूवन्ने ॥४६॥

[इस लेख में भी होय्सलवंशी नारसिंह देव के वंश-परिचय के पश्चात् उनका चतुर्विंशति मन्दिर की वन्दना करने तथा हुल्ल द्वारा सवणेरु ग्राम का दान करने का उल्लेख है। इस लेख में हुल्ल के लघु भ्राता लक्ष्मण का व अमर का भी नाम आया है। नारसिंह देव ने उक्त बस्ती का नाम भव्यचूडामणि रक्खा। हुल्लराज की उपाधि सम्यक्त्व चूडामणि थी। लेख का अन्तिम भाग बहुत घिस गया है। इसमें हुल्लय्य हेग्गडे, बोकय्य आदि द्वारा नारसिंह देव को प्रार्थनापत्र देकर गोम्मटपुर के कुछ टैक्सों का दान चतुर्विंशति तीर्थंकर बस्ति के लिये कराने का उल्लेख है। अन्त में भानुकीर्त्ति मुनि का भी उल्लेख है।]

१३८ (३५१)

मठ के उत्तर की गोशाला में

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
स्वस्ति श्री-वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।
श्री-कोण्डकुन्दनामाभून्मूलसङ्घाग्रणीर्गणी ॥ २ ॥

[illegible]

१४० (४५४)

मठ के अधिकार में एक ताम्र-पत्र पर का लेख

(शक सं० [illegible])

[illegible]

इन्तिवर गुरुगळप्प श्रीमद्दिवाकरणन्दि-सिद्धान्त-देवर ॥

वृत्त ॥ मा-मुनि-शीचेयं कुडे समम-तपो-निधियागि दान-चि-
न्तामणियागि सद्गुण-गणामणियागि दया-दम-क्षमा—
श्री-मुख-दर्पणमयागि जिनधार्मिक-चन्द्रिकेयागि सन्तत
श्रीमति गन्तियव्वेंगदहर्निशमुर्व्वरे कूर्त्तु कीर्त्तिसल्तु ॥ ८ ॥
श्रीमति गन्तियर्ज्जित-कषायिगळुमनपन्नलिन्वमि-
न्तीमहियोळ् पोगर्तेंगे नेमर्तेंगे नोन्तु समाधियिं अनन्-
तामियनिप्प पेंपिन जिनेन्द्रन पाद-पयोज-युग्ममं-
प्रेमदे चित्तदोळ् निलिसि देवनिकाय-विभूतिगेय्दिदळु ॥ ९ ॥
शक-वर्षं १०४१ नेय विलम्बि सम्वत्सरद फाल्गुण-
शुद्ध-पञ्चमी बुधवार-दन्दु [illegible] मनतानन-विधियिं श्रीमति
गन्तियर्मुडिपि [illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] माडूर्दे गन्तियर्मोदिदिदर् ॥ १० ॥
[illegible] सिद्धान्तदेव,
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

१४० (३५५)

मठ के अधिकार में एक ताम्र-पत्र पर [illegible] लेख

(शक सं० [illegible])

[illegible]

इन्तिवर गुरुगलप्प श्रीमद्दिवाकरणन्दि-सिद्धान्त-देवर ॥
वृत्त ॥ आ-मुनि-दीचेयं कुडे समग्र-तपो-निधियागि दान-चि-
न्तामणियागि सद्गुण-गणाभरणियागि दया-दम-चमा—
श्री-मुख-लच्मियागि विनयार्णव-चन्द्रिकेयागि सन्ततं
श्रीमति गन्तियन्नेगल्दकन्दियंलुर्व्वरे कूर्त्तु कीर्त्तिसलु ॥ ८ ॥
श्रीमति गन्तियर्ज्जित-कषायिगलुमतपङ्कलिन्दमि-
न्तीमहियोल् पेणर्त्तेंगे नेगर्त्तेंगे नोन्तु समाधियिं जगत्-
स्वामियेनिप्प पेम्पिन जिनेन्द्रन पाद-पयोज-युग्ममं
प्रेमदे चित्तदोल् निलिसि देवनिवास-विभूतिगंदिददल् ॥९॥
सक-वर्षं १०४१ नेय विलम्बि-सम्वत्सरद फाल्गुण-
शुद्ध-पञ्चमी-बुधवार-दन्दु मन्न्यसन-विधियिं श्रीमति
गन्तियर्मुडिपि देवलोकक्के सन्दर् ॥
मगणितमेने भाव्ह-तप
प्रगुणिते गुण-गण-विभूषणालङ्कृतेयि-
न्तगणित-निजगुरुगे-निसि-
धिगेयं माड्डुव्ये गन्तियर्म्मोंबलिदर् ॥ १० ॥
कदवं प्रायि गणद्गेलन् धनुरतामङ्गलि सिद्धान्तदोल्
परिणतं गुण-सेव्य-भव्य-जनदोल् निर्म्मेलमवररं मुनी-
श्वररोल् धीरते घोर-वीर-तपदोल् कयुणिम पेणमल् दिवा-
करणन्दि-यति पेम्पनें बडेदनो योगीन्द्र-चन्द्रङ्गला ॥११॥

[यह लेख इंगलिश्वर गण कुन्दकुन्दान्वय के दिवाकर नन्दि और उनकी शिष्या श्रीमती गन्ती का स्मारक है। दिवाकर नन्दि बड़े भारी योगी थे।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

७७१

मठ में

[illegible]

साधं हेमाद्रि-पार्श्वे च चारु-श्री-चैत्य-वेश्मना ।
द्वात्रिंशत्प्रमितानां श्री-सपर्य्योत्सव-हेतवे ॥ ९ ॥
जिनेन्द्रपञ्चकल्याण-श्री-रथोत्सव-सम्पदे ।
श्रीचारुकीर्त्ति-योगीन्द्र-मठ-रक्षण-कारणात् ॥१० ॥
आहाराभय-भैषज्यशास्त्र दानादि-सम्पदे ।
बेल्गुलाख्यमहाग्रामं विन्ध्य-चन्द्राद्रिभासुरं ॥ ११ ॥
भूदेवी-मङ्गलादर्श-कल्याण्याख्य-सरोऽन्वितं ।
जिनालयैस्तु ललितैर्म्मण्डितं गोपुरान्वितैः ॥ १२ ॥
स-तटाकं स-चाम्पेयं होस-हल्लिसमाह्वयं ।
ईशानदिक्स्थितं ग्रामं शाल्याद्युत्पत्तिभासुरं ॥ १३ ॥
उत्तनहल्लीति विख्यातं प्रतीच्यां ककुभि स्थितं ।
ग्रामं कब्बालुनामानं ग्रामं गोपाल-सक्रमं ॥ १४ ॥
पूर्व्वं पूर्वनार्य्य-मन्दत्तं कुमारे नृपतौ सति ।
इति ग्रामान् चतुस्सङ्ख्यान् ददौ भक्त्या स्वयं मुदा ॥१५ ॥
स्वस्ति श्री-दिल्लि-हेमाद्रि-सुधा-संगीत-नामसु ।
तथा श्वेतपुरक्षेमवेणु बेल्गुल स्थलिषु ॥ १६ ॥
संस्थानेषु लसल्लिङ्ग-सिंह-पीठ-विभासिनां ।
श्रीमतां चारुकीर्त्तीनां पण्डितानां मतां वरो ॥ १७ ॥
शासनीकृत्य तान् ग्रामानपैथाग्राग सादरं ।
एवः श्रीकृष्ण-भूपालः पालितारिल-मण्डलः ॥ १८ ॥

[यह मूल सनद का मठ के गुरुद्वारा किया हुआ [illegible] अनुवाद है । मूल शासन आगे नं० (१४०) [illegible] में दिया जाता है ।]

१५२ (३६२)

तावरेकेरे के उत्तर की ओर चट्टान पर

श्रीशकवर्ष १५६५ नय

श्रीमच्चारुकीर्त्ति-पण्डित यति श्रीभानुसंवत्सरे

मासे पुष्यचतुर्द्दशी तिथिवरे कृष्णे सुपक्षे महान् ।

मध्याह्ने वर सूतभे च करणे भार्गव्यवारे पुरे

[illegible] स्वर्ग-पुरं जगाम [illegible] ॥ [illegible] ॥

१५३ (३६४)

नगर से पूर्व की ओर [illegible] के रास्ते में एक शिला पर

(लगभग शक सं १०४२)

स्वस्ति [illegible] - [illegible] [illegible] [illegible] .... अधिक [illegible] किय.............. .. ..[illegible]........ ...[illegible]......

[इस लेख में [illegible]]

१४४ (३८४)

जिननाथपुर में अरेगल बस्ति के पूर्व्व की ओर

(लगभग शक सं० १०५७)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिन-शासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्य-वादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने-पटीयसे ॥२॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज परमेश्वर-परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमान माचन्द्रार्क्कतारम्बरं सल्लुत्तमिरे ॥

विनयादित्य-नृपालं
जन-विनुतं पोय्सलान्वयान्वयदिनप ।
मनु-मार्गदिनिसि नेगल्द
वन-निधि-परिवृत-समस्त-धात्री तलदोल् ॥ ३ ॥

तत्पुत्र ॥

एरेयङ्ग-पोय्सल न-
त्नोयदि रिपु-भूपर धुरदेड्यान् ।

तरिसन्दु गेल्दु बार-
केरवट्टागिर्दु सुपदे राज्यं गेल्दं ॥ ४ ॥

आनेन्दु एरग नुपालन
मृत्यु दृढहरि-मर्दनं सकल-परि-
पाल-नाथनर्थि-जनता-
कालीन धरा नगरद मल्लालनृपं ॥ ५ ॥

आतन तनय ॥

फेरा [illegible] मलयकुम
नकुल गलवहिस [illegible]
[illegible] कृति-नाथ नृ-
सिङ्ग आ-विष्णुवर्धनात्मजात ॥ ६ ॥

स्वस्ति [illegible] मूरारावती
पुरवराधीश्वर यादवकुल-[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

वृत्त ॥ [illegible]-नारायण मसन पुज आमारदमय [illegible]
[illegible] राजन [illegible]
[illegible] पोषिकल्पे [illegible]
[illegible] ॥ ७ ॥

१४४ (३८४)

जिननाथपुर में अरेगल बस्ति के पूर्व्व की ओर

(लगभग शक सं० १०५७)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिन-शासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्य-वादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने-पटीयसे ॥२॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज परमेश्वर-परम-भट्टारकं **सत्याश्रय**-कुल-तिलकं **चालुक्याभरणं** श्रीमत्**त्रिभुवनमल्ल-देवर** राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमान माचन्द्रार्क्कतारम्बर सल्लुत्तमिरे ॥

विनयादित्य-नृपालं
जन-विनुत **पोय्सला**म्बरान्वयदिनप ।
मनु-मार्ग्गनेनिसि नेगल्द
वन-निधि-परिवृत-समस्त-धात्री-तलदोल् ॥ ३ ॥

वत्तुव ॥

एरेयङ्ग-पोय्सलं त-
न्तेरेयट्टि विरोधि-भूपर धुरदेडेयोल् ।

हरिमन्दु गेन्दु वार-
फेरवद्रागिदुं सुगदं राज्यं गेन्दं ॥ ४ ॥
आनंगन्दु एरग नृपाग्रन
गुन्नु वृदहेरि-मर्दने मफम-धरि-
श्रान्तावनार्थि जनता-
कानीने धरग नगन्द वल्लालनृपं ॥ ५ ॥

आवन तम ॥

कोएं तु मलयतुम
नडुव [illegible] [illegible] द
[illegible] [illegible]
[illegible] श्री विष्णुवर्द्धनोर्व्वीपाल ॥ ६ ॥

स्वस्ति [illegible] द्वारावती पुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बर-द्युमणि [illegible] मलपरोल्गण्ड [illegible] तलकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-कोयतूर्-उच्चङ्गि-तलवनपुर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गुंडाद राज्य [illegible] पाद-पद्मोपजीवि [illegible]

वृत्त ॥ [illegible]-नागवर्म्मन [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] पोषिकर्त्थे [illegible]
[illegible] [illegible] ॥ ७ ॥

१४४ (३८४)

जिननाथपुर में अरेगल बस्ति के पूर्व की ओर

(लगभग शक सं० १०५७)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिन-शासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्य-वादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने-पटीयसे ॥२॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज परमेश्वर-परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमान माचन्द्रार्क्कतारम्बरं सल्लुत्तमिरे ॥

विनयादित्य-नृपालं
जन-विनुतं पोय्सलान्वयान्वयदिनप ।
मनु-मार्गनेनिसि नेगल्द
वन-निधि-परिवृत-समस्त-धात्री तलदोल् ॥ ३ ॥

वत्तुम ॥

एरेयङ्ग-महीपाल न-
न्दनरादिरे विजित-भूप पुरदरयोगत् ।

[illegible] क [illegible]

तस्मिन्नु [illegible] वार-
[illegible] सुयद [illegible] ॥ ४ ॥
[illegible] नृपाणन
[illegible] -
[illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥

[illegible] यादव [illegible] द्वारावती
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible] नागवर्मन [illegible]
[illegible]
[illegible] पांचिकर्षे [illegible]
[illegible]

१४४ (३८४)

जिननाथपुर में अरेगल बस्ति के पूर्व्व की ओर

(लगभग शक सं० १०५७)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिन-शासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्य-वादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने-पटीयसे ॥२॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज परमेश्वर-परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमान माचन्द्रार्क्कतारम्बर मल्लुत्तमिरे ॥

विनयादित्य-नृपालं
जन-विनुतं पोय्सलान्वयान्वयदिनपं ।
मनु-मार्ग्गनेनिसि नेगल्द
वन-निधि-परिवृत-समस्त-धात्री-तलदोल् ॥ ३ ॥

वस्तुत्र ॥

एरेयङ्ग-पोय्सलं त-
ल्तेरेयदि विरोधि-भूपरं धुरदेडेयोल् ।

यासदिनुदयिसिदं ससि-
भासुरवर-कीर्त्ति यॆचदण्डाधीशं ॥१२॥

वृत्त ॥ माडिसिदं जिनेन्द्रभवनङ्गलना कॆरेयादि-तीर्त्थदलु
रूढियिनेलॆ-वॆत्तेलॆव बेलॊगुलदलु वस्तु-चित्र-भित्तियिं ।
नोडिदरं मनङ्गॊलिपुवेम्बिनमेच चमूपनर्त्थि कै-
गूडे धरित्रि कॊण्डु कॊनॆदाडे जसम्बलिदाडॆ लीलॆयिं ॥१३॥

मन्तु दान-विनोददिं जिनधर्म्मोभ्युदय-प्रमोददिनुमागि पलकाल सुखदलिद्दु बलिक सन्न्यासन-विधियिं शरीरमं बिट्टु सुर-लोक निवासियादनित्त ॥

वृत्त ॥ मलवरयुद्धव-देश-कण्टकरलाटन्दोर्त्तिवॆङ्गोण्डुदो-
र्व्वलदिं कादुरनोत्ति वैरि नृपरं पॆशट्टि तुलुं दोविम्नुत्तन्य-मं-
डलमं तत्तरिगॆयं माडि जगदोलु पोम्पो बानिन्तुगु-
न्दलॆयादं कलि गङ्गनप्रतनयं श्री बोप्प-दण्डाधिपं ॥१४॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महाप्रचण्डदण्डनायक वैरिभय-दायक प्रोढ-प्रताप सेमामजवलह । दयवस्सराजं । कान्ता-मनोज । गोत्र-पवित्र । बुधजन-मित्रं । श्रीमतु बोप्पदेव-दण्डनायकं । तम्मग्गदनप्प शचि-राज दण्ड-नायकङ्गे परोक्ष-विनयं निसिधिगॆयं निलिसि भावन माडिसिद बसदिगॆ । दण्ड-स्फुटितकराहार-दानकं । गङ्गसमुद्र-दलु १० खण्डुग गद्देयुं हूविन-तोटमुं बसदिय मूडण किरु-गॆरॆयुं । बॆदल-करॆय पॆर्द्दलॆयुं तम्म गुरुगलप्प श्रीमूलसङ्घद देसिग-गदद पुस्तक

मन्तु ॥

मददार्प्पुमति सत्यमाण्पु पत्तमागुं सौचमौदार्य्यम-
ण्पु दिटं तन्नजे निन्दुवेन्ध गुणसंघावङ्गलं तालिदत्तो-
फद वन्दि-प्रकरङ्गलं तविपि कः फेनार्दियेन्दिनु चा-
गद पेम्पिन्दमे गङ्ग-राजनेसेदं विश्वम्भराभागदोळ् ॥ ८ ॥

तत्तकाडं सेनदन्ते कोङ्गनोलकॊण्डायं...यं तुळिदो-
व्वेळदि चेङ्गिरियं कलिव नरसिङ्गङ्गन्तकानासमं ।
निलयं माडि निमिक्चिवं विष्णु-नृपनान्यामार्गदि गङ्गम-
ण्डलमं कोण्डनराति-नृप-मृगसिङ्गं गङ्ग-चण्डाधिपं ॥ ९ ॥

आतन-पिरियण्ण ॥

व्यापित-दिग्वलय-यश-
श्री-पतिविनत-विनोद-पति धनपति वि-
घापतियेनिप यम्म-ब-
मूपति जिनपतिपदाब्जभृङ्गनतिन्धं ॥ १० ॥

आतन सति ॥

परम-श्री-जिननाथ
गुरुगलु श्री-भानुकीर्ति देवर् अवरी-
कन्तेनिप सकल देव
पुरुषननु यागपद्मे पडेद वागे ॥

कन्द ॥ भामाजन पूज्यनान वि-
श्रीमद कवि सकल-समय-सेव्यं ...

धामदिनुदयिसिदं ससि-
भासुरवर-कीर्त्ति येचदण्डाधीशं ॥१२॥

वृत्त ॥ माडिसिदं जिनेन्द्रभवनङ्गळना कोरयादि-तीर्त्थदलु
रूढियिनेल्ले-येचेसेर बेल्गोळदलु पत्तु-चित्र-भित्तियिं ।
नोडिदरं मनङ्गोलिपुवेंम्बिनमेच-चमूपनर्थि कै-
गूडे धरित्रि कोण्डु कोनेदाडे जमग्गळिदाडे लोळेयिं ॥१३॥

अन्तु दान-विनोददलुं जिनधर्म्माभ्युदय-प्रमोददनुपागि पलकाल
सुखदलिर्दु बलिक सन्यासन-विधियिं शरीरमं बिट्टु सुर-लोक
निवासियादनित्त ॥

वृत्त ॥ मलवल्लुदव-देश-कण्टकरनाटन्दोत्तिरेङ्गोण्डुदो-
र्व्वलदिं कोङ्गरनोसि वैरि नृपरं पेंमट्टि तुळ्देसिवुत्तन्य-मं-
डलमं वत्तविगेयं माडि जनदोलु पोळ्के वानिन्तुगु-
न्दलेयादं फनि गङ्गनमतनयं श्री बोप्प-दण्डाधिपं ॥१४॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति
महाप्रचण्डदण्डनायक वैरिभय-दायक द्रोह-घरट्ट संग्रामजत्तळट्ट ।
दयचट्टघराजं । कान्ता-मनोज । गोत्र-पवित्र । बुधजन-मित्र ।
श्रीमतु बोप्पदेव-दण्डनायकं । तम्मण्णनप्प एचि-राज दण्ड-
नायकङ्गे परोक्ष-विनयं निसिधिगेय निलिसि शासन माडिसिद
पत्तदिगं । खण्ड-स्फुटितकवाहार-दानकं । गङ्गसमुद्र-दलु १०
खण्डुग गदेयुं हूविन-तोटमुं बसदिय मूडण किरु-गेरेयुं । बेकन-
केरेय केरेयुं तम्म गुरुगळप्प श्रीमूलसङ्घद देसिग-गणद पुस्तक

[illegible] श्रीमनु शुभचन्द्रसिद्धान्त-देवर-शिष्यरप्प माघ (व) चन्द्र देवर्गे धारा-पूर्वकं माडिकोट्टु दत्ति ॥

श्लोक—[illegible] परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टिर्वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमिः ॥१५॥

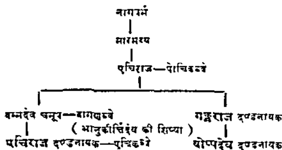
[illegible]—[illegible]—
[illegible]-[illegible]-
[illegible] [illegible]
[illegible] एचिकब्बे क... [illegible] ॥ १६ ॥

[illegible]-
[illegible] .
[illegible]
[illegible] ॥ १७ ॥

[illegible] सुभ- चन्द्र [illegible] एचिकब्बेगु [illegible] [illegible] [illegible] ॥

[illegible]

लिये गङ्ग समुद्र की कुछ भूमि का दान शुभचन्द्र सिद्धान्त देव के शिष्य माधवचन्द्र देव को किया। पचिराज की भार्या पुचिकब्बे व उसकी भाभी बागणब्बे ने यह लेख लिखाया। पुचिकब्बे शुभचन्द्र देव की शिष्या थी। लेख में गङ्गराज की वंशावली इस प्रकार पाई जाती है—



श्रवण बेल्गोल और आसपास के ग्रामों के अवशिष्ट लेख

अवशिष्ट शिलालेखों का निम्न प्रकार समय अनुमान किया जाता है

शक सवत् की छठवीं शताब्दि	१५२ १८९.
शक सवत् की सातवीं शताब्दि	१५३, १५७, १५८, १५९ १६०, १६१, १६२, १६५, १९०, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, २००, २०२, २०३, २०५, २०६, २०७ २०८, २१०, २११, २१२, २१३ २१४, २१५ २१७, २१८, २१९, २२०, २८४।
शक सवत् की आठवीं शताब्दि	१४७, १४९, १५४, १५५, १७५, १९१, २४३, २४६.
शक संवत् की नवमी शताब्दि	१४४, १४९, १५६, १७१, १८०, १८५, १८६, २०१, २०९, २२१, २२७, २३५, २३६, २३७, २४४, २५०, २८२, २८३, २९४, २९७, २९८ ३०७, ३१५, ४०९, ४१०।

शक संवत् की दसवीं शताब्दि	१४८, १५०, १५१, १६३, १६५, १६६, १६७, १७२, १७३, १७४, १७७, १७८, १८३, २१६, २२३, २२८, २३६, २५४, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६६, २७२, २७३, २७४, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८५, २८६, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९५, २९६, २९९, ३०० ३०१, ३०२ ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ४६६.
शक संवत् की ग्यारहवीं शताब्दि	१६८, १६९, १७०, १७९, १८१, १८२, १८४, १८८, १९९ २०४, २२२, २२४, २२५, २३०, २३१, २४०, २४१, २४२ २४६, २६५, २६६, २६७, २७१, २७५, २७६, ३१६, ३५१, ३६०, ३६८, ३६९, ४४५ ४४६, ४४७, ४५४, ४५९, ४६० ४७३, ४७८, ४८८, ४८९,
शक संवत् की बारहवीं शताब्दि	१७६, १८०, २२६, २३२, २३३, २३४, २३८, २४३, २४७, २४५, २४९, २५१, २८३, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३६१, ४०१, ४०८, ४११, ४२६, ४३१, ४६१, ४३६, ४७१, ४७५, ४७६, ४८७, ४९० ।

शक संवत् की तेरहवीं शताब्दि	२४८, २५०, २५२, २९८, ३३०, ४०६, ४१३, ४१४, ४१८, ४२१, ४३०, ४३२, ४४२, ४४३, ४६२, ४६७ ४७७, ४८१, ४८५।
शक संवत् की चौदहवीं शताब्दि	२४७, ३४६ ३५७ ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ४१० ४२२ ४२३, ४२४, ४२५, ४२८, ४२९।
शक संवत् की पन्द्रहवीं शताब्दि	३२१ ३२२, ३५२, ३५३, ३५४ ३५५, ४०२, ४८३, ४८४।
शक संवत् की सोलहवीं शताब्दि	३३४, ३३५, ३५०, ३०५ ३०६, ३०७, ३८१, ३९८, ३९९, ४०२, ४०३, ४०४, ४१२, ४१६, ४१९, ४४८, ४४९ ४५०, ४५१ ४५२ ४५३ ४६३ ४६४, ४६५ ४८२,
शक संवत् की सत्तरहवीं शताब्दि	३४५, ३४८, ३६७, ३०८ ३०९, ३८० ३९१, ३९४, ३९५, ४२७, ४४४।
शक संवत् की अठारहवीं शताब्दि	४१०, ४३८, ४३९, ४४०।

शक संवत् की दसवीं शताब्दि

१४८, १५०, १५१, १६३, १६५, १६६, १६
१७२, १७३, १७४, १७७, १७८, १८३, २१
२२३, २२८, २३६, २५४, २५७, २५८, २५
२६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६६, २७
२७३, २७४, २७७, २७८, २७९, २८०, २८
२८५, २८६, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२
२९३, २९५, २९६, २९९, ३०० ३०१, ३०२
३०३, ३०४ ३०५, ३०६, ३०८, ३०९, ३१०
३११, ३१२, ३१३, ३१४, ४६६.

शक संवत् की ग्यारहवीं शताब्दि

१६८, १६९, १७० १७९, १८१, १८२, १८४,
१८८, १९९ २०४, २२२, २२४, २२५, २३०,
२३१, २४०, २४१, २४२ २४६, २५५, २६६,
२६७, २७१, २०५, २०६, ३१६, ३२१, ३३०,
३६८, ३६९, ४४५ ४४६, ४४०, ४५४, ४५१,
४६० ४०३, ४०८, ४८८, ४८९,

शक संवत् की बारहवीं शताब्दि

१०६, १८०, २२६, २३२, २३३, २३४, २३८,
२४३, २४३, २४५, २४९, २५१, २८३, ३१०,
३१८, ३१९, ३२०, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६,
३२०, ३२८, ३३१, ४००, ४०८, ४११, ४२६
४३१, ४६१, ४१६, ४०१ ४०५, ४०६, ४८०,
४६० ।

शक संवत् की तेरहवीं शताब्दि	२४८, २५०, २५२, २६८, ३३०, ४०६, ४१३, ४१५, ४१८, ४२१, ४३०, ४३२, ४४२, ४४३, ४६२, ४६७, ४७७, ४८१, ४८५।
शक संवत् की चौदहवीं शताब्दि	२४७, ३४६ ३४७, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ४१० ४२२ ४२३, ४२४, ४२५, ४२८, ४२९।
शक संवत् की पन्द्रहवीं शताब्दि	३२१ ३२२, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ४०२, ४८३, ४८४।
शक संवत् की सोलहवीं शताब्दि	३३४, ३३५, ३६०, ३०५ ३०६, ३०७, ३८१, ३९८, ३९९, ४०२, ४०३, ४०४, ४१२, ४१६, ४१९, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२ ४५३, ४६३, ४६४, ४६५, ४८२,
शक संवत् की सत्तरहवीं शताब्दि	३४५, ३४८, ३६७, ३०८ ३०९, ३८० ३९१, ३९४, ३९५, ४२०, ४४४।
शक संवत् की अठारहवीं शताब्दि	४१०, ४३८, ४३९, ४४०।

शक संवत् की दसवीं शताब्दि

१४८, १५०, १५१, १६३, १६५, १६६, १६
१७२, १७३, १७४, १७७, १७८, १८६, २१
२२३, २२८, २३९, २४३, २४७, २४८, २५
२६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६६, २७
२७३, २७४, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१
२८५, २८६, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२
२९३, २९५, २९६, २९९, ३०० ३०१, ३०२
३०३, ३०४ ३०५, ३०६, ३०८, ३०९, ३१०
३११, ३१२, ३१३, ३१४, ४६९,

शक संवत् की ग्यारहवीं शताब्दि

१६८, १६९, १७०, १७९, १८१, १८८, १८४,
१८८, १९९, २०४, २२२, २२४, २२५, २३०,
२३१, २४०, २४१, २४२ २४६, २६५, २६६,
२६७, २७१, २७५, २७६, ३१६, ३५१, ३६०,
३६८, ३६९, ४४५ ४४६, ४४०, ४५४, ४५९,
४६० ४७३, ४७८, ४८८, ४८९,

शक संवत् की बारहवीं शताब्दि

१७६, १८०, २२६, २३२, २३३, २३४, २३८,
२४३, २४४, २४५, २४९, २५१, २८३, ३१७,
३१८, ३१९, ३२०, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६,
३२७, ३२८, ३६१, ४०१, ४०८, ४११, ४२६
४३१, ४६१, ४६६, ४७१, ४७५, ४७६, ४८०,
४९० ।

शक संवत् की तेरहवीं शताब्दि	२४८, २५०, २५२, २६८, ३३०, ४०६, ४१३, ४१४ ४१८, ४२१, ४३०, ४१२, ४४२, ४४३, ४९२, ४९७ ४७७, ४८१, ४८५ ।
शक संवत् की चौदहवीं शताब्दि	२४७, ३४६ ३४७ ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ४२० ४२२ ४२३, ४२४, ४२५, ४२८, ४२९ ।
शक संवत् की पन्द्रहवीं शताब्दि	३२१ ३२२ ३४२ ३४३ ३४४, ३४५ ४०२, ४८३, ४८४ ।
शक संवत् की सोलहवीं शताब्दि	३३४, ३३५, ३७०, ३०५ ३०६, ३००, ३८१, ३८८, ३९९, ४०२, ४०३, ४०४, ४१२, ४१६, ४१९, ४४८, ४४९ ४५०, ४५१, ४५२ ४५३, ४६३ ४६४, ४६५ ४८२,
शक संवत् की सत्तरहवीं शताब्दि	३४५, ३४८, ३६७, ३०८ ३०९, ३८० ३९९, ३९४, ३९५ ४२७, ४४४ ।
शक संवत् की अठारहवीं शताब्दि	४१०, ४३८, ४३९, ४४० ।

शक संवत् की दसवीं शताब्दि

१४८, १५०, १५१, १६३, १६५, १६६, १
१७२, १७३, १७४, १७७, १७८, १८६, २
२२३, २२८, २२९, २५४, २५७, २५८, २
२६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६९, २
२७३, २७४, २७७, २७८, २७९, २८०, २८
२८५, २८६, २८८, २८९, २९०, २९१, २९
२९३, २९५, २९६, २९९, ३०० ३०१, ३०
३०३, ३०४ ३०५, ३०६, ३०८, ३०९, ३१०
३११, ३१२, ३१३, ३१४, ४६९,

शक संवत् की ग्यारहवीं शताब्दि

१६८, १६९, १७० १७९, १८१, १८२, १८
१८८, १९९, २०४, २२२, २२४, २२५, २३०
२३१, २४०, २४१, २४२ २४६, २६५, २६६
२६७, २७१, २७५, २७६, ३१६, ३५१, ३६०,
३६८, ३६९, ४४५ ४४६, ४४७, ४५४, ४५९,
४६० ४७३, ४७८, ४८८, ४८९,

शक संवत् की बारहवीं शताब्दि

१७६, १८७, २२६, २३२, २३३, २३४, २३८,
२४३, २४४, २४५, २४९, २५१, २८३, ३१७
३१८, ३१९, ३२०, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६,
३२७, ३२८, ३६१, ४०१, ४०८, ४११, ४२६
४३१, ४६१, ४६६, ४७१, ४०५, ४०६, ४८७,
४९० ।

शक संवत् की तेरहवीं शताब्दि — २४८, २५०, २५२, २६८, ३३०, ४०६, ४१३, ४१४, ४१८, ४२१, ४३०, ४३२, ४४२, ४४३, ४६२, ४६७, ४७७, ४८१, ४८५।

शक संवत् की चौदहवीं शताब्दि — २४७, ३५६ ३५७, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ४१० ४२२ ४२३, ४२४, ४२५, ४२८, ४२६।

शक संवत् की पन्द्रहवीं शताब्दि — ३२१ ३२२ ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ४०२, ४८३, ४८४।

शक संवत् की सोलहवीं शताब्दि — ३३४, ३३५, ३७०, ३७५ ३७६, ३७७, ३८१, ३६८, ३६६, ४०२, ४०३, ४०४, ४१२, ४१६, ४१६, ४४८, ४४६, ४५०, ४५१, ४५२ ४५३, ४६३ ४६४, ४६५ ४८२,

शक संवत् की सत्तरहवीं शताब्दि — ३४५, ३४८, ३६७, ३७८, ३७६, ३८० ३६१, ३६४, ३६५, ४२७, ४४४।

शक संवत् की अठारहवीं शताब्दि — ४१०, ४३८, ४३६, ४४०।

शक संवत् की दसवीं शताब्दि	१४८, १५०, १५१, १६३, १६५, १६६, १६७, १७२, १७३, १७४, १७७, १७८, १८२, २१६, २२३, २२८, २३९, २५४, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६९, २७२, २७३, २७४, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८५, २८६, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९५, २९६, २९९, ३०० ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ४६९.
शक संवत् की ग्यारहवीं शताब्दि	१६८, १६९, १७०, १७९, १८१, १८२, १८४, १८८, १९९, २०४, २२२, २२४, २२५, २३०, २३१, २४०, २४१, २४२, २४६, २६५, २६६, २६७, २७१, २७५, २७६, ३१६, ३५१, ३६०, ३६८, ३६९, ४४५, ४४६, ४४७, ४५४, ४५९, ४६० ४७३, ४७८, ४८८, ४८९,
शक संवत् की बारहवीं शताब्दि	१७६, १८०, २२६, २३२, २३३, २३४, २३८, २४३, २४३, २४५, २४९, २५१, २८३, ३१०, ३१८, ३१९, ३२०, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३६१, ४०१, ४०८, ४११, ४२६, ४३१, ४६१, ४६६, ४७१, ४७५, ४७६, ४८०, ४९० ।

शक संवत् की तेरहवीं शताब्दि	२४८, २५०, २५२, २६८, ३३०, ४०६, ४१३, ४१५, ४१८, ४२१, ४३०, ४३२, ४४२, ४४३, ४६२, ४६७ ४७७, ४८१, ४८५।
शक संवत् की चौदहवीं शताब्दि	२४७, ३५६, ३५७, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ४२० ४२२ ४२३, ४२४, ४२५, ४२८, ४२९।
शक संवत् की पन्द्रहवीं शताब्दि	२२१ ३२२ ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ४०२, ४८३, ४८४।
शक संवत् की सोलहवीं शताब्दि	३३४, ३३५, ३६०, ३०५ ३०६, ३०७, ३८१, ३९८, ३९९, ४०२, ४०३, ४०४, ४१२, ४१६, ४१९, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२ ४५३, ४६३, ४६४, ४६५ ४८२,
शक संवत् की सत्तरहवीं शताब्दि	३४५, ३४८, ३६७, ३०८, ३०९, ३८० ३९१, ३९४, ३९५, ४२७, ४४४।
शक संवत् की अठारहवीं शताब्दि	४१०, ४३८, ४३९, ४४०।

चन्द्रगिरि पर्वत के अवशिष्ट लेख

पार्श्वनाथवस्ति के दक्षिण की ओर चट्टान पर

१४५ (३) श्रीदेवर पद। वमनि... ..

१४६ (४) मल्लिसेन भट्टारर गुरुं चारेङ्गयं तीर्थमं वन्दिसिदं।

१४७ (१०) श्रीधरन्

१४८ (४०८) नमोऽस्तु   १४९ (४०९) श्रीरच

१५० (४१०) सिन्दय्य   १५१ (४११)......गिङ्ग...

कुन्द गङ्गर पण्ट...गद नण्ट

१५२ (११)

.......................क्षितावनिपतिः।
आचार्य्य......श्रीमान्शिष्यानेक-परिमदः ॥ १ ॥
......विलासस्य निकरोण......जनि
पत्रापजविशेषस्य गुणदेवी च कल्पिता ॥ २ ॥
दीपैर्द्धपैरच गन्धैश्च साकरोदधिम् . सान्।
तत्र दिण्डिक राजोऽपि मात्रा सन्निहितोऽभवत् ॥ ३ ॥
परित्यज्य गणं सर्व्वं चातुर्व्वर्ण्यं विशेषितं।
आहारादिशरीरं च कटवप्र-गिराविह ॥ ४ ॥
आचार्य्योऽरिष्टनेमीशः शुक्लध्यानेन धार्य्यं
समाहदय नवति रुद्र सिद्ध-विद्याधरार्चितः ॥ ५ ॥

१५३ (१३)

राग द्वेष-तमो-मान-कपरगवरशुद्धात्म सेयोऽरुक्र्
येगूरा परम-प्रभाव-रिषिवर्द्दसर्व्वज्ञ-भट्टारकर्
...गादेव... ..न ..शिव . न्वरु... ..अमरोल्
श्री कोण्डामल्ल-पुत्र.........र् न्यर्गामसानेरिदार्

[रागद्वेष रूपी अन्धकार से विमुक्त, शुद्धात्म येगूर वासी परम-प्रभावी ऋषि, सर्वज्ञ भट्टारक... .. . . .शिखर पर...... ....अमल दृष्टों से आच्छादित .. ..स्वर्ग के अप्रमाण का आरोहण किया ।]

१५४ (१४) श्ररिष्टनेमिदेवर् कालप्पु-तीर्थदोलु मुत्त-काल्गम पडेदु मु...

१५५ (१५) स्वस्ति श्री महावीर...माल्दुर तम्मडिगल्ल मन्यसन दिन इन्तम्मख्या निसिधिगे ।

१५६ (१६)......पाइपमनून......स-प्रव......

१५७ (१८) स्वस्ति श्री भण्टारक पिट्टगपानदा तम्म-डिगल्ल शिष्यर् किन्देरे-यग निसिधिगे ।

१५८ (२१)

श्रविय-भागदामदुरे उय्य् इनिवाव...शापदे पावु मुदिरेन
अवणबन्दर् पन्तु एनलु् वरग......ग ई मदा परुवदुल्
अक्षय-कीर्त्ति तुन्वरुद वार्द्धिय मेल् मदु नोन्तु भक्तिमिम्

भक्ति-मागके रम्य-सुरलोक-सुकक्के भागि भा......
पल्लवाचारि-लिकि (खि) तम्।

[दक्षिण भाग की मदुरा (नगरी) से आकर और शाप के कारण सर्प द्वारा सताये जाकर, परीक्षकों के विचार करते ही करते, अक्षयकीर्त्ति भक्तिपूर्वक इस शिखर पर व्रतों का पालन करते हुए दुःख-सागर को पार कर, रमणीक सुरलोक-सुख के भागी हुए।

पल्लवाचारि लिखित]

१५८ (२२)

श्री। बाला मेल् सिखि-मेळे सर्प्पद महा-दन्वामदुल् सल्ववोल्
मालाम्बाल-वर्पमदिन्तु नडदें नूरेण्टु-संवत्सरं
केळोय् पिन कटवप्र-शैलमडर्द् एतम्मा कालन्तूरनं
वाले पेर्गोरवं समाधि-नेरेदोभो-तेदिददीर् स्सिद्धियान्॥

[इस लेख में कालन्तूर के किसी मुनि के कटवप्र पर एक सौ आठ वर्ष तक तप के पश्चात् समाधिमरण की सूचना है।]

१६० (२३)

नम स्वस्ति।

...दे शास्त्रविदो येन गुणदेवाख्य-सूरिणे
कल्याण पर्व्वत-विख्याते...नम...वमाग...
...द्वादश-वर्षा नुग्रा......
सम्यगाराधनं कृत्वा स्वर्गालय............

[शास्त्रवेदी गुणदेव सूरि को नमस्कार, जिन्होंने कळवाप् पर्वत के शिखर पर द्वादश व्रत धारण कर और सल्लेखना का पालन कर स्वर्गलाभ किया]

१६१ (२७)

श्री । मासेनर्प्परम-प्रभाव-रिषियर् क्कुलवप्पिना बेट्टदुल्
श्री-सङ्गङ्गळ पेल्द सिद्ध-समयन्तप्पादे नोन्तिम्बिनिन्
प्रासादान्तरमान्विचित्र-कनक-प्रज्वल्यदिन्मिश्कुदान्
सासिर्व्वर्व्वर-पूजे-वन्दुये अवर् स्वर्ग्गाग्रमानेरिदार् ॥

[इस लेख में परम ऋषि 'मासेन' के समाधि मरण की सूचना है ।]

१६२ (३६) श्री चिकुरापरविय गुरवर सिष्यर् सर्वणन्दि अवन् श्री वसुदेवन् ।

१६३ (३७) श्रीमद् गङ्गान्न ।

१६४ (३८) वीरराशि । १६५ (३९) श्रीघावुण्डय्य ।

१६६ (४०) श्रीकविग्न । १६७ (४१) श्रीमद् ग्रङ्कुवोय ।

१६८ (४२) श्रीविदेपय्य । १६९ (४३) श्रीमद् ग्रकलङ्क पण्डितर् ।

१७० (४४) श्री नुप ।

१७१ (४५)...खम्भकुळान्तक वीरर बण्ड परिकरन किङ्क ।

१७२ (४६) स्वस्ति श्री स्वणनन काळेय पण्डित कल्वप्प तीर्थद वन्दि...

१७३ (४७) का...य भिज्जंग रायन कादगलै वन्ति
देवर वन्तिसिद ।

१७४ (४८) श्री दवणन्दि वलरर गुड्डु आसु...वन्दु तीर्थ
वन्दिसिद ।

१७५ (५०) अलस कुमारो महामुनि ।

१७६ (५१) श्री कण्टय्य ।

१७७ (५२) श्रीवर्म्म चन्द्रगीतय्य देवर वन्दिसिद

१७८ (५३) श्री इमकय्य । १७९ (५४) श्री विधिरयम्म ।

१८० (५५) श्री नागणन्दि पित्तय्य देवर वन्दिसिदर् ।

१८१ (५६) स्वस्ति समधिगतपञ्चमहासब्द महासामन्त
ममगपय

१८२ (५७) मारमन्द्र केय कोट...गणवेय वीर कोट ।

१८३ (५८) मालव अमावर ।

शान्तीश्वर बस्ति से नैऋत की ओर

१८४ (६०) श्री परेकरमाकुल-बलर-पट्ट सुल वण्टरसुल ।

१८५ (६२) स्वस्ति श्री तेयङ्गुडि......न्दि-भटारर सिष्य
.. गर-भटारर सिष्य क...र...मि-भटार
मवर सिष्यर् पट्टदेया .....सि-भटार कुमा
...न सिष्य न...सले मुनिहगने मनिद पमुमम्म
निसिदिगे ।

पार्श्वनाथ बस्ति में एक टूटे पाषाण पर

१८६ (६८) श्रीमन् वेट्टदवी...न मगल् वैजय्वे स्वप्नु-
तीर्थदोमयु नोन्तु सन्यसनं ।

१८७ (७१)

चन्द्रगुप्त बस्ति में पार्श्वनाथ स्वामी के सन्मुख एक छोटी मूर्ति के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० ११००)

(अग्रभाग)

श्रीमद्राजकिरीटकोटिघटित पादपद्मद्वयो
देवो जैन...रविन्द-दिनकृद्वागदेवतावल्लभ ।
...वा...स-परमन्वितो यतिपति... . प-रत्नाकरः
सोऽयं निर्जित ..तो विजयतां श्रीभानुकीर्त्तिर्म्भुवि॥१॥
श्री-बालचन्द्र मुनिपादपयाज... .. .. ..
जैनागमाम्बुनिधिवर्द्धन-पू...... .... हः।
दुष्टाम्बुराशि-हर-हा

(पृष्ठभाग)

.. मत्रकिल (बह्यु) कैवल्यमेय्दल......ल्पमिनित नर्मिसिद' विश्रवम...लिव मर्हिमेयि बर्द्धमा.. जिन-पतिगे बर्द्धमान-मुनो ···गुर नदिय सार हा···र सुर दन्तिय रजतगिरिय चन्द्र

बेल्प पिरिदु वर...र्द्धमानर परमवपोध...रकीर्ति ...मुर्ब अगङोलु ॥

···च्छिप्यक ॥

तोरयांधीश्वर-त्र

[इस लेख में भानुकीर्त्ति, बालचन्द्रमुनि और वर्द्धमान मुनि का उल्लेख है। अधूरा होने के कारण लेख का प्रयोजन ज्ञात नहीं हो सका।]

[पृष्ठभाग का प्रथम पद्य पम्प रामायण आश्वास १ पद्य १२ से मिलता है।]

१८८ (७२)

चन्द्रगुप्त वस्ति में पार्श्वनाथ जिनालय के क्षेत्रपाल के पादपीठ पर

(लगभग शक सं० १०६७)

....

...जनिष्ट.........रित्र...रखिला......माला-शिलीमुख-विराजित-पा...... ॥ १ ॥

तच्छिष्यो गुण··· त यतिश्चारित्र-चक्रेश्वरः
तर्क-व्या···दि-शास्त्र-निपु···साहित्य-विद्या-नि···
मिथ्या-वादि-मदान्ध-सिन्धुर-घटा-सङ्.........रवो
भव्याम्भोज (यहाँ पाषाण टूट गया है)......॥२॥

(उसी पीठ के बायें पृष्ठ पर)

···जिनं **शुभकीर्त्ति-देव**-विदुषा विद्वेषि-भाषा-विष-
ज्वाला-जाकुलिकेन जिह्मित-मतिर्व्वादी वराकस्त्वयं ॥३॥
घन-दर्प्पोद्धद बौद्ध-चितिधर-पवियी वन्दनी वन्दनी व-
न्दने सन् **नैय्यायिको**प्रचिमिर-तरणियी वन्दनी-वन्दनी व-
न्दने सन् **मीमांसके**ाद्रक्करि-करिरिपु यीव न्दनी वन्दनी व-
न्दनं पो पो वादि-पोगेन्दुलिवुदु **शुभकीर्त्ति**-कीर्त्ति-
प्रघोषं ॥ ४ ॥

विवधोत्तियल्त्वजं पशुपति शार्ङ्गियेनिप्प मूवरुं शुभकीर्त्ति-
व्रति-सन्निधियोलु नामोचित-चरितरे वोडर्इदिवर-वादिग-
ळलवे ॥ ५ ॥

सिङ्गद सरमं केल्द मदङ्गजदन्त्वलुकलळदे सभेयोलु
पोङ्गि शुभकीर्त्ति-मुनिपनोलङ्गल नुडियल्के वादिगलं-
ण्टेल्देये ।

पो···ल्वुदु वादि वृथायास विवुधोपहासमनुवानोप-
न्यास निश्री···वासं मन्दपुदे वादि-वज्राङ्कुशनोल् ॥६॥
सत्सधर्म्मिगल् ॥

[यह लेख टूटा हुआ है पर इसके सब पद्य अन्य शिलालेखों से पूरे किये जा सकते हैं। इसके चारों पद्य शिलालेख नं० ४० (१४०) के पद्य ६,७,१८,११,४० और ४२ के समान हैं।]

१८९ (७१)

कत्तले बस्ति के सन्मुख चट्टान पर।

(लगभग शक सं० ५७२)

ममास्तुपान्य......स कर्ने......गद्गुरुः।
ख्याता वृषभनन्दीति तपो-ज्ञानाब्धि-पारगः ॥ १ ॥
अन्तेवासी च तस्यासीदुपवास-परो गुरुः।
विद्या-सलिल-निर्धूत-शेमुषीको जितेन्द्रियः ॥ २ ॥
...म...त तपो.........तपसैश्वर्य्यग-प्रभावोऽस्य तु
वन्द्योऽनाद्वित-कामनो निरुपमः ख्यात्रा स...ना...।
दृष्टा ज्ञान-विलोचनेन महता स्वायुष्यमेवं पुनः
पृ.........गृहं गुरुरसौ यो...स्थित...वशः ॥ ३ ॥
......कटवप्र-शैल शिखरे सन्यस्य शास्त्र क्रमात्।
ध्यान......दा...मणि-मुखे प्रक्षिप्य कर्मेन्धनं।
......दिव्य-सुखं प्रशस्तक-धिया सम्प्राप्य सर्व्वेश्वर-
ज्ञानं...न्तमिदं किमत्र तपसा सर्व्वं सुखं प्राप्यते ॥ ४ ॥

१९० (७७)

(लगभग शक सं० ६२२)

सिद्धम्। श्री।
गति-चेष्टा-विरहं शुभाङ्गदे घनम्मारिद्दमान्विट्टुवल्
यतियं पेल्द विधानदिन्दु तोरदे कल्बप्पिना शैलदुल्

र्घिवार्दर्प्पदे नोन्त निश्चित-यशा ३ायुः-प्रमा...यक्
रिवित-दहा कमलोपमङ्ग सुभमुम् ३ालर्लोकदि निश्चितम् ॥

[इस लेख में किसी के समाधिमरण की सूचना है ।]

१६१ (७८) सहदेव मादि ।

१६२ (७६)

(लगभग शक सं० ६७२)

सुन्दरपेम्पदुमतपदोगिद........वार्डदनित्यमेन्दु पिन्
यन्दनुरागविन्दु वन्नगो...ण्डु महोत्सवदेरि शैलमान् ।
सुन्दरि सौरवदार्य्यदेरदे...दु विमानमोडिरि चित्तदिम्
इन्द्र समानमप्प सुख.. ण्डदे'''चपदेदिद रागोवा ॥

[सौवदार्य (? शूरमुनि) ने श्राकर हर्ष से पर्वत की वन्दना की और अन्त में यहां ही शरीर त्याग किया ।]

१६३ (८०)

(लगभग शक सं० ६२२)

महादेवम्मुनिपुङ्गवमदर्प्पि कलु पर्द्दप
महातवन्मरणमप्पे तनगा... कमु कपडे...
महागिरि म ..गलेखलिसि मला...नविन्तो-
महातवदोन्तु मक्केमेल्वलवदु दिवं पोक्क

[महादेव मुनिपुङ्गव ने मृत्युकाल निकट आया जान पर्वत पर तपश्चरण किया और स्वर्ग-गति प्राप्त की ।]

१९४ (८१)

(लगभग शक सं० ६२२)

योग्यातिरेच्य-कैवल्य-बोध-प्राप्ति-महौजसे ।
ईशानाय नमो योगि-निष्ठायार् परमेष्ठिने ॥१॥
...रे कित्तूर-सङ्घस्य गगनस्य महस्पतिः ।
परिपू...चारि......ध............वाय......
ल्यया...

१९५ (८२) बलदेवाचार्य्यर पादगमग ।

१९६ (८३) स्वस्ति श्री पद्मनन्दिमुनिप......मतुल......
...दनिमा कुतदेवा.......... भभव...देप.........मा...
.....................ष्त्र · ··

१९७ (८४) श्रीपुष्पणन्दिनिसिधिगे ।

१९८ (८६) · ···क· ···न तम्म·······गे ।

१९७ (८७) श्री बाद ।

२०० (८८) कनादे···· ··· ···ण-वंशा···कत्तपिन्दुर्गं······

२०१ (८०) श्री यम्म । २०२ (८१) दुल्लग पेल्दयन्याह्र...

२०३ (८२) स्वस्ति कोत्रात्तूर सङ्कदि विशोकभटारर
निसिधिगे ।

२०४ (८४) श्रीमद् गौड देवर पाद ।

२०५ (८५)......व साधु-म...र धीरव्रत-संयता...मन
इन्द्रनन्दि आचार्य्य......मे...र्म्म धामेर...न्तुरिदर्प्प व्र-

कान्तरि......भाव्यमन्वर्प्पिन्.. पदं.... . दि मोहमगल्द्
इन्वल्-विषयङ्गलनात्म-वश-कृमविदु फट..........रियता-
राधिता...विमु .....श्वरि...... नन......रेन्द्र-राज्य-
विभूति-सास्वतमेदिदान् ।

[संयमी इन्द्रनन्दि आचार्य ने मोह विषयादि को जीतकर कट (वप्र) पर्वत पर समाधि मरण किया ।]

२०६ (६६) स्वस्ति श्री फोनमूर गवुण्ढा देव...रान्ति-
यर्प्पिसि···

२०७ (६७) नमिलूरा सिरिसङ्घद प्राजिगणदा राज्ञो-
मती-गन्तियार्

धर्म्मम् नल्वद शीलदि गुणदिना-मिक्कोत्तमर्म्मीनेदोर् ।
नमगिन्दाल्तिदु धन्दु परि गिरियान्सन्यासनं योगदोल्
नमो चिन्तिरदुसे मन्त्रमणमरि ग स्वर्गालयं एरिदार् ॥

[नमिलूर संघ, आजिगण की साध्वी राज्ञीमती गन्ति ने पर्वत पर संन्यास धारण कर स्वर्ग-गति प्राप्त की ।

२०८ (६८) श्री स्वस्ति
वनगे मृत्यु-वरवानरिदे पेर्डोय-वंशदोन्
फालनिर्गकमुदे...प्पिन राज्य श्रीवविन ।
पा...क...मोदमु...वो......मता कवि नि-
धानम......सुर...ग मतियुल् नेने-कोण्डन् ।

[इस लेख में पेर्डोय वंश के किसी व्यक्ति के समाधि-मरण का उल्लेख है]

२०९ (१००) परवविमल ।

२१० (१०१)...मने-मेल् भच......महा......वोल...

२११ (१०२) .. . जन्नल् नविलूर् ग्रनेकगुणश श्री
सङ्घ......दु..

... .मेनन्तिलकं......श्रा...राचार्यर।

......भिमानमेरुडे तोरदेन्दे राग-सैाख्यागति

......ददोन्दु पञ्चपददे दोप निरासं.........

[नविलूर संघ के किसी आचार्य ने सैन्यास धारण कर प्राणोत्सर्ग किया ।]

२१२ (१०३) स्वस्ति श्रीमत् नविलूर् सङ्घद पुष्पसेना-
चारि...य निसिधिगे।

२१३ (१०४) श्री देशाचार्य......निसिधि रे।

२१४ (१०७) श्री

बन्दनुरागदिनोरदु मन्येगल्ल चक्रमदरिशैल...
वन्दनु मार्गदिन तिमिरा विधियिं नविलूर सं......
चेन्दरे बुद्धिय दारमनि...तियु...य मानि-मन्नेगल्
......लिपिप नल् सुरर सैाख्यमनिम्मोडगोण्डराद्गुम्।

[नविलूर संघ के मानि मब्बे न समाधि मरण किया।]

२१५ (१०६) श्री

मेघनन्दि मुनि वान् नमिमूर्त्तर सङ्घदा

........................तीर्थदि सिद्धियान...

द.. ....

....

२१६ (११०) श्रीकण्ठय्य ।

२१७ (१११) श्री

स.........ना......नेगर्देयगु सेदेगे-वदेसि दल्

मुगिव......नान्तुम्मेवाल...तपमं

......नि......पौत्र नन्दिमुनिप,..........

...माव्यं न......यु......हमाली दश इदरुल् नोन्तु

सिद्धिस्थनादम् ।

[नन्दिमुनि ने यहां भवपाल सिद्धि प्राप्त की]

२१८ (११२) श्री नविलूर् सङ्घदा गुणमति-अव्वेगला निसिधिगे ।

२१९ (१२५) अनेक शील गुणदोप्पिदारिन्तु लेविक सुदुम्
नंनेगेन्दोल मुनियिन्दल् तपच्चलं नोन्तु ताम्
समर्ग मृत्युवरवानरिदं श्री पुर्विम ....

[अनेक शील-गुण सम्पन्न पूर्विम ने मृत्यु का आगमन जान..]

२२० (११६) ई-पुरया...क्षमान्सरंवि
वरदोरेल्-नुव्वर क्षत्यमी-

२१

श्रीपुरान्वय गन्धवर्म्मनमित-श्रीसङ्घदा पुण्यदो-

सन्वीरा...निदं.. रिवलघ...री-शिला-वल......

.........माल्रेरदुप......इ ....

[इस लेख में श्रीसंघ, पुरान्वय के पूज्य गन्धवर्मा द्वारा इस शिला पर कुछ किये जाने का उल्लेख रहा है।]

कत्तले बस्ति के पीछे चट्टान पर

२२१ (४१२) चन्द्रय।

चामुण्डराय बस्ति के द्वारे के दक्षिण की शिला पर

२२२ (११९) श्रीमत् लक्खण देवर पाद।

चामुण्डराय बस्ति के द्वारे के दोनों बाजू

२२३ (१२२) श्री चामुण्डराजं माडिसिदं

चामुण्डराय बस्ति के द्वारे से बायीं ओर शिला पर

२२४ (१२३) (नागरी अक्षरों में) सान्तणन्दि देवर पाद

२२५ (१२४) " श्रीमतुचन्द्रकीर्त्ति देवर पाद।

तेरिन बस्ति के बायीं ओर एक स्तम्भ पर

२२६ (१३५) स्वस्ति

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं॥

तेरिन बस्ति के नवरङ्ग में एक टूटे पाषाण पर

२२७ (१३६) व·········ति यन्वप्पिनल्लि । मलद कुमारणन्दिभटारर सिषित्तियर् सायिव्वे-कन्तियर...... वप्पिदिगल् ।

(एक बाजू में) विष्ठ······म···सर्व्व· ····

तेरिन बस्ति के सम्मुख

२२८ (४२८)···स्वरेद मद्र···नरगेद कोल

२२९ (१५७)

तेरिन बस्ति के सम्मुख 'मेरु' के उत्तर मुख के ऊपरी भाग पर

(शक सं० १०३८)

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघ-नाशिने ।
कुतीर्थ-ध्वान्त-सङ्घात प्रभिन्न-घन भानवे ॥ १ ॥
सक वर्ष सायिरदि
प्रकटमेनस्मूवत्तारुमेनुतं नडेदुविरलु
सुकरमेने हेमलम्बियोल्
चकलद्दद जेट्ट-सुद्ध-गुरु-सेरसियोलु ॥ २ ॥

वृत्त ॥

धरणी-पालकनप्प पोय्सलन राज-श्रेष्ठिनस्वम्मुलि-
र्म्बरनल् पोय्सल-सेट्टियुं गुण-गदाम्भोराशियं नोन्दु सु-

न्दर-गम्भीरद नेमि-से [ट्टि] सुमिव श्रीजैन-धर्म्मक्के वायु-
गरंगलु वामेने मन्द पेम्पसदलम्पव्वित्तु भू-भागदोलु ॥३॥

कन्द ॥

ममल-यशरमल-गुण-गण-
रमलिन-जिन-शासन-प्रदीप करेने पे-
म्पमदिरे पोग्मल-सेट्टियु-
ममेय-गुणि नेमि-सेट्टियुं सुखदिनिरलु ॥ ४ ॥

मवर जननियरनल्की-
भुवनतलं पोगल्ते माचिकब्बेयुमुदद्-
विविध-गुणि शान्तिकब्बेयु-
मवर्गालु जिन-जननियश्रद्धींवलदोलु ॥ ५ ॥

(उसी 'तेह' के पश्चिम मुख के ऊपरी भाग पर)

जिन-गृहमं मना-मुददे माडिसि मन्दरमं विनिर्म्मिसि-
ईनुपम-भानुकीर्त्ति-मुनि-से…दिव्य-पदाब्ज-मूलदोलु ।
मनमोसेदिर्व्विकं परम-दीक्षेयनोप्पिरे वाल्दिदर्ज्जग-
जन-वति कीर्त्तिसल्कें मद-देयियु [मिमु] शि
शान्तिकब्बेयुं ॥ ६ ॥

श्री मूलसङ्घदोलु म-
वा-महिमोन्नवमेनिप्प देसिग-गणदोलु
तामिर्व्वरमखिल-गुणो-
द्दामेयरं नेगर्द्दरिन्तु नोन्तवमोल्दरे ॥ ७ ॥

जिन-पतिगं पूजेयं म-
न्मुनि-पतिगलुगल-दानमं भक्तियोलि-
ल्विने पोय्सल-सेट्टियुमोल्-
पिन कग्नियेने नेमि-सेट्टियु मादिसिदर् ॥

[पोय्सल नरेश के प्रसिद्ध सेठी पोय्सलसेट्टि और नेमिसेट्टि की माताओं—माचिकब्बे और शान्तिकब्बे—ने जिनमन्दिर और नन्दीश्वर निर्माण कराकर भानुकीर्त्ति मुनि से दीक्षा ली। उक्त सेठियों ने भक्ति-पूर्वक जिन-पूजन किया और दान दिये।]

गन्धवारण बस्ति के समीप एक टूटे पाषाण पर

२३० (१४४) नमस्सिद्धेभ्यः। शासनं जिनशासन
......भ-चन्द्र

गन्धवारण बस्ति की सीढ़ियों के पास

२३१ (४२८) श्रीमतु रविचन्द्र देवर पाद

इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर के मार्ग पर

२३२ (१४६) नेमगन पाद।

२३३ (१४७) श्रीसिवगारय।

२३४ (१४८) श्री फल्गुय्यन्।

२३५ (१५०)

इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर के द्वार की दक्षिण बाजू पर।

ने सेवल्कुन्द गुवु...ट्टिसि पट्टम गुलिय...सिर्गयिर्जे मखे गङ्ग-

राज्य......नेमदे मन्त्रि **नरसिङ्ग**...वङ्गलियं विशेषदि ॥
एरेगङ्ग-महामात्यं
...रेदं नव-गङ्ग-महिगे सफल-मतियिं
गुलिपालनातनलियं
नेरे नेगल्दं **नागवर्म्म**नवनीतलदोल् ॥ १ ॥
भावन पुत्रनब्धि-वृत-धात्रियोलितने **रामदेव**...न
ईतने **वत्सराज**निन्नेगीतने वां **भगदत्त**नागिविख्यातयशं
वगुल्द कु...मं तोरेदुर्न्नरे नोन्तुमेतु

(शेष भाग टूट गया है)

[*गङ्गराज्य के मन्त्री नरसिंह के जामाता। एरेगङ्ग के प्रधान मन्त्री।—......जामाता नागवर्म के पुत्र ने—जो रामदेव, वत्सराज व भगदत्त के समान अत्यप्रसिद्ध थे—वैराग्य धारण कर......*]

उसी द्वार की बायीं बाजू पर

२३६ (१५१)..........पिडिदुलु......मारदो......
...र्द्वदि...ट्टगचोल्ल मार्के जेगदि..........विमा...माडिसिद...

उसी मन्दिर के सन्मुख चट्टान पर

२३७ (१५२) चगभचयचक्रवर्त्ति गोगिय सात-
नाय,......र

२३८ (१५३) (नागरी अक्षरों में) चन्द्रकीर्त्ति ।

२३९ (१५४) श्रीमत् रायमल्ल देवर जक्किन सेनबोव
मुपकरव्य बन्दिसिद

कान्चिन दोणे के आस-पास

२४० (१५६)............मुडिपिदरवर गुड्डि सायिब्बे
निसिदल पोल्लब्बेकान्तियर्गे......गे।

२४१ (१५७) श्रीमत् गण्डविसिद्धान्तदेवर गुड्ड
श्रीधर वोज।

२४२ (१६०)

श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं॥ १॥
जगत्-त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने।
नयप्रमाणवाग्रश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तये॥ २॥
परमश्रीजिनधर्मनिर्म्मलयशं भव्याब्जिनीभास्करं
गुरुपादाम्बुजवृत्तशुद्धचरितं विप्रो......मं मेरुभू-
धरधैर्य्यं गुणरत्नवार्द्धि विलसत्सम्यक्त्वरत्नाकरं
परमोत्साहदे रा........ ...भ्यिन्नभागदोलु॥ ३॥

भा-पु............माव-गुणगलं

२४३ (१६१) श्रीधनकीर्त्तिदेवर मानस्तम्भद कम्भ।

२४४ (१६२) मानभ आनन्द-सवच्छदरिन्न कट्टि-
सिद दोणेयु।

राज्य......नेमदं मन्त्रि **नरसिङ्ग**...वङ्गलियं त्रिशर्वाद ॥
एरेगङ्ग-महामात्यं
...रेदं नव-गङ्ग-महिगे सफल-मतियिं
गुलिपालनावनलियं
नेरे नेगल्दं **नागवर्म्म**नवनीवल्लदोल् ॥ १ ॥
भावन पुत्रनधिप-वृत-धातृयांलिवने **रामदेव**...र
ईतने **वत्सराज**निलेगीतने वा **भगदत्त**नागिविख्यातवर्द
वगुल्द कु...मं तोरंदुन्नेरे नोन्तुमेतु

(शेष भाग टूट गया है)

[गङ्गराज्य के मन्त्री नरसिंह के जामाता। एरेगङ्ग के प्रधान मन्त्री।—......जामाता नागवर्म के पुत्र ने—जो रामदेव, वत्सराज भगदत्त के समान जगत्प्रसिद्ध थे—वैराग्य धारण कर......]

उसी द्वार की बायीं बाजू पर

२३६ (१५१)..........प्पिडिदुलु.......मारदो......
...वंदि...ट्टगचोल भाक्के जेगदि..........विमा...माडिसिद...

उसी मन्दिर के सन्मुख चट्टान पर

२३७ (१५२) चगभचण्डचक्रवर्त्ति गंगिगय छार
नरय......र

२३८ (१५३) (नागरी अक्षरों में) चन्द्रकीर्त्ति।

२३९ (१५४) श्रीमतु राचमल्ल देवर जक्किन शेनबोर
मुयकरय्य बन्दिसिद

काञ्चिन दोणे के आस-पास

२४० (१५६)............सुडिपिदरवर गुड्डि सायिन्वे
निसिदल पोलल्ब्वेकान्तियर्गे......गे।

२४१ (१५७) श्रीमत् गण्डविमिद्धान्तदेवर गुड्ड
श्रीधर वोज।

२४२ (१६०)

श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥
जगत्-त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने ।
नयप्रमाणवाग्रश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तये ॥ २ ॥
परमश्रीजिनधर्म्मनिर्म्मलयशं भव्याब्जिनीभास्करं
गुरुपादाम्बुजयुग्मनुद्धरितं विप्रो......मं मेरुभू-
धरधैर्य्यं गुणरत्नवार्द्धि विलसत्सम्यक्त्वरत्नाकरं
परमात्माहृदं रा........ ...ग्विज्ञाभागदोलु ॥ ३ ॥
भा-नु...........माण-गुणगलं

२४३ (१६१) श्रीधनकीर्त्तिदेवर मानसस्तम्भद कम्भ।

२४४ (१६२) मानभ आनन्द-संवच्छरदलि कट्टि-
सिद दोणेयु।

राज्य......नेमदं मन्त्रि नरसिंह...वधुलिर्वं विर्शगल

एरेगङ्ग-महामात्यं

...रेदं नव-गङ्ग-महिमे मकन-मनेयि

गुलिपासनातनलिर्य

नेरे नेगल्दं नागवर्म्मनवनोवलदेलल् ॥ १ ॥

भावन पुत्रनिव-पुन-धात्रीयोलितने रामदेव...न

ईतने वत्सराजनितेर्गीतने तां भगदत्तनागिविरुल

वधुल्द कु...मं तोरेदुरेरे नोन्तुमेतु

(शेष भाग टूट गया है)

[गङ्गराज्य के मन्त्री नरसिंह के जामाता। एरेगङ्ग के म मन्त्री।—......जामाता नागवर्म के पुत्र ने—जो रामदेव, वत्स भगदत्त के समान जगत्प्रसिद्ध थे—वैराग्य धारण कर......]

उसी द्वार की बायीं बाजू पर

२३६ (१५१)..........पिडिदुलु......म

...द्वदि...ट्टगचोल भाके जेगदि..........विमा..

उसी मन्दिर के सन्मुख चट्टान

२३७ (१५२) चगभचवचक्रवर्त्ति गो।

नत्य......र

२३८ (१५३) (नागरी अक्षरों में) चन्द्र

२३९ (१५४) श्रीमत् राचमल्ल देवर जि

सुब्रह्मण्य वन्दिसिद

चन्द्रगिरि की सीढ़ियों के बाईं ओर

२५२ (१७४) श्री नरवर जिनालय केरे ।

२५३ (४९१) श्री रणधीर

चन्द्रनाथ बस्ति के आस-पास

२५४ (४१३) ......चामुण्डय्य

२५५ (४१३) सेट्टय्य

२५६ (४१५) सिवमारन बसदि ।

२५७ (४१६) बसद

सुपार्श्वनाथ बस्ति के सन्मुख

२५८ (४१७) श्री चैजय्य २५९ (४१८) श्रीजक्कय्य

२६० (४१९) श्री कडुग

२६१ (४२०)........धनमा ।

चामुण्डराय बस्ति के दक्षिण की ओर

२६२ (४२१) महामण्ड... ..श्र... ..

२६३ (४२२) श्री बाम

२६४ (४२३) बसवय्य

२६५ (४२४) श्रोमर......

२६६ (४२५) नरणय्य

२६७ (४२६)......रसप बम,......व निषिधिगे

२४५ (१६३) तम्मय्यङ्गे परोक्षविनयनिशिधि श्रीध-
रङ्गे परोक्ष-विनय तम्मवेगे परोक्ष-
विनयनिशिदि ।

२४६ (१६४)………दलि क………गो……
ग्गलं गङ्ग…निसिदिगेय निरिसिदन् ॥
……द……गमदे……गलिय…
सगि……………

भद्रबाहु गुफा के आग्नेय कोन पर

२४७ (१६८) श्रीमतु लक्ष्मीसेन भट्टारकदेवर शिष्यरु
मल्लिसेन-देवर निसिधि ।

चन्द्रगिरि की चोटी पर चरण-चिह्न के नीचे

२४८ (१६९) श्री भद्रबाहुभलिस्वामिय पाद ।

चन्द्रगिरि के मार्ग पर चरण-चिह्न के नीचे

२४९ (१७१) [तामिल अक्षरों में]
कोन्दइ-शङ्करनु मलयशारगलिङ्ग निन्द
कलनिक्कु मेर्कु निन्द पुलिक्कु निरै ।

तोरनगम्भ के वायव्य में जिन-मूर्त्ति के पास

२५० (१७२) साम…… .देवरु……

चामुण्डराय शिला पर मूर्त्तियों के नीचे

२५१ (१७३) श्रीफनकनन्दि देवरु पसि देवरु मलि-
देवरु ।

चन्द्रगिरि की सीढ़ियों के बाईं ओर

२५२ (१७४) श्री नरवर जिनालय केरे।
२५३ (४११) श्री रणधीर

चन्द्रनाथ बस्ति के आस-पास

२५४ (४१२) ......चामुण्डय्य
२५५ (४१३) सेट्टय्य
२५६ (४१५) सिवमारन वसदि।
२५७ (४१६) वसद

सुपार्श्वनाथ बस्ति के सन्मुख

२५८ (४१७) श्री वैजय्य २५९ (४१८) श्रीजक्कय्य
२६० (४१९) श्री कडुग
२६१ (४२०)........चनमा।

चामुण्डराय बस्ति के दक्षिण की ओर

२६२ (४२१) महामण्ड... ..म... ..
२६३ (४२२) श्री याम
२६४ (४२३) बसवय्य
२६५ (४२४) श्रीमर......
२६६ (४२५) नरणय्य
२६७ (४२६)......रसप वम......य निषिधिगं

इरुवेब्रह्मदेव मन्दिर के सन्मुख

२६८ (४३१) पवोजतु २६९ (४३२) मेलपय्य

२७० (४३३) श्री पृथुव

२७१ (४३४) चन्द्रादितं (चरणचिह्न)

२७२ (४३५) नागवर्म्म बरदं

२७३ (४३६)...निगरजेयण तंशवत्रगण्ड

२७४ (४३७) पुलियण्न २७५ (४३८) सीतय्य

२७६ (४३९) केसवय्य २७७ (४४०) नमोऽस्तु

२७८ (४४१) श्री ऐचय्यं विरोधिनिष्ठुरं

२७९ (४४२) वास

एरडुकट्टे बस्ति के पूर्व में

२८० (४२७) कगुसर

शान्तीश्वर बस्ति के पीछे

२८१ (४३०) श्रीमत् कम्मरचन्द बाचिरग

कान्चिनदोणे के पास

२८२ (४४३) मुठ कद्यं कदम्ब तरिसि.........

परकोटे के पूर्वी द्वारे के पास

२८३ (४४४) जिनन दोणे

लक्किदोणे की पश्चिमी शिलापर

२८४ (४४५) श्री जिन मार्गांश्रोतिमत्प्पमन्सर्प्पभूवामणि।

२८५ (४४६) श्री बिट्टय्य
२८६ (४४७) श्रीमद् चकवेर्द
२८७ (४४८) श्री परवेणिडरणनव ईश्वरय्य
२८८ (४४९) श्री फनिरन
२८९ (४५०) श्री मयरय्य २९० (४५१) श्री घनपैाग
२९१ (४५२) श्री नागवि मास्दन दण्डं
२९२ (४५३) श्री मागनण्न न दण्डं
२९३ (४५४) श्री राजन भट्ट
२९४ (४५५) श्री बड्डर बण्ट
२९५ (४५६) श्री नागवर्मं
२९६ (४५७) श्री बरमराज मात्रादित्यं
२९७ (४५८) श्रीमत् मन्त्रं गोल्लद मारिट्टनेमि पण्डितर्
पर-समय-ध्वंसक ।
२९८ (४५९) श्री बड्डर बण्ट
२९९ (४६०) श्री नागय्य
३०० (४६१) श्री देवय्य ३०१ (४६२) श्री सिन्दय्य
३०२ (४६३) श्री गोवय्यय्या च्यिक-चतुर्मुखं
३०३ (४६४) श्री...गिवर्म्म बावसि मल्ला...वि मार्त्तण्डं

३०४ (४६५)

श्री मलधारिदेवरय्यनर श्री नयनन्दिविमुक्तर गुड्ड मधुवय्य देवर बन्दिसिद ॥

विधु-विधुधर-हास-पयो-
म्बुधि-फेन-वियवरावलोपम-यशन-
भ्यधिकतर-भक्तियिन्द
मधुवं वन्दिल्लि देवर बन्दिसिद ॥

[मलधारिदेव के पिता नयनन्दि के शिष्य मधुवय्य ने देववन्दना की।]

३०५ (४६६) कण्नव्वरसिय तम्म चावय्यनुं दम्मडय्यनुं नागवर्म्मनुं बन्दिल्लि देवर बन्दिसिदर् ॥

३०६ (४६७) श्री सन्द बेल्गोलदल्ले निन्दु...इने विट्टु अन्दमारय्य मनदल् अग्गल देवरेम्बर काण्व बगेयिन्द । श्री पेर्ग्गडे रेवय्यन वेदे सङ्कय्य।

३०७ (४६८) श्रीमत् एरेयप गामुण्डनु मदय्यनु बन्दिल्लि व्रतकोण्डर

३०८ (४६९) श्री पुलिकन्नय्य

३०९ (४७०) श्री काचय्य

३१० (४७१) श्रीमत् एनगं क्रियद देव वसद

३११ (४७२) श्री मारसिङ्गय्य ३१२ (४७३) कत्तय्य

३१३ (४७४) पुलिचोरय्य मह...जदोज...मणि-विवान-दोज तेज

३१४ (४७५) श्री कोपण तीर्थद

३१५ (४८२) सासिर गद्याण

विन्ध्यगिरि पर्वत के अवशिष्ट लेख

३१६ (१८१)

गोम्मटेश्वर के बायें चरण के समीप

श्री-चिटि-देवन पुत्र प्रताप-**नारसिंह-देवन** कय्यलु महा-प्रधान हिरिय-भण्डारि हुल्लमय्य गोमट-देवर पा…… ……वरवृ………दानक्कं सवणेरं बिडिसि कोट्टर् ।

[महामन्त्री हुल्लमय्य ने बिटिदेव के पुत्र नारसिंहदेव से (गाँव) प्राप्त कर गोम्मटदेव और दान के हेतु अर्पण किये ।]

३१७ (१८७) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय **नयकीर्त्ति** सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति गल गुड्ड बसविसेट्टि माडिसिदं ॥

३१८ (१८८) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय **नयकीर्त्ति** सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल गुड्ड बसविसेट्टि माडिसिदं ॥

३१९ (१८९) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्री**नयकीर्त्ति** सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुड्ड बल्लेय[द] ण्डना [य] कं माडिसिदं ॥

३२० (१९०) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्री-**नयकीर्त्ति**

३२६ (१९६) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्ति गल गुड्ड मदियमसेट्टि माडिसिद सुमति भट्टारकरु ॥

३२७ (१९७) श्री मूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय नयकीर्त्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति गल गुड्ड बसविसेट्टि चतुर्वि-शतितीर्थंकर माडिसिद ॥

३२८ (१९८) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्ति गल शिष्यरु श्रीबालचन्द्र देवर गुड्डुकुल्लेय महदेव सेट्टि मल्लिभट्टारकरं माडिसिद ॥

३२९ (१९९) शक वर्ष १२०२ नेय प्रमाथि संवत्सरद कार्तिक शुद्ध १० सोमवारदन्दु श्रीमनु-महा-प्रमायत तिरुमप्प......धिकारि सम्भुदेवण-नवर.. लु मल्लण्णनवरु-श्रीगोम्मट............... ....मङ्गल महा श्री श्री ॥

३३० (२००) सर्वधारि-सवत्सरद चैत्र-सुद्ध-पाड्य बृहवार दन्दु श्रीगोमट-देवर नित्या-भिषेकक्के बिटेयन हलिय मेघसिन सोयि सेटिय मग माडिसेटि कोट्ट...याय १ पय २ हालु मान ॥

सिद्धान्तचक्रवर्त्ति गल गुड्ड बलेय
दण्डनायकं माडिसिदं ॥

३२१ (१९१) दुर्म्मुखि संवत्सरद पुष्यमासद
शुद्ध बिदिगे मङ्गलवार
कोपणपुरद... ..य-सेट्टि गुम्मटसेट्टि
दनद.........वादरु......

३२२ (१९२) श्रीसवत् १५४८ वर्षे जेष्ट सुदि ३ रवि
[नागरी लिपि में] वासरि गोम्मट स्वामी की जात्रा कियो
गोमट बड़ुपाले प्रजौसवाले कदिकवंस
ब्रमचारी पुरस्थाने पुरी भ्रातृपुत्रसम...

३२३ (१९३) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्ति गल-
शिष्यरु श्रीबालचन्द्र देवर गुड्ड
आङ्किसेट्टि अभिनन्दन देवरं माडिसिदं ॥

३२४ (१९४) श्रीमूलसङ्घ देसियगण पुस्तकगच्छ
कोण्डकुन्दान्वयद श्री-नयकीर्त्ति
सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगलगुड्ड कम्मटद रामि-
सेट्टि माडिसिद ॥

३२५ (१९५) श्री नयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल
शिष्यरु श्रीबालचन्द्र देवर गुड्ड सुङ्कद
भानुदेव हेग्गडे माडिसिद अजित-
भट्टारकरु ॥

३२६ (१९६) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्ति गल गुड्ड चदियमसेट्टि माडिसिद सुमति भट्टारकरु ॥

३२७ (१९७) श्री मूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय नयकीर्त्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति गल गुड्ड बसविसेट्टि चतुर्व्विंशतितीर्त्थंकर माडिसिद ॥

३२८ (१९८) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्ति गल शिष्यरु श्रीबालचन्द्र देवर गुड्डकल्लेय महदेव सेट्टि मल्लिभट्टारकरं माडिसिद ॥

३२९ (१९९) शक वर्ष १२०२ नेय प्रमाथि संवत्सरद कार्त्तिक शुद्ध १० सोमवारदन्दु श्रीमनु-महा-पसायत तिरुमप्प......धिकारि सम्भुदेवन-नवर.. तु मल्लण्णनवरु-श्रीगोम्मट........ ....
...............मङ्गल महा श्री श्री ॥

३३० (२००) सर्वधारि-संवत्सरद चैत्र-सुद्ध-पाड्य बृहवार दन्दु श्रीगोम्मट-देवर नित्या-भिषेकक्के बिटेयन दलिय सेट्टसिन सोवि सेटिय मग मादिसेट्टि कोट्ट...दाम १ पग २ हालु मान ॥

३३१ (२०१) संवत् १६३५...पिमतीच-स। फ
[नागरी लिपि में] सुदोय सेनवीरमतजी श्री-जगवकरवमी
पराभट्टोदराजो प्ररसटोवदव...व...
मघोपदे श्री-रावसोरवजी।

३३२ (२०२) संवत् १५४८ पराभव से. जे. सुद ३
[नागरी लिपि में] मूलसङ्घ सागुपजे श्री-जगद् त...प्राकवड
......लं तद्रमत् सेहराराज् मवतार्

३३३ (२०३) संवत् १५४८ वर्षे चैत्र वदि १४ र
[नागरी लिपि में] ते भट्टारक श्री अभयचन्द्रकस्य शिष्य
ब्रह्मधर्मरुचि महगुणभागरर्ण ॥
कीं का यात्रा सफल।

३३४ (२०४) गेरसोपेय सपनायकर मग जिह्वणत्
माशानुंवरगिरतु

३३५ (२०५) मामाभी रकम ठक [ढंक]
[नागरी लिपि में] [ि] गुमनी कम धक [पेक]

[३३६ से ३४० तक के लेख नागरी भाषा में हैं]

३३६ (२०६) श्री नमनाथ नम शाधां हुक्मचन्दरसना
संवत १८८० सोमवार वीदी ११ नराठ।

[श्री नमनाथ नम. । श्री हुक्मचन्द [illegible] संवत् १८०० सोमवार
वदि ११ पूरे]

३३७ (२०७) श्री गयसा म नमः साधो कपूरचन्द मेतीचन्द शतीदी रा सावत १८०० मगशरा वदी १३ गराऊ।

[श्रीगणेशाय नमः। साव कपूरचन्द मोतीचन्द शतीदी रा संवत् १८०० मगसर वदि १३ गुरां]

३३८ (२०८) सवत १८४२ मह सद ५ ग्रवदस ग्रगरवल दूलवल पनपथय व सट भगवनदस जतरक मय।

[संवत् १८४२ माह सुदी ५ अतदास अगरवाला दिल्लीवाला पनपथिया वो सेठ भगवानदास जात्रा का आये]

३३९ (२०९) सवत १८०० पोस वद १४ मङ्गराय वाल्कीसनजी तेमुवको पण्डेलवाल वुधलाल गङ्गरामज करणी भोग......

३४० (२१०) सवत १८०० मत ग्रसढ सद १० सनचरवर सवप रयज बड़कसनज ग्रजदतज चनरय व दनदयल ग्रयट ग्रजदतज इक जतर इसथन पठक ग्रगरवल सरवग पनपथक गयलगत ग्रयथ

[संवत् १८०० मिती आषाढ़ सुदि १० शनीचरवार सन्तोषरायजी बालकिसनजी अजीतजी चैनराय व दीनदयाल व बेटा अजीतजी एक जातरा स्थान पेठका अगरवाला सरावगी पानीपत का गोयल गोती आये थे]

३४१ (२११) सवत १८०० पस वद ६ मर्गलवर
वनवरलल दनदयल क वट।

३४२ (२१२) सवत १८१२ वसह सद ११ वर मगल
वलरम रमकसन क बट भ [गरव]
ल सर [वग क] स रय ग [कल]
गढय वसह......इ......र.........

[संवत् १८१२ वैसाख सुदि ११ वार मङ्गल बलीराम रामकिसन का बेटा अगरवाला केसोराय गोकलगढिया वैसाख......]

३४३ (२१३) सवत १८४३ मव मह वद ३ लष [म]
ण-रयक वट तइर मल नरठनवल नव-
मल गनरम धन......पै...........
दज परप......नरक सहनवल

[संवत् १८४३ मिती माह वदि ३ लछमणराय का बेटा तोडरमल नाठनवाला (?) [नत]प[मल गनीराम धन......... ..]

३४४ (२१४) सवत १८१२ मव वसह वद ८ वर सन
सठ रजरम रमकरसन मगव रयक बट
गयल गव...र......सरपल सभनय वट
नय......क वट।

३४५ (२१५)............सद मगल वर नय......
नरयनज वहव............रयव......ई
जहवय रमदनमल कसव.........वमहय

कमद जैनदृरयज......वन... .....ग
......रज्ञम ... .

३४६ (२१६) कमवराय का बंटा सवत १८१२ वगष मद ११ वर मगल-वर सुमर-मक्त बट मज-रम गगनय मड्नगड पनपद्मय भगरवक्ष ।

३४७ (२१७) समत १८०० जट मद ३ करपवक मट इमग्नपन धनय यमद.........र... .. र ..लमराय.. रयज हूसरमज लसनव हलसरय बलफदम सरवग ऽगरवक्ष पनपग्न गरगगत वनय सनय ।

३४८ (२१८) उदमग पगवक्ष रतत.. रअप... . प वक्ष ।

३४९ (२१९) सवत १८१२ पगद मद ८ नवमख सकरदसक घट भयम ।

३५० (२२०) सवत १८१२ मत बमाव सद ८ सनव-रक दन सतवरय: मगनरमक बट जारेका-नक पत सुरवग

३५१ (२२१)

अष्ट-दिक्पाल मण्डप की छत के मध्य भाग में गोलाकार

(क्रम) भरत-आदित्यकुमाराभिधे गवोराबा

३४१ (२११) सवत १८०० पस वद ६ मर्गश्वर
वनवरलल दनदयल क वट।

३४२ (२१२) सवत १८१२ वसह सद ११ वर मगव
बलरम रमकसन क बट अ [गरव]
ल सर [वग क] स रय ग [कल]
गढय वसह......इ......र.........

[संवत् १८१२ वैसाख सुदि ११ वार मङ्गल बलीराम रामकिसन का वेटा अगरवाला केसोराय गोकलगढिया वैसाख......]

३४३ (२१३) सवत १८४३ मत मह वद ३ लच [म]
ण-रयक बट तडर मल नरठनवल नव-
मल गनरम धन......पै...........
दज परप......नरक सहनवल

[सवत् १८४३ मिती माह वदि ३ लछमणराय का बेटा तोडरमल नरठनवाला (?) [नत]व[मल गनीराम धन............]

३४४ (२१४) सवत १८१२ मत वसह वद ८ वर सन
मठ रजरम रमकरसन मगत रयक बट
गयल गव...र......सरपल सभनय बट
नय......क वट।

३४५ (२१५)...........सद मगल वर नय......
नरयनज वहड............रयथ......इ
जहवय रमदनमल कसद.........थमहव

कमद जैनदरयज......वन... .....ग
......रलम ... .

३४६ (२१६) कमवराय का बेटा सवत १८१२ वसप सद ११ वर मगल-वर समर-मल्लक घट मज-रम गगनय मडनगड पनपपय बगरवल ।

३४७ (२१७) समत १८०० जट मद ३ करवधक सट इमयपन धनय यमद.........र... .. र ..लमराय...रयज दूमरमज लसनय हूलसरय बज्रकदस सरवग ञगरवल पनपथ गरगगत वनय सननय ।

३४८ (२१८) उदसग वगवल्ल रवत... रजप... .. प वल्ल ।

३४९ (२१९) सवत १८१२ वसद्द मद ८ नवल्लरय सक्करदसक घट भयग ।

३५० (२२०) सवत १८१२ मव वसव सद ८ सनप-रक दन सवपरयः मगलरमक घट जड़कर-नक्ष पव सरवग

३५१ (२२१)

अष्ट-दिग्पाल मण्डप की छत के मध्य भाग में गोलाकार

(उत्तर) मरस्-आदित्यकुवाचाम्बिके गवोलविनि

३४१ (२११) सवत १८०८
वनवरलल दन

३४२ (२१२) सवत १८१२
बलरम रमक
ल सर [वग
गढय वसद...

[सवत् १८१२ वैसाख सुदि ११ वार ग
का बेटा अगरवाला केसोराय गोकलगढिया वैस

३४३ (२१३) सवत १८४३ मत
ण-रयक बद लड़र म
मल गनरम धन....
दज परप......नरक र

[संवत् १८४३ मिती माह वदि ३ लछमणराय
नारनवाला (?) [नत]ध[मल गनीराम धन...

३४४ (२१४) सवत १८१२ मत वसद
सठ रजरम रमकरसन म
गयल गत...र......सरपर
नय......क बद ।

३४५ (२१५)............मद मगल वर ग
नरयनज वहद............रयव
जहवय रमदनमल कसद.........

३५३ (२२९) .. ...क-संवत्सर आषाढ़ सु ५ ..
.. ..
... .
सि......पाल. आ-मामदधि ना
कियना, य...मामके गल्लु दल्लु.. .
कट्टु...आरम्भ-नीरारम्भ-सकल-सुवर्णा-
दाय-सकल-दशनादाय आ . गङ्क
आ-मास . ..गरे .. ..वरदगलु ।

[इस लेख में सब तरह और अनाज की आमदनी के किसी ग्राम दान का उल्लेख रहा है ।]

३५४ (२३०) कु...... .....फाल . .... . अनुज .
कं . .. य सीमेग बंद .. कण्डुव
.. ..पूर्जि ...आ-मामके ..दलु नीवे
ललुकाण्डु .. ... आ-मामदविन नमगे
गल्लुव पलिगदलु पोत्रगारपर आ-चन्द्राक
स्थायियागि अनुभविसिकोण्डु बरबदु वी
.... मथ-नापन,.....धी-सर्वाद
..... वसापन ......दर्शी ......
माग-नुडन .. .. ..र स्थानीक.. ..
.....सालुण्तुव .....दंडव...बाव
मल्ले देवर सज्जेगलुक हिन्दव ...र

पुट्टिदर् प्पम्पराज हरिदेवं मन्त्रि-यूथाग्रणि
गुणि बल-

(पूर्व) देवण्णानेन्दिन्तिवर्म्मूवरुमुर्व्वी-ख्यात-कर्ण्णाटिक
कुल-तिलकम्माचि-राजङ्ग मार्वन्दिररातु
च्चण्ड-शक्तर्-

(दक्षिण) -ज्जिनपति-पद-भक्तर्म्महाधारयुक्तर ॥
सकल-सचिव-नाथः माधिवाराति-यूथः ।
परिहृत-पर-दारो

(पश्चिम) ....भारती-कण्ठ-हारः ।
विदित-विशद-कीर्त्तिर्व्विश्रुतोदार-मूर्त्ति-
र्म्स जयतु बलदेवः श्री जिनेन्द्राङ्घ्रि सेवः ॥

[अरसादित्य (व नृप आदित्य) और आचाम्बिके को सुख देनेवाले तीन पुत्र उत्पन्न हुए—पम्पराज, हरिदेव और मन्त्रि-समूह में अग्रगण्य, गुणी बलदेव । ये लोक-प्रसिद्ध कर्ण्णाटक कुल के तिलक, माचिराज के पितृव्य, शत्रुओं के लिए प्रचण्ड-शक्ति, जिन-पद-भक्त महा साहसी थे । समस्त मन्त्रियों के नाथ, शत्रुओं को वश करनेवाले, परस्त्री-त्यागी, सरस्वती देवी के कण्ठहार, विशुद्ध कीर्ति, प्रसिद्ध और उदार-मूर्त्ति जिनेन्द्र-पद-सेवी बलदेव जयवान् हो ।]

३५२ (२२२) कालायुक्त संवत्सरद माघ ब १२ ब
गुम्मि सेट्टि मग.................सेट्टि
दर्शनर् आदनु ॥
कालायुक्त संवत्सरद माघ ब १२...पुट्टण्ण
मग चिक्कण्णनु दर्शनव् आदरु ॥

५३ (२२८) .. . ...क-संवत्सर श्रावण सु ५...

... ...

... .

सि......पाम... . श्रा-मामदधि ना..

क्रियना...य...ग्रामके मलु . दलु... ..

कट्टु...द्वारम्भ-नीरारम्भ-सकल-सुवर्णा-

दाय-सकल-दवमादाय श्रा......गरु

श्रा-ग्राम .. ..ग११... ..वरदगळनु।

[इस लेख में नगद और अनाज की आमदनी के किसी ग्राम न का उल्लेख रहा है।]

५५४ (२३०) मु............फाल.........मनुभ...

को .....य सीमेगे पेकद......कण्डुय

.....पूनि . ...श्रा-मामके...पनु नीवे

तेलुकोण्डु... .... श्रा-ग्रामद्दलिन नमगे

मलुव पत्तिगेयनु पौत्रपारम्परे श्रा-चन्द्रार्क

स्थायियागि अनुभविसिकोण्डु बरुवदु यी

..........क्रय-साधन......यी-मर्यादि

......क्रयसाधन . ...र्या ......

नाग-गवुडन.........द स्थानीक......

......मारिगलुन......इलिय...माळ

मल्ले देवद नळजेगवुड हिन्दल......द

कोत्तनगवुड बसट्टर गवुड......हलिय
तिर्त्तवन मुयि मर्य्या.........

[यह किसी ग्राम का बैनामा सा ज्ञात होता है।]

३५५ (२३१) पण्डित देवरु माडित्तु माहाभिषेकदोळगे हालु-मोसरेगे २ पूजारिगे १ भागि कॆल्ल-सिगलिगे कलुकुटिगरिगे भागि २ भण्डि-कारङ्गे १वरिपदवर के सास्ति चरु हरियायो

[लेख का भावार्थ कुछ संदिग्ध है। शायद इसमें महाभिषेक के लिए व पुजारियों, कारीगरों और मजदूरों को पण्डित देव के दान का उल्लेख है।]

३५६ (२३२) श्रीमतु व्यय संवत्सरद माग सुद्ध १३ नेय त्रयोदसियलु करिय-कान्तणसेट्टियर मक्कळु करिय-विरुमण सेट्टियर तम्म करियगुम्मट मट्टियरु विडितियिन्द सङ्घ कुडिकोण्डु बेलुगुळदलु गुम्मटनाथन पादव मुन्दे रत्नत्रयद नोम्पिय उद्यापनेय माडि सद्गुरुपूजेय माडि कीर्त्तिपुण्यवनु उपार्जिसिकोण्डरु श्री।

[उक्त तिथि को करिय कान्तण सेट्टि के पुत्र व करिय विरुमण सेट्टि के भ्राता गुम्मटसेट्टि ने एक संघ सहित बेलुगुल की वन्दना की और गोम्मटनाथ के दर्शन कर कीर्त्ति और पुण्य का उपार्जन किया।]

३५७ (२३३) श्रीमतु करिय गोम्मणगे गुम्मटनाथ ने गति कं।

३५८ (२३६) संवत १८०० कत सद ६ सवत १८००
(नागरी लिपि में) पइ-स २ पत दव पनपघ दनवद परवस्त क वप ।

३५६ (२४८) सव १८०० मत पद सद ८ मगलवर
(नागरी लिपि में) फत्र १६ व गरधर छल वजमल क बट व मगतरय फट रयक बट वयमल्ल गमट मम क जत कर ।

३६० (२५१) (यह लेख, शिलालेख नं० ६० (२४०) के प्रथम १५ पद्यों की हूबहू कापी मात्र है)

३६१ (२५२) स्वस्ति श्रीमतु वड्डव्यवहारि मोसलेय... वि-सेट्टियरु तावु माडिसिद चवीसतीर्थ-कर अष्टविधार्च्चनेगं वरिपनिषन्धियागि मायिस्यनकर......यस-नकरङ्गलु कोट्ट पडिप...गे हाग।...व-सेट्टि बाचिसेट्टि चिक्क बाचिसेट्टि प २ अम्मेलेय केटि सेट्टि चन्दिसेट्टि गुम्मिसेट्टि चिक्कतम्म, प २ आदिसेट्टि चौडिसेट्टि १ बाचिसेट्टि बयिचिसेट्टि जक्कवेंदुन बोप्पिसेट्टि वाचि सेट्टि मारिसेट्टि बम्मिसेट्टि प २ माचि सेट्टि नम्बिसेट्टि मसणिसेट्टि केति-सेट्टि प २ केतिसेट्टि रेविसेट्टि हरियम-सेट्टि कोम्मिसेट्टि आदिसोट्ट चिक्क-केति

सेट्टि प २ पट्टण स्वामि चन्देसेट्टि सोम-
सेट्टि केतिसेट्टि प २ सोडलिये सेट्टि
वाकवेचट्टि.........केमिसेट्टि प १...
..द......चिक...डेग्गडिति पट्टण-
स्वामि मलिसेट्टि कामवे प २ वम्मेय
नायक दोवबे नायिकित्ति चिक पट्टण
स्वामि प २ बाहुवलिसेट्टि पारिषसेट्टि
बमविसेट्टि वरत बाहुवलि प २ सङ्क-
सेट्टि एचिसेट्टि चैाडिसेट्टि वाचिसेट्टि
सकिसेट्टि प २ नागिसेट्टि करियशान्ति-
सेट्टि ववणसेट्टि वोप्पसेट्टि प २ मैलि-
सेट्टि मडदेव सेट्टि हारवसेट्टि प १
काविसेट्टिय पारिषसेट्टि आदिसेट्टि
प १ सोडेयव्वपसेट्टि जक्किसेट्टि प १
तिप्पसेट्टिय बमविसेट्टि चिक तिप्पि-
सेट्टि प १... ...य पदुमनसामि-
सेट्टि बमचिच पदुम प १ देसिसेट्टि
कलिसेट्टि केतिसेट्टि बम्मिसेट्टि प १...
यदव रायमलसेट्टि यव पट्टण स्वामि
अक्करमव होयसलसेट्टि यीवसेट्टि पट्टण
स्वामि मल्लिसेट्टि चाकिसेट्टि दासिसेट्टि
प ३ नेमिसेट्टियव प २ नाविसेट्टि देवि-

सट्टि चट्टिसेट्टि कालवेसेट्टिवि प २
पट्टयस्वामि बोप्पिसेट्टि बोकिसेट्टि तम्म
बोप्पिसेट्टि बसविसेट्टि शाहुबल्लिसेट्टि
जक्वे सुत्तियक प २ मल्लरिक कालि-
सेट्टि सोमिसेट्टि चन्दिसेट्टि देविसेट्टि
चिक्क कालिसेट्टि प २ सोविसेट्टि चड्डिसेट्टि
बम्मिसेट्टि प १ होमिसेट्टि पारिष सेट्टि
कुप्पवे प २ माचिसेट्टि चट्टिसेट्टि गङ्गि-
सेट्टि कालिसेट्टि मारिसेट्टि प २ मल्लि-
सेट्टि वर्द्धमानसेट्टि पारिषसेट्टि प २
कामिसेट्टि देविसेट्टि बम्मसेट्टि प १
गुम्मिसेट्टि माकिसेट्टि गोम्मटसेट्टि
माचिसेट्टि प १ ममणिसेट्टि लक्कुमि-
सेट्टि प १ बहणिगेय बम्मवेय केटि-
सेट्टि प १ दनसेट्टिय म... वसेट्टि देमि-
सेट्टि चामवे प २ याचिकवेय बम्मि-
सेट्टि पारिषसेट्टि चिक्क पारिषसेट्टि चेलि-
सेट्टि सोमसेट्टि गोम्मट सेट्टि केतिसेट्टि प२
महदेवसेट्टिय चेट्टिसेट्टि रामिसेट्टि चट्टि-
सेट्टि प २ पदुमसेट्टि होलनसेट्टि गोम्मट-
सेट्टि लक्कुमिसेट्टि पोचम्म नाकिसेट्टि
महदेवसेट्टि प २ नागर-नविलेय केति-

संट्टियमल मल्लिसेट्टि गुळ्ळे प २ बेळलि
सेट्टि मध्यसेट्टि मसणसेट्टि प १
बासुदर नायक रामचन्द्र पाप्पर विक
बासुदेव प २ सोवबोत-लिकसेट्टि प १
जावसेट्टि बम्मि सेट्टि पदुमियंरे
मिक्कमरसेट्टि प २ मडुकिय मारि
सेट्टि गोम्मसेट्टि मड्डेय सेनक ग २
केतसेट्टिय आदिसेट्टि प १.........
.ग ....मग दोड्डवर....सेट्टि
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्रीमत् चारुकीर्त्ति पण्डित देवरु-गलु
अवर शिष्यरु अभिनव-पण्डित-देवरुगलु
बेलुगुलद नाड गवुडुगलु मादिस्य नल-
रद दलकपण्डितु स्थानिकरु वैदह... ..
......यरु

[यह लेख अधूरा है। इसमें बेलुगुल के चारुकीर्ति पण्डितदेव अभिनव पण्डित देवका उल्लेख है]

३६३ (२६०) सके १६५५ आधोज वदि ७...खेरा-
(नागरी लिपि में) मामा पुत्र......मसीमा........ श्री
सक........पानापोसा.. ....
. ...गया सफल श्री।

३६४ (२६१) सके १६५३ आधोज-वद ७ खेरामासा
(नागरी लिपि में) पुत्र हीरासाळा पत्तेतुपता जात्रा सफल।

३६५ (२६२) सके १६६३ आधोज वद ७ खेरामासा
(नागरी लिपि में) पुत्र धरमासाळा पौत्र जागा.........
जात्रा सफल ॥

३६६ (२६३) सके १६५३ पौस वदि १२ शुक्रवारे
(नागरी लिपि) अण्डेवेड कीर्ति सहित उपरवल जाती
हीरासाह सुत हामसा सुत वागांवा
सोनाबाई राजाई गोमाई राधाई सभाई
सहित जात्रा सफल करी कारज कर।

३६७ (२६४) वेय नाम संवत्सरद कार्त्तिक सुद्ध अष्टमी (अखण्डबागिलु के यि गुरुवार ॥
बायें में)

३६८ (२६५) स्वस्ति श्री मूल सङ्घ देशियगण (द्वारे के पास भुज- पुस्तकगच्छ श्रीगण्डविमुक्त सैद्धान्तदेवर बलिस्वामी के पाद- गुड्ड भरतेश्वर दण्डनायक माडिसिद ॥ पीठ पर)

३६९ (२६६)

[लेख नं० ३९८ के ही समान]

(द्वारे के पास भरते-
श्वर के पादपीठ पर)

३७० (२७०) श्रीमतु मारनेज सुद्ध ८ स्त्र बेगुर नामेय नरसप्पसाहियर मग बैयप्पनु स्वामि-दर्श-नगर माडि ई-कट्टे कट्टिय भररदिसे निलिसिदरु ॥

[इस तिथि को बेगुर के नामेय नरसप्पसेट्टि के पुत्र बैयप्प ने स्वामी के दर्शन किये, यह कुण्ड बनवाया और उस पर पत्थर जड़वाया।]

३७१ (२७१) सोमसेन देवर गुड्ड गोरय्य बैयप्प

३७२ (२७२) . भुवनकीर्त्तिदेवर शिष्य......कीर्ति-देवर निशिधि ।

३७३ (२७५) धनशशिरम्बा.........रद ..ना......

३७४ (२७६) सिंहनन्दि आचार्यर ॥

३७५ (२७८) पूनाबाई. .....आगबाई पवार आया (नागरी लिपि में) सा ६ ॥

३७६ (२७६) पू ननाई पुत्र पण्डि...पु..

(नागरी लिपि में)

३७७ (२८०) श्रीमतु मार्ग बहुल १ मधु आरणेय नागम्य-मटर मन जिनमतु वेंदुगुपद चारुकीर्ति भटार श्री पादव के शिसि-दक श्री ॥

[नं० ३७७ से ४०४ तक के लेख नागरी लिपि में है।]

३७८ (२८३) चौंतामनाम बवरा मायकर ईश्वर

३७९ (२८४) सके १६४२ वैसाष वदी १३ पु महाधा धर्मातार्क (कां) रसा सेमानीकनाथ नमस्कार (कनाडी लिपि में) मानिकरा

३८० (२८५) मा ...प क १६४२, क वदी १२ सरिबद्दीरा आया सफल ॥

३८१ (२८६) श्री कारंगसुं ॥

३८२ (२८७) शक १५६७ पार्थिव-नाम संवत्सरे वैसाष मास शुद्ध पष चतुर्दशी दिवस श्री कारं-गसु यपराजु आताच गैरबारा गांचे सुवदी वायुसार्या आपनाई सवा पुत्री द्वी चचनपुत्र सुत्राजसार्या सभाई सवा पुत्रा बह मध्य सीमा गडुवाचा बहुबी-न्यार्जुसतीव साचे सम्बद्दनाव द्वितीय पुत्र बहुबी परमात्मार्या सासाई सवा पुत्री

द्रौ विट्ठमार्य्या कमलाजा पुत्र एशोजा पदाजी सद्भवो द्वितीय पुत्र गेसाजीवि सम्प्रणमति हीरासा धरमासा माडगडी।

३८३ (२८८) साके १५७४ चैत्र सुधी ५ आल्वा। जगस वाल्वान्त-पुसा त्याचे भाऊ गोनसा समसनी धर्म वत्सल भा ॥

३८४ (२८९) सक १५७४ चैत्र वद १० प। जीनाषा सुत जीनदास

३८५ (२९०) चैत्र वदी ६ पं। सक १५७४ सा। अ-लीसा जात्रा सफल ॥

३८६ (२९१) श्री काष्टसङ्घ माडवगडी १५७७ मनमथ नाम संवदसरे कार्तीक वदी १५ हीरासा घुमाईल पुत्र धरमासा ईराई पुत्र सानसा व हीरासा वपतगडेसा वप दमा कापे जात्रा सफल माताई चे जात्रा ॥

३८७ (२९२) सके १५७७ मनमथ नाम संवत्सरे कार-तिक वदी पाडिव १ वलीचाँ मारमा काळावा मारमा जीवामा जीवाजी पाहो घानयजी वानदीका जामखेडकर साता कातीमा करका जत्रा।

३८८ (२९३) सके १६७४ चै. वदी ६ धपाइसा मानीकमा जत्रा सफली ॥

३८९ (२९४) १७६४ सुरजन साफल

३९० (२९५) सके १७५४ चैत्र वदी ५ जत्र करी सफल

३९१ (२९६) सुपुजीश नेमाजी सामजी सरव योगोई

३९२ (२९७) सके १६४० फालगुन सुदी १ गु. देमामा मानीकसा गविल (कनाड़ो में) देमामा रजा

३९३ (२९८) सके १५८४ वैशाष सुदो ७ श्री काष्टासङ्घे पीतलागोत्रे लपसा पु हीरासा रामासा आशा सफल ।

३९४ (२९९) ब्रह्मसङ्घ सागर पं। जसवन्त ।

३९५ (३००) प गोविन्दा माघ गङ्गाई

३९६ (३०१) संवत् १७१८ वर्षे वैशाष सुदि ७ चन्द्रे श्री काष्टासङ्घे पण्डित

३९७ (३०२) सके १५६८ सावछरे फाग्गुन वदि ६ वदा... .स......पुत्र चौडक...... वायमा... ..भगार......भगु...... छा चौढक......

३९८ (३०३) स्याम्भगजी का जन्माजी का वप

३९९ (३०४) माघ सुदि ६ पेडेक...ग्रा घडे...आश सफल ॥

४२६ (३३१)

अक्कन बस्ति में पार्श्वनाथ की मूर्त्ति पर

श्री-मूलसङ्घ-देशिगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दान्वयके
सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती **नयकीर्त्ति**-मुनीश्वरो भाति ॥१॥
तच्छिष्योत्तम-बालचन्द्र-मुनिप-श्री-पाद-पद्म-प्रिया
सर्व्वोर्व्वी-नुत-चन्द्रमौलि-सचिवस्यार्द्धाङ्ग-लक्ष्मीरियं ।
आचाम्बा रजताद्रि-हार-हर-हासोद्यद्यशो-मञ्जरी-
पुञ्जीभूत-जगत्त्रया जिन-गृहं भक्त्या मुदाकारयत् ॥२॥

४२७ (३३२)...तातीराज सुवीपरा...पमपरेन

४२८ (३३७) श्रीमत्पण्डिताचार्य्य गुड्डि देवराय
महारायर राणि भीमादेवि माडिसिद
शान्तिनाथ स्वामि श्री ॥

४२९ (३३८) श्रीपण्डितदेवर गुड्डि बसताथि माडि-
सिद वर्द्धमान स्वामि श्री ॥

४३० (३३९)

मङ्गायि बस्ति के द्वितीय दरवाजे की पाखट पर

स्वस्ति श्री मूलसङ्घ देशियगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दा-
न्वय श्रीमद्-अभिनव-चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्य्यर शिष्य

सम्यक्त्वचूडामणि गायपात्र-चूडामणि बेलुगुलद मङ्गायि माडिसिद त्रिभुवनचूडामणि येम्ब चैत्यालयके मङ्गल-महा श्री श्री श्री ॥

[श्री मूलसङ्घ देशिय गण, पुस्तक गच्छ, कोण्डकुन्दान्वय के अभिनव चारुकीर्ति पण्डिताचार्य के शिष्य बेलुगुलवासी सम्यक्त्व चूडामणि मङ्गायि द्वारा निर्मापित त्रिभुवन चूडामणि नामक चैत्यालय का मङ्गल हो।]

४३१ (३४८) .. ..ठनं ...शासने...परोच
.....रय . दुधु......नुडि... ....
लान्तरक...ग्रायदेवर वरिमध्य.......स्य
...दाता . .. .वतिसप्य ....
अभयनन्दि .. .. सिद्धान्ति देवर
देव ....ग्रान्तिदेवर.........
वचन्द्र ... .सुरकीर्त्ति त्रैवि... ..
चन्द्र भट्टा . ..गुणचन्द्र

.........भट्टारक.........भट्टा-
रकर.... . कटका......व

... .व कमल.........प्रह
. .. .ग्याहकल्पवृक्ष यासु
पू...य......सिंघवि...ककों...
......दु......यांगि विल

.........र्द श्रीमा.........तथा
त्मक तत्र......वे ॥ श्रीकु.........पव
......ताय............रमख......म
अन्वयाभिधान अभिनव स्वार प पवु...
...चक्रवर्त्ति

......मार...........त्यर्थे...
.... गु.............
....
...क्षपवि.........

४३२ (३५०) पिङ्गल-स......व ५ सु स.........
नाथ पुत्त.........न्वान्वयव.........
सि पण्डिताचा......तरकरगु......र
मरवलिगे कि......त्रिपुर वन.........
मि संण्टिपर.........येजुगुलके व

४३३ (३५१)

पुर्णया की सनद जो कागज पर लिखी हुई येरगुल के मठ में है

गुरु-संवत्सरद फाल्गुन ब ८ बुधवारदलु श्रीमत्
पूर्वदनाद किरकारि साबाजि नवूदैयर वलि बयुद्दिल कार्य

[धर्मस्थल के कोमार हेग्गडि ने आकर कृष्णराज वडयर के समय की एक सनद पेश की जिसमें बिळँरि तालुका के कवालु नामक ग्राम का बेल्गुल के चिक्कदेवराय के समीप की दानशाला के हेतु दान दिये जाने का उल्लेख था। इसी सनद के अनुसार उक्त तिथि को पूर्णय्य ने यह सनद दे दी कि उक्त ग्राम की आय, जो उस समय ८० वराह थी, उक्त दानशाला और बेल्गुल के मठ के हेतु काम में लायी जाय। भविष्य में आय में जो वृद्धि हो वह भी इसी हेतु खर्च की जाय यह सनद उक्त तिथि को सरकारी दफ्तर में नकल कर ली गई।]

४३४ (३५४)

मुम्मडि कृष्णराज ओडेयर की सनद उसी मठ में कागज पर

श्रीकण्ठाच्युत-पद्मजादि-द्विपद्-वक्त्रोद्य-तेजःछटा-
सम्भूतामतिभीषण-प्रहरण-प्रोद्भासि बाहाष्टकां।
गर्जत्-सैरिभ-दैत्य-पातित-महा-शूलां त्रिलोकी-भय-
प्रोन्माथ-व्रत-दीक्षितां भगवतीं चामुण्डिकां भावये ॥१॥

निदानं सिद्धानां निखिल-जगतां मूलमनघं
प्रमाणं लोकानां प्रणय-पदमप्राकृतगिरां।
परं वस्तु श्रीमत् परम-करुणासार-भरितं
प्रमोदानस्माकं दिशतु भवतामप्यविकलं ॥ २ ॥

हरेर्लीला-वराहस्य दंष्ट्रा-दण्डस्स पातु नः।
हेमाद्रि-कलशा यत्र धात्री छत्र-श्रियं दधौ ॥ ३ ॥

नमस्तेऽस्तु वराहाय लीलयोद्धरते महीं ।
खुर-मध्य-गतो यस्य मेरुः कणकणायते ॥ ४ ॥
पातु श्रीणि जगन्ति सन्ततमकूपाराम्बराशुद्धरन्
क्रीडा-क्रोड-कलेवरस्य भगवान्यस्यैक-दंष्ट्राङ्कुरे ।
कूर्मः कन्दति नालति द्विरसनः पत्रन्ति दिग्दन्तिनो
मेरुः कोशति मेदिनी जलजति व्योमापि रोलम्बति ॥५॥

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय-शालिवाहन-शक वर्षङ्गलु १७५२ नन्द वर्तमान-विकृति-नाम-संवत्सरद श्रावण ब० ५ सोमवारदलु आत्रेय-गोत्र आश्वलायन-सूत्र ऋक्शाखा-नुवर्तिगलाद चिक्कदेव-कृष्णराज-ओडेयर अवर पौत्रराद चामराज-ओडेयरवर पुत्रराद श्रीमन् समस्त-भूमण्डल-मण्डनायमान-निखिल-देशावतंस-कर्नाटक-जनपद-सम्पदधिष्ठानभूत श्रीम-महीशूर-महा-संस्थान-मध्य-देदीप्यमानाखिलकला-कलानिधि-पूर्ण-चन्द्रायमान-राज-धिविपाल-प्रमुख- निखिल-राजाधिराज-महाराज-चक्रवर्ति-मण्ड-लानुभूत-दिव्य-रत्न-सिंहासनारूढ श्रीमद्-राजाधिराज-राज-परमेश्वर प्रौढ-प्रतापाप्रतिम-वीर-नरपति बिरुदें-अम्बर-गण्ड नांके-वीर यदु-कुल-पयःपारावार-कलानिधि शङ्ख-चक्राङ्कुश-कुठार-मकर-मत्स्य-शरभ-साल्व-गण्ड-भेरुण्ड-धरणीवराह हनुमद्-गरुड-कण्ठीरवाद्यनेक-बिरुदाङ्कितराद महीशूर श्री कृष्णराज-ओडेय-र अवरु बेळ्गुळद चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्यर अवरिगे अवर बेळ्गुळद देवस्थानगळ पडितर-दीपाराधने मुन्ता दानादि-केलसद भग नडेया बहुदि खोडु श्रीम-दान-शासन-क्रमदिन्दरे ।

किक्करि-तालुक्कु श्रवणबेळगुल दक्षिणद दोड्ड-देवरु १ पश्चिमद चिक्करे-देवस्थान ७ चिक्कबेट्टद मेले यिरुव देवस्थान १६ ग्राम-दक्षिरुव देवस्थान ८ सहा देवस्थान ३२ के सह पडितर-दीपाराधने-वगैरे नडेयुव नगदु तस्तीकु १२०-शिवायि चारुकीर्त्ति पण्डिताचार्य मठक्के नडयुव कब्बालु-ग्राम १ यिदरल्लि पडितर-दीपाराधनेगे मालुवदिक्षवाद्दरिन्द मठक्के नडेयुव कब्बालु-ग्राम १ यिदरल्लि पडितर-दीपाराधनेगे मालुव-दिक्षवाद्दरिन्द मठक्के नडेयुव कब्बालु ग्राम मात्र कार्य माडिसि पडितर दीपाराधने नडेयुव बग्ये श्रवण बेळगुळ ग्राम १ उत्तेनहळ्ळि ग्राम १ होसहळ्ळि ग्राम १ यी-गुरु-ग्रामवन्नु सर्व्व-मान्यवागि अप्पणे-कोडिसुवेकेन्दु अरमने समुखद लक्ष्मी-पण्डितरु हजूरल्लरिके-माडिकोण्डद्दरिन्द सह नगदु तस्तीकु मोचोप माडिसि यिद्द यी-मूरु-ग्राम-गळन्नु सह मदरि देवस्थानगळ पडितर-दीपाराधने मुन्ताद बग्ये चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्य मठद इवालु-माडिकोट्टु ई-ग्रामगळ बेरीजु पच्चमालु हुट्टुवळि पटि कलुदिसुवन्ते आज्ञे मजकूर ग्रामीळगे निरूपमप्पणे-कोट्टिद्द मेरे ग्रामीळन वजु मोहर दस्तर दाखले नोमि अर्जिवल्लि मजकूरवागि बन्द पट्टि परामरिसि अर्दले-माडिसिरुव यिवर बेरीजु (　　) कमबा श्रवण बेळगोळ ग्राम असलि १ वाग्तने कोप्पलु २ कंरे १ कई २ के सहा बेरीजु (　　) पैकि बजा आरि विना-मवि-

(यहाँ तीनों ग्रामों का आय का पांच माश का पूरा ब्यारा दिया है)

यी-मेरे यिरुव ग्रामगलु यिदर दाउरु-ग्राम करे कट्टे मुन्ताणि मदरि बेळगुळदयिरुव देवु-देवरु मुन्तागि ३२ देवस्थान मळवूरु-बेट्टद मेले यिरुव देवस्थान १ सहा मूवत्त-मूरु-देवस्थानद पडितर दीपाराधने रथोत्सव मुन्ताद वग्ये यी-देवस्थान गलिगे वर्षंप्रति दागदेजि आगतककद् माडिसतकक वग्ये सहा आत्रेय-सगोत्र आश्वलायन-सूत्र ऋक्-शाखानुवर्ति गळाद चिक्कदेव-कृष्णराज-वडयरवर पौत्रराद चामराज-वडयरवर पुत्ररादश्रीमत्समस्त-भूमण्डल-मण्डलायमान-निखिल-देशावतंस-कर्नाटक जनपद सम्पदधिष्ठानभूत श्रीमन्-महीसूर-महासंस्थान-मध्य-देदीप्यमानाविकल-कलानिधि-कुल-क्रमागत-राज-क्षिति-पाल-प्रमुख-निखिल-राजाधिराज-महाराज-चक्रवर्ति-मण्डलानु-भूत-दिव्य-रत्न-सिंहासनारूढ श्रीमद् राजाधिराज राज परमेश्वर प्रौढ-प्रतापाप्रतिम-वीर-नरपति बिरुदन्तेम्बर गण्ड लोकैक-वीर यदु-कुल-पयः-पारावार-कलानिधि शङ्ख चक्राङ्कुश-कुठार-मकर-मत्स्य-शरभ-साल्व-गण्डभरुण्ड-धरणीवराह हनुमद्-गरुड-कण्ठीर-वाद्यनेक-बिरुदाङ्कितराद महीसूर श्री-कृष्णराज-वडयरवरु सर्वमान्यवागि अप्पणे-कोडिसि-धेवेयाद-कारण यी-ग्रामगलनु यी-विकृति-संवत्सरदारभ्य मदद हवालु-माडिकोट्टु निरुपाधिक-सर्वमान्य-वागि नडसिकोण्डु बरुवन्ते तालुकु मजकूर आमीलरिगे सन्नदु अप्पणे-कोडिसिधोवागि सदरि मन्नदिन मेरे यी-मूरु-ग्रामगल यद्दे चतुस्सीमा-वळगण गद्दे बेद्दलु मने दण कॅम्बु-नेल्लु डप्पिन मोल यावत्तु-पैरु पुर वर्ग बेळ-काणिके जाम-

काणिकें गुरु-काणिके काणिके बेडिके कन्नियद पोम्मु मार्ग-पोम्मु हट्टि-पोम्मु मार्ग-करणपडि सुङ्क पोम्मु जाति-कूट समयाचार हुल्लु हण घरादाय हेरादाय सीगे मडि पवङ्ग पोप्पळिगिड-गावलु ब्राह्मण-निवेशन शूद्र-निवेशन सोरिसन तोट विंडेल्ल श्रीगन्ध हेरताद मर वलि फल-वृत्त मदिक मुन्ताद समकल स्वाम्यवन्नु रूढिसि कोल्लुत्ता श्रवण बेळगुळ-ग्रामदलि नेरेयुव सन्ते-सुङ्कद हुट्टु वलियन्नु तेग दु कोल्लुत्ता यो-देवजिनरिगे देवर सेवेगे उपयोग-माडिकोल्लुत्ता बरुवदु यो-ग्रामगळलि होमदागि केरे कट्टे काल्वे मयो मुन्तागि कट्टिसि वाके-बगु मुन्तागि याव वाभिनलिन यंनु हेच्चु हुट्टु वलि माडि-कोण्डाग्य मदरि देवर सेवे मुन्ताद्दक्के उपयोग-माडिकोल्लुवदु यन्दशागि श्रवण बेळगुळद चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्य मठक्के आत्रेय-सगोत्र आश्वलायन-सूत्र ऋक-शाखानुवर्त्ति-गळाद चिक्कदेव-कृष्णराज वडेयरवर पौत्रराद चामराज-वडेयरवर पुत्रराद श्रीमत्समस्त भूमण्डल-मण्डनायमान - निखिल - देशावतंस - कर्नाटक - जनपद सम्पदधिष्ठानभूत-श्रीमन्महीशूर-महासंस्थान-मध्य-देदीप्यमानगिरि कल - कलानिधि - कुल - क्रमागत-राज - क्षितिपाल-प्रमुख - निखिल राजाधिराज-महाराज चक्रवर्ति-मण्डलानुभूत-दिव्य-रत्न-सिंहासनारूढ श्रीमद्-राजाधिराज राज-परमेश्वर प्रौढ़-प्रतापाप्रतिम-वीर-नरपति बिरुदन्तेम्बरगण्ड लोकैक-वीर यदु-कुल-पयः-पारावार-कलानिधि शङ्ख-चक्राङ्कुश-कुठार-मकर-मत्स्य-शरभ-साळ्व-गण्डभेरुण्ड-धरणी-वराह-हनूमद्गरुड-कण्ठीरवाद्यनेक-विरुदाङ्कि-

वराद महीशूर मोकृष्णराज-वडयर वरु वरुगुलद देवस्थान गल पडिवर दीपाराधने रथोत्सव वर्षप्रति आगतक्कू दाग-दोजि-कंबमद धर्म्म सदा वरेसि कोट्ट सर्वमान्य-ग्राम-साधन सहि ॥

आदित्यचन्द्रावनिलोऽनलश्च
द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च ।
अहश्च रात्रिश्च उभे च सन्ध्ये
धर्मश्च जानाति नरस्य वृत्तं ॥ ६ ॥
स्वदत्ताद्द्विगुणं पुण्यं परदत्तानुपालनं ।
परदत्तापहारेण स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ॥ ७ ॥
स्वदत्ता पुत्रिका धात्री पितृ दत्ता सहोदरी ।
अन्यदत्ता तु माता स्याद् दत्तां भूमि परित्यजेत् ॥८॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टि वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ ९ ॥
मद्वंशजाः परमहीपतिवंशजा वा
ये भूमिपास्सततमुज्ज्वलधर्मचित्ताः ।
मद्धर्ममेव सततं परिपालयन्ति
तत्पादपद्मयुगलं शिरसा नमामि ॥ १० ॥

व तारीख़ ८ ने माहे आगिष्ट सन् १८४० ने यिसवि सत्त आरमने सुबराय मुनशि हजूरु पुरनूरु सदरि अपले-कोडि-सिरुव मेरिगें असलि-ग्राम मूरु दाखलि-ग्राम यरडु करे वन्दु कटे मूरक्के सह जारि यिनामवि खिराथि सालियाना कण्ठि-राथि वर्भैनूरु-अरुवत्तारु वरहालु अ्यात्रे बेरीजु वस्त्र यी-ग्राम-

श्री चारुकीर्त्ति-गुरुराडन्तेवासित्वमीयुषाम् ।
मनोरथ-समृद्धयै सन्मतिसागर-वर्णिनां ॥ ६ ॥
धरणेन्द्र शास्त्रिणा शुम्भत्कुम्भकोणं वपुषा ।
अनन्तनाथ-बिम्बोऽयं स्थापितस्तन्त्रविद्विदः ॥ ७ ॥
श्री-पञ्चगुरुभ्यो नमः ।

४३६ (३५६)

उसी मठ में गोम्मटेश्वर की प्रभावलि की पीठ पर

(शक सं० १८८०)

(ग्रन्थ और तामिल)

श्री श्री-गोमटेशाय नमः

अशीत्यधिक-सप्त-शतोत्तर-सहस्र-समुन्मित-शालिवाहन-शक-वर्षे एकविंशत्यधिक-पञ्चशतोत्तर-द्विसहस्र-प्रमित-श्रीमद्वति महावीर-वर्द्धमान-तीर्थङ्कर-मोक्षगताब्दे एकपञ्चाशदुन्मित-प्रभवादि-संवत्सरे-मति प्रवर्तमान-कालयुक्ति नाम-संवत्सरे दक्षिणायने ग्रीष्मकाले आषाढ-शुक्ल-पूर्णिमायां शुभतिथौ श्री-दक्षिणकाशी-निर्विशेष-श्रीमद्-बेलगुल-भण्डार-श्रीजिनचैत्यालये नित्य-पूजा-श्रीविहारमहोत्सवार्थं श्रीमच्चारुकीर्त्ति पण्डिताचार्य-वर्य्यान्तेवासि-श्री-सन्मतिसागर-वर्णिना अर्थोद्-संचिद्रव्यं श्रीमद्-गोमटेश्वर-स्वामि-प्रतिकृतिरिय श्रीमत्प्रभापरीमधिवसद्रत्न

गोपाल-भादिनाथ-श्रावकाभ्यां प्रतिष्ठापूर्वकं स्थापित ॥ भद्रं भूयात् ॥

४३७ (३५७)

नवदेवता मूर्त्ति के पृष्ठ भाग पर

(ग्रन्थ और तामिल)

श्री शालिवाहन शकाब्दाः १७८० प्रभवादि गताब्दाः ५१ लु शेल्लानिन्र कालयुक्ति नाम संवत्सर आषाढ़ शुद्ध पूर्णिमा-तिथियिल् श्रीमद् बेल्गुलमठत्तिल् श्रीमत् नित्य पूजा निमित्तं श्रीमत्पञ्चपरमेष्ठि प्रतिबिम्बमानदु तञ्जनगरं पेरुमाल् श्रावकराल् संयिवत्त उभयं ॥ वर्द्धतां नित्य मङ्गलं ॥

[बेल्गुल के मठ में नित्य पूजन के लिए तञ्ज नगर के पेरमाल श्रावक ने यह पञ्चपरमेष्ठी की मूर्त्ति उक्त तिथि को अर्पित की।]

४३८ (३५८)

गणधर मूर्त्ति के पृष्ठ भाग पर

(ग्रन्थ और तामिल)

वृषभसेन गणधरन् भरतेश्वर चक्रवर्त्ति गौतमगणधरन् श्रेणिक महामण्डलेश्वरन् (कन्नड में) कल्लसदल्लिरुव पदुमैयन धर्म्म।

४३८ (३५८)

पञ्चपरमेष्ठि मूर्त्ति पर

(ग्रन्थ और तामिल)

बेलिगुल मटत्तुक्कु मन्नार्कोविल् चिन्नु मुदलियार् पेण्शादि पद्मावतियम्माल् उभयं शुभं ।

[मन्नार्कोविल के चिन्नुमुदलियार् की भार्या पद्मावतियम्माल् ने बेल्गुल मठ को अर्पित की]

४४० (३६०)

चतुर्विंशति तीर्थङ्करमूर्त्ति के पृष्ठ भाग पर

(ग्रन्थ और तामिल)

स्वस्ति श्री बेल्गुलमठस्य तच्चूर-मल्लिकाधर्मः

४४१ (३६१)

अनन्ततीर्थंकर प्रभावली के पृष्ठभाग पर

(ग्रन्थ और तामिल)

श्री शालिवाहन शकाब्दाः १७८० श्रीमत पश्चिमतीर्थं-कर मोक्षगताब्दः २५२१ प्रभवादिगताब्दः ५१ लु शेल्वानिन्र कालयुक्तिनामसंवत्सर आषाढशुद्धपूर्णिमातिथियिल् श्रीमद्बे-ल्गुलनगरभण्डारजिनालयत्तिल् अनन्तवृतोद्यापनानिमित्तं श्री

वृषभाद्यनन्तवीर्थंकरपर्य्यन्वचतुर्दशजिनप्रतिबिम्बमानदु तज्ञ-नगर शत्तिर अप्पायु श्रावकराज् शेरिसद उभयं वर्द्धतां नित्यमङ्गलं ॥

[वेंगुळ नगर की भण्डार वस्ति में अनन्तमत के पूर्ण होने पर उक्त तिथि को तज्ञनगर के शत्तिरम् अप्पाउ श्रावक ने प्रथम चतुर्दश तीर्थंकरों की मूर्त्तियाँ अर्पित कीं ।]

४४२ (३६३) श्री चामुण्डरायन बस्तिय सीमे ।

४४३ (३६४) श्री नगर जिनालयद करे ।

४४४ (३६५) श्री चिकदेवराजेन्द्रमहास्वामियवरकल्याणि

४४५ (३६६) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल वलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णु-वर्द्धन होय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरो-त्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क...

४४६ (३६७)

जक्किकट्टे के दक्षिण में एक चट्टान पर जिन-मूर्त्ति के नीचे

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डि दण्डनायक-गङ्गराजनत्तिगे दण्डनायक-बोप्पदेवन

वृषभाद्यनन्तवीर्थ्यकरपर्य्यन्तचतुर्दशजिनप्रतिबिम्बमानदु तद्-नगर' शान्तिर' अप्पावु श्रावकराल् शेडिश्त्त भमयं वर्द्धतां नित्यमङ्गलं ॥

[वेलुळ नगर की भण्डार वस्ति में अनन्तव्रत के पूर्ण होने पर उक्त तिथि को तद्रनगर के शान्तिर अप्पाउ श्रावक ने प्रथम चतुर्दश तीर्थंकरों की मूर्त्तियाँ अर्पित कीं।]

४४२ (३६३) श्री चामुण्डरायन वस्तिय सीमे ।

४४३ (३६४) श्री नगर जिनालयद केरे ।

४४४ (३६५) श्री चिक्कदेवराजेन्द्रमहास्वामियवरकल्याणि

४४५ (३६६) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर' त्रिभुवनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णु-वर्द्धन होरसलदेवर विजयराज्यमुत्तरो-त्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क...

४४६ (३६७)

जक्किकट्टे के दक्षिण में एक चट्टान पर जिन-मूर्त्ति के नीचे

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डि दण्डनायक-गङ्गराजनत्तिगे दण्डनायक-बोप्पदेवन



वृषभाद्यनन्ततीर्थंकरपर्य्यन्तचतुर्दशजिनप्रतिबिम्बमानदु तत्-नगर' शान्तिर' ग्रप्पायु श्रावकराज् गेविसि उभयं वर्द्धतां नित्यमङ्गलं ॥

[ये गुरु नगर की भण्डार बस्ति में अनन्तव्रत के पूर्ण होने पर उक्त तिथि को तत्नगर के शान्तिरस् अप्पाउ श्रावक ने प्रथम चतुर्दश तीर्थंकरों की मूर्तियां अर्पित कीं।]

४४२ (३६३) श्री चामुण्डरायन बस्तिय सीमे।

४४३ (३६४) श्री नगर जिनालयद करे।

४४४ (३६५) श्री चिक्कदेवराजेन्द्रमहास्वामियवरकल्याणि

४४५ (३६६) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर' त्रिभुवनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णु-वर्द्धन होय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरो-त्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क'...

४४६ (३६७)

जक्किकट्टे के दक्षिण में एक चट्टान पर जिन-मूर्त्ति के नीचे

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

श्रीमूलसङ्घद देसियगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डि दण्डनायक-गङ्गराजनत्तिगे दण्डनायक-बोप्पदेवन

वायि अळमव्वे मोक्ष-तिळकमं नोन्तु नोम्परे नयपाद-देवर माडिसि प्रतिष्ठेय माडिसिदरु मङ्गलमहा श्री श्री ।

४४७ (३६८) स्वस्ति श्रीमत्सुभचन्द्रसिद्धान्तिदेवर गुड्डं श्रीमनु महाप्रचण्डदण्डनायक गङ्ग-पय्यगळत्तिगे शुभचन्द्र देवर गुड्डि जक्कि-मव्वे केरेय कट्टिसि नयणन्द देवर माडि-सिदरु मङ्गलमहा श्री श्री ॥

४४८ (३६९) पुट्टसामि चेन्नणन कोळद मार्ग ।

४४९ (३७०) चेन्नणन कोळद मार्ग ।

४५० (३७१) पुटसामि सट्टर मग चेन्नणन हालुगोळ ।

४५१ (३७२) चेन्नणन अमृतकोळ ।

४५२ (३७३) चेन्नणन गङ्ग बावनो कोळ ।

४५३ (३७४) श्री पुट्टसामि सट्टर मकळु चिक्कणन तम्म चेन्नणन आदि-वर्द्धद कोळ जय जया ।

४५४ (३७६) श्री गोम्मट देवर अष्ट विधार्च्चनेगं,. हिरिय ...पिकुल.......द...लजन कयिक्कन्तिय ...जबिट्ट दत्तिय श्रीमन्महा...चार्य्यरु हिरिय नयकीर्त्ति-देवरु चिक्कनय-कीर्त्ति देवरु आचन्द्रार्क्कतारवरं सलिसु-त्तिहरु मङ्गळमहा श्री श्री श्री क्षयसंवत्सरद चैत्र सुद्ध ७ आ । श्रीमन्महामण्डळाचार्य्यरु हिरियनयकीर्त्तिदेवर सिप्यरु चन्द्रदेवर .

सुवाजपद चतुर्विंशतितीर्थंकररिगे.....रि
कस्यलु सामनद्द सारिते......

[यह लेख अधूरा है। इसके ऊपर और नीचे का भाग बिल्कुल ही मिट गया है। लेख में चतुर्विंशति तीर्थंकरों की बसदि पूजन के लिए कुछ निधि की कुछ भूमि के दान का उल्लेख है। इस दान के प्रेरक नयकीर्ति और लघु नयकीर्ति भाचन्द्रदेवार्य विमल रहे।]

४५५ (५८०)

मठ में वर्द्धमान स्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(ग्रन्थ और तामिल)

श्रीवर्द्धमानायनम । शालिवाहन शकाब्द: १३८० श्री-मत्प्रथिमतीर्थंकरमोक्षगताब्द: २५२१ प्रभवादिगताब्द: ५१ नु-शेख्रानिन्र कालयुक्ति नाम संवत्सर आषाढ़ शुद्ध पूर्णिमा तिथि-यिल् श्रीमद् बेल्गुमठत्तिल् नित्यपूजा-निमित्तमाग श्री सन्मति-सागरवर्णिगलुडैय अभीष्टसिद्धयर्थं श्रीवीर-वर्द्धमान स्वामिप्रति-बिम्बं कश्चिदंशं शोणिमयम्यास्क अप्पामानियाल् सैय्वित्त उनयं एधवा नित्यमङ्गलं ॥

४५६ (५८१)

चन्द्रनाथस्वामी की प्रभावली पर

(ग्रंथलिपि में)

(शक सं० १५७८)

श्री चन्द्रनाथाय नमः ॥

^ अष्टा-सप्तत्यधिकासप्त-शतोत्तर-सहस्रकाद्गुणिते ।

शालीवाहन-शकनृप-संवत्सरके समायाते ॥ १ ॥
एकाम-विंशति-युवात्य-शतसहस्रयुग्मकाद्गुणिते ।
श्री-वर्द्धमान-जिनपति-मोक्ष-गताब्दे च सञ्जाते ॥ २ ॥
एकन्यूनशतार्धत्रिभवादिगताब्दके च संगुणिते ।
एवं प्रवर्तमाने नन्दनामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥
मीने मासि सिते पक्षे पूर्णिमायान्तिथौ पुनः ।
भवाक्-कार्योतिविख्यात-वेल्गुले नगरे मठे ॥ ४ ॥
श्रीचारुकीर्ति-गुरुराडन्तेवासित्वं ईयुषां ।
मनोरथ-समृद्धयै सन्मतिसागर-वर्णिनां ॥ ५ ॥
कुम्भकोण-पुरस्था श्री-नेवका श्राविका शुभा ।
स्थापयामास सद्विम्बं चन्द्रनाथ-जिनेशिनः ॥ ६ ॥
प्रतिष्ठा-पूर्वकनित्य-पूजार्थं स्वोपलब्धये ।
पञ्च-संसार-कान्तार-दहनाय शिवाय च ॥ ७ ॥

भद्रं भूयात् ।

४५७ (४८२)

नेमिनाथस्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(ग्रन्थ अक्षरों में)

(शक सं० १७७८)

श्री नेमिनाथाय नमः ।
अष्टासप्तत्यधिकात्सप्तशतोत्तरसहस्रकाङ्कृिते ।
शालीवाहनशकनृपसंवत्सरके समायाते ॥ १ ॥

सुवालयद चतुर्विंशतीर्थंकररिगे......ति
कय्यलु शासनद शारिगे......

[यह लेख अधूरा है। इसके ऊपर और नीचे का भाग घिस [illegible] ही गिर गया है। लेख में चतुर्विंशति तीर्थंकरों की वसदि [illegible] के लिए एक तिथि को कुछ भूमि के दान का उल्लेख है। इस दान के [illegible] नयकीर्ति और लघु नयकीर्ति आचार्य [illegible]]

४५५ (४८०)

मठ में वर्द्धमान स्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(मद्य और तामिल)

श्रीवर्द्धमानाय नमः । शालीवाहन शकाब्दः १७२० श्रीमदन्तिमतीर्थंकरमोक्षगताब्दः २५२१ प्रभवादिगताब्दः ५१ [illegible] [illegible] नाम संवत्सर [illegible] [illegible] श्रीमत् [illegible] निजपूजा-निमित्तमाग [illegible] [illegible] अभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीवीर-वर्द्धमान स्वामि [illegible] [illegible] [illegible] ॥

४५६ (४८२)

चन्द्रनाथस्वामी की प्रभावली पर

(पंचलिपि में)

(शक सं० १७८८)

श्री चन्द्रनाथाय नमः ॥

[illegible]

शालीवाहन-शकनृप-संवत्सरके समायाते ॥ १ ॥
एकाम्र-विंशति-युतात्पञ्चशतसहस्रयुग्मकाद्गुणिते ।
श्री-वर्द्धमान-जिनपति-मोक्ष-गताब्दे च सञ्जाते ॥ २ ॥
एकन्यूनशतवार्धिरसभवादिगताब्दके च सगुणिते ।
एवं प्रवर्त्तमाने नन्दनामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥
मीने मासि सित पक्षे पूर्णिमायान्तिथौ पुनः ।
श्रवाक्-काशीतिविख्यात-बेल्गुले नगरे मठे ॥ ४ ॥
श्रीचारुकीर्त्ति-गुरुणामन्तेवासित्वं ईयुषा ।
मनोरथ-समुद्रे सन्मतिसागर-वर्णिना ॥ ५ ॥
कुम्भकोण-पुरस्था श्री-नेक्का श्राविका शुभा ।
स्थापयामास सद्बिम्ब चन्द्रनाथ-जिनेशिनः ॥ ६ ॥
प्रतिष्ठा-पूर्वकमित्य-पूजार्थं स्वोपलब्धये ।
पञ्च-संसार-कान्तार-दहनाय शिवाय च ॥ ७ ॥

भद्रं भूयात् ।

४५७ (४८२)

नेमिनाथस्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(मन्थ बसदी में)

(शक सं० १७७८)

श्री नेमिनाथाय नमः ।
अष्टासप्तत्यधिकासप्तशतोत्तरसहस्रकाद्गुणिते ।
शालीवाहनशकनृपसंवत्सरके समायाते ॥ १ ॥

सुवालयद चतुर्व्विंशतीर्थकरिगे......रि
कय्यलु सासनद सारिगे......

[यह लेख अधूरा है। इसके ऊपर और नीचे का भाग बिल्कुल ही घिस गया है। लेख में चतुर्विंशति तीर्थंकरों की अष्टविध पूजा के लिए उक्त तिथि को कुछ भूमि के दान का उल्लेख है। इस दान के ज्येष्ठ नयकीर्त्ति और लघु नयकीर्त्ति आचन्द्रार्कतारं नियत रक्खें।]

४५५ (४८०)

मठ में वर्द्धमान स्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(ग्रंथ और तामिल)

श्रीवर्द्धमानायनमः । शालीवाहन शकाब्दः १७८० श्रीमत्पश्चिमतीर्थङ्करमोक्षगताब्दः २५२१ प्रभवादिगताब्दः ५१ शुशोद्यानिन्द्र कालयुक्ति नाम संवत्सर आषाढ़ शुद्ध पूर्णिमा तिथियिल् श्रीमद् बेल्गुमठत्तिल् नित्यपूजा-निमित्तमाग श्री सन्मतिसागरवर्णिगलुदैय अभीष्टसिद्धयर्थं श्रीवीर-वर्द्धमान स्वामियवेबिम्बं कश्चिद्दंशं शेणियम्बाक्कं ग्रामासामियाल् सेदित्त सर्व्वपधवा नित्यमङ्गलं ॥

४५६ (४८१)

चन्द्रनाथस्वामी की प्रभावली पर

(ग्रंथलिपि में)

(शक सं० १७७८)

श्री चन्द्रनाथाय नमः ।

श्रहा-मस्तवविकारमम्ल-शतोपर-सहस्रकाङ्गुलिने।

शालीवाहन-शकनृप-संवत्सरके समायाते ॥ १ ॥
एकाम-विंशति-युतात्प-शतसहस्रयुग्मकाद्गुणिते ।
श्री-वर्द्धमान-जिनपति-मोक्ष-गताब्दे च सम्प्राप्ते ॥ २ ॥
एकन्यूनपञ्चाशत्रिभवादिगताब्दके च सगुणिते ।
एवं प्रवर्त्तमाने नन्दनामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥
मीने मासि सिते पक्षे पूर्णिमायान्तिथौ पुनः ।
प्रवाक्-काशीतिविख्यात-बेल्गुले नगरे मठे ॥ ४ ॥
श्रीचारुकीर्त्ति-गुरुपादन्तेवासित्वं ईयुषा ।
मनोरथ-समृद्धर्थं सन्मतिसागर-वर्णिना ॥ ५ ॥
कुम्भकोण-पुरस्था श्री-नेमका श्राविका शुभा ।
स्थापयामास सद्बिम्बं चन्द्रनाथ-जिनेशिनः ॥ ६ ॥
प्रतिष्ठा-पूर्वकनित्य-पूजार्थं श्रेयोपलब्धये ।
पञ्च-संसार-कान्तार-दहनाय शिवाय च ॥ ७ ॥

भद्रं भूयात् ।

४५७ (४८२)

नेमिनाथस्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर

(मन्थ बसदी में)

(शक सं० १७७८)

श्री नेमिनाथाय नमः ।
अष्टासप्तत्यधिकसप्तशतोत्तरसहस्रकाद्गुदिते ।
शालीवाहनशकनृपसंवत्सरके समायाते ॥ १ ॥

४५९ (४८४)

गरगट्टे विजयराज्यय्य के घर जिनमूर्त्ति के पाद पीठ पर

श्रीमद् देवणन्दि भट्टारकर गुड्डि मालब्बे कडसववादिय तीर्त्थद वसदिगे कोट्टलु

४६० (४८५)

गरगट्टे चन्द्रय्य के घर जिनमूर्त्ति के पादपीठ पर

श्रीमाणिक्यनन्दि कान्तियरु कडसववादिय तीर्त्थद बसदिगे कोट्टरु

४६१ (४८६) मल्लिसेट्टि । ४६२ (४८७) वीरण्ण

४६३ (४८८) चिक्कण्ण तम्म चेन्नण्ण कोल ।

४६४ (४८९) पुट्टसामि चेन्नण्ण मण्डप कोल तोट ।

४६५ (४९०) चिक्कण्ण त .....चेन्नण्ण कोल ।

४६६ (४९३) हालोरति ।

४६७ (४९४) श्रीजिननाथ पुरद सीमे ।

४६८ (५००)

मठ के दायीं ओर तेरिन मण्डप में रथ पर

शालिवाहन शक १८०२ ने विक्रमनामसंवत्सरद माघ शुद्ध ५ लु वीराजेन्द्रप्पाटेयल्लु इवर रायण्णशेट्टि मक्तिगे जिनमन शंवर्त ।

[वीर राजेन्द्रप्पाटे के रायणसेट्टि की भावज ने प्रदान किया]

एकाग्रविंशतियुतात्पञ्चशतसहस्रयुग्मकाद्गुणिते ।
श्रीवर्द्धमानजिनपतिमोक्षगवाब्दे च सञ्जाते ॥ २ ॥
एकन्यूनशताब्दान्विप्रभवादिगताब्दके च सङ्गुणिते ।
एवं प्रवर्त्तमाने नलनामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥
मीने मासि सिते पक्षे पौर्णमास्यान्तिथौ पुनः ।
अवाक् काशीतिविख्यातबेलगुले नगरे वरे ॥ ४ ॥
भण्डारश्रीजैनगेहे श्रीविहारोत्सवाय च ।
अनन्तभवदावाग्नोशमनाय शिवाय च ॥ ५ ॥
श्रीचारुकीर्त्तिगुरुराडन्तेवासित्वमीयुषां ।
मनोरथसमृद्धर्ं सन्मतिसागरवर्णिनां ॥ ६ ॥
ग्रात्तचणश्रेष्ठिना शुम्भत्कुम्भकोणमुपेयुषा ।
श्रीनेमिनाथबिम्बोऽयं स्थापितस्स प्रतिष्ठितः ॥ ७ ॥

४५८ (४८३)

पण्डित दौर्बलिशास्त्रि के घर शान्तिनाथ मूर्त्ति के पृष्ठभाग पर

(नागरी अक्षरों में)

सं १५७६ व० शा० १४४१ प्र० कर प्र० कु० सद्धिव पौ० मासे श्रोउस० ज्ञा० सोनीसीहा भार्या धर्म्माई नाम्ना पुत्र सो सिद्धारीया श्रेयोह । वि...मासे० शु० प० ६ सोमे श्री शीतलनाथ बिम्बं कारितं । प्र० श्री० वृ० त० पाप । श्रोविद्यासामुस्कुरिभिः ।

४५९ (४८४)

दालाने विजयगच्छ के पास जिनमूर्ति के पाद पीठ पर

सम्वत् देवपाल्मि आचार्य गुरु भावम फलधनवालिक तीर्थंकर प्रतिष्ठित कारिता

४६० (४८५)

दालाने चन्द्रप्रभ के पास जिनमूर्ति के पादपीठ पर

श्रीमच्छीपतक श्रीचन्द्र फलधनवालिक तीर्थंकर श्री दिया कारित

४६१ (४८६) श्रीऋषभदेव । ४६२ (४८७) वीरप्रभ

४६३ (४८८) चिन्तामन तथा पैंसठन काम ।

४६४ (४८९) पुरातन पैंसठन मण्डप काल चोट ।

४६५ (४९०) चिन्तामन व पैंसठन काम ।

४६६ (४९१) दानशाला ।

४६७ (४९२) श्रीजिननाथ पुरुष तीर्थ ।

४६८ (४९३)

मठ के दायीं ओर मंदिर मण्डप में स्तम्भ पर

शालिवाहन शक १८८२ मे विक्रमनामसंवत्सरे माघ, शुद्ध ४ श्री वीतरागचन्द्रप्रभस्य इदं रामचन्द्र प्रतिष्ठितं जिन-मन पंचर्वं ।

[श्री रामचन्द्र के राजमन्दिर की नाका से प्राप्त किया]

श्रवणबेल्गुल के आसपास के ग्रामों के शिलालेख।

जिननाथपुर के लेख

४६८ (३७८)

शान्तीश्वर बस्ती के द्वार पर

स्वस्ति श्रीजागनज...पल्लिय पुनकालर मगं जूनिकश्न वर्म्म मोत्र पेर्म्मडियर मरुलारद गण्ड...सावितरदेव...स...पुग... ..रि......व......लरनडि...र' कादि कोन्तुजाल...गे गङ्गर मोडिन उर' कपेयरं भु...सेमर सुरिगेय कलगमेनिनु रि... विमि जमककेकवन्दर नि...तम मोम्मककलु...गड्डु''गिडिद, त...मम् तुलिद...संक्रान्त......गोलू मरि मत्तड्डेदूर मन्द पेर्कि‌म्ब सि......गिन्ने... .....र.........मा......रपारे . . गुणु तवर...क......अल्लदं

गङ्गर प... . जिनतीर्थेद बा...त्तम्-ममगण्यनु...ग मोड-ग...पड्डरिगे ॥ ...मन्दनाग......निंतमन...वर ...डु गानल्प मन्दम ... गु......शागि......वोर निव-पूअगनदर माडिद ॥...श्रवधिव .....तनग......विर...... ग म .. न . दि महमन्यमने गरवनित्त...तम...दिन वर-नरन ..न मनु..

.....श्रमरिद वेन काम मत... . दर सन्वामवीं ......दिरन......म...ग नड्डन्दवरि...पङ्ग नि...बरिलं .. वरड . नाःमन्नाम वन्तसुपिन...पुकंयनिरि......मार... ......निरं......

[illegible]]

५०० (१०६)

एर्पौ बस्ती के रङ्गमण्डप में एक स्तम्भ पर

[illegible]

[illegible]

५०१ (२८०)

शान्तीश्वर बस्ति में शान्तीश्वर की पीठिका पर

स्वस्ति श्री मूलसङ्घ-देसियगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दा-न्वय [illegible] श्री-माघनन्दि- [illegible] सिद्धान्त-देवर [illegible] शुभचन्द्र-त्रैविद्य-देवर [illegible] [illegible] नन्दि-सिद्धान्तदेव [illegible] [illegible] शान्तिनाथ-देवर प्रतिष्ठेय माडिसिदरु [illegible] मङ्गल

५०२ (२८१) [illegible] मठ [illegible]

५०३ (२८२) श्रीमत् त्रिकालयोगि[illegible]

श्रवणबेल्गुल के आसपास के ग्रामों के शिलालेख।

जिननाथपुर के लेख

४६६ (३७८)

शान्तीश्वर बस्ती के द्वार पर

स्वस्ति श्रीजगनज...बलिय पुनकालर मगं जूनिकवन वर्म्म चोल पेर्म्मडियर मरुलारद गण्ड...सावितरदेव...स...सुग ... ..रि......ल......लरनडि...र कादि कोन्दुजाल...न्द्र गङ्गर बीडिन उर कचेयरं सु...सेमर सुरिगेल कलगमेनितु रि... यिसि जसक्के कवन्दद नि...वन्न मोम्मक्कलु...गसु'''सिडिन्न् व...मल् तुलिद...गेकान्त......गोल् मरि सचहेङ्गर मन्द पेकिनेम्व सि......गिङ्ग... ......र.........सा......रपरि ......गुल् तव्व...क......लल्लदे

गङ्गर प......जिनतीर्थद बा...स्तल्-अमगण्यनु...ॅ चोल-स...पडवरिगे ॥ ...सन्दनाग......निन्नेगजन...इव ...लु यवनल्प चन्दम ... . गु......दागि......यदि जिन-पूजेयनेरदे माडिदं ॥...लगचित्र .....वनग......बिद...... ल स......न . दि महसन्यसनं गदयनिरप...वन्न...दिन वर-नेरय...त मनु...

......अमरिद वेम काम मलं..... रद सन्यासनदि ......दिरन......म...प नेट्टन्दवदि...सङ्ग नि...जविल्ले... यजेद...गाविगलात्म येन्तल् चित्त...कुडंदेयनिरि......मोद... ......विदे......

४७७ (३८६)

उसी ग्राम में एक चट्टान पर

......सि......श्री......भन...... ..गिरे माडि...
......द्यविय..... मुनिराजरिन्द .....विलु ......भरदिन्द
समाधि...मुं नाडु प्रभु मातमु।
नेरदिन्तिल्लकमिदं कोटूरमद्राम्भोराशियु मेरु भू-
धरमुं चन्द्रमुमर्कनुं वसुधेयुं निल्वन्नेगं सल्विने ॥ १ ॥
इन्त ई-धर्ममं किडिसिदवरु गङ्गेय तडियल्लेळ्कोटिमुनीन्द्ररं
कविलेयुं ब्राह्मणरुम कोन्द महापत्तियलु होहरु।

[इस टूटे हुए लेख में किसी दान का उल्लेख है जिसके विच्छेद से गङ्गा के तार पर सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं और ब्राह्मणों की हत्या का पाप होगा]

४७७ (३८७) श्रीमतु सिङ्गयप नायकर कोमरन निरू- [कांबे गौड की भूमि में] पदिन्द वेङ्कन गुरुवप सोवपनोळगाद प्रभुगलुचामुण्डरायन बस्तिगे समर्पिसिद सीमे श्री।

[सिङ्गयप नायक की आज्ञा से वेङ्कन के गुरुवप सोवप आदि 'प्रभुओं' ने यह भूमि चामुण्डराय बस्ति को अर्पण की।]

४७८ (३८८) श्रीविष्णुवर्धन॰ देवर हिरियदण्डनाय गङ्गपय्य स्वामिद्रोह परट्ट श्रीबेलुगु

लिर्दरु श्री मूलसङ्घद अभयदेवरु नाव..
दे तम्मुविपदव...र इह ॥

४७४ (३८३) स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय शालिवाह
शक वरुष १८१२ नेय विरोधि नाम
सवत्सरद वैशाख बहुल पञ्चमिगे
श्रीमद् बेल्गुल निवासियागिर्द मेदमिति
गोत्रजराद श्री बुजबलैय्यनवरिगे निश्रेय
सुखाभ्युदय प्राप्त्यर्थ-वागि प्रतिष्ठेय
माडिसिदं ॥

[यह लेख भरतेश्वर् बलि की प्रतिमा पर है]

४७५ (३८५)

जिननाथपुर में तालाव के निकट एक चट्टान पर

गणाधारय-सवत्सरद श्रावण सु १ । भा । श्रीमन्महाम-
ण्डलाचार्यरुं राज-गुरुगलुमप्प हिरिय-नयकीर्ति-देव
शिष्यरु नय कीर्त्ति-देवरु तम्म गुरुगलु बेक्कनवु माडिसिद पार-
श्विचेत्र-पारिस-देवर अष्ट-विधार्च्चनेगे हिरिय-अक्कियरेप-मोर
हिन्दण नन्दन-बनवासगे गद्दे सलगे २...ष्वंक माडिकोट्ट
मङ्गल-महा श्री श्री श्री ॥

[इस लिपि में महामण्डलाचार्य राजगुरु हिरिय नयकीर्तिदेव के शिष्य नयकीर्तिदेव ने अपने गुरु द्वारा बनवाई हुई वस्ति के भगवान् पार्श्वदेव की अष्टविध पूजन के लिए एक भूमि का दान दिया।]

तण्डान मच्चरित्र... . गदोलु ॥ जन-जिन-मधि.. निदा ...क..... नियते ..न रूप-यौवन-गुणसम्पत्तियिन्दातं बत्तिगु......भुवन-भूषण-बालचन्द्र...दहक . ब . द .... वहल-पदु.. . गजराज.. तीव्र-स्वरो.. कर्कशः प्रतिका...रिय...सक-वर्षद ११३६ नेय श्रीमुखसंवत्स-रद कार्त्तिक शुद्ध ५मी । प्रभात-समयदोल्सन्यसन-समन्वितं ॥

कन्द ।

पञ्च-नमस्कार मन
सच्चलिसदेन्दोपुदु सकल...
...वदु.....गदह
......र द्विविज-वधुग बल्लभनादं ॥

...यम्म...सादरक. . .. .
...य यस्त्रक ॥ चन्तु ..देवर धि ..यर दहन-स्थानदोल् परोक्ष.. निमित्तवागि बैराजनि माडिसिद बालचन्द्र देवर मन.. न शिलाकूट ॥ मात... .....सोल-मन... गुण......द विभव .....भूतलदोल् कालब्बेयं सीतेगं रुग्मिणिगं रतिगं सरि दोरे मम......बेनिसिदा-महासति पवि......स्थानमनरिदे.........भाव-संवत्सरद ज्येष्ठ-द । द्वि । निशान्त्यदोल् सल्लेखन-विधियि समाधिय पडेदु स्वर्गा-प्राप्तेयादलु ॥ श्रीशान्तिनाथाय... ॥

नोर्सदतु जिननाथ-पुरवमादि य...।।१४
......रवतु......ष-परहुंनव कोड़न...
जगलवाहिर......विष्णुवर्द्धन देवर...
का परिहार ॥ श्रीहपरहुन्नेवव कोड़ु ।

[इस टूटे हुए लेख में विष्णुवर्द्धन नरेश के प्रधान दण्डनायक गङ्गराज द्वारा बेलगुल में जिननाथपुर निर्माण कराये जाने का उल्लेख है]

४७६ (३८४)

जिननाथपुर में शान्तिनाथ बस्ति से पश्चिमोत्तर की ओर एक खेत में समाधिमण्डप पर

(शक सं० ११३६)

श्री नमः सिद्धेभ्यः ।

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरुं राजगुरुगलेनिप वंके-
इश्वर श्री-नेमिचन्द्र पण्डितदेवरेन्तप्परेन ॥

वृत्त ।

[illegible]
[illegible]
[illegible] ... ...नन्द्र [illegible]
[illegible] ।
[illegible] श्रीनेमिचन्द्र-[illegible]
[illegible] ... [illegible] ...

तण्णन सच्चरित्र... ..गदोलु ॥ जन-जिन-मणि.. निद्दा ...कं......नियवे.. न रूप-यौवन-गुणसम्पत्तियिन्दातं वनितेगु......भुवन-भूषण-बालचन्द्र...रुहक ल य .. ..वद्दल-वदु... गजराज.. .तीव्र-ज्वरो.. कर्कशः प्रतिका...रिय...सक-वर्षद ११३६ नेय श्रीमुखसंवत्सरद कार्त्तिक शुद्ध ५मी । प्रभाव-समयदोल्सन्यसन-समन्वितं ॥

कन्द ।

पञ्च-नमस्कार मन
सञ्चलिसदेन्तोप्पुदु मकर...
...वदु......गरुद
......र दिविज-वधुगं वल्लभनादं ॥

...यम्म...सादरक... ....
...य यल्लरं ॥ अन्तु ..देवर पि...यर दहन-स्थानदोल् परोक्ष...निमित्तवागि बैराजनि माडिसिद बालचन्द्र देवर मग...न शिलाकूटं ॥ मात.........योल-मत... गुण......द विभव......भूतलदोल् कालब्बेयं सोतेगं हमिमणिगं रतिगे मरि देरे सम......वेनिसिदा-महासति चयि......स्थानमनरिदे.........भाव-संवत्सरद जेष्ट-ब । द्वि । निशान्तदोल् सल्लेखन-विधियि समाधिय पडेदु स्वर्ग-प्राप्तेयादलु ॥ ओं शान्तिनाथाय... ॥

तीर्थंकरं जिननाथ-पुरमाहि य...सत्त
... ..रयत्तु......ह-परहूनेम्ब कोङग...
जगलवाडिय......विष्णुवर्द्धन देवर...
का परिहार ॥ द्रोहघरट्ट-नेबर कोलु ।

[इस टूटे हुए लेख में विष्णुवर्द्धन नरेश के प्रधान दण्डनायक गङ्गराज द्वारा बेलगुल में जिननाथपुर निर्माण कराये जाने का संकेत है]

४७६ (३८४)

जिननाथपुर में शान्तिनाथ बस्ति से पश्चिमोत्तर की ओर एक खेत में समाधिमण्डप पर

(शक सं० ११३६)

श्री नमः सिद्धेभ्यः ।

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यर् राजगुरुगलेनिप [illegible] श्री-नेमिचन्द्र-पण्डितदेवर [illegible] ॥

वृत्त ।

[illegible]
[illegible]
[illegible] ... [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ... [illegible] ...

चिकसहुय...प्र...न बरकोट कोडग...
.........हा सासन महुल महा श्री श्री।

[इस टूटे हुए लेख में एक उद्यान के दान का उल्लेख है]

४८३ (३९३) दे... ..य-नायकन मग मादेय नायक माडिसिद नन्दि

[मादेय नायक ने नन्दि निर्माण कराई]

कण्ठीरायपुर ग्राम के लेख

४८४ (३९५) श्रीमतु पण्डितदेवरुगल गुड्डुगलु बेलुगुलद नाड चेन्नण-गौण्डन मग नागगौण्ड मुत्तगदहोन्न...लिय कल्लगौण्ड बैर गौण्ड-नोन्नगाद गौडुगलु मङ्गायि माडिसिद बसितगे कोट्ट वोडुर कट्टेय गद्दे बेदलु यि-धर्म्मके तपिदवरु वारणासियलु.. इसकपिलेय कोन्द पापकेहोह......ल-महा श्री श्री श्री।

[पण्डितदेव के उक्त शिष्यों ने मङ्गायि की बनवाई हुई बस्ति को वड्डुरकोट्टे की भूमि प्रदान की। जो कोई इस दान का विच्छेद करे उसे बनारस में एक हजार कपिला गौओं की हत्या का पाप हो।]

४८५ (३९६) श्री चामुण्डरायन बस्ति सीमे।

[इस टूटे हुए लेख में बेळिकुम्ब के महामण्डलाचार्य नेमिचन्द्र पण्डित देव के प्रिय शिष्य व बालचन्द्रदेव के तनय के उक्त तिथि को समाधिमरण का उल्लेख है। उनकी श्मशानभूमि पर यह शिलाकूट बनवाया गया। लेख के अन्तिम भाग में सा...ी काळब्बे के समाधिमरण का उल्लेख है।]

जिन्नेनहल्लिग्राम के लेख

४८० (३८०) श्री शकवर्ष १५८६ प्रमादी च संवत्स-
रद वैशाख बहुल ११ यल्लि समुद्रावीश्वर
स्वामियवर नित्यसमाराधने नित्योत्सह
कोळलतोट मण्टपद सेवेगे पुटसामि सेट्टियर
मग चेन्नण्णनु बिट्ट जिननयन हळ्ळिय ग्राम
मङ्गल महा श्री श्री श्री ।

[उक्त तिथि को पुटसामि के पुत्र चेन्नण्ण ने समुद्रावीश्वर (चन्द्रनाथ) स्वामी के नित्य पूजनोत्सव के व कुण्ड, उपवन और मण्डप की रक्षा के हेतु जिनेयन हल्लि ग्राम का दान किया]

४८१ (३८१) श्री चामुण्डरायन बसतिय सीमे ॥ श्री

हालुमत्तिगट्ट ग्राम के लेख

४८२ (३८२) इस......शिक......रद...अडुणनं
कोडगि तोट......दा पिया सघन......
करद रि...बन... ....बडुणनडु

चिकसहुण...प्र...न बरकोट कोडग...
..........डा समन मङ्गल महा श्री श्री।

[इस टूटे हुए लेख में एक उद्यान के दान का उल्लेख है]

४८३ (३९३) दे......य-नायकन मग मादेय नायक
माडिसिद नन्दि

[मादेय नायक ने नन्दि निर्माण कराई]

कण्ठीरायपुर ग्राम के लेख

४८४ (३९५) श्रीमतु पण्डितदेवरगळ गुड्डुगळु बेलु-
गुळद नाड चेन्नण-गौण्डन मग नागगौण्ड
मुत्तगदहोन्न...लिय कल्लगौण्ड बैरगौण्ड-
नोलगाद गौडुगलु मङ्गायि माडिसिद बस्तिगे
कोट्ट बोइर कट्टेय गद्दे बेदलु यि-धर्म्मके
तप्पिदवरु वारणासियलु... इसकपिलेय
कोन्द पापक्के होह......ल-महा श्री श्री श्री।

[पण्डितदेव के उक्त शिष्यों ने मङ्गायि की बनवाई हुई बस्ति को
मङ्गकोट्टे की भूमि प्रदान की। जो कोई इस दान का विच्छेद करे उसे
बनारस में एक हजार कपिला गौओं की हत्या का पाप हो।]

४८५ (३९६) श्री चामुण्डरायन बस्ति सीमे।

मारोन हल्लिग्राम के लेख

४८६ (३६७)

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय [illegible]-विधान-हेतवे ।
अन्य-वादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥
नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो [illegible] ॥
स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दान्वये विख्याते देशिके गणे ।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्म्मिते ॥ ३ ॥

[आगे लेख की [illegible] से [illegible] पंक्ति तक गङ्गराज का वही वर्णन है जो नम्बर [illegible] के तीसरे पद्य से आगे [illegible] वें पद्य तक पाया जाता है ।]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द .... [illegible]
॥ १४ ॥

इसके बाद—

[illegible] शक वर्ष १०४१ नेय विलम्बि संवत्सरद फाल्गुण शुद्ध [illegible] बृहवारदन्दु [illegible]

दिव्वेय सारथ हुलुमाडिय गडि तेङ्कलु अर्हनहल्लियिन्दा... मदिपुरक्कं हिरिय-दंवर बेट्टक्कं होद हंब्बट्टेये गडि हडुवलु हिरिय...हल्ल नजुगरं बेक्कननिप...बडकलु गङ्गसमुद्रक्के पल्यद हडुवद दिण्नेयि पडुवलु गडि यिन्तो-चतुस्सीमेयं पूर्व्वि ...बक्कन.. नु प्रत्यधिवासद...पडु. ...गोम्मटपुरद पट्टण-स्वामि मल्लि सेट्टियरु...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियु मुख्यवाद नकर-समूहमुमिर्द्दु माडिद मर्य्यादे यिन्तीधर्म्ममं प्रतिपालिसु-वर्गों महा-पुण्य अक्कुं ॥

वृत्त ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेय्दे काव पुरुषर्गायु महा-श्रीयुम-क्केयिदं कायदे काव्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्विथोलु वारणा-सियोलंक्कोटि-मुनीन्द्ररं कविलेय वेदाढ्यरं कोन्दुदो-न्दयसमार्ग्गमेनुत्ते मारिदपुदी-शैलाचरं मन्तवं ॥ १६ ॥

विरुद-रूवारि-मुख-तिलकं गङ्गाचारि खंडरिसिदं ॥

[इस लेख में लेख नं० १० (२४०) के समान दण्डराज के कीर्तिवर्णन के पश्चात् उल्लेख है कि उन्होंने विष्णुवर्द्धन नरेश से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पारश्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा के हेतु उक्त निधि के शुभचन्द्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन कर दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र व बनारस में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाचारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३६८) ...रिसिदेवगे बिट्ट दत्तिय गद्दय......

प्राचीन हलिग्राम के लेख

४८६ (३८०)

(शक सं० १०५१)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान-हेतवे।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥[illegible]

नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमोऽस्त्वर्हद्भ्यः ॥
स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दान्वये विख्यात देशिक गणे।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य [illegible] ॥ ३ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ २६ ॥

[illegible]—

[illegible] शक-वर्ष १०५१ नेय [illegible] फाल्गुण शुद्ध [illegible] बृहस्पतिवार [illegible]

दिब्बेय सारय हुलुमाडिय गडि तेङ्गलु महनहल्लियिन्दा...
मदिपुरक्कं हिरिय-ईश्वर बेट्टक्कं होद इब्बट्टेये गडि इड्डुवलु
हिरिय...हल्ल नजुनेरे बेक्कनतिप...यडकलु गङ्गसमुद्रक्के
चल्यद इडुवय दिण्नेयि पडुवलु गडि यिन्तो-पतुस्सीमेयं पूर्व्वि
...श्वकन.. नु प्रत्यधिवासद...पडु. ...गोम्मटपुरद पट्टण-
स्वामि मल्लि सेट्टियरु...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियुं मुख्यवाद
नकर-समूहमुमिरं माडिद मर्य्यादे यिन्तीधर्म्मम प्रतिपालिसु-
वर्गे महा-पुण्यं अक्कुं ॥

वृत्तं ॥

> प्रियदिन्दिन्तिदनेयुदे काव पुरुषर्गायुं महा-श्रीयुम-
> क्कयिदं कायदे कायव पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-
> शियोलेक्कोटि-मुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदो-
> न्दयसमार्गुमेनुत्तं सारिदपुदी-शैलाक्षरं सन्ततं ॥ १६ ॥
>
> बिरुद-रूवारि-मुरु-तिलकं गङ्गाचारि खंडरिसिदं ॥

[इस लेख में लेख नं० १० (११०) के समान रट्टराज के कीर्तिवर्णन के पश्चात् उल्लेख है कि इन्होंने त्रिभुवनमल्ल नरेश से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे दारवदेव और कुरुकुटेश्वर की पूजा के हेतु उक्त तिथि को शुभचन्द्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन कर दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र व बनारस में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाचारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३९८) ...रिसिदेवगे बिट्ट दत्तिय गद्देय......

मार्णेन हल्लिग्राम के लेख

४८६ (२६०)

(शक सं० १०५१)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
[illegible] [illegible] [illegible]-हेतवे ।
[illegible] [illegible] पराजिते ॥ २ ॥
[illegible] ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] ॥ ३ ॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] है ।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
॥ १६ ॥

[illegible]—

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] १०५१ [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

दिव्वेय सारद हुलुमाडिय गडि वेद्दलु अर्हनहल्लियिन्दा... मदिपुरक्क हिरिय-देवर वेट्टक्कं होद ईंचट्टेये गडि हडुवलु हिरिय ..हल्ल मजुगेरे येक्कनतिप...वडकलु गङ्गसमुद्रक्के चल्पद हडुवदा दिण्नेयि पडुवलु गडि यिन्ती-चतुस्सीमेयं पूर्व्वि ...यक्कन . नु प्रत्यधिवासद...पडु .....गोम्मटपुरद पट्टण-स्वामि मल्लि सेट्टियरु...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियुं मुख्यवाद नकर-समूहमुमिरे माडिद मर्य्यादे यिन्तीधर्म्ममं प्रतिपालिसु-वर्गे महा-पुण्यं अक्कुं ॥

वृत्त ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेयदे काव पुरुषर्गायुं महा-श्रीयुम-क्कंयिदं कायदे काव्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-सियोलुं कोटि-मुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदो-न्दयसमार्गमेनुत्तं सारिदपुदी-शैलाक्षरं मन्तवं ॥ १६ ॥

बिरुद-रूवारि-मुख-तिलकं गङ्गाचारि खंडरिसिदं ॥

[इस लेख में लेख नं० ८० (१४०) के समान गङ्गराज के कीर्तिवर्णन के पश्चात् उल्लेख है कि उन्होंने विरुगुदरेन नरेश से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा के हेतु उक्त निधि को शुभचन्द्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन कर दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र व बनारस में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौवों व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाचारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३९८) ...रिसिदेवर्गे बिट्ट दत्तिय गद्देय......

श्रवण बेल्गोल के ग्रास-पास के ग्रामों के लेख

साणेन हल्लिग्राम के लेख

४८६ (३८७)

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पदातान्प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥
नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो ग्रहद्भ्यो ॥
स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दान्वये विख्याते देशिके गणे ।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्म्मितं ॥ ३ ॥

[आगे लेख की ४ से १० पंक्ति तक [illegible] का वही वर्णन है जो लेख नं ४० (१४०) के तीसरे पद्य से आगे १४ वें पद्य तक पाया जाता है ।]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द .... [illegible]
॥ १५ ॥

दूसरा भाग—

[illegible] शक-वर्षं १०४१ नेय विलम्बि [illegible] फाल्गुण-शुद्ध [illegible] बृहवारद-न्दु [illegible]
[illegible]

दिन्नंय सारथ इलुमाडिय गडि तेङ्कलु अर्दनहल्लियिन्दा… मल्लिपुरक्कं हिरिय-इत्तर बेट्टक्कं होद हेब्बट्टेयं गडि इडुव… हिरिय ..हन्न नजुगेरे बेक्कननिप…बडक्कलु गङ्गसमुद्रक्क… चल्पद इडुवत्र दिण्नेयि पडुवलु गडि यिन्तो-चतुस्सीमेयं पूर्व्वि… …बक्कन नुं प्रत्यधिवासद…पडु.. …गोम्मटपुरद पट्टण-स्वामि मल्लि सेट्टियक…सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियुं मुख्यवाद नकर-समूहङ्गुमिदं माडिद मर्य्यादे यिन्तीधर्म्ममं प्रतिपालिसु-वर्गे महा-पुण्यं अक्कुं ॥ …दुवं ॥

त्रिपदिन्दिन्विदनंयद्दे काव पुरुषर्गायुं महा-श्रीयुम-क्केयिदं कायदे काव्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-सियोलेक्कोटि-मुनीन्द्ररं कविलेय वेदाढ्यरं कोन्दुदो-न्दयसमार्ग्गुमेन्तुत्ते सारिदपुदी-शैलाक्षरं मन्तवं ॥ १६ ॥ विरुद-रूवारि-मुख-तिलकं गङ्गाचारि खंडरिसिदं ॥

[इस लेख में लेख नं० ६० (१४०) के समान गङ्गराज के …कीर्तिवर्णन के पश्चात उल्लेख है कि उन्होंने विष्णुवर्द्धन नरेश से …गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा …के हेतु उक्त तिथि को शुभचन्द्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन कर दान …र दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और …व सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र …वाराणसी में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की …त्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाचारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३९८) …रिसिदेवगे बिट्ट दत्तिय गद्देय……
…२५

साणेन हल्लिग्राम के लेख

४८६ (३६०)

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥
नमः सिद्धेभ्य ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अर्हद्भ्याः ॥
स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दान्वये विख्याते देशिके गणे ।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्म्मितं ॥ ३ ॥

[आगे लेख की ४ से १० पंक्ति तक गङ्गराज का वही वर्णन है जो नम्बर ६० (२४०) के तीसरे पद्य से आगे १४ वें पद्य तक पाया जाता है ।]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द . . . नूर्म्मडि धन्वनं
॥ १५ ॥

इसके बाद—

[illegible] शक-वर्षं १०४१ नेय विकारि संवत्सरद फाल्गुण
शुद्ध [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]

दिन्तेय सारथ हुलुमाडिय गडि तेङ्कलु मर्दनहल्लियिन्दा...
मडिपुरक्कं हिरिय-केरेय बेट्टक्कं होद हेब्बट्टेये गडि हडुवलु
हिरिय...हल्ल नजुगेरे बेक्कननिप...बडकलु गङ्गसमुद्रक्के
बल्यर हडुवण दिण्णेयि पडुवलु गडि यिन्तो-पतुम्मीमेयं पूर्न्वि
...बक्कन . तु प्रत्यधिवासद...पडु ...गोम्मटपुरद पट्टण-
स्वामि मल्लि सेट्टियरु...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियु मुख्यवाद
नकर-समूहमुमिरे माडिद मर्य्यादे यिन्तीधर्म्ममं प्रतिपालिसु-
वर्गे महा-पुण्य मक्कुं ॥
... इप ॥

त्रिपदिन्दिदन्निदनेयदे काव पुरुषर्गायु महा-श्रीयुम-
क्कैयिदं कायदे काएव पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-
स्यपसल्गुमेनुत्ते सारिदपुदी-शैलाक्षर गन्त्तवे ॥ १६ ॥
सिरोत्तकोटि-मुनीन्द्ररं कविलेय वेदाढ्यरं कोन्दुदो-
विरुद-रूवारि-मुख-तिलकं गङ्गाचारि संडरिसिद ॥

[इस लेख में लेख नं० ६० (२४०) के समान लेख के
...सर्वथंव के परवान शोध है कि इन्होंने तिरुवल्लव मठ से
...गलादि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा
...इस लिपि को प्रभञ्च व सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन कर दान
...था। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और
...गुण भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र
...प से लाल कोलह कपिलों, कपिला गौवों व वेदज्ञ पण्डितों का
...पाप होगा। लेख को गङ्गाचारि ने उत्कीर्ण किया है।]

...७ (३९८) ...रिसिरेवगे बिट्ट दत्तिव गद्देय......

सागेन हल्लिग्राम के लेख

४८६ (३६७)

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छन ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तुजिनशासनाय सम्पद्यताम्प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥
नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अरुहन्ताय ॥
स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दाख्ये विख्याते देशिके गणे ।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्म्मितं ॥ ३ ॥

[आगे लेख की ५ से ४० पंक्ति तक गङ्गराज का वही वर्णन है जो लेख नं १० (१४०) के तीसरे पद्य से आगे १४ वें पद्य तक पाया जाता है ।]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द......नूर्म्मडि धन्यनन्त्रं ॥ १५ ॥

इससे आगे—

अन्तु बेक्किकांपडु श्री पार्श्वदेवर पूजेगं कुक्कुटेश्वर-देवर्गं बिट्टर सक-वर्षं १०४१ नेय विलम्बि-संवत्सरद फाल्गुण-शुद्ध दसमि ब्रहवारदन्दु शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर काल्गं करिचं बिट्ट-दत्तिय गोविन्दवाडिगे मूडण-सीमे ईशान्य-दिशेय परेय को...तोण्डिगरेय निरद कुक्कुटहनहल्लिग होद बट्टेय

दिव्येय सारद पुलुमाविष गडि वेङ्गुलु भईनहल्लियिन्दा...
मदिपुरक्कं हिरिय-देवर वेट्टक्कं होद इक्बट्टेये गडि हडुवलु
हिरिय...इल्ल नजुंरं वेक्कननिप...यडकलु गङ्गसमुद्रक्के
पल्यद इडुवण दिण्णेयि पडुवलु गडि यिन्तो-चतुस्सीमेयं पूर्व्वि
...मक्कन . तु प्रत्यधिवासद...पड्ड . ...गोम्मटपुरद पट्टण-
स्वामि मल्लि सेट्टियरु...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियु मुख्यवाद
नकर-समूहमुमिर्द्दु माडिद मर्य्यादे यिन्तीधर्म्ममं प्रतिपालिसु-
वर्गो महा-पुण्य मक्कुं ॥

वृत्त ॥

त्रिपदिन्दिन्दिदनेयूदे काव पुरुषर्गायु महा-श्रीयुम-
क्कर्कीयदे कायदे कारव पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-
सियोलेक्ककोटि-मुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदो-
न्दयसमागुमेनुत्तं सारिदपुदो-शैलाक्षरं मन्ततं ॥ १६ ॥

बिरुद-रूवारि-मुख-तिलकं गङ्गाचारि खंडरिसिदं ॥

[इस लेख में लेख नं० ६० (२४०) के समान वक्रराज के कीर्त्तिवर्णन के पश्चात् उल्लेख है कि उन्होंने विष्णुवर्द्धन नरेश से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा के हेतु उक्त तिथि को शुभचन्द्र सिद्धान्त देव को पादप्रक्षालन कर दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र व बनारस में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाचारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३६८) ...रिसिदेवगे बिट्ट दत्तिय गद्देय......

माणेन हल्लिग्राम के लेख

४८६ (३८७)

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

भद्रमस्तुजिनशासनाय सम्पद्यतांप्रतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥

नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अर्हद्भ्यः ॥

स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दाख्ये विख्याते देशिके गणे ।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्म्मिते ॥ ३ ॥

[आगे लेख की २ से १० पंक्ति तक गङ्गराज का वही वर्णन है जो लेख नं ६० (२४०) के तीसरे पद्य से आगे १४ वें पद्य तक पाया जाता है ।]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द .... मूर्त्तिवे धन्यनल ॥ १५ ॥

इसके बाद—

अन्तु वेडिकोण्डु आ पार्श्वदेवर पूर्व्वद कुक्कुटेश्वर देवर्गे [illegible] शक-वर्षं १०४१ नेय विलम्बि संवत्सरद फाल्गुण शुद्ध पञ्चमि बृहवारदन्दु शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर काल कर्च्चि सिद्ध-वसतिय गारि-बसदिगे मूलस्थान [illegible] पर [illegible].. [illegible] [illegible] [illegible]

दिव्वेय सारथ हुलुमाडिय गहि नेट्टलु अर्हनहल्लियिन्दा... मडिपुरक्कं हिरिय-देवर बेट्टक्कं होद दंवट्टेयं गहि हडुवलु हिरिय...दन्ना नल्लुगेरे बेक्कनलिप...बडकलु गङ्गसमुद्रक्के बल्यद हडुवण दिण्णेयि पडुवलु गहि यिन्ती-चतुस्सीमेयं पूर्व्व ...बक्कन . नु सत्यपिवासद...पडु ...गोम्मटपुरद पट्टण-स्वामि मल्लि सेट्टियक...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियु मुख्यवाद नकर-समूहमुमिर्द्दु माडिद मर्य्यादे यिन्तीधर्म्मं प्रतिपालिसुवर्गे महा-पुण्य अक्कुं ॥

वृत्त ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेय्दे काव पुरुषर्गायु महा-श्रीयुम-
क्कुविदं कायदे काव पापिगे कुरुक्षेत्राम्बिंयाळु वारणा-
सियोळेकोटि-मुनीन्द्ररं कविलेय वेदाढ्यरं कान्दुदा-
-दयसस्मार्गुमेनुत्तं सारिदपुदी-शैलाक्षर सन्तत ॥ १६ ॥

विनय-रूवारि-मुख-तिलक गङ्गाचारि खण्डरिसिद ॥

[इस लेख में लेख नं० ५० (१४०) के समान रहस्य के उल्लेख के पश्चात् बतलाया है कि ... किम्मट्ट के ... से गोविन्दवाडि ग्राम को ... उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा के हेतु ... तिथि को ... सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन कर दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विध्वंस करेगा उसे कुरुक्षेत्र व बनारस में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाचारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३९८) ...तिसिदेवगे बिट्ट दत्तिय गद्दे......

मायेन इल्लियाम के लेख

४८६ (३६७)

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥
नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अर्हद्भ्यः ॥
स्वस्ति श्री-कौण्डकुन्दान्वये विख्याते देशिक गणे ।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्म्मिते ॥ ३ ॥

[illegible]
[illegible] जाता है ।]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द [illegible] ॥ १६ ॥

इसका भाग—

[illegible]
[illegible] शक वर्षं १०४१ नेय विलम्बि [illegible]
शुद्ध [illegible] आदित्यवारदन्दु [illegible]
[illegible]
[illegible]

दिन्वेय सारद्य हुलुमाडिय गडि वेड्डलु अर्हनहल्लियिन्दा... मदिपुरक्के हिरिय-ईवर बेट्टक्कं होद ईश्वट्टेये गडि हडुवलु हिरिय...ह्ल्ल नगुगेरे वेक्कनतिप...वडकलु गङ्गसमुद्रक्के घल्यद हडुवण दिण्णेयि पडुवलु गडि यिन्तो-चतुस्सीमेयं पूर्व्वि ...वक्कन.. नु प्रत्यधिवासद...पडु......गोम्मटपुरद पट्टण-स्वामि मल्लि सेट्टियरु...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियु मुख्यवाद नकर-समूहनुमिर्द्द माडिद मर्य्यादे यिन्तींधर्म्ममं प्रतिपालिसु-दर्गो महा-पुण्य मक्कुं ॥

वृत्त ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेयूद्दे काव पुरुषर्गायु महा-श्रीयुम-
क्केयिदं कायदे कादव पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-
शियोलेक्कोटि-मुनीन्द्ररं कविलेय वेदाढ्यरं कोन्दुदो-
न्दयसमार्गुमेनुत्ते मारिदपुदो-शैलाक्षरं मन्तवं ॥ १६ ॥

बिरुद-रूवारि-मुख-तिलकं गङ्गाचारि खंडरिसिदं ॥

[इस लेख में लेख नं० ४० (१४०) के समान गङ्गराज के कीर्त्तिवर्णन के पश्चात् उल्लेख है कि उन्होंने विष्णुवर्द्धन नरेश से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा के हेतु उक्त तिथि को शुभचन्द्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन कर दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र व बनारस में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाचारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३९८) ...तिसिदेवगे बिट्ट दत्तिय गद्देय......

साणेन हल्लियाम के लेख

४८६ (३६७)

(शक सं० १०४१)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥
भद्रमस्तुजिनशासनाय सम्पद्यतामप्रतिविधान-हेतवे ।
अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥
नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अर्हन्ताणं ॥
स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दाख्ये विख्याते देशिके गणे ।
सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्म्मितं ॥ ३ ॥

[आगे लेख की ५ से ४० पंक्ति तक गङ्गराज का वही वर्णन है जो लेख नं ४० (१४०) के तीसरे पद्य से आगे १४ वें पद्य तक पाया जाता है ।]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द......नूर्म्मडि धन्यनन्ते ॥ १५ ॥

इससे आगे—

अन्तु बेडिकोण्डु श्री पार्श्वदेवर पूजेगं कुक्कुटेश्वर-देवर्गं बिट्टर शक-वर्षं १०४१ नेय विलम्बि संवत्सरद फाल्गुण-शुद्ध दशमि ब्रहवारदन्दु शुभचन्द्र-सिद्धान्ति-देवर कार्कालिचं बिट्टु-दत्तिय गोविन्दवाडिगे मूडण-सीमे ईशान-दिशेय परंय का...तोण्टिगेरेय निकड कुल्लहनहल्लिग होर गंब

दिब्बेय सारण हुलुमाडिय गडि तेङ्कलु मर्द्दनहल्लियिन्दा... मदिपुरक्के हिरिय-दंवर बेट्टक्के होद हेब्बट्टेये गडि हडुवलु हिरिय...हल्ल नजुगेरे बेक्कनतिप...पडकलु गङ्गसमुद्रक्के बल्यद हडुवण दिण्णेयि पडुवलु गडि यिन्तो-चतुस्सीमेयं पूर्व्वि ...बक्कन.. नु प्रत्यधिवासद...पडु......गोम्मटपुरद पट्टण-स्वामि मल्लि सेट्टियरु...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियुं मुख्यवाद नकर-समूहमुमिदं माडिद मर्य्यादे यिन्तीधर्म्मम प्रतिपालिसु-वर्गे महा-पुण्य अक्कुं ॥

वृत्त ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेयूदे काव पुरुषर्गायु महा-श्रीयुम-क्कंयिदं कायदे काव्व पापिगे कुरुक्षेत्रोर्व्वियोलु वारणा-शियोलेक्कोटि-मुनीन्द्ररं कविलेय वेदाढ्यरं कोन्दुदो-न्दयसमागुमेनुत्तं सारिदपुदी-शैलाक्षरं सन्ततं ॥ १६ ॥

बिरुद-रूवारि-मुख-तिलकं गङ्गाचारि खंडरिसिदं ॥

[इस लेख में लेख नं० १० (२७०) के समान गङ्गराज के कीर्तिवर्णन के पश्चात् उल्लेख है कि उन्होंने विष्णुवर्द्धन नरेश से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा के हेतु उक्त तिथि को शुभचन्द्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन कर दान कर दिया। जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुक्षेत्र व बनारस में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौओं व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा। लेख को गङ्गाचारि ने उत्कीर्ण किया है।]

४८७ (३९८) ...रिसिदेवगे बिट्ट दत्तिय गद्देय......

अडेत्ति फत्ति सेट्टियु' मडता विट गद्दे
सलगे श्रोन्दु कोलग ।

[इसमें कत्ति सेट्टि के कुछ भूमि के दान का उल्लेख है]

४८८ (३९९) श्री वृषभस्वामि

(खण्डित मूर्ति के पादपीठ पर)

४८९ (४००) श्री मूलसङ्घद देशिगणद पोस्तक गन्छद
श्री सुभचन्द्र सिद्धान्त देवर गुड्डि जक्कियब्बे दण्डनायकिति साहलि......
८ देवर्गे प्रतिष्टेय' माडि जक्कियरे...,
...डर मग पयमगद स......पुनरेय
... ..दवाद्दिय......यलु सलगे वेद्दे
कोलगे ५ गोविन्द-वाडिय कोलग १
बेदले कण्डुग ।

[शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या जक्कियब्बे ने मूर्ति की स्थापना कराई और गोविन्द वाडि की उक्त भूमि अर्पण की ।]

सुण्डहल्लिग्राम का लेख

४९० (४०७)

......संवत्सरद मार्ग्गशिर शु. १० बृहवार
......न्महामण्डलाचार्य्यर नेमिचन्द्र
पण्डितदेवर ......पट्टणस्वामि नागदेव
हेग्गडेयु' केष्णगौडनु...... .. न मग मार

गौड करेय कट्टिदनश्रेयेन्दु आत
द्दारिसुवुदिन्न वा तेदव अय्दु हणविन
दे ..येदन्ने इडुवथ मुत्तेरि सीमे
आतन म..... पर्य्यन्त सलुवन्तागि
कोट पवले पलिहिदव कविलेय कोन्द ॥

[यह लेख कुछ भूमि का पट्टा है। इसमें महामण्डलाचार्य्य नेमिचन्द्र पण्डित देव का उल्लेख करके कहा गया है कि मारगौड ने एक तालाब बनाया; इसके लिए नागदेव हेग्गडे और केतुगौड ने उसे सदा के लिए उक्त भूमि का पट्टा दे दिया।]

येक्कुग्राम में बस्ती के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक सं० १०६५)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

श्रीकान्तापीनवक्षोरुहगिरिशिखरोज्जृम्भमानं विशालं
लोकोद्यत्तापलोपप्रवणविलसितं वीरविद्विड् महीपा-
नेकव्यामुक्तसज्जीवनबहुलितोद्यद्गुणस्तोममुक्ता-
नीकं निष्कण्टकं निश्चलमेनलोसगुं होय्सलच्छत्र-
वंशं ॥ २ ॥

मदरोत्सौक्तिकदन्ते पुट्टिदनिलापालौघचूडामणि-
त्वदिनुद्यद्गुणशोभेयिं स्वरुचियिं सद्वृत्तताराजित-

त्वदिनस्थुन्नतजातियिं सममेनल्सड्रामरङ्गामदोल्
मदवद्वैरिकुलप्रतापिविनयादित्यं धराधीश्वरं ॥३॥

क ॥ विनयादित्यन तनयं
जननुतन एरेयङ्गभुजं तत्तनुजं ।
निनुत विष्णुनृपालं
मनम्बि तत्तपत्यं नेग.. नरसिंहं ॥ ४ ॥

वृ ॥ नतनरपालजालक विशालविजृम्भितवालभासुरो-
न्नतिज्ञ..... .. गलनाद्दवरङ्गरामनू-
र्जितनिजपुण्यपुञ्जवलसाधितसर्व्व.........
.........महोन्नतिरुचिन्दिसदं नरसिंह भुजं ॥ ५ ॥

क ॥ आ-नरसिंहनृपाल
भनुन पट्टमहदेवि तत्मतिपादत्त ।
मानिनिय् एचल देविगं
दानगुणख्यानकल्पलतेयोल् आ.. ... ॥ ६ ॥

वृ ॥ ननना‌लिन्नगं मुजनेन्तु मदने पुट्टिदंना-त्रिजगे
रिजमत्योवपुविक्रमन्तं नरसिंहखोणिपालङ्गव् ए-
चलदेविगिविगं परार्थंपरितं पुण्याधिक पुट्टिदं
वैरिवीरकुलान्तक ययभुज बल्लाल भूपालके ॥ ७ ॥

गतकीर्त्ति स्वायनाथक्रिमन्नकजनयामारं पुगर्द
मन्निनगळ गौरवनु हित्दशमासलथ्य पन्नदं ।
आग्नेयवीत चोवनाद करनवदनराथ अदर वेळ्ळ के
राहननूनमवकल्पानमयनुचभुजं वीरवल्लाळदेवं ॥८॥

रिपुराजराजिमम्पत्तरसिरुह शरत्कालसम्पूर्णचन्द्रं
रिपुभूपावारदीपप्रकरपटुतरोद्भूतभूरिप्रवात ।
रिपुराजन्यौध...तलसौ......लीमप्रतापं
रिपुपृथ्वीपालजाल क्षुभितयमनिवं धीरमल्लालदेव ॥९॥

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर । द्वारावती-पुरवराधीश्वर । तुलुवबलजलदविलयानिल । दायाददुर्ग-दावानल । पाण्ड्यकुलकुधरकुलिशदण्ड । गण्डभेरुण्ड । मण्डलिकबेण्टेकार । चोलकटकसूरेकार । मल्लमभीम । कलि-कालकाम । सकलवन्दिजनमनस्सन्तर्पण प्रवरतरवितरणविनोद । वासन्तिकादेवीलब्धवरप्रसाद । यादवकुलाम्बरद्युमणि । मण्डलिकचूडामणि । कदनप्रचण्ड । मलपरोल् गण्ड नामादि प्रशस्तिसहितं । श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल तलकाडु-कोंगु-नङ्गलि-नोलम्बवाडि-बनवसे-हानुङ्गलगण्ड भुजबलवीरगङ्गप्रतापहोय्सलबल्लालदेवरु दक्षिणमहीमण्डलमं दुष्टनिग्रह-शिष्टप्रतिपालन-पूर्व्वकं सुखसङ्कथाविनोददि दोरसमुद्रदोळ् राज्यं गेय्युत्तिरे ॥
तत्पितामह विष्णुभूपालपादपद्मोपजीवि ॥

इ ॥ वृत्तं लोकाम्बिके माते रूढजनक श्रीयक्षराजं यशो-
न्वितं श्री-पद्मलदेवि बल्लभे जगद्विख्यातपुण्याधिपं ।
सुतनी-श्री नरसिंहदेवमधिनाथीत जिनाधीशनी-
प्सितदैवं वनगन्धोर्ड विदितनी श्रीहुल्लदण्डाधिपं ॥ १० ॥

क ॥ जनकतनुजातयिन्दं
बनजोद्भवनितेयिन्दवागलवेनिपळ् ।

जननुत पद्मलदेवियर—
नूत-पतिव्रतशिनमत्तपतुरलेयिन्दं ॥ ११ ॥

वत्पुत्र ॥

विनुत-नयकीर्त्ति-मुनिपद-
वनरुहभृङ्गं विदग्धवनिताङ्गं ।
कनकाचलगुणतुङ्गं
घनवैरिमदेभसिंहनी-नरसिंहं ॥ १२ ॥

स्वस्ति श्री मूलसङ्घनिलयमूलस्तम्भरुं निरवद्यविद्यावदग्नाद
देशियगण गजेन्द्रमान्द्रमदधारावभासरुं । परममयमुत्तादि-
सन्न्यासरुं । पुस्तकगच्छस्वच्छसरसीसरोजविराजमानं ।
कोण्डकुन्दान्वयगगनदिवाकररुं । गाम्भीर्य्यरत्नाकररुं ।
तपश्रीरुन्द्ररुमप्प गुणभद्रसिद्धान्तदेवर शिष्यर् महामण्डला-
चार्य्य नयकीर्त्ति सिद्धान्तदेवरेन्तप्परेन्दडे ॥

वृ ॥ स्मरशस्त्राम्बुजदण्डचण्डमदवेतण्डं दयासिन्धु
बन्धुरभूभृद्वरतुङ्गमोहवहलाम्भोराशिकुम्भोद्भवं ।
धरेयोल्तां नेगल्दं भयक्षयकरं लोभारिशोभाहरं
स्थिरनो-श्री-नयकीर्त्तिदेवमुनिपं सिद्धान्तचक्रेश्वरं ॥१३॥

तच्छिष्यर् ॥

उरगेन्द्रक्षीरनीराकररजतगिरिश्रीसितच्छत्रगङ्गा-
हरहासैरावतेभस्फटिकवृषभशुभ्राभनीहारहारा-
मरराजश्वेतपङ्केरुहहलधरवाक्शङ्खहंसेन्दुकुन्दो-

स्करवन्दवत्कीर्तिकान्तं बुधजनविनुतं भानुकीर्ति-
व्रतीन्द्र ॥ १४ ॥

सिद्धान्तोद्धवार्द्धिवर्द्धनविधौ शुक्लैकपक्षोद्गत-
स्ताराणामधिपो जितस्मरशर: पारात्यपारङ्गत: ।
विख्यातो नयकीर्त्ति देवमुनिपश्रीपादपद्मप्रिय-
स्स श्रीमान्भुवि भानुकीर्त्ति मुनिपो जीयादपारावधि॥१५॥

शक वर्ष १०६१ नेय विजयसंवत्सरद पौष्यबहुल
चैतिमङ्गलवारदन्दु उत्तरायण सङ्क्रान्तियोळि भानुकीर्त्ति
सिद्धान्त देवरनधिपतिगळागि माडि तद्गुरुगळप्प नयकीर्त्ति-
सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगळ्गंधारापूर्व्वकं माडि ॥

वृ ॥ नवसुप्रायुवगोम्मटेशविभुगं श्रीपार्श्वदेवङ्गवु-
द्ध-चतुर्व्विशतितीर्त्थकर्गवेसवी-सत्पूजेगं भोगकं ।
रुचिराभ्रोत्करदानकं मुददे बिट्टं बेकनेम्बूरनु-
द्ध-चरित्र सले मेरुधुर्मिनेगवी-वल्लालभूपोत्तमं ॥ १६ ॥

क्रमदिं गोम्मटतीर्त्थपूजेगवशोपाहारदानक्कवु-
त्तमर' बुधवरनागि माडि विदित श्री भानुकीर्तीश्वरं ।
विमलङ्गा-नयकीर्त्ति-देवयतिगाकल्पं मनस्वीकनें
सुमनस्कविभुबुल्लपं बिडिसिदं श्री वीरवल्लालनि ॥१७॥

ग्राम सीमे ॥ (यहां सीमा का वर्णन है) इदु बेक्कन
चतुस्सीमे ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा (इत्यादि)

[चन्नरायपट्टन १४६]

[लेख नं० १२४ के समान होय्सल वंश के परिचय व वीरबल्लाल-देव के प्रतापवर्णन के पश्चात् बल्लाल नरेश के दण्डाधिपति हुल्ल का परिचय है। हुल्ल यक्षराज और लोकाम्बिके के पुत्र थे। उनकी पत्नी का नाम पद्मलदेवी और पुत्र का नरसिंह सचिवाधीश था। हुल्ल जिन-पदभक्त थे। इसके पश्चात् कहा गया है कि उक्त तिथि को गुणभद्र के शिष्य नयकीर्ति के शिष्य भानुकीर्त्ति मुनीन्द्र को बल्लाल नरेश ने पार्श्व और चतुर्विंशति तीर्थंकर के पूजन के हेतु मारुहलि ग्राम का दान दिया। इसके कुछ पश्चात् हुलप ने बल्लालदेव से बेक्क ग्राम का भी दान दिलवाया।]

४६२

हले बेलगोल में ध्वंस बस्ती के समीप एक पाषाण पर

(शक सं० १०१५)

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे।
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसे॥ १॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय-श्री-पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज पर मेश्वरपरमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत् त्रिभुवन-मल्लदेवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि। समधिगतपञ्चमहाशब्द महा-मण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि

सम्यक्त्वचूडामणि मलपरोल्गण्डाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृत श्रीमत्
त्रिभुवनमल्ल-विनयादित्य-पोय्सलं ॥

श्रीमद्यादववंशमण्डनमणि· क्षोणीशरत्नामणि-
स्संश्रीहारमणिर्न्नरेश्वरशिर·प्रोत्तुङ्गशुम्भन्मणिः ।
श्रीपार्श्वार्पितदर्प्पणमणिस्त्रीलोकैकचिन्तामणि·
श्रीविष्णुर्व्विनयान्वितो गुणमणिस्सम्यक्त्वचूडामणिः
॥ २ ॥

एरेद मनुजङ्गे सुरभू-
मिरुहं शरणेन्दवङ्गे कुलिशागारं ।
परबलिवनिलिवनेयं
धुरदोल्पोणर्दङ्गे मित्तु विनयादित्यं ॥ ३ ॥

रक्कस-पोय्सलनेम्बा-
रक्करमं बरेदु पटमनित्तदढिदिरोल् ।
सक्कद ममनेक्कदं मल-
वक्कं निन्दपुदे ममरमङ्गुट्टणदोल् ॥ ४ ॥

बलिदर्द्दे मलेदर्द्दे मलपर
वलेयोल्क्षाति ङुवनुदिवभयरसवसदि ।
बलियद मलेयद मलपर
वलेयोल्कैयिडुवनोढने विनयादित्यं ॥ ५ ॥

मा-पोय्सलभूपङ्गे म-
हीपालकुमारनिकरचूडारत्न ।

श्रीपति निजभुजविजय-म-
हीपति जनियिसिदनदटन् एरेयङ्ग नृपं ॥ ६ ॥

वृत्त ॥ अनुपमकीर्त्ति मूरनेय मारुति नाल्कनेयुमवह्निय-
देनेयसमुद्रमारनेय पूगणेयेलनेयुव्वेंरशनेयु
टनेय कुलाद्रियोम्भतनेयुद्रमनेवहस्ति पत्तने-
य निधानमूर्त्तियेने पोल्ववरार् एरेयङ्गदेवनं ॥ ७ ॥

अरिपुरदोल्धगद्धगिलु धन्धगिलेम्बुदराति-भू...
र शिरदोलु...ठगिल्ठ .....एम्बुदु वरिभूतले-
श्वरकरुलोलु चिमिलिचमिचिमिलिचमिचेम्बुदु...पलिदि दु-
र्द्धरतरमेन्दोडल्कुरदं पोलुवराम्मलेराजराजनं ॥ ८ ॥

कन्द ॥ मुररिपुव पिडिव चक्रद
हतिगं केमरिगमा-फणिध्वंसिय वि-
ष्फुरितनखहतिगमेरेगन
करवालगमिदिर्च्चि बर्दुङ्कल्पेरुमोलरे ॥ ६ ॥

इर्म्मडि दधीचिमुनिगे प-
दिर्म्मडि गुत्तगे चारुदत्तगसल् ।
नूर्म्मडि रविसूनुगे सा-
सिर्म्मडि मेलु दानगुणदिन् एरेयङ्गनृपं ॥ १० ॥

आ-महामण्डलेश्वरन गुरुगलेन्तप्परेन्दडे ॥

श्लोक ॥ श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।
श्रीकोण्डकुन्दनामाभून्मूलसङ्घाग्रणो [गणी] ॥ ११ ॥
तस्यान्वयेऽजनि ख्याते विख्याते देशिके गणे ।

गुणी देवेन्द्र सैद्धान्तदेवो देवेन्द्रवन्दितः ॥ १२ ॥
जयति चतुर्मुखदेवो योगीश्वरहृदयवनजवनदिननाथः ।
मदनमदकुम्भिकुम्भस्थलदलनोन्मत्तपरिदृढनिस्तुलसिंह ॥१३॥
तच्छिष्यो गोपनन्द्याख्यो बभूव भुवनस्तुतः ।
वार्धीमुधाम्बुधानेकभाजिष्णुयशोदर्पणः ॥ १४ ॥
जयति भुवि गोपनन्दी जिनमतलसदम्बुधितुहिनकरः ।
देशितगणाग्रगण्यो भव्याम्बुजषण्डचण्डकरः ॥ १५ ॥

वृत्त ॥ शृङ्गारवर्माभिराममभिमानसुवर्णधराधर तपो-
मङ्गलदिग्वलयमभिनमितवन्दित गोपनन्दिया-
वङ्गमसाध्यमप्प चलकालदे निन्द जिनेन्द्रधर्म्मम
गङ्गनृपालरन्दिन विभूतिय रूढियनेय्दे माडिदं ॥१६॥
जिनपादाम्भोजभृङ्ग मदनमदहर कर्म्मनिर्म्मूलनं वा-
ग्वनिताचित्तप्रियं वादिकुलकुधरवज्रायुध चारु विद्व-
ज्जनपात्रं भव्यचिन्तामणि सकलकलाकोविदं काव्यकर्ता-
मननन्दानन्ददिन्द पोगलं नेगळ्दनी-गोपनन्दि-
प्रतीन्द्रं ॥ १७ ॥

महोयदं साङ्ख्य मदमिळ भौतिक पोङ्कि कडङ्गि बागदि-
पौळ तोङ्ग बुद्ध बाढ बळदेरदे वैष्णव बङ्कळ वा-
ग्भरद पोळप्पु वेड गड चार्व्वक चार्व्वक निम्म दर्पमं
सलिपने गोपनन्दिमुनिपुङ्गवनेम्ब मदान्धसिन्धुरं ॥१८॥
तळेयल् जैमिनि तिप्पिकोण्डु परियल्वैशेषिकं पोगदु-
ण्डिले यात्तल्सुगतं कडङ्गि बळेगोयल्क् अक्षपादं पिडल् ।

श्रीपति निजभुजविजय-म-
हीपति जनितिसिदनदटन् एरेयङ्ग नृपं ॥ ६ ॥

वृत्त ॥ अनुपमकीर्त्ति मूरनेय मारुति नाल्कनेयुग्रदिग्ग-
देनेयसमुद्रमारनेय पूगणेयेलनेयुर्व्वरशनेय
टनेय कुलाद्रियाम्भतनेयुद्गसमेवहस्ति पत्तने-
य निधानमूर्त्तियेने पोल्तवरार् एरेयङ्गदेवनं ॥ ७ ॥
अरिपुरदोल्धगद्धगिलु धन्धगिल्लेम्बुदराति-भू...
र शिरदोलु...ठगिल्ठ .....एम्बुदु वरिभूतन्ने-
श्वरकरुलोलु चिमिलिचमिचिमिलिचमिचेम्बुदु...पलिदि इ
द्धेरतरमेन्दोडल्कुरदं पोलुवराम्भलेराजराजनं ॥ ८ ॥

कन्द ॥ मुररिपुव पिडिव चक्रद
इतिगं केसरिगमा-फणिध्वंसिय वि-
ष्फुरितनखहतिगमेरेगन
करवालगमिदिरिर्च्चे वर्दुङ्कुनाप्पेंरुमोलरे ॥ ६ ॥
इर्म्मडि दधीचिमुनिगे प-
दिर्म्मडि गुत्तगे चारुदत्तगसल् ।
नूर्म्मडि रविसुतुगं सा-
सिर्म्मडि मेलु दानगुणदिन एरेयङ्गनृपं ॥ १० ॥

आ-महामण्डलेश्वरन गुरुगलेन्तप्परेन्दडे ॥

श्लोक ॥ श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।
श्रीकोण्डकुन्दनामाभून्मूलसङ्घाग्रणी [गणी] ॥ ११ ॥
तस्यान्वयेऽजनि ख्याते विख्याते देशिके गणे ।

गुणी देवेन्द्र सैद्धान्तदेवो देवेन्द्रवन्दितः ॥ १२ ॥
जयति चतुर्मुखदेवो योगीश्वरहृदयवनजवनदिननाथः ।
मदनमदकुम्भिकुम्भस्थलदलनोन्मत्तपटिष्ठनिष्ठुरसिंहः ॥१३॥
तच्छिष्यो गोपनन्द्याख्यो बभूव भुवनस्तुतः ।
वार्द्धिमुखाम्बुजालोकभाजिष्णुर्मणिदर्पणः ॥ १४ ॥
जयति भुवि गोपनन्दी जिनमतलसरुजलधिवृद्धिहिमकर. ।
देशिगणग्रामण्यो भव्याम्बुजषण्डचण्डकरः ॥ १५ ॥
वृत्त ॥ बुधवृन्दाभिरामनभिमानसुवर्णधराधरं तपो-
महनुतदिव्यभमनितावल्लवन्दित गोपनन्दियो-
वहमन्सादुत्तमदि पलकालदे निन्द जिनेन्द्रधर्म्ममं
गङ्गनृपालरन्दिन विभूतिय रूढियनेय्दे माडिदं ॥१६॥
जिनपादाम्भोजभृङ्ग मदनमदहरं कर्म्मनिर्म्मूलनं वा-
ग्वनिताचित्तप्रियं वादिकुलकुधरवज्रायुधं चारु विद्व-
ज्जनपात्रं भव्यचिन्तामणि सकलकलाकोविदं काव्यकर्त्ता-
मननन्तानन्ददिन्दं पोगलं नेगल्दनी गोपनन्दि-
प्रतीन्द्रं ॥ १७ ॥
मलेयदे साङ्ख्य भट्टमिरु भौतिक पोक्कि कडङ्गि वागदि-
सोलि तोलगि बुद्ध बौद्ध तलेदोरदे वैष्णव डङ्गडङ्गु वा-
ग्भरद पोडप्पु वेड गड चार्व्वक चार्व्वक निम्म दर्पमं
सलिपने गोपनन्दिमुनिपुङ्गवनेम्ब मदान्धसिन्धुरं ॥१८॥
तगियल् जैमिनि तिप्पिकोण्डु परियल्वैशेषिकं पोगदु-
ग्डिदं योगसल्सुगतं कडङ्गि बलेगोयल्क् अक्षपादं विहल् ।

पुगे लोकाय[illegible]रे मा[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] गोपनन्दि[illegible]

[illegible] ॥ १८

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] गोपनन्दि[illegible] ॥१९
[illegible] जैन[illegible]
[illegible]
[illegible] गोपनन्दि [illegible]
[illegible] ॥२१॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] गोपनन्दि[illegible] ॥ २२ ॥

[illegible]
[illegible] गोपनन्दि [illegible] १०११ [illegible]
[illegible] आदित्यवार [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

(स्वदत्तां परदत्तां वा—इत्यादि श्लोकों के पश्चात्)
श्रीमन्महाप्रधान हिरिय दण्डाधिप... .....मय्यङ्ग........

.. ..

[चन्नरायपट्टन १४८]

[इस लेख में होय्सल नरेश विनयादित्य और उनके पुत्र एरेयङ्ग की कीर्ति के पश्चात् कहा गया है कि त्रिभुवनमल्ल एरेयङ्ग ने उक्त तिथि को कल्बप्पु पर्वत की बस्तियों के जीर्णोद्धार तथा आहारदान व वर्तन वस्त्र आदि के लिए अपने गुरु मूलसंघ देशीगण कुन्दकुन्दान्वय के देवेन्द्रसैद्धान्तिक व चतुर्मुखदेव के शिष्य, गोपनन्दि पण्डितदेव को राचनहल्ल व बेल्गोल १२ का दान दिया। लेख में गोपनन्दि आचार्य्य की खूब कीर्ति वर्णित है। उन्होंने जो जैनधर्म स्थगित हो गया था उसकी गङ्गनरेशों की सहायता से विभूति बढ़ाई। उन्होंने सांख्य, भौतिक, वैशेषिक, बौद्ध, वैष्णव, चार्वाक जैमिनि आदि सिद्धान्तवादियों को परास्त किया इत्यादि।]

४९३

चल्लग्राम के बसिरेदेव मन्दिर में एक पाषाण पर

(शक सं० १०४७)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावती-पुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलप-

रोलु गण्डनुद्दण्डमण्डलिकशिरोगिरिवज्रदण्ड तलकाडुगोण्ड वीर-विष्णुवर्द्धनदेवनातनन्वयक्रम यदुमोदलादनेकराज सन्तानकदि यलिक्के ॥

यदुकुलकुलाद्रिशिखरदोल्
उदियिसिद दुर्न्निरीक्षतेजोद्धत स-
न्मदरातिराजमण्डल-
मुदात्तगुणरत्नवार्द्धि विनयादित्य ॥ २ ॥
आतन तनयं सकल-म-
हीतल साम्राज्य लक्ष्मियुं तनगेक-
श्वेतातपत्रमागे पु-
रातननृपरोळेगे वन्दन एरेयङ्ग नृपं ॥ ३ ॥
आ-विभुगे नेगर्द एचल-
देविगमादर्त्तनूभवर्ब्बल्लाल-
श्रीविष्णुवर्द्धन-
राविक्रमनिधिगळनुजन उदयादित्य ॥ ४ ॥
नेनेयल्वापथयं नोडिदोडभिमत ससिद्धि सद्भक्तिविन्दं
मनमोल्दाराधिसल्काशुक्रवदादवनेवेल्युदेम्यन्नेनम्यु-
म्रिन पुण्य वीररल्पा-न्ननलुपरोक्षन्यूननाद जगत्पार-
नसरयत्यागशीलापरवारियतं वीरविष्णुक्षितीश ॥५॥
* निर वदवत्रपर्म्मानिरतरनिप महाक्षत्रियर्ब्बदोल्ला-
ल्लरेमुभ्र श्रीदिलीपं दशरथतनयं कृष्णराज बलिक्का-

* यहां एक पंक्ति की कमी है

वर सादरयक्षवन्द्यं यदुकुलतिलकं वीरविष्णुक्षितीशं ॥६॥
सदियमनोडिदेराटमने रोडिसि कल्तु नृसिंहवर्म्मनो-
डिदनवनोटमं गुणिसि चेङ्गिरि चेङ्गिरियग्गि कल्तु को-
ण्डदटिन कोङ्गरा-नेगर्द कोङ्गरनीजिसि पाण्ड्यनोडिदं
यदुतिलकङ्गे विष्णुभरर्णोपतिगोडदरार्दरित्रियोल् ॥ ७ ॥
व ॥ अन्तदियमनदटक्केदु नृसिंहवर्म्मसिहमं कदनदोलेच्चट्टि
वैरिगल शिरोगिरिगलं दोर्दण्डवज्रदण्डदिन्दलरे पोरदु कल
पाल्व कुलर्म कलकुलं माडि वगुल्दङ्गरन सप्राङ्गमुमनेल्लकुलि-
गोण्डु दक्षिणमसुद्रवीरं वरं ममस्तभूमियुमनेकच्छत्रच्छायेयिं
प्रतिपालिसुत्त तलवनपुरदोलसुखसङ्कथाविनोददिं राज्यं
गेय्युत्तमिरे ॥

श्रीवीरविष्णुवर्द्धन-
देवं पटलकं पण्णुख श्रीपाल-
त्रैविद्यव्रतिगी-जै-
नावसतमनधिकभक्तियिं माडिसिदं ॥ ८ ॥
पोसतेनें ता माडिसिदी-
वसदियुमं वाडमिदरमन्यनिधियेन-
स्केसेवा............
वसदियुमं तीर्थदलि कोट्टं मुददि ॥ ९ ॥
श्रीकुलतिलकङ्गे गुरुकुलमाद श्रीमद्द्रमिलगणद नन्दिस-
ङ्घद-रुङ्गुलान्वयदाचार्य्यावलियेन्तेन्दोडे ॥
क्रम ह...महावीर-

स्वामिय तीर्थंकके गौतमगणधररन्त् ।

आ-मुनिपि बनिकाद म-

दा-महि मरंनि..... ...... ॥ १० ॥

श्रुतकेवलिगनु वलवक-

मनोतराविम्यनिकके वलमन्ताना-

मतियं समन्तभद्र-

प्रतिपर्सवेदक समस्तविद्यानिधिगल ॥ ११ ॥

अवरि बलिक्रम एकसन्धि-सुमति-भट्टारकरवरि बलिक बादीभसिंह श्रीमदकलङ्कदेवरवरि वक्रग्रीवाचार्य्यरवरि श्रीपाल्याचार्य्य . यके राज्यवासुदेव सिंहनन्द्याचार्य्यरवरि श्रीपालभट्टारकरवरि श्रीकनकसेन वादिराज-देवरवरि बलिककं ॥

इवर स्वा . नेके म... मनितुमिसु... प्रभा-सं-

दतियिन्दे वरसुतिर्प्पर्द्धनद्.. अधिकमे-

दिदद किञ्चित्करकिञ्चिन्न्यूनमन्दु ......

... ..नोल्पद... . जगत्पूतमाश्चर्य्यभूतं ॥ १२ ॥

अवरि श्रीविजयभुवनविनूतर शान्तिदेवर वरि......

वनद..... न व्रतिपर ॥

आ-पुष्पसेन सिद्धान्तदेवरि बलिक ॥

गतसर्वज्ञाभिमानंसुगतनपगताप्रयादं कयादं

कृत.............. .... पादा-

नतनाद मर्त्यमात्रकुल तुडिगलाल...नेनसल्पव्विं ओको-

श्रवनाल्वर्हन्मताम्भोनिधिविधुविभवं **वादिराज**...॥१३॥
......**शान्तिषेण**ारेवरर्वारे बलिक्क ॥
पेरवें सप्तर्द्धि यि सम्भविकुमोदवुगुं प्रातिहार्य्यङ्गलेल्लं
नेरेदिक्कुं रीतियिन्दे-समवसितियुमी-कष्टकालप्रभावं ।
पेरपिङ्गल्की-महायोगियोळेने तपमुं योग्यवालक्ष्मियुं कण्-
देरेदन्तागिर्प्पुदिन्दन्दनुपममपरातीवदिव्यप्रभावं ॥ १४ ॥

कन्तुवनान्तुमेरदे...यदोविसि दुर्म्मदकर्म्मवैरि-वि-
क्रान्तमनेरदे लङ्घिसि महापुरमाग दि ।
...ना-तीर्थनाथरेने रूढियनान्त **कुमारसेन** सै-
द्धान्तिकरादमुव्वलिसिदर्ज्जिनधर्म्मयशोविकासमं ॥ १५ ॥

मलं सन्द योग्यतेय... ....
.. त्तेसेद दुर्द्धरतपोविभूतिय पेम्पि ।
कलियुगगणधररेम्बुदु
नेव्वनेव्व **मल्लिषेण** मलधारिगळं ॥ १६ ॥

द्वयस्याद्वादभूभृद्भुवनतुपमषट्-तर्क्कभास्वप्रसम्पा-
द्भुवहर्प्पान्धवादिद्विरदनघटेयं विक्रमप्रौढियिन्दं ।
वियासिद्धीरतिव्याप्तियोळे सुखियिसुत्तिर्प्पुदु वसाहदि प्रे-
क्षित-**श्रीपाल**-योगीश्वरनेनिप महावादिमत्तेभसिंहं
॥१७॥

भावन विषयमी षट् त-
र्क्कविलयदुर्भाङ्गसद्भवं **श्रीपाल**-

त्रैविद्यगद्यपद्य-व-

चोविन्यासं निसर्ग्गविजयविलास ॥ १८ ॥

तमगाज्ञावशमादुदुच्चतमहीभृत्कोटि वि-

ण्पमर्द्दनो-धरेगेय्दे तम्म मुखदोल्पट्-तर्क्कवारासि-कि

भ्रममापोशनमात्रमादुदेनलीमातेनगल्य प्रभा-

वमुमं कील्पविसित्तु पेम्पि...श्रीपाल-योगीन्द्रना॥१॥

वर्ग्गत्यागद सूचिव-

मार्ग्गोपन्यासदलवु मार्ग्गोल्लन्ता-

भर्ग्गङ्गमरिदेनल्के नि-

रर्ग्गलमादत्त ..वीर्य्यं प्रतियोल् ॥ २० ॥

इन्तु निरवद्यस्याद्वादभूषणरुं गणपोषणसमेतरमाग्गि वादी-भसिंह वादिकोलाहल तार्किकचक्रवर्त्तियेम्व निजान्वयनामङ्गल-नोल्कोण्डु मन्वयनिस्तारकरुं श्रीमदकलङ्क-मतावलम्बनरं पट् तर्कषण्मुखरुमसारसंसारव्यापारपराङ्मुखरुमाद श्रीपाल त्रैविद्यदेवर्गे ॥

शल्यत्रयरहितर्ग्गी-

शल्यग्राममनुपमं कोट्टरिनृपह-

स्याल्यं सकलकलान्वय-

कल्यं श्रीविष्णुभक्तियं तां मेरदं ॥ २१ ॥

मन्तां-वयदिय सप्तस्तुदिवलोर्व्वीराजमी-सम्बन्धिय रिविमतुरायवाडारदानके कय्गोण्ड वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन पोय्सळदेवं सकवर्ष १०४७ नेय विश्वावसु संवत्सरद ...

कावेरी तीरद हुद्द येहोळेयनु शल्यदुरुवं सील्वदत्ति तम्म बस-दियुं श्रीपालत्रैविद्यदेवर्ग्गे कैधारे येरेदु श्रीवीर-विष्णु-वर्द्धनं कोट्टियूर सीमा सम्बन्धमेन्तेन्दोडे (यहां सीमा का वर्णन है) इन्तीचतुस्सीमेयिन्दोळगुळ्ळ सर्व्वबाधापरिहारमागि बिट्टु कोट्ट श्री वीरविष्णुवर्द्धनदेवं कोट्ट श्रीपाल त्रैविद्य-देवर तम्म माडिसिद होय्सल जिनालयके बिट्ट वळवृत्ति बेल्दळे युर मुन्दण हादरिवाळेयागागि मत्तरु नाल्कु अत्तिकेरेयुं हिरियकेरेय केळगे गद्दे मसगे एलु तोण्ट ओन्दु दोड्डगद्दर केरे तोळगागि चतुस्सीमेयुं बसदिगे माडि बिट्टु कोट्ट भूमि यिदर सीमे मूडलु केमरकेरेगिविद मयाग हाड तेङ्कु होन्नमरके होद बट्टे हडुव हिरियकेरेयोळगेरे बडग होन्नमरक्के होद हाळेय बट्टे ।

[चन्नरायपट्टन १४६]

[इस लेख में होय्सल वंश के विनयादित्य, एरेयङ्ग और विष्णुवर्द्धन के प्रताप-वर्णन के पश्चात् कहा गया है कि विष्णुवर्द्धन पोय्सळदेव ने उक्त तिथि को बस्तियों के जीर्णोद्धार तथा ऋषियों को आहारदान के लिए श्रीपालत्रैविद्यदेव को शल्य नामक ग्राम का दान दिया। श्रीपाल त्रैविद्यदेव द्रमिल संघ व अरुङ्गलान्वय के आचार्य थे। इस अन्वय की परम्परा इस प्रकार दी हुई है। महावीर स्वामी के पश्चात् गौतम गणधर हुए। फिर कई श्रुतकेवलियों के पश्चात् समन्तभद्र यतीप हुए। उनके पश्चात् क्रम से एकसंधिसुमति भट्टारक, वादीभसिंह अकलङ्कदेव, वक्रग्रीवाचार्य, श्रीनन्द्याचार्य, सिंहनन्द्याचार्य, श्रीपाल भट्टारक, कनकसेन, वादिराजदेव, श्रीविजय, शान्तिदेव, पुष्पसेनसिद्धान्त-देव, वादिराज, शान्तिसेनदेव, कुमारसेन सैद्धान्तिक, मल्लिषेण मलधारि

इंसरुत्तुङ्गियकोटेय-

नसदराभुजवलदे मुन्ने कोण्डरसुगल्ला-

रसहायशूरशनिवा-

रसिद्धिगिरिदुर्गमल्लबल्लालनवोल् ॥ १० ॥

एकाङ्गवीर शूद्रक-

नाकारमनोजनर्त्थिसुरवर तुरगा-

नीक-वर-वत्स-राजन-

नेकपभगदत्तनल्ते बल्लालनृपं ॥ ११ ॥

गद्य ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं । द्वारा-
वती पुरवराधीश्वरं । तुलुव बलजलधि बडवानलं । पाण्ड्य-
कुलदावानलं । मण्डलिकबेण्टकारं चोलकटकसूरेकारं ।
वासन्तिकादेवीलब्धवरप्रसाद । वितरणविनोदं । यादव-
कुलाम्बरद्युमणि । मण्डलिकमुकुटचूडामणि । असहाय
शूर नृपगुणाधारं । शनिवारसिद्धि । सद्धर्म्मबुद्धि । गिरि-
दुर्गमल्ल । रिपुद्ध्वयसेल्ल । चलदङ्कराम । रणरङ्गभीम ।
कदनप्रचण्ड । मलपरोलगण्ड नामादिप्रशस्तिसहितं
कोङ्गनङ्गलितलकाडु नोलम्बवाडि बनवासेहानुङ्गल्लेम्ब
भुजबलवीरगङ्गप्रतापहोय्सलबल्लालदेवर्विजयमहीमण्डलं
सद्धर्म्म परिपालिसुत्तुं दोरसमुद्रद नेलेवीडिनोल्सुखसङ्कथा-
विनोदं राज्यं गेय्युत्तुमिरे तत्पाद पद्मोपजीवि ॥

अरवागमतर्कव्या-

करणोपनिषत्पुराणनाटककाव्यो-

रुचिरविद्रुमनगसुतेनिभ-
मिरपुण्यं चन्द्रमौलिमन्त्रिसत्तमं ॥ १२ ॥

गुणमणिप्रकाशनृपालदर्शितनुमादर्शं पयःपूरहा-
र-गुणास्फटिककुन्दकमनीयतापयोनोदिते-
श्वितदिक्चक्रनवपुण्यनिचयं निरस्तविद्रुमन-
मृगनयनीनिकुरचन्द्रमौलिसचिवं चन्दे पेर्डेन्दरं
॥ १३ ॥

श्री-चन्द्रमौलिसचिवक-
श्रीपद्मयुगलकीर्तिगन्धसविभर-
द्वापाम्बिके गुणवर्द्धि ग-
दापारसमेते दिवसकम्रमेयाद् ॥ १४ ॥

हरिणीलोचने पद्मानने घनसाविशालाभोगभा-
सुर बिम्बाधरे कोकिलस्वने सुगन्धश्वासे चम्पकतनू-
दरि पद्मावलिनीलकेशे कलहंसीयाने सत्कम्बुक-
न्धरे पद्मरागसदृश फन्तु सखियं सौन्दर्यदिन्देलिपल्
॥१५॥

त्रिकूरके ॥ सुकविप्रमदाश्चिर्यना-
यक चन्द्राम्बिकेय मगनेनिप सोवण ना-
यकनय्य तानि यात्रा-
निवकं देशिदण्डनायकं हिरियण्णं ॥ १६ ॥

भयत्तोनदुर्लभ चम्मेय-
नायकनिधकीर्ति किरियण्णं मा-

रेयनायकं भगिनि च-
लियब्बरसि कामदेवनणुगिन वम्मं ॥ १७ ॥

भूविनुतनात्मजातं
सोवण्णं चन्द्रमौलि पति वनगं कला-
कोविदनेन्द्राचल-
देवियवोल्नोन्त सवियरार्व्वसुमतियोल् ॥ १८ ॥

गौरितपङ्गलं नेगल्दुतुं नेरेदलाव चन्द्रमौलियो-
ल्लारियर्गिन्नवे सोवगु पेल्पलवुं भवदोलिनन्वरम्
सारवपङ्गलं पडेदु तान्तेरेदं गड चन्द्रमौलिग-
म्भीरेयेनिप्प वन्ननेनिपाचलेवोल्सोवगिङ्गे नोन्वरार्
॥१९॥

वदुगुरुकुल श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्ड-
कुन्दान्वयदोल् ॥

क ॥ विदित गुणचन्द्रसिद्धा-
न्तदेव सुवनात्मवेदि परमतभूभृ-
द्भिदुर नयकीर्त्तिसिद्धा-
न्तदेवनेसेदं मुनीन्द्रनपगवतन्द्रं ॥ २० ॥

परमागमवारिधिहिम-
किरणं राद्धान्तचक्रिनयकीर्त्तियमी-
श्वरशिष्यनमलनिजचि-
त्परिणतनध्यात्मिबालचन्द्र मुनीन्द्रं ॥ २१ ॥

भगदे सेट्टिगळ श्रीपदाळु जिनपतिश्रीपार्श्वदेवाद्भव-
न्दिरमं माडिसिदातनूत नयकीर्त्तिव्रतयोगीन्द्र-
आश्रुतशिष्याग्रम बालचन्द्रमुनिपादाम्भोजिनीनव्य सु-
स्थिरसत्पावदविलं कीर्त्तिविशदाशावक्के मङ्गळ्पद
॥ २२ ॥

व ॥ शकवर्षद गतिसिदनूरनाल्कनेय प्लवसंवत्सरद पौष-
बहुळदिगे गुरुवारदुत्तरायणसंक्रान्तियन्दु ॥

वृ ॥ दीक्षदि चन्द्रमौलिसचिवं निजवल्लभेयाचियक्कना-
श्रीलगुणाधि माडिसिद पार्श्वजिनेश्वरगेहदुद्दपू-
जाविगं देव धर्म्मिनहळ्ळियनित्तनुदारि वीर-ब-
ल्लाळनृपालकं परमभक्तियुमिन्तमेंददे मन्निसं
॥ २३ ॥

बद्वनिपनित दर्शय-
नदनाचले बालचन्द्रमुनिराजश्री-
पदयुगमं पूजिसि चतु-
दर्दधिवरं निमिरे कीर्त्ति जिनपतिगित्तं ॥ २४ ॥

अन्तु धारापूर्व्वकमागि कोट्ट तद्ग्रामसीमे (यहां से पंक्तियों में सीमा आदि का वर्णन है)

आमन्दिहामण्डलाचार्य्यनयकीर्त्तिदेवर धर्म्मेयनहळ्ळियल्लु कम्बदहळ्ळियं माडिसि श्रीपार्श्वनाथप्रतिष्ठेयं माडि देवरष्ट-विधार्च्चनेगं श्रीमसमुद्रद केरेय केळगे मोदलेरियिन्दित्त गद्दे सलगे यरडु बसगव हाविनलु बेदलु नानूरवं नयकीर्त्तिदेवरं मारेय

नायकन मग सेतण्णनु गौड गौडनोळगाद प्रजेगळुं आचन्द्रार्क वर सल्वन्तागि बिट्ट दत्ति मङ्गल महा श्री ॥

[चन्नरायपट्टन १२०]

[इस लेख में लेख नं० २९ के समान होयसळ वंश की उत्पत्ति व लेख नं० १२४ के समान होय्सलनरेशों का बल्लाळदेव तक। बल्लालदेव के मंत्री चन्द्रमौळि और उनकी धर्मपत्नी आचळदेवी के वंश आदि का वर्णन है। तत्पश्चात् कहा गया है कि आचळदेवी ने बड़ी भक्ति से बेल्गुल तीर्थ पर पार्श्वनाथ मन्दिर निर्माण कराया और इसके लिए बल्लालदेव से बम्मेयनहळ्ळि ग्राम प्राप्त कर उसे अपने गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तदेव के शिष्य बालचन्द्रमुनि की पादपूजा कर उक्त मन्दिर को दान कर दिया।

लेख के अन्तभाग में उल्लेख है कि महामण्डलाचार्य नयकीर्तिदेव ने बम्मेयनहळ्ळि में एक नई बस्ती निर्माण कराई और उसमें पार्श्वदेव की प्रतिष्ठा की और कुछ भूमि का दान दिया।]

४९५

कुम्बेन हळ्ळि ग्राम में आञ्जनेय मन्दिर के समीप एक पाषाण पर

(लगभग शक सं० ११२२)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

नमोऽस्तु ॥

श्रीपतिमन्मदिन्दरमेय पादरवंशदोळाद दधियो-
र्व्वीपतिवरनोळ्दे मखनेम्ब नृपं धरेयेम्बदे आत्म

श्रामपाग क ग्रामो के सर्वाग्रहं संग्र

पियनान्दनाम्बं मुनि पादयुगवदंनरङे पोम्नु गहदु वि-

रम्यापियद नगलदरंदाणद पेडयनवेन्न नामदि ॥२॥

विनयादित्यनृपाखन

तनुभंवयेरय्गभूपनावन पुत्रं ।

कनकावयोत्प्रभं वि-

दगुरपाल...तनात्मजं ॥ ३ ॥

.... . थं नकदम-

दंडवमाप्रादय क्षितिपय ... ।

दंबाववननाग पु-

गदन नृवर्गोदिसिद...यम्गालनृपं ॥ ४ ॥

एकत्र गुर्वितस्तव्यं वादिराज स्वयंकृतः ।

तदेव गौरवं तत्र मुद्रायामुद्रतिः कथं ॥ ५ ॥

सडे गन्द यांम्यर्तायन-

गार्जिसिद दुर्दरवर्वविभूतिय पेम्पि ।

कविगुणगणधवरंसुदु

जगवंद्यं मल्लिपेणमलधारिगलं ॥ ६ ॥

वमगाग्रवमादुदुग्रवमद्दीभृत्कोटि वम्मिन्दे बि-

वपमदर्पा-धरागेदं वम्म गुरुवेलत्पटतर्कवारासिरि-

भ्रमवापायनमात्रमादुदनडि मावनगस्त्यप्रभा-

वमुमं कीर्त्यीडसिदु पेम्पिनेयकं श्रीपालयोगीन्द्रना॥७॥

ववरमशिष्यरु श्री वादिराजदेवरु वम्म सत्यद गुम्वेयन

दक्षियदु वम्म गुरुगविगं परोपविनयमागि परवादिमन्नजिनालं

यमेन्दु कन्नंवसदिय माडिसि देवरष्टविधार्च्चनेगं आहारदान हिरियकेरेय गेोडियहळ्ळिगद्दे मत्तरगे एरडु कोळग हत्तु मत्ति वेद्दु विट्टि सेट्टियकेरेयुं अवर केलद गद्दे सल। एरडुवं सर्व्वबाधा परिहारमागि बिट्ट दत्ति ॥

(स्वदत्तां परदत्तां आदि श्लोक)

श्रीमन्महाप्रधानं सर्व्वाधिकारि तन्त्राधिष्ठायकं कम्मट माचय्यनुं माच बळय्यनुं देवर नन्दादीविगेगं गाणद सुरं विट्टरु ॥ कण्डयनायकन मदवलिगे राचवेनायकितिय मग कुन्दाळहेग्गडे नयचक्रदेवर बसदि माडिसिद बसदि ॥ स्वति श्रीमन्महाप्रधान सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि हुल्लपहुल मेनुन अध्याध्यचह हेग्गडे हरियण्ण कुम्बेयनहळ्ळिय देवर माडिसि कोट्ट ॥

श्रीपाल त्रैविद्यदेवर शिष्यरु परद शान्तिषिक्ण पण्डित ॐयु अवर पुत्र परवादिमल्ल पण्डितरेयुं अवर तम्म उमेयारुं मातन तम्म वादिराजदेवं वादिराजदेवरु धारापूर्व्वकं माडि कोट्टरु ॥

[नगरतालुक १११]

[इस लेख में पूर्ववत् बलात्कारगण तक होय्सळ वंश के वर्णन के पश्चात् वादिराज मल्लिषेण मलधारि की कीर्ति का वर्णन है और जिन षड्दर्शन के अध्येता श्रीपाल त्रैविद्यदेव का उल्लेख है। इनके शिष्य वादिराजदेव ने अपने गुरु के स्वर्गवास होने पर परवादिमल्ल जिनालय निर्माण कराया और उसकी अष्टविध पूजन तथा आहार दान के लिये कुछ भूमि का दान दिया।

महाप्रधान सर्वाधिकारी तन्त्राधिष्ठायक कम्मट माचय्य तथा उनके रवपुर बलुरय ने त्रिभाउव में दीपक के लिए तेल के टेक्स का दान दिया।

कुण्डणनायक की भार्या रावजे तथा नायकिति के पुत्र कुन्दाद हेगडे ने नयचन्द्रदेव की आज्ञा से बस्ती निर्माण कराई।

इसी प्रकार महाप्रधान सर्वाधिकारी हिरिय भण्डारी हुल्लय के साले अरवाप्पण्ड हेरियण्ण ने कुम्बयनहल्लि के देव की प्रतिष्ठा कराई।

वादिराजदेव ने ये दान श्रीपाल त्रैविद्यदेव के शिष्य शान्तिसेन-पण्डित व पद्मप्रभमलधारि व रूमेयाळ व वादिराजदेव को दिये।]

४८६

चन्नरायपट्टन में गङ्ग रामेश्वर मन्दिर के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक सं० ११०८)

[ऊपर का भाग टूट गया है]

......श्रेष्ठगुण पेमाथे सत्ययुधिष्ठिर......नवसंकाररधि-ष्ठायक..... यण्णने बुधनिधियं ॥

सोगयिसुव गङ्गवाडिगे
मोगमनं न . पुददरोल् ।
मिगे दिण्डिगूर प्राग्रा-
नगर बोट्टेनिपुदल्ते मोनेगनकट्टं ॥ १ ॥

फलकाचलकूटदवोलु
पलपदमं सुट्टि नेट्टनमरोप्युविने ।

यमेन्दु कन्नेनसदियं माडिसि देवरष्टविधार्च्चनेगं आहारदानं हिरियकेरेय गौडियहळ्ळिगदे मलगे एरडु कोळग इसु मत्तं वेळु विट्टि सेट्टियकेरेयुं अदर केलद बेददे सलगं एरडुवं सर्व्वबाधा परिहारमागि बिट्ट दत्ति ॥

(स्वदत्तां परदत्तां आदि श्लोक)

श्रीमन्महाप्रधानं सर्व्वाधिकारि तन्त्राधिष्ठायकं कम्मटा मायण्णनुं माव बल्लय्यनुं देवर नन्दादीविगेगे गाणद सुङ्कं बिट्टरु ॥ कण्डयनायकन मदवलिगे राचवंनायकितिय मग कुन्दाडहेग्गडे नयचक्रदेवर बेसदि माडिसिद बसदि ॥ स्वस्ति श्रीमन्महाप्रधान सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि हुल्लपय्यन मैदुन अधाध्यक्ष हेग्गडे हरियण्णं कुम्बेयनहळ्ळिय देवर माडिसि कोट्ट ॥

श्रीपाल त्रैविद्यदेवर शिष्यर पदद **शान्तिषिद्ध** पण्डितर्गेयु अवर पुत्र **परवादिमल्ल** पण्डितर्गेयुं अवर तम्म उभयवाण्डं प्रातन तम्म **वादिराजरिन्** वादिराजदेवर पादपूर्व्वं माडि कोट्टर ॥

[चन्नरायपट्टन १११]

[इस लेख में पूर्वोक्त बल्लालदेव तक होय्सल वंश के वर्णन के पश्चात् वादिराज मल्लिषेण मलधारि की कीर्ति का वर्णन है और फिर षड्दर्शन के अध्येता श्रीपाल त्रैविद्य का उल्लेख है। इनके शिष्य वादिराजदेव ने अपने गुरु के स्वर्गवास होने पर 'परवादिमल्ल जिनालय' निर्माण कराया और उनकी अष्टविध पूजन तथा आहार-दान के लिये कुछ भूमि का दान दिया।

महाप्रधान सर्वाधिकारी धर्माधिष्ठायक कम्मट माचय्य तथा उनके कम्बुर बल्लप ने जिनमन्दिर में दीपक के लिए तेल के टैक्स का दान दिया।

पुण्यकनायक की भार्या रायवे तथा मारकिति के पुत्र कुम्मराज इंगरे ने नयकदेव की आज्ञा से बस्ती निर्माण कराई।

इसी प्रकार महाप्रधान सर्वाधिकारी हिरिय भण्डारी हुल्लप ने पार्श्व भरतभव्य शीतलव व पुर्णचन्द्रसिद्धि के देव की प्रतिष्ठा कराई।

वादिराजदेव ने ये दान श्रीपाल त्रैविद्यदेव के शिष्य शान्तिसेन-पण्डित व वादिदिग्मलपण्डित व श्रीपाल व वादिराजदेव को दिये।]

४८६

चन्नरायपट्टन में गट्टु रामेश्वर मन्दिर के सम्मुख एक पाषाण पर

(शक सं० ११०८)

[ऊपर का भाग टूट गया है]

......मेवुगुणं पेंगाये सत्ययुधिष्ठिर......नवसेकाररधि-
प्रायक..... यण्णने गुणनिधियं ॥

सोगविमुख गङ्गवाडिगे
मोगमेन न ..पुदवंशल् ।
सिगं दिग्विडगूर शास्ता-
नगरं बोट्टेनिपुदल्ते मोनेगनकट्टं ॥ १ ॥

कनकाचलकूटदवोलु
घनपद्यमं मुट्टि नेट्टनमदोंप्युविनं ।

यमेन्दु कन्नेरसदियं माडिसि देवरष्टविधार्च्चनेगं आहारदान हिरियकेरेय गोडियहळ्ळिगद्दे सलगे एरडु कोळग इसु मळि तेंु बिट्टि सेट्टियकेरेयुं अदर केळद गेद्दे सलगं एरडुं सर्व्वबाध परिहारमागि बिट्ट दत्ति ॥

(अरवी परदत्तां आदि श्लोक)

श्रीमन्महाप्रधानं सर्व्वाधिकारि तन्त्राधिष्ठायकं कम्मट माचय्यनुं माव बल्लय्यनुं देवर नन्दादीविगेगे गावुद मूरं बिट्टरु ॥ कण्डयनायकन मदवळिगे राचवेनायकितिय मग कुन्वाडहेग्गडे नयचन्द्रदेवर बसदि माडिसिद वसदि ॥ श्रीमन्महाप्रधान सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि हुळ्ळपय्यन मैदुन अधाप्यचद हेग्गडे हरियण्णं कुम्बेयनहळ्ळिय देवर माडिसि कोट्टु ॥

श्रीपाल त्रैविद्यदेवर शिष्यरु पदद शान्तिसिङ्ग पण्डित मोगुअरस पुत्र परवादिमल्ल पण्डितरगेयुं अवर तम्म उमेयणन आतन तम्म वादिराजरेरन्नं वादिराजरेरव धारापूर्व्वक माडि कोट्टरु ॥

[श्रवणबेल्गुल १४१]

[इस लेख में पूर्वोक्त बलात्कार गण कोप्पण पट्ट के वर्णन के पश्चात् वादिराज महीपाल मठवादि की कीर्ति का वर्णन है और फिर कल्याण के पश्चात् श्रीपाल त्रैविद्य का उल्लेख है। इनके शिष्य वादिराजदेव ने अपने गुरु के स्वर्गवास होने पर 'परवादिमल्ल जिनालय' निर्माण कराया और उनकी मरणविधि हेतु तथा आहार दान के लिये एक भूमि का दान दिया।]

महाप्रधान सर्वाधिकारी तन्त्राधिष्ठायक कम्मट माचय्य तथा उनके रक्षदार बाहुरथ ने शिवालय में दीपक के लिए तेल के टेक्स का दान दिया।

कुण्डनायक की भार्या रावले तथा नायकिति के पुत्र कुन्दाड हेगडे ने नयचक्रदेव की आज्ञा से बस्ती निर्माण कराई।

इसी प्रकार महाप्रधान सर्वाधिकारी हिरिय भण्डारी हुल्लय के साले भरताय्यक हरियण्ण ने कुम्बेयनहल्लि के देव की प्रतिष्ठा कराई।

वादिराजदेव ने ये दान श्रीपाल त्रैविद्यदेव के शिष्य शान्तिसिनपण्डित व पद्मादिमलपण्डित व रुवेयाड व वादिराजदेव को दिये।]

४९६

चन्द्रायपट्टन में गद्दे रामेश्वर मन्दिर के सम्मुख एक पाषाण पर

(शक सं० ११०८)

[ऊपर का भाग टूट गया है]

......श्रेष्ठगुण पेंगणे सत्ययुधिष्ठिर......नवसेकाररधिप्रायक..... यण्णनं बुधनिधियं ॥

सोगयिसुव गङ्गवाडिगे
  सोगसेनं न ..पुदवराल्।
मिगे दिप्पिबूर शासा-
  नगरं बोर्ट्टनिपुदस्ते सोनेगनकट्टं ॥ १ ॥
कनकाचलकूटदवोल्
  घनपधमं मुट्टि नेट्टनमर्दप्पुविने।

यमेन्दु फन्नेवमदियं माडिसि देवरष्टविधार्च्चनेगं आहारदानक्क हिरियकेरेय गौडियहल्लिगद्दे सलगे एरडु कोलग इतु अल्लि बेडु बिट्टि सेट्टियकेरेयुं अदर केलद गद्दे सलगे एरडुवं सर्व्वबाधा परिहारमागि बिट्ट दत्ति ॥

(स्वदत्तां परदत्तां आदि श्लोक)

श्रीमन्महाप्रधानं सर्व्वाधिकारि तन्त्राधिष्ठायकं कम्मटद माचय्यनुं माव बल्लय्यनुं देवर नन्दादीविगेगे गाणद सुङ्कवं बिट्टरु ॥ कण्डघनायकन मदवलिगे राचवेनायकितिय नग कुन्दाडहेग्गडे नयचक्रदेवर बसदि माडिसिद बसदि ॥ स्वस्ति श्रीमन्महाप्रधान सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि हुल्लयङ्गल मेदुन अभ्याध्यचद हेग्गडे हरियण्ण कुम्बेयनहल्लिय देवर माडिसि कोट्ट ॥

श्रीपाल त्रैविद्यदेवर शिष्यरु पदद शान्तिसिद्ध पण्डितर्गेयु अवर पुत्र परवादिमल्ल पण्डितर्गेयुं अवर तम्म उमेयाण्डग भातन तम्म वादिराजदेवङ्गं वादिराजदेवरु धारापूर्व्वकं माडि कोट्टरु ॥

[चन्नरायपट्टन १२१]

[इस लेख में पूर्ववत् बल्लालदेव तक होय्सल वंश के वर्णन के वादिराज मल्लिषेण मलधारि की कीर्ति का वर्णन है और फिर अध्येता श्रीपाल योगीन्द्र का उल्लेख है। इनके शिष्य वादिराजदेव ने अपने गुरु के स्वर्गवास होने पर 'परवादिमल्ल जिनालय' निर्माण कराया और उसकी अष्टविध पूजन तथा आहार-दान के लिये कुछ भूमि का दान दिया।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

([illegible])

[ऊपर का भाग टूट गया है]

[illegible]

[illegible]

[illegible] प्रसाद [illegible]

[illegible]

[illegible] मन्दिर [illegible]

[illegible]

मोनेगनकट्टद्दल्लुजैव-

जिन गृहमं रामदेवविभु माडिसिदं ॥ २ ॥

वद्गुरुकुलमेन्तेन्दडे। श्रीनयकीर्त्तिसिद्धान्तचक्रवर्त्तिगळ-शिष्यरु।

विदिताध्यात्मिकबालचन्द्रमुनिराजेन्द्रामहशिष्यर्प्र-

स्तिदवन्यम्मुनिमेघचन्द्ररनघर्म्मास्तद्यामागरा-

स्युदयर्पोस्तकगच्छदेशिकगण श्रीकोण्डकुन्दान्वया-

स्पददीपक्करमोप्पुवर्व्वंसुधेयोल्लाल्चपोलदिमयि ॥३॥

शकवर्ष ११०८ नेय विश्वावसु संवत्सरदुत्तरायण संक्रान्ति-यादिवारदन्दु बनवसेकारर मोत्तदनायकरु दिण्डियूरवृत्तिय गावुण्डुप्रभुगळुं मेलिमासिर्व्वरु शान्तिनाथदेवरष्टविधार्च्चनेगं खण्डस्फुटजीर्णोद्धारक्कं ऋषियराहारदानक्कं सर्व्वाबाधापरिहार-मागि मेघचन्द्रदेवर्गें धारापूर्वकं माडि बिट्ट गद्देबेद्दलेल्लवु-दॆन्तॆन्दडे। (यहां दान का विवरण है)

[चन्नरायपट्टन १६६]

[......गङ्गवाडि के मोनेगनकट्टे का दिण्डिगूर एक शाखा नगर था। मोनेगनकट्टे में रामदेवविभु ने एक विशाल जिनालय निर्माण कराया। रामदेव के गुरु, नयकीर्त्तिसिद्धान्तचक्रवर्ती के शिष्य अध्यात्मिक बालचन्द्र मुनि के प्रधान शिष्य मेघचन्द्र थे। उक्त तिथि को बनवसे के कर्मचारी मोत्तद नायक तथा दिण्डियूरवृत्ति के गौण्ड और प्रभुओं ने शान्तिनाथ भगवान के अष्टविधार्चन के तथा जीर्णोद्धार व आहारदान के हेतु उक्त भूमि का दान मेघचन्द्रदेव को कर दिया।]

४८०

नगरूप ग्राम में पुरानी नगरी के [illegible] पर एक पाषाण पर

([illegible] सं० १०५०)

[illegible]

श्रीमान्गुंन-नरकुमारि-

तिमाऽकनन्र्क नम्मुनिंद......।

श्रीमन्मारेमानेयनु-

शमतुनं भरतराजरुणाभिरामन ॥ ३ ॥

श्री यिजगु नाम रनुस्-

वारनेप .. ..रम..........णाविनि...।

. विदित मगर भक्तिवन्

...विनुदेनपिसुगुमसिद्धपयोऽभरणं ॥ ४ ॥

मकरध्वममनोहिमनुं

नेरे रान्यभाविनाःसमं मेरेयनुवी-

मरियान नेरगु................

......मन्चे पहुदानेगुनाई ॥ ५ ॥

पावन मति मुन्न नेगल्दा-

मोतेगनन्धहिंग रा..... ......

.... .देरेयनव्रवदं

भुवननदोनें जक्कणब्बेगुणिवर्हरिये ॥ ६ ॥

......याने दण्णायकनेरेयन...न जक्कियब्बेग सुवरव...

......परगु... ...भरतवाप्तुवल्लिगवेनिम्पर् ॥ ७ ॥

मन्तवरन्देन ॥

श्रीमत्पेर्गडे माचिराजगिरियोल्सुट्टुचे सन्मार्गादि-

न्दामाश्रीमरुदेवियेम्ब नलिनीवासवके सन्दाजन-

पंचे श्रीजिनमार्गे [illegible] यदि पालितम्

साम..... [illegible] पुण्य [illegible]

[illegible]

......वेय स्वामियत[illegible]

[illegible]

[illegible] स्वस्तिय

......[illegible]

परम [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ११

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

धारापूर्व्वकदि तग-
दूरं वरगलब्ग्मगट्टवं बसदिगे सले ।
धारिणियरियल्विट्ट-
र्म्मूरविशशिवारमेरुगल्निनित्तनेगं ॥ १३ ॥

परमजिनेश्वरपूजेगे
पिरिदु सद्भक्तियिन्दे कोडियकेरय ।
वरगुणरायगवुण्डं
निरुतं कल्याणकीर्त्ति मुनिपङ्क्तिसं ॥ १४ ॥

भूविनुतं कलि-बोप्पं
देवङ्गे चरुगिङ्गे नेमवेर्गडेय मगं ।
भूविदितमागे कोट्टं
वावरेगेरेयल्लि गद्दे खण्डुग वोन्दं ॥ १५ ॥

कल्याणकीर्त्ति कीर्त्तिसु-
वल्ल्युदयं मूरजोरुमं व्यापिसि कै-
वल्यदोडगूडि सले मा-
पगल्यमुमादत्तु चिन्तं चिन्त्यङ्गलवोल ॥ १६ ॥

(स्वदत्तां परदत्तां वा आदि श्लोक)

[चन्नरायपट्टन १५८]

[इस लेख में चालुक्य त्रिभुवनमल्ल व त्रिभुवनमल्ल पेरमाडिदेव के राज्य में मदनकीर्ति के स्वर्गवास हो जाने पर भामवे द्वारा तगडूर में जिनालय निर्माण कराये जाने व पट्टविभाजन, आहारदान तथा

सीयडिहा के हेतु रायनुपुर और मालव नायक द्वारा 'नागपुर' और 'भानपुर' का दान दिये जाने का उल्लेख है। रायनुपुर में [illegible] पूजन के लिए 'केरा' की भूमि [illegible] हुलि का दी। [illegible] अन्य ग्रामों का भी उल्लेख है। [illegible] की [illegible] के पास है।]

५८।

गुहिय ग्राम के मदनदेविये नायक [illegible] में

[illegible] पर

([illegible] शक सं० [illegible])

[illegible] जिनशासन [illegible] [illegible] त्रिभुवनमल्ल [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] धारा-पूर्वकं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible])

[illegible]

[त्रिभुवनमल्ल [illegible] [illegible] [illegible] नायक के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दान दिया।]

४९९

मललकेरे ग्राम में ईश्वर मन्दिर के सन्मुख एक पाषाण पर

(शक सं० ११७०)

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कुतीर्थध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥ २ ॥

वृ ॥ मदुरं शत्रितिपालकं यशपुरी वासन्तिका......
मदनागिर्प्पिन......युराजित...मेलपाये शा ल...
...जैन मुनीश्वरं पिरिद.. ......
....पोडेदं......॥ ३ ॥

मा होय्सलान्वयदोल ॥
वृ ॥ भूनाथासेव्यपादं निखिलरिपुमहीपालविभ्रंस केलो-
कीनाथं वैरिभूभृन्मृगगहनदवज्वाले दुर्गम......
...ना...रामनंत्रोभयद... ...श्रीलक्ष्मण-
वानेन्दोविश्वलोक...मलिसिदं वीरभद्रसालभूपं
॥ ४ ॥

गोत्रविशालपनिकरं
गोत्रवित......वागोश्वरं ।

गोपवियादत्वा ..

गोपवि [illegible] सरहिद्द ॥ [illegible]

२ ॥ जिरहा [illegible]

[illegible]

... [illegible]

[illegible] ... [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रवरदेवरु दक्षिणमण्डलम दुष्टनिग्रहशिष्टपरिपालनपू-
र्व्वकं राज्यं गेय्युत्तमिरे ।

तत्पादपद्मोपजीवि सेनानाथशिरोमणि वन्दिजन-चिन्तामणि सुजनवनजवनपतङ्ग राजदलपत...सलिगं कलिगलङ्कुश स्वामि-दण्डेशनेन्तेप्पनेन्दडे ॥

वृ ॥ श्रीयं विस्तीर्णवक्षस्थलनिलयदो......

श्रीयं कूर्म्मलि केलीसदनदोलोलवि वाल्दि विख्यातकीर्त्ति-
श्रीयिन्दाशान्तमं रञ्जिसे निजविजय...स्वान्तजातं...
...य्यि सैन्याधिनाथं नेगल्दनुरुगुणस्तोमनुर्व्वीललामं
॥ ८ ॥

भ्रातननुजं ॥

क ॥ ...रु देव.........

...सिरमं अखसैन्यनाथं क्षिप्रं ।

धुरदोलतिचतुरं निज-

·········वीर···तिगे सिरदा···तिय···॥ ९ ॥

आमन्त्रि ॥

मालिनी ॥ मनुचरितनुदारं वत्समन्त्रिप्रगल्भं
जिनसदनसमूहाधारसारानुशा...म् ।
वनगे... .. . पिद पुण्यपुण्यं
जननुतविजयण्यं मन्त्रिगोग्रामगण्यं ॥ १० ॥

क ॥ कामं कमनीयगुणं
पोमन्तसिरिराजरन्ध्रमहित......।

[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

च

ह

अनुक्रमणिका २

इस अनुक्रमणिकामें जैन मुनि, आर्यिका, कवि व
प्रकारके नामोंका समावेश किया गया है। नामके पश्चात्
भू० के पश्चात्‌के अकोंसे भूमिका-पृष्ठका तात्पर्य है।

इस अनुक्रमणिकामें निम्नलिखित संकेताक्षरोंका प्रयोग कि
उ०=उपाधि। को० न०=कोंगाल्व नरेश। गं० न०=
गंग राजकुमार। ग्रं०=ग्रंथ। ग्रा०=ग्राम। चं० न०=चंगाल्व
चालुक्य नरेश। चामु०=चामुण्डराय। चो० रा०=चोल रा
चोल सेनापति। जा०=जाति। जै० मं०=जैन मंदिर। दु०=
मिक। दु०=दुर्ग। द्वि०=द्वितीय। न०=नरेश। नि० सर०=नि
न०=नोळम्ब नरेश। पा० सर०=पाण्ड्य सरदार। पु०=पुरुष
मिक ऋषि। पौं० न०=पौंराणिक नरेश। प्र०=प्रथम। मै०
मैसूर नरेश। मौ० न०=मौर्य नरेश। रा० न०=राष्ट्रकूट नरेश।
कूट राजकुमार। रा० वं०=राजवंश। वि० न०=विजयनगर न
शंगुनाग नरेश। सर०=सरदार। सरो०=सरोवर। से० सेनापति।
हो० न०=होय्सळ नरेश।

अ

इ

घ

च

छ

ज

ट

ठ

त

फ

ब

भ

ल

व

श